

## कुमारपाळ राजानो रासः



दुहा ॥ श्री सरसति जगवांति नमुं ॥ बुद्धि तणी दातार  
॥ मूरखने पंडित करे ॥ करत न लावे वार १ ॥ आग  
ळ पंडित जे हुआ ॥ वर्त्तमान कहेवाय ॥ बुद्धि पंडित  
जे होइसे ॥ ते सरसति सुपसाय २ ॥ मूरख छाली चा  
रतो ॥ नहिं मुख वयण विलास ॥ तेहने तूठी कालिका  
॥ कीधो काळीदास ३ ॥ तिम मुजने सुपसन हुयो ॥  
सुमति दियण सरसत ॥ मुज मन कमल विकास क  
र ॥ हंसासण धो मत्त ४ ॥ मति दे माता मुज जणी ॥  
हुं सेवूं तुज पाय ॥ मुज वयणे रस आपजे ॥ सहुने  
जेम सुहाय ५ ॥ सज्जन भाणस गोठडी ॥ मीठा बोली  
नार ॥ मीठा जोयण सरस वयण ॥ सहुने प्यारां च्यार  
६ ॥ सुललित सरसा शुभ वयण ॥ सरसति धो ततका  
ळ ॥ तुज सुपसाए वरणवुं ॥ कुमारपाळ भूपाळ ७ ॥  
रिपज वीर विचमे हुआ ॥ उत्तम नरना वंद ॥ पण  
इण सरिखो जोवतां ॥ न हुवो कोइ नरिंद ८ ॥ दया  
पळावी जेण नृप ॥ देश अटार मझार ॥ उत्तम कार  
जं आचरयां ॥ कीधा पर उपगार ९ ॥ जिन सासन

दीपावीओ ॥ कहिंशु तास चरित्र ॥ सावधान थइंसीं  
नळो ॥ याशे श्रवण पवित्र ॥ १० ॥

ढाळ. ॥ चोपाइनी देशी. ॥ लाख जोयण जंवु प  
रिमाण ॥ दक्षिण भरत क्षेत्र तिहां जाण ॥ देश तिहां  
दीपे गुजरात ॥ आंवादिक फळ नव नव जात १ ॥  
गुण गिरुओ तिहां नवसे गाम ॥ दहीयळी छे तेनो  
नाम ॥ गढ मंदिर उंचा आवास ॥ लोक सुखी रिद्धिनो  
निवास २ ॥ जिन मंदिरने पोषधशाळ ॥ श्रावक धर्म  
करे सुविशाळ ॥ श्री जिनवर पूजे त्रिण काळ ॥ थ्या  
वे नहि कोइ आळपंपाळ ३ ॥ राज करे तिहां त्रिभुवनपा  
ळ ॥ वार गामनो ते भूपाल ॥ कसमीरेदेवी राणी तास ॥  
विनयवती मुख मधुरी जाण्य ४ ॥ तास तणी कूखे उप  
न्या ॥ त्रिण पूत्र आगर रुपना ॥ अवर सुता तेने थइ  
दोय ॥ नाम कहु सुणज्यो सहु कोय ५ ॥ कुमारपाल  
महिपाल कृतपाल ॥ ए त्रणे सुत अति सुकनाळ ॥ भेम  
ल देवळ रूपे रंभ ॥ देखी सहुने हुवे अचंग ६ ॥ निज  
भुज बळ वरतात्री आण ॥ त्रिभुवनपाल जाते चहुआण  
॥ तिण कुळ हुओ कुमर नरिंद ॥ दीपायो कुळ जेम  
रिंद ७ ॥ चौलकवंशी अभिनव इंद ॥ दीपे जिम

तारामे चंद ॥ गुरु श्री हेमाचार्य तास ॥ श्रावक कीधी  
 धरी उलास ८ ॥ कुमारपाळ किम पाम्यो राज्य ॥ धर्म  
 तणां किम कीधां काज ॥ पाटण किम लीधो संपराण  
 ॥ अरियण किम मनावी आण ९ ॥ किम कीधा  
 वळि परउपगार ॥ अदार देश पळावी अमार ॥ श्री  
 जिनभवन कर्यां केटलां ॥ विंव जराव्या जिनवर भला  
 १० ॥ विंव प्रतिटा किणि परे करी ॥ किम संघवि थ  
 यो उलट धरी ॥ संघ भगति किणि जुगते करी ॥ के  
 टला वरस राज धुर धरी ११ ॥ किणि परे भनियो देश  
 विदेश ॥ अरिथी किम ऊगरयो नरेश ॥ पहिलि ढाळ  
 णटलो सह ॥ कहि जिनहरप आगळ हवे कह ॥ १२  
 सर्व गाथा १२ ॥

ढाळ २ जी

दुहा ॥ चौलकवंशे नृप भुअड ॥ कल्प कुवज  
 अवनीश ॥ कल्याणक पुर भोगवे ॥ गाम लाख  
 छत्रीश १ ॥ किण एक अवसर करि कटक ॥ लीधो गु  
 ज्जर देश ॥ संग्रामे जयसिरिवरि ॥ मारयो पुहवि नरेश  
 २ ॥ देश भळावी सेवकां ॥ निज पुर पुहुतो राय ॥ रा  
 जकाज सुख भोगवे ॥ पूरव पुन्य पसाय ३ ॥ पुनरमे

पाट भुअडने ॥ कुमारपाळ भूपाळ ॥ भुअड रायनी  
 पुत्रिका ॥ मीणलडे सुकमाल ४ ॥ कंचुकथाने आ  
 पियो ॥ वेटीने गुजरात सकळ चरित्र कहू हवे ॥ सा  
 भळज्यो तजि वात ५ ॥

ढाळ. ॥ कपुर होवे अति उजळोरे ॥ ९ देशी ॥  
 गुज्जर देश मांही जळोरे ॥ देश अवल वढियार ॥ गा  
 म तिहां पंचासरोरे ॥ लोक सुखी दाताररे १ ॥ जवि  
 यण सुणज्यो ९ अधिकार ॥ कुमारपाळ भूपाळनारे ॥  
 सफळ होशे अवताररे ॥ अ० २ ॥ सीलंगसूरी आव्या  
 तिहारे ॥ बहु मुनिवर परिवार ॥ आचारज गुण उ  
 जळोरे ॥ चरण करण भंमाररे ॥ अ० ३ ॥ निरवय  
 थानक उतरवारे ॥ पाळे पंचाचार ॥ धर्म तणी दे दे  
 शनारे ॥ पडिवोहे नरनाररे ॥ अ० ४ ॥ देह चिंताए  
 एक दिनेरे ॥ पडुता वनह मझार ॥ झोळी दीवी झू  
 लतीरे ॥ एक झाममे तिणि बाररे ॥ अ० ५ ॥ वाळ  
 क ते मांहे रमरे ॥ रुपे देवकुमार ॥ शुभ लक्षण अंग  
 जेहनरे ॥ दीपे जिम दिनकाररे ॥ अ० ६ ॥ जिण तरु

दोती मायडोरे ॥ रुपसुंदरी तस नाम ॥ गुरु पुछी सहु  
 वातडोरे ॥ ते नारीने तामरे ॥ अ० ८ ॥ रुपसुंदरी कहे  
 सेवतीरे ॥ सुगुरु सुणो गुणवंत ॥ गुंजर देशनो राजी  
 ओरे ॥ तेह हुतो मुज कंतरे ॥ अ० ९ ॥ भुअड रा  
 य ते मारीयोरे ॥ ते वघरी बळवंत ॥ गरभवतीने एक  
 लीरे ॥ नाठी हुं बीहंतरे ॥ अ० १० ॥ इणे वनमां आ  
 वी रहोरे ॥ पुत्र जण्यो इण ठाम ॥ हुं इहां अबळा ए  
 कलीरे ॥ भोजन फळ आरामरे ॥ अ० ११ ॥ ज्ञानी  
 सुगुरु विचारोनेरे ॥ नाम धर्यो वनराज ॥ ए नृप गु  
 ञ्जनो हुस्येरे ॥ करस्ये उत्तम काजरे ॥ अ० १२ ॥  
 माए सुणी गुरु बोलमारे ॥ हरखी चित मझार ॥ कही  
 जिनहरखे बीजी थरें ॥ ढाळ इणे अधिकाररे ॥ अ०  
 १३ ॥ सर्व गाथा ४० ॥

ढाळ ३ जी:

दुहा ॥ गुरु गिरुआ तिहांथी चल्या ॥ आंव्या पूरव  
 ठाम ॥ श्रावक जनतेनी कही ॥ बाळ चारित्रि अजि  
 राम १ ॥ सुणज्यो श्रावक वातनी ॥ इण वनमां एक  
 बाळ ॥ तिहां जइ लावो तेहने ॥ ते थास्ये भूपाळ २  
 ॥ राजा करसण सुत तुरी ॥ महिषि किर सुदक्ष ॥ वा

लवणाथी सेवीए ॥ फळ लहीए परतस ३ ॥ तेह भणी  
लावो इहां ॥ करो सुगुखा तास ॥ श्रधावते श्रावके  
॥ मानी गुरुनी भास ४ ॥

ढाळ ॥ पहिली जावना भावीएजी ॥ ए देशी ॥ वन  
मां जइ विवहारीयाजी ॥ लाव्या वाळक तेह ॥ जन  
नी शुं घर राखीयोजी ॥ करि भगति गुण गेह ५ ॥ स  
लुण सुगज्यो अवरिज वात ॥ सांभळतां रस पामस्यो  
जी ॥ उत्तम नरनी रुघात ॥ स० २ ॥ ए आंकणी ॥  
ते वाळक मोटो थयोजी ॥ किना करे अशार ॥ विव  
हारी वाळक भणीजी ॥ आपी सवली मार ॥ स० ३  
॥ श्रावक लोक कहे इस्थुंजी ॥ घर सरिखा नही या  
व ॥ पोस्यो पन्नग सारीखोजी ॥ एतो थयो कुपाव ॥  
स० ४ ॥ सींह तणो वाळक जलोजी ॥ पण सोभे वन  
मांह ॥ सहु मिलि तस मायनेजी ॥ वयण कहे इम तां  
हि ॥ स० ५ ॥ वहेनसुत मोटो थयोजी ॥ विणसि ह  
वे इण ठाम ॥ जइ सेवो कोइ राजवीजी ॥- जिम वा  
धे तुम्ह माम ॥ स० ६ ॥ राज सेवाथी पामस्योजी ॥  
राज्य तणो फळ खास ॥ माय पुत्र लेइ करीज ॥ प  
माउल पास ॥ स० ७ ॥ सूरपाळ छे माउलोजी

॥ लूटे जन पद गाम ॥ ते पासे जाइ रसोजी ॥ करे  
 चोरिनो कर्म ॥ स० ८ ॥ देश लुटी वनमां रहीजी ॥  
 एके दिवस वनराज ॥ जमिण वेठो मायमिजी ॥ भाखे  
 घृत नहीं आज ॥ स० ९ ॥ लूखो अन भावे नहींजी  
 ॥ लूखे दुखे पेट ॥ लूखे काया लमथडेजी ॥ नासे  
 वळ बुद्धि नेट ॥ स० १० ॥ लूखे आउखुं धटेजी ॥  
 लूखे तृप्ति न थाय ॥ लूखे रातधो दुवेजी ॥ लूखे उध  
 म जाय ॥ स० ११ ॥ जिणे कारण शाखे कस्योजी ॥  
 घृत भोजननो सार ॥ नर मंमण जिम पाघडीजी ॥ स्त्री  
 मंमण शिणगार ॥ स० १२ ॥ भोजन मंडण घृत कस्यो  
 जी ॥ घृत कायानो नूर ॥ तपियांनां लोचन ठरेजी ॥  
 जो लहे घृत भरपूर ॥ स० १३ ॥ घृतसें लागे रुअमोजी  
 ॥ जेहवो तेहवो अल ॥ सालि दालि घृत विण न किआ  
 जी ॥ घृत जिमे ते धन्य ॥ स० १४ ॥ रुध बाळक स  
 हुने गमेजी ॥ घृत अमृत संसार ॥ श्रीजी ढाळे घृत भ  
 लोजी ॥ काहि जिन हरख विचार ॥ स० १५ ॥ सर्व  
 गाथा ५९ ॥ ढाळ ४ थी ॥

दुहा ॥ घृत पाखे भावे नहीं ॥ बेसि रसो वन  
 राय ॥ चाकर नर तेमी कहे ॥ घृत लावो किहां जा

यं ५ ॥ घृत लेवा नर संचर्या ॥ पणें पामे नहिं छे  
 क ॥ चिहुं दिशे पंथ निहाळतां ॥ पंथी दीगे एक १ ॥  
 छे वळियायत वाणियो ॥ घृतनी कूनी शीश ॥ देखी  
 रळियायत थथा ॥ तूतयो सहि जगदीश ३ ॥ ते पासे  
 नर जरू कहे ॥ भूंक कुमली शाह ॥ कुडलियो मूके  
 न्हों ॥ वळ बांध्यो तिणे ठाह ४ ॥ पांच तीर हुता  
 कने ॥ जागी नाख्यां दोंय ॥ तिर खेंची कहे आव-  
 ज्यो ॥ जो मांटीपण होय ५ ॥ सूनयो देखी तेहने ॥  
 नाथ ते ततकाळ ॥ स्याल तणो शो आशरो ॥ सिंह  
 जरे जिहां फाळ ६ ॥

ढाळ ॥ धर्म पखे कुण जीयनीरे ॥ शरणे राखणे  
 हार ॥ ७ देशी ॥ पाणे लेइ नाशी गद्यारे ॥ कायर थर्या  
 अपार ॥ एकलमे तिणे वाणियेरे ॥ नली मनावी हाररे ॥  
 १ सत्त न मूकीए ॥ सत्ते बाधे मामोरे ॥ सत्ते सुरनर न  
 मे ॥ सत्ते रीझे कामोरे ॥ स ० ५ आंकणी ॥ बांधी चां  
 ले मलपतोरे ॥ कायर नर हथियार ॥ काम पंमया ताकी  
 गलीरे ॥ तासु करी विचारोरे ॥ स ० ३ ॥ शंका धोती  
 मां हुवेरे ॥ मूढ गमावीरे लंज ॥ अँव गमी दशिग्रार



હુઠા ॥ ઘર સૂરા મઠ પંડિયા ॥ 'ગંમ ગમારી ગોઠ  
 ॥ સત્તા માહિ વોલાવિયો' ॥ ધટહટ ધૂજે હોઠ ૧ ॥

ઢાલ પૂરવનીજ ॥ જે સૂરા પૂરા હુવેરે ॥ તે જ્ઞા  
 લે હથીયાર ॥ જે નર કાર્યર નાસેણરે ॥ ફોકટ વ  
 હે તે જારરે ॥ સં ૦ ૫ ॥ સંત્યવંત તે વાણિયોરે ॥ સ્વા  
 ચી નાસે તોર ॥ નાસી તે ઘર પહુતલારે ॥ તિલજર ન ધ  
 ર્યો ધીરે ॥ સં ૦ ૬ ॥ વિનવિયો વનરાયનેરે ॥ ઘૂત કુડ  
 લિઓ જાય ॥ પણ વલ્લિયો તે અતિ ઘણુંરે ॥ ઘસો  
 ન જાયે રાયરે ॥ સં ૦ ૭ ॥ તતસ્વિણ તેડયો વાણિયો  
 રે ॥ આબ્યો જિહાં વનરાજ ॥ ઘૂત દેહને વોલિયોરે ॥  
 અરજ સુણો માહારાજરે ॥ સં ૦ ૮ ॥ રાજ્ય યોગ્ય તું  
 સાહિવારે ॥ વગડે ફરે કિમ ધીર ॥ રાજહંસ શોમે ન  
 હીરે ॥ વેઠો છીછર તોરરે ॥ સં ૦ ૯ ॥ ચતુર વચન તેહ  
 નાં સુણીરે ॥ વોલ્યો તંવ વનરાય ॥ નહિ પ્રધાન કોઈ  
 માહેરે ॥ જે કરે બુદ્ધિ ઉપાયરે ॥ સં ૦ ૧૦ ॥ તું જો મુ  
 જ પાસે રહેરે ॥ ઘાલું જમને વાથ ॥ સીંહ અને વઢી  
 પાસે રયોરે ॥ વલ્લતો કોહને હાથરે ॥ સં ૦ ૧૧ ॥ પાસે તે  
 રસો વાણિયોરે ॥ બુદ્ધિ તણો મહિરાણ ॥ ચોથી ઢાલ  
 પૂરી થશે ॥ કહિ જિનહરપ સુજાણરે ॥ સં ૦ ૧૨ ॥ સ.

वै गाथा ७७ ॥

ढाल ५ मी.

दुहा ॥ राज्य किस्यो विण वाणिया ॥ नदी की  
सी विण नीर ॥ साह कीस्यो विण दोकने ॥ लाज  
किसी विण चीर १ ॥ मद पाखे भेगल किस्यो ॥ तु  
री किस्यो विण तेज ॥ दोषक विण मडिर किस्यो ॥  
उंघ किसि विण सेज २ ॥ लूण विनाशी रसवती ॥  
कंठ विना स्यो गीत ॥ कंठ विना शी कामिनी ॥ प्री  
ति विना स्यो मीत ३ ॥ नंद मिल्यो वनरायने ॥  
प्रबल बुद्धि भंडार ॥ लखमीनो दोटो किस्यो ॥ ले  
स्ये राज्य अपार-४ ॥

ढाल ॥ नगर सुदर्शन अति भलो ॥ एदेशी ॥  
भुवन नृपना आदमी ॥ आव्या गुज्जर देश ॥ धन  
उघरावी एकठो ॥ कीधो सहुशुविशेश ॥ भु० १ ॥ सोनैया  
नाणो भलो ॥ लेइ लाख चोवीस ॥ खार सयां वा  
जी करी ॥ चाल्या धरिय जगीस ॥ भु० २ ॥ लूटो  
लियो तिण वाणिये ॥ जोमो तास विवेक ॥ सबल  
खजानो कर चढ्यो ॥ राख्या सुहृद अनेक ॥ भु० ३ ॥  
थाणा भाजी रायनां ॥ करी सबल संग्राम ॥ वद्धि अ

ने दळ आगळो ॥ करे स्वामिना काम ॥ भु० ४ ॥ दे  
 श सहु साध्यो जिणे ॥ वाळी निज गुजरात ॥ भु० अ  
 डराये सांनळयो ॥ फरी पूछी नवि वात ॥ भु० ५ ॥  
 गुज्जर देश तणो धणी ॥ हुओ नृप वनराय ॥ हरखी क  
 हे परधानने ॥ जोवो भूमीका कांय ॥ भु० ६ ॥ नयर अ  
 नोपम वासिअे ॥ रहे जंम मुज नाम ॥ परधाने गो  
 वाळियो ॥ ते तेनाव्यो ताम ॥ भु० ७ ॥ तुम्हने पुछुं  
 जाइओ ॥ चारो तुम्हे गाय ॥ भूमि भली होवे जी  
 हां ॥ तो अम्हने वतलाय ॥ भु० ८ ॥ वयण सुणी व  
 नरायनां ॥ तव बोल्हो गोपाळ ॥ भूमि भली सूरतमा  
 ॥ आपुं हुं भूपाळ ॥ भु० ९ ॥ नृप प्रधान गोवाळियो  
 ॥ आव्या माळि वन मांहे ॥ गोवाळ साथे कूतरो ॥  
 ससलो तिणे ठाह ॥ भु० १० ॥ नावो लुंमी देखिने ॥ धा  
 यो ससलो केम ॥ कौतिक देखि राजा हस्यो ॥ ते  
 फिरियो बहु वेम ॥ भु० ११ ॥ नासी छूटो कूतरो ॥ स  
 सिला हुइ जीत ॥ नगर भली इहां यापना ॥ करिशु  
 भली रीत ॥ भु० १२ ॥ ठाम जोइ घर आविया ॥ ते  
 हरख्यो भूपाळ ॥ कहे जितहरख ए पांचमी ॥ ते क  
 हि जो भलि ठाळ ॥ भु० १३ ॥ सर्व गाथा १४ ॥

ढाळ ६ टी.

दुहा ॥ शुभ दिन शुभ महुमत घडी ॥ शुभ व  
ळा शुभ वार ॥ नगर वसाव्यो नीतिशुं ॥ वार गाउ वि  
स्तार ॥ रुढो गढ रळियामणो ॥ मंदिर महल अवा  
स ॥ चोरसी चहुटा तिहां ॥ मंढार्यां अति खास २ ॥

ढाळ ॥ श्री नवकार जपो मन रंगे ॥ ९ देशी ॥ ५  
जुढ पाटण नगर मंडाव्यो ॥ जाणे सूरपूर वासजी ॥  
लोयण देखी विपति न पामे ॥ गुण केता कहू तास  
जी ॥ ५०१ ॥ सोनइया रुपइया केरी ॥ पने जिहां टं  
कशाळजी ॥ माणकचोके झवेरी परखे ॥ माणेक मो  
ती लालजी ॥ ५०२ ॥ दंतारा दोसीना चउटां ॥ वेचे  
वस्त्र अमोलजी ॥ सार पटोळां चीर सुरंगा ॥ नारी  
कुंजर ओळजी ॥ ५०३ ॥ नाणावटी तिहां नाणां परखे ॥  
सोनो घने सोनारजी ॥ गंधियाणां गांधीने हाटे ॥ वे  
से वैद अपारजी ॥ ५०४ ॥ फांद पंपोळे वेठा हाटे ॥  
विंवहारीया सुंकमालजी ॥ चावे पान हसे रळियाळा  
॥ जीमे चोखा दाळजी ॥ ५०५ ॥ माळी फुल वेचे तंवो  
ळी ॥ वेचे बीमां पानजी ॥ धी वेचे ते धीया सवला  
॥ फुडिया वेचे धानजी ॥ ५०६ ॥ चीतारा जेह चीव

आलेखे ॥ कंसारा कुंभारजी ॥ हस्वर गस्वरनी अ  
 ति मोटी ॥ शाला क्रीध अपारजी ॥ ५०७ ॥ त्रिपोळियो  
 पुर मध्य विराजे ॥ नाचे जिहां नट नाटजी ॥ रशि  
 या राग आलापे रुमा ॥ गुण कहे चारण जाटजी ॥  
 ५०८ ॥ वरण अढार वसे विगताळा ॥ सुखिया सघ  
 ळा लोकजी ॥ आस्या न करे कोई केहनी ॥ घरमां  
 सघळा लोकजी ॥ ५०९ ॥ चोरी करी परधन कोई न  
 ळीये ॥ कोई न पामे खातजी ॥ शुद्ध विवहारे सह  
 को चाले ॥ न करे कोई परतातजी ॥ ५१० ॥ राज  
 शुवन रचनाए किष्मां ॥ थरए देखि खुशालजी ॥ गो  
 ख सुरंगा जाळि अतुपम ॥ वेठा जिहां बहु ॥ दामजी  
 ॥ ५११ ॥ वाहनशाळा आयुधशाळा ॥ लेखशाळा दा  
 नशाळजी ॥ मांडवि राय करावी ॥ मोटी ॥ चडमुख  
 अति चोसालजी ॥ ५१२ ॥ पुरपाठण जाणे सुरपाठण  
 ॥ वनराय तिहां भूपाळजी ॥ कहे जिनहरष सह सां  
 जळज्यो ॥ ५ थई छट्टी ठाळजी ॥ ५१३ ॥ सर्व  
 साथा ५०९ ॥

छाळ ७ मी.

हुहा ॥ दाण तणी जिहां मांमवी ॥ मांमविआ न

२ जाण ॥ न्यायवि थइ वेठा लिये ॥ विविध वस्तुनो  
 दाण ॥ परदेशी आवे तिहां, ॥ लेंइ वस्तु अपार ॥ न्या  
 य रायनो देखिने ॥ मांमी तिहां वखार २ ॥ वाहन  
 आवी अति घणां ॥ लावी वस्तु अनेक ॥ दाण भरि  
 वेची तिहां ॥ व्यापारी सुविवेक ३ ॥

- ढाळ ॥ चोपाइनी, राग मारु मध्ये ॥ ए देशी ॥  
 सोनो रुपो सोस कथीर ॥ चांदो पीतळ मोती हीर ॥ दांत  
 दाढ सुंदर, कचकडा ॥ दाण तास थे आगळ खर्चा १॥  
 सालू अतलस, सूझ सक आत ॥ जयरव मिसरु नवनावि  
 आत ॥ चीनी पीतांबर चुंनडी ॥ नीलक कसवीने पांज  
 डी २ ॥ हिंग मरी साकरने डाख ॥ नान्ही मोटी हरमी  
 लाख ॥ लविंग एलची-मिरच कंकोल ॥ जायफळ  
 जावंत्रीने वोळ ॥ कस्तुरी केसर घनसार ॥ खांम टो  
 परां नहि कोइ पार ॥ वस्तु अनेक आवी तिहां सार ॥  
 आवी मांमवि दाण अपार ३ ॥ व्यापारी विणजारा घ  
 ण ॥ करे विणज देशावर तणा ॥ वासी वस्तु रहे नहि  
 काय ॥ आवी ते सघळी वेचाय ४ ॥ पुन्य खेवू पाट  
 ण केहेयाय ॥ दान मान सनमान लहाय ॥ मोठा वो  
 लांने दातार ॥ घर घर मांमया शत्रुकार ५ ॥ जिनव

रना उंचा प्रासाद ॥ घुरे दमामा घंटानाद ॥ देवळे शी  
 व तणां पण घणा ॥ रुडाने वळी रळियामणां ७ ॥ पोषध  
 शाळा नहि कोइ पार ॥ करे चोमास तिहां अणगार ॥ वा  
 मी वन सुंदर आराम ॥ वाव तळाव सरोवर ठाम ८ ॥  
 सहस्रलिंग सर सोहामणु ॥ उपम मानसरोवर जणुं ॥  
 खिर निर माहे कमळ सुगंध ॥ आवे अमर ग्रहेवा गंध  
 ९ ॥ सुदरी सजी सोळे शणगार ॥ रंमझम पाय नेवर  
 झमकार ॥ कंचणे कळस विमळ शिर धार ॥ पाणी ज  
 रया आयी नार १० ॥ नरनारी जळ किमा करे ॥ ज  
 लचर केल करे बहु परे ॥ दक्ष तणी तिहां जाति अ  
 पार ॥ कहेंता जेहनो न लहु पार ११ ॥ पाटणनो सब  
 लो विस्तार ॥ जाणे अमरपुरी अवतार ॥ कहि जिन  
 हरष दाळ सातमी ॥ नही धान धननी जिहां कमी ॥  
 १२. सर्व गाथा १२२ ॥

दाळ ८ मी

दुहा ॥ वादी वीर विचक्षणा ॥ व्याख्यानी सुवि  
 वेक ॥ वीणा वार्जिन्न वांसळी ॥ वेस्या विप्र अनेक १ ॥  
 वास व्यापारी वाणीया ॥ बोहरा वस्तु वखार ॥ वैद  
 व्यास वैश्वव घणा ॥ वेदी वरण अदार २ ॥ मूरति द्र

सा विश्नुनी ॥ वाणी विद्यावंत ॥ वेपधार ने वरतिया ॥  
 वणकर वसे अनंत ३ ॥ वरघोमा वर कन्यका ॥ वाजे  
 वारंवार ॥ वृषज वहेल ने वाहनी ॥ वाध वानर दरवार  
 ४ ॥ वाडो वन वळी वावनी ॥ विडलसिरी ने वेल ॥  
 वालो सरहो वीझणो ॥ वनिता गति गज गेल ५ ॥ व्याकर  
 णी वाचाल नर ॥ विनयी लोक विचार ॥ वीसामा धानक  
 जिहां ॥ विद्रुम मिलि अपार ६ ॥ विविध जिहां वक्षा  
 वळी ॥ वावत ववा एह ॥ ज्योयां जिण पुर पामी ७ ॥  
 ते पादण गुण गेह ७ ॥

ढाळ ॥ चंद्राओळानी देशी ॥ नर समुद्र पाटण  
 सहोरे ॥ मनुष्य न लहिये पारो ॥ ज्ञानी विण न शके  
 गणीरे ॥ जिम जळ पारावारो ॥ जिम जळ पारावार  
 अपार ॥ एक दिवश नारी भरतार ॥ जोवे वि  
 पणी तणो विस्तार ॥ झूला पमया संध्यानी वा  
 र ॥ जीनरे सरजारे ८ ॥ राजभुवन ते आइ ॥  
 राय भणी कहेरे ॥ स्वामी सुण मुज वात ॥ पुप हि  
 यमे दहीरे ॥ ए आंकणी ॥ रोती रमती विनवेरे ॥ ताहरा  
 नगर मझारो ॥ अम्हे दंपति झूलां पमयारे ॥ पाम्यो न  
 हों भरतारो ॥ पाम्यो नहों भरतार जोवंतां ॥ दुभर रा



ति गइ रोवतां ॥ नामे राणो छे गुण गेह ॥ जमणी  
 आंखे काणो वेह ॥ जी० १ ॥ एणे अहिनाणे मुज ध  
 णीरे ॥ निरतो करावो राखो ॥ पढहो वेगे वगामीघोरे  
 ॥ राणा काणा थाओ ॥ राणा काणा नामे थाये ॥ ते  
 आवो बोलाव्या सए ॥ रायतणे छे कोशक काम ॥ सह  
 आवी मिलज्यो एण ताम ॥ जी० ३ ॥ जमणी आंखे जे  
 टलारे ॥ राणा काणा नामो ॥ नवसें नवाणुं थयारे ॥  
 सह ए भेळा तामो ॥ सह भेळा थया नृप दरवारे ॥  
 राय बोलावी नारी ते वारे ॥ सोधी ले ताहरो भरतार  
 ॥ नृप वयणे सोधे ते नार ॥ जी० ४ ॥ फिरि फिरि जो  
 या सहुरे ॥ तोही न लाधे कंतो ॥ ए मांही नहीं मुज  
 धणीरे ॥ सांभळे नृप गुणवंतो ॥ सांभळे तुं गुणवंत नरे  
 शर ॥ फिरि खबर करो अलबेसर ॥ पढो वगाडयो  
 बीजी वार ॥ राणो काणो मिल्यो तेवार ॥ जी० ५ ॥ म  
 हाराय मुजने मिल्योरे ॥ हवे माहरो भरतारो ॥ रा  
 ये अचरीज पाम्योरे ॥ लहीए प्रमोद अपारो ॥ लह्यो  
 प्रमोद विनोद अपार ॥ एह नगर सहुमें सरदार ॥ न  
 र नारी संख्या नहीं कांय ॥ पाटणपुर एहवो कहेवा  
 य ॥ जी० ६ ॥ जिण नगरे सहु फुटरारे ॥ रुपे देवकुमा

रों ॥ प्रमदा जाणे पदमनारे ॥ अपछरने अनुमानो ॥  
 अपछरने अनुमान विराजें ॥ मृगनयणी सशिवयणी  
 छाजे ॥ अणहलियानो राख्यो नाम ॥ वास्यो अण  
 हलवाडो गाम जी०७॥ राय विचारी एटवुरे ॥ संजा  
 रुं गुरुरायो ॥ सीलंगसूरी तेडावीयारे ॥ वांदी गुरुना पा  
 यो ॥ वांदी गुरु मन मांही विचारी ॥ राजःदियो, मु  
 ज ए उपगारी ॥ गुण सेंभारयो तिणें भूपाळ ॥ वार  
 वार गुरु नमे त्रिकाळ ॥ जी०८॥ राय कराव्यो खां  
 तस्युरे ॥ पंचासरि प्रासादो ॥ कोरी अनोपन, कोरणी  
 रे ॥ वाजे घंट्या नादो ॥ वाजे घंटां भेरी, नफेरी ॥  
 मूरति पासजिणेसर केरी ॥ थापी महिमा जास विशा  
 ल ॥ कहि जिनहरप आठमी ढाळ ॥ जी०९॥ सर्व  
 गाथा १४० ॥

ढाळ ए. मी..

दुहा ॥ संवत आठ विमोतरे ॥ पाटण रचना की  
 ध ॥ परहय राज गयो थको ॥ वरष पंचासे लीध  
 १ ॥ साठ वरष वनराज नूप ॥ पाळ्यो पुहवी राज ॥  
 जैन धर्म दिपावियो ॥ कीधां उत्तम काज २ ॥ शेवा  
 भक्ति जिणंदनी ॥ कीधी अंग उल्हास ॥ साधु भक्ति

पण साचवी ॥ मनकित राख्यो पास ३ ॥ श्री जिन  
धर्म आराधिने ॥ पामी सद्गति जेण ॥ पाटणनो वन  
राज नृप ॥ हुओ गुणनी श्रेण ५ ॥

ढाळ ॥ नदी जनुनाके तीर उने दोय पंखीयां ॥  
ए देशी ॥ तस पाटे योगराज वळा पदवी लही ॥ त  
प्यो वरस पांवीस अरि दम्या सही ॥ खिमराज महा  
राज हुओ सुत तेहनो ॥ तप्यो वरस पंचवीस सुजश  
जग जेहनो ॥ १ ॥ भुअड सबळ भूपाल थयो तस पा  
टवी ॥ तप्यो वरस गुण बीस अकिरति वाटवी ॥ त  
स पाटे वझरीसीह थयो पाटण धणी ॥ राज कीयो प  
चवीस वरस किरती घणी ॥ २ ॥ रत्नादित्य थयो तस  
पाटे अनुक्रमे ॥ पनर वरस जिन राज मध्य रगे र  
मे ॥ सामंतसिंह अवीह पाटे थयो तेहने ॥ सात वरस  
नरे राज भोग थयो जेहने ॥ ३ ॥ सात पाट थया वर  
स एकशो लन्नुवे ॥ तिणे कुळे कोइ पुत्र पछोकड न  
वि हुवे ॥ जाणेजे ते राज्य लीयो ते परि वहुं ॥ भु  
अम तणो सुत करणराय शुणज्यो सहू ॥ ४ ॥ चद्रादि  
त तस पाट थयो चित गसगसो ॥ सोमादित नृप  
पाट पुण्ये लसो ॥ तस पाटे भुवनादित्य राय

ही ॥ तेहने पण वण पुत्र थया मन गहगही ॥५॥ रा  
 जकुंअरने दंडकं वळी अंभिराम ए ॥ निणहे कुंमरनां  
 नाम गुणे अभिराम ए ॥ राजकुमर जेठो ते परदेशे  
 भमे ॥ देवके पाटण जाइ सोमेश्वरने नमे ॥६॥ इश्वर  
 पूजा कीध तिणे विलासशुं ॥ नम्र वाणी थइ ताम व  
 यण भ्राखे इशुं ॥ अणहलनामे पाटण नगरअछे जिहां  
 ॥ राजकुमर चली जाह उमाह धरी तिहां ॥७॥ सामं  
 तसिंहनी वहेनसु तुजने परणशे ॥ इश्वरनुं ए वचन अ  
 सोध सही हुशे ॥ राजकुमर चाल्यो तिहांथी उतावळो ॥  
 आयो पाटण घीर शरीर सकोमळो ॥ इणे अवसर पा  
 टणनो राय रेवामिये ॥ अश्व चमी रमवाने जाये वा  
 मिये ॥ हंसगते रेवंव चलत सुहामणो ॥ वाहे राजा ताम  
 तुरीयने ताजणो ॥८॥ हाय हाय एम वाणी कुमर मु  
 ख उचरी ॥ पुळे सामतसिंह अश्व राखी करी ॥ हाय  
 हाय तुं कांइ शब्द एहवुं जणे ॥ नवमी थइ जिनहरप  
 ढाळ इणे अवसरे ॥९॥ सर्व गांध्या १५४ ॥

ढाळ १० मी.

दुहा ॥ राजकुमर कहे नृप शुणो ॥ महारी सुंदर  
 वात ॥ विगनी सुधरे पण सही ॥ संगतिथी ए सात १॥

शस्त्र शास्त्र बाणी तुरी ॥ विष्णु नरपति नार ॥ पुरुष वि  
शेष लही करी ॥ योगायोग विचार २ ॥ राजन तुं म  
तिवंत नर ॥ हय चाले शुभ्र चाल ॥ गुणवंता गुणवंत  
नी ॥ चावख घाव म घाल ३ ॥ राजा वयण शुणी इशां ॥  
जाण्युं ९ बुद्धिवंत ॥ राजकुमर कोइक छे ॥ कारण  
क्रिणही जमंत ४ ॥ घोना गति जाणे किशुं ॥ जो पामर  
नर होय ॥ पण ९ छे कोइ राजवी ॥ अवर न बी  
जो होय ५ ॥

ढाळ ॥ ओधव माधवने कहेज्यो ॥ ९ देशी ॥ दे  
खी बुद्धि बळ लवणिमा ॥ देखी रुप उद्धार ॥ निज ब  
हेन लीलावती ॥ परणावी तिणि वार ॥ १ ॥ जोज्योरे  
९ गति कर्मनी ॥ टाळी न टळाय ॥ सुखे दुख पाणी भो  
गवे ॥ तेतो कर्म पसाय ॥ जो ० २ ॥ राजकुमर लीलाव  
ती ॥ वीलसी सुखजोग ॥ उअरे बाळक उपन्यो ॥ रा  
णाने थयो रोग ॥ जो ० ३ ॥ मरण लक्षो तिण रोगथी ॥  
काढ्यो पेट विदार ॥ बाळक दीठो जीवतो ॥ कीधी  
तेहनी सार ॥ जो ० ४ ॥ राजा ९ दुख पामियो ॥ राणी  
मरण विजोग ॥ निशि दिन झुरे दुख करी ॥ जोवो क  
र्म संजोग ॥ जो ० ५ ॥ यतः ॥ कुवेशे घर भंजणो ॥ वू

हापण अनोथ ॥ दहे वापिकि भूमडी ॥ गइ पियारे  
 हाथ ॥ १ ॥ दाल पुर्वनी ॥ मूल नक्षत्रे जनमियो ॥ ना  
 मे मूलराज ॥ बाधे विया चंदज्युं ॥ आब्यो जीवन सा  
 जा ॥ जो ० ६ ॥ मदमाता प्राणजने ॥ माउल राज्य दीध  
 ॥ गतमद चेत लखो बली ॥ पाछो तिणे लीध ॥ जो ०  
 ७ ॥ खीज्यो कुमर मामा प्रते ॥ मारणनो करे दाव ॥  
 अवसर पानी मारियो ॥ दीधो खमगनो दाव ॥ जो ० ८ ॥  
 निज सीशे छत्र धराविओ ॥ लीयो मामानो राज ॥  
 गुण केने अवगुण कियो ॥ आणी कुळने लाज ॥ जो  
 ॥ ९ ॥ प्रेत ॥ प्रगति सुत मूरख नृपति ॥ मदपानी जा  
 मात ॥ विसहर बाघाने जाणही ॥ गुण कीधो सात  
 ॥ १ ॥ दाल पुर्वनी ॥ संवत नव अठ्ठाणवे ॥ दोघो मूल  
 राय ॥ चामुनराय तेहने थयो ॥ तेरे घरप दीपाय ॥  
 जो ० १० ॥ तस पाटे बल्लभ थयो ॥ राज पाळ्यो छ  
 मास ॥ दुल्लभ वरप अग्यारनी ॥ उपर खटमास ॥ जो  
 ११ ॥ श्रीमदेव थयो तेहने ॥ वर्ष वेतालीश ॥ निज कुळ  
 नो दीपक थयो ॥ पाळ्यो राज जगीश ॥ जो ० १२ ॥  
 वे राणी श्रीमरायने ॥ वीरलदे नाम ॥ उदयमती वी  
 जी सती ॥ रुपे अजीराम ॥ जो ० १३ ॥ सुत विकलदे



राय शुं मळियोरे लाल ॥ मीणलनो विवाह ॥ मे० जे०  
 ३ ॥ बीजो परणी नविं शकिरे लाल करण ॥ दीवो अप  
 मान ॥ मे० ॥ मीणल रुप न प्रामित्योरे लाल ॥ रुप दिना  
 नहिं मान ॥ मे० जे० ४ ॥ राय तेहनें अवगुणीरे लाल ॥  
 वात न आणें मुख ॥ मे० ॥ पति अपमानी कामनिरे ला  
 ल ॥ हीयडे साले दुख ॥ मे० जे० ५ ॥ काष्ट नक्षण क  
 रिशुं सहीरे लाल ॥ मीणल कीध विचार ॥ मे० ॥ आ  
 व सखी वळी तेहनोरे लाल ॥ वळथा थइ तैयार ॥ ने०  
 जे० ६ ॥ वात सुणी कुमरी तणीरे लाल ॥ राय करण  
 नी माय ॥ मे० ॥ पुत्र वचन मान्यो सहीरे लाल ॥ अ  
 पजश वात सुणाय ॥ मे० जे० ७ ॥ कुंआरी कांठे च  
 ढीरे लाल ॥ मीणल ताहरे काज ॥ मे० ॥ जगमां प  
 महो वागशेरे लाल ॥ क्षत्री कुळने लाज ॥ मे० जे०  
 ८ ॥ आपण जेहने आवरिरे लाल ॥ मुंकीजे किम तेह  
 ॥ मे० ॥ झूमी पण पोता तणीरे लाल ॥ झटकी न दि  
 जे छेह ॥ मे० जे० ९ ॥ परण्यो पुत्र मपांतरोरे लाल ॥  
 राखो रजवट रीत ॥ मे० ॥ जाणो तिम करज्यो पळी  
 रे लाल ॥ धरज्यो प्रीत अप्रीत ॥ मे० जे० १० ॥ वड  
 रंवार मायमी कहेरे लाल ॥ परण्यो करण सुभूप ॥



मे० ॥ मीणल सीलवती सतिरे लाल ॥ सकळ कळा  
 नहि रुप ॥ मे० जे० ११ ॥ राय न मानी ते भणारे ला  
 ल ॥ मीणल, दुख न माये ॥ मे० ॥ भोजन आभरण  
 छे भलारे लाल ॥ कंत विना न सुहाय ॥ मे० जे०  
 १२ ॥ मात, पीता वंधव सहुरे लाल ॥ परियण ने, परि  
 वार ॥ मे० ॥ एहनो सुख शा कामनोरे लाल ॥ जो नहि  
 सुख भरतार ॥ मे० जे० १३ ॥ कंत मानी ते कामिनिरे  
 लाल ॥ तेह, सहागिणी नार ॥ मे० ॥ कंत न माने जेह  
 नेरे लाल ॥ धिग तेहनो अवतार ॥ मे० जे० १४ ॥ पु  
 रुप भणी, नारी घणीरे लाल ॥ नारीने नर एक ॥ मे० ॥  
 ५ जिनहरप अग्यारमीरे लाल ॥ ढाळ थड सुविवेक ॥  
 मे० जे० १५ ॥ सर्व गाथा १८२ ॥

ढाळ १२ मी.

दुहा ॥ मुजने पितम परिहरि ॥ अहनिश, दुखमें  
 जाय ॥ मंत्री आगळ सह कसो ॥ हिव दुख संझो न जा  
 य ॥ १ ॥ मंत्री कहे माता सुणो ॥ चिंता म करो काइ ॥  
 पुण्ये सह थाशे भलुं ॥ पुण्ये कष्ट पुजाय ॥ २ ॥ पुण्ये मन  
 वंछित मिले ॥ पुण्ये भोग सयोग ॥ पुण्ये भागे आपदा ॥  
 पुण्ये देह नीरोग ॥ ३ ॥ पुण्ये माने महिपती ॥ पुण्ये

कंत॥पुण्ये ताहरे मानजी॥भागी जाशे चिंत॥४॥

ढाळ॥ महा माइ इमरु 'वाजे॥९ देशी॥किण  
हिक अवसर नाटंगी॥जाणे चित्र 'लिखी झीणंगीहो॥  
महाराय मंदिर आवी॥कर 'लेइ वीण 'वजावीहो॥मं०  
१॥९ छांकणी॥जाणे अपेंछरनी अनुहारी॥घंता  
निज हाथ संमारीहो॥मं०॥मुख अनुपम राग आला  
'पे॥कामीनां 'हियनां कापेहो॥मं०॥मुनीजननां ध्यान  
चुकावे॥सुरपतिने पण रिझावेहो॥मं०२॥राजा रंज्यो  
तिण रागे॥लीणो नाटकणीं आगेहो॥मं०॥राय कर  
णं तणो चित्त पोथ्यो॥निजं चित्त सु राय चित्त चो  
श्योहो॥मं०३॥अक गायन ने वळी नारी॥सापणीने  
पंख समारिहो॥मं०॥नृप आकुळ व्याकुळ धाये॥तेपा  
खे रसो न जाळेहो॥मं०४॥मंथी तेनी एम जासे॥नट  
वी मुंको मुज पासेहो॥मं०॥इण शुं महारो मन जा  
ग्यो॥तुम्हे महारो ए दुख भागोहो॥मं०५॥मंत्रि मन  
मांही विचारे॥राजा पदयो नटूइ लारेहो॥मं०॥नीची  
जाते नाटकणी॥उत्तमनी ए नही करणीहो॥मं०६॥मं  
थी मीणल संभारी॥ग्रहणे वस्त्रे शणगारीहो॥मं०॥रा  
णीने बोल शिखावी॥राजा पासे मोकलाविहो॥मं०७॥

नीद मळी सेज न धार॥अरथी नवी दोष विचारेहो॥  
 म०॥ शुख्यो नर राक न इच्छे॥कामी नर जाति न  
 पुछेहो॥म०८॥पुछ्यो नही कुण छे जाते॥भोगवी ते ते  
 णी रातेरे॥म०॥मीणल कर मुद्रमी मागी॥ राये दीधी  
 थइ अनुरागिहो॥म०९॥थयो प्रात संम सुखंदाइ॥मी  
 णल निज मंदिर आइहो॥म०॥चितातुर मत्त थयो  
 राजा॥लाग्या मुज पातिक ताजाहो॥म०१०॥इ अ  
 कुळीणी मुज सुधो॥कागिणिशु हंस विलुधोहो॥म०॥  
 भुमणशु मृगपति रमीयो॥निज वश महातम गमीयोहो  
 ॥म०११॥पासी ल्युंकि विष खाऊ॥के कुआ मांहि  
 झेपापाकंहो॥म०॥मनमें एम राय विचारे॥जिनहरप  
 ढाळ थइ वारेहो॥म०१२॥सर्व गाथा २०८॥

ढाळ १३-मी. १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

दुहा ॥ पस्तावे मनमें नृपति॥अन पाणीनो त्या  
 ग॥मंत्रि तेडीने इम कहे॥पापी हणवा लाग॥१॥रे भूर  
 ख ते माहरो॥कीधो लुणहराम॥मुढ हुओ हुं कामव  
 श॥ते वार्यो नही ताम॥२॥मन्त्री कहे करजोडीने॥री  
 श म करज्यो तात॥मीणल छे छामी तुमे॥ते ओवी  
 छे रात॥३॥एह वचन नृप सांजली॥हरख्यो चित्त म

झारं॥भूपण वस्त्रादिक किंयां॥वाध्यो मान अपार॥४  
 रात्र प्रधान प्रसंशीओ॥मागी निज निशान॥आणी दी  
 धी मुद्रडी॥सुशी ययो राजान॥५॥

॥॥ ढाळ ॥ छानो ने छपतोरे वाल्हा मारा किहो र  
 हो॥९ देशी॥कामण्डुं कीधुरे सोकरुली मिलीरे॥राणी  
 मीणलः केरे काजरे॥मासमजे पूरे प्रसव थाए नहीरे  
 ॥वागी वागी देशमला मांही अवाजरे ॥का०१॥ वार  
 वरघ इणि परे उदरे रझारे॥वाधे वाधे ततो मांही वाळ  
 रे॥वेदना व्यापारे मीणल नारीनेरे॥वोहिली अगतीनी  
 जाणो झाळरे॥का०२॥तेणे दुखेरे काष्ट भक्षण करेरे॥  
 विष हलाहल खायेरे॥पासीरे लेइ प्राण तजुं सहारे॥  
 मांमद्या मरण उपायरे॥का०३॥मंत्रवादी नर तेढया  
 गारमीरे॥तेमया तंत्र यंत्र जाणरे॥तेहनो कोइरे भेद ल  
 हे नहीरे॥वेदना थइ अपमाणरे॥का०४॥रात्र कहरे  
 राणी द्वारेका चलोरे॥मरण भलो तिण वामरे॥मीणल  
 चलीरे नृप वचने करीरे॥आवी आवी कारेली गामरे॥  
 का०५॥बुद्धिसुंदर नामे योगी मिल्योरे॥कागळ लिखा  
 व्यो तेणि वाररे॥करण राजाने जइ कहेजो इशारे॥मी  
 णल जण्यो छे कुमाररे॥का०६॥कागळीयो जइ पा

टणना रायनेरे॥पहुचाव्यो हाथोहाथरे॥कागळे वांची  
 ने राजा हरपीओरे॥नवनिधि पामी अविचळ ओथिरे  
 ॥का०७॥पूर सघळी वातडो विस्तरिरे॥तीरण वांध्यां  
 घर घर वाररे॥कामण जेवरे सोकनी काढिनेरे॥पुत्र  
 जायों तैणी वाररे॥का०८॥तेटले वधाइरे स्वरी दीवी  
 रायनेरे॥राय घरे थैया जयजयकाररे॥सोकर्मजीनारे  
 काळां मुख थयां साजळोरे॥दुरजन थयां संहें अश्वा  
 ररे॥का०९॥घर तेमावी मोणल कामनोरे॥नयणे दीठो  
 पुत्र सुरंगरे॥राये ने कीधारे ओळव अति धणारे॥नाम  
 ठव्युं जेसंगरे॥का०१०॥राय सुत वांधेरे रुप कळा गु  
 णेरे॥पूर्वे मनोरथ मायरे॥ढाळने थइरे एतो तैरमीरे॥  
 कहे जिनहरप सुहायरे॥का०११॥सर्व गाथा २२४॥  
 १ ढाळ १४ मी ।

दुहा ॥ करणराय अन्याय तंजि॥पाळे राज अ  
 स्वम॥सात ढंडा दुरे कियो॥जांस प्रताप मचम॥१॥डं  
 ड डांड डेविजिके॥मर दुरे कियो डज॥काढ्या माकि  
 ण माकिणा॥थाप्यो कीरती थंज॥२॥ओगणविश व  
 र्षा लगें॥पाळयो जेण सुराज॥मरण करण राये ल  
 ल्यो॥किधां जिणे निज काज॥३॥पाट ठव्यो जेसगदे॥

सहु मिलिने नाम॥वर गुज्जरधर भोगवे॥सिद्ध धरावी  
नाम॥४॥

ढाळ ॥ इमर-आंवा आंवलारे॥९ देशी॥इण अ  
वसरे वीप पाटणीरे॥तीरथ करेवा जाय॥हीमाळे चढि  
या जइरे॥तीर्थ भुंइ फरसाय॥१॥सज्जन सह सुणज्यो  
अचरीज वात॥एतो सुणतां अधिक सुहात॥एतो मो  
टाना अवदात॥सज्जन० ९ आंकणी॥अचजनाय जो  
गी तिहारे॥सिद्ध बुद्ध जोगिणि साथ॥ते दीठो तिहां ब्रा  
ह्मणेरे॥वांघा-चरण सनाथ॥स० ५॥तिण जोगी बोला  
वीयारे॥किहांघी आब्या तुम्हे विप्र॥करजोमी आग  
ळ,रहीरे॥बोल्या घामव विप्र॥स० ३॥पावण सिद्ध जेसं  
दरे॥त्यांघी आब्या अम्हे जोइ॥सिद्ध नाम श्रवणे सुखो  
रे॥खीजि जोगिणि,दोइ॥स० ४॥विरुढ धरावी एहवुरे॥  
जोइजे जइ,तेह॥कदलीपत्र बेसी करीरे॥अधर रही  
आवेह॥स० ५॥सिद्धराय पाटण,धणीरे॥वेवो छे दरवार  
॥आवी तिहां ते जोगिणिरं॥दीठो, राय ते वार ॥ स०  
६॥जोगिणि९ बोलावीयारे, ॥ सिद्ध धरावे नाम ॥ सि  
द्धाई देखण जणारे॥ अमे आवी इण काम ॥स० ७॥  
आंकाश अहनिशि जमेरे॥जास न देखे कोइ॥अए सि

छ पात रहीरे॥सिद्ध कहावे सोइ॥स० ८॥राजा चिंता  
 तुर थग्योरे॥शो उत्तर देउं आज॥सुजट सूर मुज छे  
 घणारे॥ते खावाने काज॥स० ९॥उत्तर आपे एहनेरै॥  
 तेह न डीसे कोय॥मधुर वचन राजा कहेरे॥सुण यो  
 गिणि दोय॥स० १०॥घणी जूमि लाघो तुम्हारे॥आज  
 रहो सुखवास॥बहाणे उत्तर आपशूरे॥पण मनमांहि उ  
 दाश॥स० ११॥सूर सुजट मन चिंतवीरे॥हा ना कस्यो  
 न जाय॥किम जिपाये योगिणारे॥नाम खरो किम था  
 य॥स० १२॥इण असर पूरमा वसेरे॥साकरीओ हरपा  
 ल॥सज्जन सुत छे तेहनोरे॥सुदरने सुकमाळ॥स० १३  
 ॥वाप नणी तिणे पुछीयोरे॥नृप चिंता किम जाय॥  
 कहे हरपाल आगळ हुवोरे॥करण सबळ महाराय॥  
 स० १४॥तिणवारे कौतक थयारे॥मे वार्या छे ताम॥  
 इहां छे बुद्धे जीपणोरे॥तेतो नही किण पास॥स० १५  
 ॥बुद्धे कारज निपजेरे॥वळे न थाये तेह॥ढाळ थइ ए  
 चउदमीरे ॥ कहि जिनहरष सनेह ॥, स० १६, ॥ सर्व  
 गाथा २२४ ॥

ढाळ, १५ मी. ।

दुहा ॥ नृप नान्हो जेसंगदे॥गरढो ना

'निजे सरिखा तेहने गमे॥इहां बोल्यो न सुहाय॥१॥  
 बात करे बेटो पिता॥मंत्री नीसुणी बात॥राजा आग  
 ल वीतव्या॥तास केथन सुविख्यात॥२॥तेमी लावा  
 नृप कहे॥जिम तिम करी हरपाळ॥मुहुतो पोहतो तास  
 घरे॥बोलाव्यो ततकाळ॥३॥राय बोलावे शंढजी॥सा  
 करीयो कहे ताम॥महाराय जेसंगने॥भुजसे 'किस्यो  
 काम॥४॥हुंतो ह्ये गरढो थयो॥बोल्यो पण नवि जा  
 य॥नाक चुए लाळा 'पमै॥काम न कोइ थाय॥५॥ढी  
 ल गळ्यो मस्तक पळयो॥काने वेहेरो खुंथे॥कनि जा  
 गी लागी जरी॥दुखे सघळी संध॥६॥ते माटे तुजने  
 कहुं॥हुं गरढो नृप बाळ॥अणगेमेता 'शुं गोठमी॥गुण  
 थाये विसराळ॥७॥

ढाळ ॥राजा जो मिले॥ए देशी॥तेह भणी तु  
 न्हे कहेज्यो जा॥भुजथी गरज सरे नहिं कां॥राजा  
 न कहो॥ए माहरी अरदास॥रा०॥मंत्री केहे सांगळो  
 हरपाळ॥रुढ जेइ रहे तेतो बाळ॥रा०॥राजा तस्कर  
 मृगपति साप॥बाळक कवि छेडयां संताप॥रा०॥शस्त्र  
 पाणीनो किस्यो विसास॥साते रुढयां करे विणास॥रा०  
 २॥शिखामण देखी हरपाळ॥तुं बुद्धिसागर हुंतो वा



ल॥रा०॥वांकी विसमी टाळणहार॥चालौ शेठ म ला  
 वो वार॥रा०३॥वयण इशां सांभळीने शाह॥श्री जि  
 न पूजा अधिक उछांह॥रा०॥भोजन भक्ति मंत्रीनी  
 कीध॥पान सोपारी फोफळ दीध॥रा०४॥लेइ हरपा  
 ल आव्यो मंत्रीश॥हरख्यो जेसंगदे अवनीश॥रा०॥  
 सीश नमावी बेठो पास॥काको कहि बोलाव्यो तास॥  
 रा०५॥मुख मजके बोल्यो हरपाळ॥कामे काको क  
 हे भूपाळ॥रा०॥राखी ताहरी सबळी लाज॥जाणीजे  
 छे कोइक काज॥रा०६॥यतः ॥ साते सायर हुं भ  
 म्यो॥जंबुदीप पड्ठ॥काम विहुणी पीतमी॥करतो कोइ  
 न दीव॥१॥स्वारथ सबकुं वल्लहो॥पर वल्लहो नहीं को  
 इ॥वछ धेनुने परिहरो॥जो थण दुध न होय॥२॥ढाळ  
 पुर्वनी ॥जेसंग कहे सांभळ तुं शेव॥सहु बुद्धिवंता ता  
 हरे हेठ॥रा०॥कारज तुजथी थाये जेह॥मुज थकी  
 नवि थाये तेह॥रा०७॥तुजथी लाज रहे मुज आज  
 ॥तुज विण किणही न सीझे काज॥रा०॥योगिणि पू  
 छे तास जवापा॥तुमथी थाये तेह साताव॥रा०८॥बोल्यो  
 साकरीयो सीरताज॥म करो चिंता कांइ महाराज॥  
 रा०॥चंद्रहास दिवरावो लोह॥मूर्ति करावो अधकी सो

द॥रा०ए॥साकरनी करिशुं तरवार॥लांओ सजा मांहे  
 जेणी वार॥रा०॥अम्हे कहुं तव स्वाज्यो तेह॥कपट  
 विद्यानो अवसर॥ह॥रा०१०॥आठें दीवशनी अवधी  
 दीध॥घरे आवी सहू कारज किध॥रा०॥अन्य पुरुष  
 हाथे हथीयार॥देश शीखाव्यो सहू विचार॥रा०११॥  
 राज सभा आव्यो हरपाळ॥वेठी योगिणि सजा विचा  
 ल॥रा०॥जोवा लोक मित्या तिण ताळ॥'वोल्या'सो  
 करीयो ततकाळ॥रा०१२॥कळ्या दिखावो मोटा सोय  
 ॥जिम योगिणि निज धानक जाय॥रा०॥सिद्धि बु  
 द्धि जिम थाये खुत्याल॥जोक मित्या सहू देखे खुयो  
 ल॥रा०१३॥सिद्ध नाम तहारो तो साच॥जो योगिणि  
 कहे निज मुख वाच॥रा०॥पूगी थरु ऐ पनरमी दाळ॥  
 हरखीत चित जिन हर्ष भूपाळ॥रा०१४॥'सर्व'गो

ढाळ १६ मी.

रा०१५॥सिद्धराय वोल्या तिस॥कळो अनेक क  
 हाय॥कुण विद्या देखानिये॥जे तुम्हा आवे दाय॥१  
 ॥साकरीयो हरपाळ हवे॥बहु परे वोल्या वाडो॥लोह  
 भक्षण विद्या प्रमो॥अणदीवी देखान॥२॥जोह अणवो

नृप, कहे॥ पुरु, तुमचो कोम॥ एक सुभट आंव्यो तिसे॥  
 वोल्यो बे करजोम॥ ३॥ कल्याण कटकपुरतो धणी॥  
 राजा पदम प्रसार॥ गज घोमा तरुवार, ९॥ भेट मोकली  
 सार॥ ४॥ ॥ कागळीयो करता रुजणीशी परे लिखुरे॥ ९  
 देशी॥ बुद्धि प्रसाये जीने सहने वाणीयारे॥ करे पुण्यनां प  
 ण काज॥ वणिक विहुणो राज न चाले सर्वथारे॥ जोइ  
 रावणुं राज॥ बु० १॥ राय सभा मांही वेता तिहां तिणे अ  
 वसरेरे॥ हाथे मही तरुवार॥ चंद्रहारय ए स्वमगं प्रसंसे राज  
 वीरे॥ जोवे वारोवास॥ बु० २॥ किशुं वखाणे राजन ऐह स्व  
 डग मणीरे॥ कौतक कोइ दिखाज॥ ॥ जोह अणावो रा  
 य कहे हरपाळनेरे॥ ए तरुआर संभाळ॥ बु० ३॥ झळहळ  
 तो काढी राजा जक्षण करेरे॥ साकसियो तव उठि॥ सा  
 करनी गोढे सगळो चाइ गयोरे॥ जइ झाली तव मुंठि॥  
 बु० ॥ तिद्धि बुद्धिने मुंठि समर्पो रायजीरे॥ हवे एटली ए  
 खाय॥ अचरीज जोवे लोक सह परस्वद तणारे॥ कहे एह  
 बुं तव राय॥ बु० ५॥ मे बोटी ए मुंठि न आपुं एहनेरे॥ जो  
 गिणि एह विचित्र॥ कहे हरपाळ अशुची लागे नही  
 लोहदेरे॥ लोह सदा ए पवीत्र॥ बु० ६॥ तोही नीर पखाळी

आपो एहनेरे॥करे सुचि हाथ विध॥स्वाओ के तजी  
 मान नृपति पाए पडोरे॥कहो जेसंगदे सिध्द॥बु० ७॥  
 हवे विचारे मनमां इणि परे योगिणिरे किणी परे लोह च  
 वाय॥ए आगळ अले हारी सहुये देखतारे॥सिध्द कहावे  
 न्याय॥बु० ८॥जेसंग नृपने पाये लागी योगिणिरे॥सि  
 ध्द खरो तुज नाम॥तुं सिध्दराय प्रताप अधिक कहे  
 योगिणिरे॥पहुति आपणे ठाम॥बु० ९॥नगरशेठ था  
 प्यो हरपाळनेरे॥हरख्यो जेसंगराय॥हयगय पायक  
 लायक लेइ चालीयोरे॥धार नगरमे जाय॥बु० १०॥  
 मालवपति जेणे नरहर राजा बांधीयोरे॥आण मनावी  
 तास॥मदनभ्रम नृप मोह बंधक पाटण थणीरे॥ते पण  
 कीधो दास॥बु० ११॥जेसंगदे वश कीधा वयरी राजी  
 थारे॥जरीधा द्रव्य मंडार॥साजनदे प्रधान मिल्यो ते  
 पुण्यथीरे॥सुणज्या तास विचार॥बु० १२॥ऊंदिरा गाम  
 तिहां साजनदे शेवियोरे॥कर्म निरधन थाय॥पेट जरा  
 इ पण थाए अति दोहिलीरे॥दुःख मांहि दीन जाय॥बु०  
 १३॥शुख तणे दुःखे दुःख थाये ते दोहिलीरे॥दोहिला  
 नान्हा बाळ॥कहे जिनहरप थइ ए पुरी सोळमीरे॥इणे  
 अधिकारे ढाळ॥बु० १४॥सर्व गाथा २८३.

दुहा ॥ तेहने कहे कुळ देवता ॥ साजन सांजळ  
 वांत ॥ प्रभुता पामीश तुं वणी ॥ इहांथी जा खंभात ॥  
 १ ॥ मुर वाणी सुणी चालीयो ॥ गयो सकरपुर गान  
 ॥ भावसार रंगी घरे ॥ भामो देइ रखो ताम ॥ २ ॥ तेह  
 ने घेर रहेतां थकां ॥ केटलाएक धीन जांय ॥ घर  
 भुंइथी धन पासोयो ॥ पुण्य योग जव थाय ॥ ३ ॥ सा  
 जनदे धन देखीने ॥ चिंते मनमां ताम ॥ ए धन नहीं  
 मुज भाग्यनो ॥ माहरे कोइ न काम ॥ ४ ॥ मुंकी रंगी  
 आगळे ॥ कनक कढाई तेह ॥ रंगी कहे सुण शेठजी  
 ॥ तुं उत्तम गुण गेह ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ वात म काढोहो घत तणी ॥ ६ देशी ॥  
 शेठ सुणो मुंज धीनती ॥ देव दियो तुज एहोरे ॥ ७ ध  
 न ताहारा भाग्यनो ॥ भौगव तुं ससनेहोरे ॥ शे ० १ ॥ ८  
 धानिक में पूरवे ॥ बार खणी एकवीसोरे ॥ तोही में  
 पाम्यो नहीं ॥ एहनी किसी जगीमोरे ॥ शे ० २ ॥ निर्ध  
 न धन देखी करी ॥ मुख्यो भोजन पामीरे ॥ वश रा  
 खे निज मन भणी ॥ ते मोटा जग नामीरे ॥ शे ० ३ ॥  
 कनक कढाई लेइ करी जेंसंगदे नृपपासेरे ॥

आगळ धर्यो ॥ सह्य वृत्तांत प्रकासेरे ॥ शें० ४ ॥ व्यवहारा  
 शुद्ध श्रावक जणी ॥ कल्पे नही ए दामोरे ॥ ए धन  
 नो राजा धणी ॥ खुशी थयो नृप तामोरे ॥ शें० ५ ॥ ध  
 न धन एहना सत्वने ॥ राय करे गुण ग्रामोरे ॥ गुणसागर  
 जाली करी ॥ मंत्री थाप्यो तामोरे ॥ शें० ६ ॥ देश दीयो  
 शोरत तणो ॥ मया करी महारायोरे ॥ बार वरप गुंर  
 नोगवी ॥ झाझो माल उपायोरे ॥ शें० ७ ॥ नृप धन नि  
 ज हाथे कर्यो ॥ साढी बारह कोमोर ॥ साते खेचे वा  
 वरे ॥ खरचे होमाहोमोरे ॥ शें० ८ ॥ एक दीन गार उप  
 रे चढयो ॥ नेमि जिणंद झुहारयोरे ॥ भाव जगति जु  
 गति जली ॥ पूजी पाप निवारयोरे ॥ शें० ९ ॥ चैत्य प  
 ड्या दीठा तिहां ॥ मनमें थयो विखवादोरे ॥ धिग धि  
 ग मुज्ज जिंवित जणी ॥ जो न करावुं मासादोरे ॥ शें०  
 १० ॥ जिणेंद्वारं करावतां ॥ आठ गुणो पुण्य थायो  
 रे ॥ धन खरचुं इहां नृप तणो ॥ एहिज लाफ उपा  
 योरे ॥ शें० ११ ॥ थानारुं ते थाइयो ॥ पुन्ये विघन पु  
 लास्योरे ॥ पुन्य थको थास्ये जळुं ॥ पुन्ये पाप ठेला  
 स्योरे ॥ शें० १२ ॥ श्री जिन गृह पापाणमें ॥ तुरत करा  
 यो तामोरे ॥ दंड कळस तोरण धजा ॥ अति ऊंचो

अग्नीरामोरे ॥ शे० १३ ॥ झळको सूरजनी परे ॥ मेरु  
 शिखर अवतारोरे ॥ इंद्रभुवननी उपमा ॥ नहीं तीन  
 भुवन मझारोरे ॥ शे० १४ ॥ चिहुंगति घमण निवारवा ॥  
 इस्यो भुवन निपजाव्योरे ॥ लाख गमे धन खरचियो  
 ॥ मनमां नृप भय आव्योरे ॥ शे० १५ ॥ पर द्रवे निप  
 जावियो ॥ श्री जिन भुवन रसाळोरे ॥ इम जिनहर  
 प विचारियो ॥ मंत्री सतरमी ढाळोरे ॥ शे० १६ ॥ सर्व  
 गाथा ३०४ ॥

ढाळ १८ मी.

दुहा ॥ साजणेंद मुहुते कियो ॥ ते न करे कोइ  
 काम ॥ जिन मंदिर निपजाविने ॥ राख्यो अविचळ  
 नाम ॥ १ ॥ राजा लेखो पूछशे ॥ देश किस्वो जवा  
 प ॥ पथम विचारी राखिये ॥ तो न हुवे संताप ॥ २ ॥  
 इशुं विचारी आवियो ॥ जिहां वणथळी गाम ॥ तिहां  
 बमा विवहारिया सहु मेल्या तिण वाम ॥ ३ ॥

ढाळ ॥ आख्याननी देशी ॥ राग केदारो ॥ मि  
 ल्या सवळ महाजन सहु ॥ करमीरे धरमी पुन्यने  
 काम ॥ सिवजी सुंदर सोमजी ॥ रविजीरे नरहर शिव  
 क साम ॥ ९ चाल ॥ सामजी गणपति गोविंद ॥ ग

गजी गोवाळ ए॥श्रीपाळने तेजपाळ सूर्ये ॥ भैमजी पु  
 एषपाळ ए ॥ रतनजी रिणमल्ल राणा ॥ रामजी रिणधीर  
 ए॥धनो ने धनसार धनजी ॥ हरो हापो हीर ए ॥ भै  
 घजी ने भाहवो वळी॥मदन मथुरादास ए ॥ नरसिंघ  
 नारद नानजी ॥ नरपाळ ने हरदास ए ॥ बाघजी घ  
 रसिंघ वीरा ॥ विमळसी वरघमान ए ॥ कमळसी  
 ने कृष्ण केशव ॥ देवजी दील दान ए ॥ जयचंद जी  
 वो अमर अमियो ॥ देवजी देवचंद ए॥खीमजी भज  
 श्रीमजी ॥ देवराज ने आणद ए ॥ विसराम मंगळ मा  
 लजी वळी ॥ अवर सहु तेमावीया ॥ पुन्य काजे ध  
 रीय उलट ॥ अंग रंगे आविया ॥ मंत्रीश बोल्यो  
 श्रावको॥तमो सांजळो मुज वात ए ॥ भै कीयो छे का  
 ज पुण्यनो ॥ राय करशे घात ए ॥ रायनो भै धन ख  
 रच्यो ॥ एक चितमां चित ए ॥ करुं जिम तुमे कहो  
 मुजने ॥ तुमोछो पुण्यवंत ए॥इशुं सुणी विवहारीया॥  
 सहु कहे वचन सनेह ए ॥ धन बहु तुम पुण्य जोगे॥  
 तजो चिता एह ए ॥ सुविचार मनमा धारीने ॥ बढ  
 घडा तिहां विवहारिया ॥ आणी कागळ नाम सहुनां  
 ॥ लिख्या जे उपगारिया ॥ करे हवे विचार मांहो



माहि ॥ धन विराम ए ॥ कोटि धजा पण जीव न  
 चले ॥ कृपण केरु किराम ए ॥ तुच्छ दाता घणा की  
 रपी ॥ एहने द्यो शीखे ए ॥ परं द्रव लाफालोल क  
 रीने ॥ हवे मागे भीख ए ॥ कंदुक एहवांचने बोलो ॥  
 गुणे जेह गभीर ए ॥ तास वारी तेह रोखे ॥ एहे मर्म  
 कहो विर ए ॥ धन्य एहे नर एहे समवर्मा ॥ नही को  
 बळवंत ए ॥ आपण पासे आविया ए ॥ जाणने पुण्य  
 वंत ए ॥ एहे धोरी धवळ सरिखो ॥ नही ए गळिंधार  
 ए ॥ जिनहरप ढाळ अठारमी ॥ ओखेन जाति संगी  
 रा ॥ १ ॥ माजने गाथा १५ ॥ सर्व गाथा ३२१ ॥

ढाळ १९ मा ॥

दुहा ॥ धणिक एक आव्यो तसे ॥ साधिरियो  
 तिहा भीम ॥ मळगूंगळिओ निघमो ॥ दाता माही सीम  
 ॥ १ ॥ विनय करीने बोलोयो ॥ केही काजे बेव ॥ मो  
 टा महाजन शेतीया ॥ भेळा थई एगठ ॥ २ ॥ पुन्य का  
 ज धन्य जोइए ॥ तो मुज देख्यो काम ॥ महारी श  
 क्ति हुं करिश ॥ हुं पण आपीश दाम ॥ ३ ॥ केटलाए  
 क हडहड हरया ॥ हवे थासे सह काम ॥ ऊठ कोनि  
 केरो घणी ॥ आव्यो एणे ठाम ॥ ४ ॥ जे हुता ॥

खमा ॥ स्वागति कीधी तास ॥ आदर देई इम कहें ॥  
 वेसो आवी पास ॥ ५ ॥ १-१२० ॥ १-१२० ॥ १-१२० ॥  
 दाळ ॥ ते मन मोह्यो नेमजी ॥ ए देशी ॥ श्री  
 जिन मंदिर कारणे ॥ मंमावे सहु दाम ॥ जीम तणे हा  
 थे दियो ॥ कागळ वांचे ताम ॥ श्री ० ६ ॥ उठो खोळी  
 ज पायरयो ॥ ए घो मुज शिर भार ॥ तुम सुसोंए  
 उपामशु ॥ न करो कोइ विचार ॥ श्री ० ७ ॥ तुम्हे मो  
 टा विवहारिया ॥ कीधा पुण्य अनेक ॥ मुजने मोटो  
 कीजी ॥ घो अनुमति सुविवेक ॥ श्री ० ८ ॥ भीठे वयणे  
 वाणियो ॥ भाखे धारोवार ॥ तेहनो विनय निहाळिने  
 ॥ बोल्या सहु सुविचार ॥ श्री ० ९ ॥ ल्यो लाहो जख  
 मि तणे ॥ भरो सुकूत जंमार ॥ लही आदेश इती पर ॥  
 हरख्यो हियमा मझार ॥ श्री ० १० ॥ साजणदे कर संगही  
 ॥ आव्यो निज घरवार ॥ भोजन भोगति भली करी  
 ॥ स्वामी सुणे विचार ॥ श्री ० ११ ॥ रतन अमुलक एह  
 छे ॥ सोनईया सिरदार ॥ आणी कीधा आंगळे ॥ म  
 णी माणेक अवार ॥ श्री ० १२ ॥ साजनई कहे शेठजी ॥  
 हिवणां स्वप नहीं कांइ ॥ नुप मुज पासे जे भागशे ॥  
 वव हुं लेश आइ ॥ श्री ० १३ ॥ धन माता तुज धन पि

ता ॥ धन धन, तहारो आरंभ ॥ उंगारि सिर सिहरी  
 ॥ तुं, जिनशासन, थेंज ॥ श्री ० ९ ॥ वंछणे सतोपियो  
 भीमने, ॥ निरमुळ वित्तानीसल ॥ इण अविसर रौख ओ  
 गळे ॥ चामी कीधी चुगल ॥ श्री ० १० ॥ द्रव्य तुमारी  
 महारायजी ॥ साजनदे सहलीध ॥ जिन मंदिर निपे  
 जावियो ॥ पोतानो नाम कीध ॥ श्री ० ११ ॥ खोज्यो  
 राजा जेसंगदे, ॥ आणो तेहनेरो बाधि ॥ माले गमे इ  
 म, माहरो ॥ तोडुं तेहनीरे साधि ॥ श्री ० १२ ॥ चाल्या  
 सुभट, जे वा भणी ॥ आव्या मुहुर्ताने पास ॥ तुमने ते  
 मे, जेसंगदे ॥ चालो धरी उल्लास ॥ श्री ० १३ ॥ चुगली  
 कीधी छे ताहरी ॥ जरया जेसदेना कानि ॥ डोल म क  
 हवे चाल, तुं ॥ नहंतर करेशे हेरान ॥ श्री ० १४ ॥  
 नाणो सोरवादेशनो ॥ नुप लेशे ततकाळ ॥ कहें जिनहर  
 प हवे सुणो ॥ ओगणसनी ऐढाळ ॥ श्री ० १५ ॥ सर्व

चाह ॥ खोळे घालुं धन सह ॥ एक पाणीवळ मांह ॥ १  
 ॥ नर शुणी आव्या नुप कने ॥ कहें शुणो महाराज ॥  
 मंत्री तुलने तेमिया ॥ धनालेवाने काज ॥ ३ ॥ नृप  
 खीज्यो वळी अति धणुं ॥ चाल्यो सुभट सहित ॥ गढ  
 गिरनारे आवियो ॥ सनमुख मंत्री पडुत ॥ ४ ॥ धन  
 बहु मुंकी आगळे ॥ मुहूतो लाय्यो पाय ॥ पण राये  
 न वालावियो ॥ मनमांभयों कपाय ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ नायकानी देशी ॥ भुकुटी करीने बोलि  
 योरे ॥ जाणें जम सारख्यातरे ॥ जेसंगदे ॥ सोरठनो  
 धन किहां सहुरे लाल ॥ जेखे पुळो वातरे ॥ जे ० भू  
 ० १ ॥ साजणदे करजोडीनेरे ॥ कहें सांभळ राजनरे ॥  
 जे ० ॥ शा माटे खीजो तुलेरे लाल ॥ कहो ते आलुं  
 धनरे ॥ जे ० भू ० ॥ पण शेवकनी वीनतीरे ॥ सफळ क  
 रो नर नाहरे ॥ जे ० ॥ गिरि चढी जात्रा कीजिरे ला  
 ल ॥ लीजे पुस्यनो लाहरे ॥ जे ० भू ० २ ॥ वचन शुणी  
 सीतळ धवोरे ॥ गिरि चमियो मन रंगरे ॥ जे ० ॥ जि  
 न भासाद निहाळीयोरे लाल ॥ उलश्यां अंगे अंगरे  
 ॥ जे ० भू ० ४ ॥ उंचो पडोळो अति घणोरे ॥ इंद्र  
 भवन विस्ताररे ॥ जे ० ॥ चित्र लिखित भली कोरणारे

लाल ॥ दीठां हरख अपाररे ॥ जे ० भृ ० ५ ॥ नेमी विंध  
 निरखी करीरे ॥ इम भाखे जेसंगरे ॥ जे ० ॥ ज  
 नम सफल थयो तेहनारे लाल ॥ कयों भासाद उत्तंग  
 रे ॥ जे ० भृ ० ६ ॥ मात पिता धन्य तेहनारे ॥ धन्य ते  
 हनो अवताररे ॥ जे ० ॥ एहवो देवळ उधर्योरे लाल ॥  
 मंत्री कहे ते वाररे ॥ जे ० भृ ० ७ ॥ ए देवळ तुमे उध  
 रयोरे ॥ धन तुमचो अवताररे ॥ जे ० ॥ मात पीता ध  
 न ताहरारे लाल ॥ सफल कीयो संसाररे ॥ जे ० भृ ०  
 ८ ॥ सोरवनो धन सहु इहार ॥ लाग्यो छे महाराजरे  
 ॥ जे ० ॥ ते भणी कहो तो आलियेरे लाल ॥ जो धन  
 शुं हुं काजरे ॥ जे ० भृ ० ९ ॥ राजा हरखी बोलियोरे  
 ॥ तें कीधो पुण्य काजरे ॥ जे ० ॥ १० धन मुज सुकिया  
 रथोरे ॥ लाल ॥ तें राख्यो मुज नामरे ॥ जे ० भृ ० ११ ॥ चु  
 गले चुगली ताहरीरे ॥ कीधो खीज्यो तेणरे ॥ जे ० ॥ चा  
 डन होवे आपणोरे लाल ॥ सरवस्त दीजे तेणरे ॥ जे ० भृ ०  
 १२ ॥ एहवा वर जे चाडियारे ॥ चुगली करे जे रो  
 जरे ॥ जे ० ॥ तेडी कीधो एकवारे लाल ॥ जाण्यो दे  
 शे मोजरे ॥ जे ० भृ ० १३ ॥ मुखे लिहाला चोपम्यारे ॥  
 छेयां नाकने कानरे ॥ जे ० ॥ जेइ खर आरोपियारे

लाल ॥ शिर मुंडया ॥ भुंजी वानरे ॥ जे ० ॥ १३ ॥ ने  
 गर मांही ते फेरियारे ॥ राख्या जहि पुर मांहीरे ॥  
 जे ० ॥ कूटी काढ्या वाहरे लाल ॥ संहुने हाथे सां  
 हीरे ॥ जे ० ॥ १४ ॥ चुगले संहि विटवनारे ॥ राय  
 थयो सुमसल्लरे ॥ जे ० ॥ साजनदे सनमाननेरे लाल ॥  
 वळीय कहे धन धनरे ॥ जे ० ॥ १५ ॥ पुण्य थकी जे  
 श पामिदोरे ॥ पुण्य थकी मान्यो राखरे ॥ जे ० ॥ कि  
 हे जिनहरप ए-एटलेरे लाल ॥ दाळ बीसंमी थोळरे ॥

एणे अवसर आवीयो ॥ भ्रम वाणीयो तामें ॥  
 श्री जिन मंदिर कारणे ॥ स्वामी ए लो दोम ॥ १ ॥  
 साजनदे कहे भ्रमने शेत सुणो अम्हे वांत ॥ काम न  
 ही हवे धन तणो ॥ तै राखी अखियात ॥ २ ॥ मंत्रीस  
 र जे में करयो ॥ निरमायल जिन द्रव्य ॥ काम न्हो  
 मुज ते हशुं ॥ में खरचेव्यो सर्व ॥ ३ ॥ रतन अमूलक  
 आपिया ॥ साथरिये तिण वार ॥ साजन तामें करा  
 वियो ॥ श्री जिन कोटे हार ॥ ४ ॥ देव द्रव्य अक्षय  
 करे ॥ परनारीशु प्रेम ॥ ते नर जाये सातमी ॥ शास्त्रे

बोल्यो : एन ॥ १ ॥ पाप जीरु जीमो संहो ॥ राख्यो न  
 ही जिन द्रव्य ॥ ए धन विख फळ सारिखो ॥ इम जी  
 ए ते अव्य ॥ द ॥ साजन दे पुन्यांतमो ॥ अखियो पाटेण  
 माह ॥ राय तणे चरणे नम्यो ॥ राय प्रसंसे तांह ॥ ७  
 ॥ राजा संवी एक मन ॥ बाधी प्रिति अपार ॥ हेमरा  
 य किण परे मिल्या ॥ ते सुणज्यो अधिकार ॥ ८ ॥  
 ॥ डाळ ॥ सुंदर देना गीतनी देशी ॥ कोटीक गण गु  
 ण भूरी ॥ त्रयरी शाखा हो दीये जंगमी परंगमीरे ॥  
 चंद्र गळें दिनसुरि ॥ धन्य अंबतरी हो प्रेमता स  
 फळी धडीरे ॥ ९ ॥ श्री यशोभद्रसुरी ॥ तेहने पाटेहो प  
 रतख जाणी दिवांकरे ॥ पदमसुरी तसु पाटे ॥ जेणे  
 पाम्याहो सुरगतिना सुख सुंदर ॥ १० ॥ श्री गुणसेन मु  
 निराय ॥ देवचंद्रसुरीहो नयन धंधुके आंबरीये ॥ ति  
 हां वरो चाचो शाह ॥ सोढ सुवंशेहो चाहरी नारी ॥  
 वीयारे ॥ ११ ॥ सुपन लखो तिण नार ॥ अति रंज्योतो  
 हो रयण चिंतामण सोहतोरे ॥ गुरुने दीधो तेह ॥ गुरुने  
 पुछ्योहो फळ तेहनो मन आवतोरे ॥ १२ ॥ श्री गुरु कसो  
 विचार ॥ सुंदर थासेहो पुत्र तुमारे अति भलोरे ॥ दी  
 क्षा लेशे तेह ॥ महिमाधारीहो यासे महिमले गुणनि

लोरे ॥ ५॥ इमं कहौ चाल्या सुरि ॥ उअरे बाधेहो वा  
 लक पुण्ये आगळोरे ॥ जनम्यो नवमे मास ॥ मात पि  
 तानोहो सफल मनोरथ तव फळयोरे ॥ ६॥ इग्यारे प  
 चताल ॥ काति सुदनीहो पुनम जनम थयो इशेरे ॥  
 घाणी धइ आकाश ॥ संजम लंशेहा जिनशासन दिपा  
 वशेरे ॥ ७॥ ओछव करीय अपार ॥ चंगदेव नामेहो  
 पांच वरपनो ते थयोरे ॥ आव्या अवसर जाणि ॥ देवचंद  
 सुरिहो वांदण संघ सहू? गयोरे ॥ ८॥ चंगदेव मायमी  
 साथ ॥ वांदण आव्योहो जइ बेठो गुरु वेसणरे ॥ सुण  
 श्राविका कहे शुरि ॥ बोल सनारीहो सुत अन्हने आ  
 लो भणरे ॥ ९॥ कहे श्राविका तिणीवार ॥ सुत किम  
 दोषोहो जाये पुज विचारीए ॥ म्हेशरी मुज भरतार ॥  
 कोप तेहनेहो शो उत्तर देइ वारीयेरे ॥ बहेन सुणो क  
 हे संघ ॥ १०॥ सुत आपोहो गुरुने पुण्य होशे घणारे ॥ वा  
 इ लज्यावंत ॥ नान कहाणोहो आप्यो पुत्र सोहामणारे  
 ॥ ११॥ गुरु चाल्या लेइ बाळ ॥ उदयन मंत्रीहो करण  
 पुरि तिहां आवीयारे ॥ बाळ जळाव्यो तास ॥ तस घर  
 बाधेहो दिन दिन कांती सुहाविधारे ॥ १२॥ घर आ  
 प्यो तिणवार ॥ बाळक चाचोहो घरमांहि देखे नहीरे ॥



पुत्र न दीसे केम ॥ नारी जाखेहो गुरुने में दीधो सहारे  
 ॥ १२ ॥ वचन सुणी वीष प्राय ॥ ए शुं कीधुंहो मूरख  
 राम अजागणीरे ॥ दीकरो कीम देवराय ॥ लाव ज  
 इनेहो जिम घर राखुं तुज जणीरे ॥ १३ ॥ कोप करी  
 तिण वार ॥ अज पाणोनोहो चाचे त्याग कर्यो तिहा  
 रे ॥ आव्यो मन धरी रोश ॥ श्री गुरु आपेहो देशण  
 रुधुर खरे जिहारि ॥ १४ ॥ वेठो सजा मझार ॥ गुरुनी वा  
 णीहो अनीय समाणी सांजळीरे ॥ डाळ थइ एकवीस  
 ॥ सुंवरदेनीहो ए जिनहरपे अटकळीरे ॥ १५ ॥ सर्प  
 गाथा ३८८

डाळ ११ मी.

दुहा ॥ गिरुआ गुरुनी देशणा ॥ श्रवण अमृत  
 रस धार ॥ आठ पुरुष दुष्कर कक्षा ॥ निजता इणे सं  
 सार ॥ १ ॥ दाणी गुण ग्याता तपी ॥ समता मीज  
 सुजाण ॥ परमतनी चिता लहे ॥ किसो न राखे मा  
 न ॥ २ ॥ तुं दानी शीर सेहेरो ॥ तें आप्यो सुत दान ॥  
 तुज समवम जग को नहिं ॥ जश अविचळ जाजा  
 न ॥ ३ ॥ महाप्रारथ माहिं कक्षो ॥ जिणे कुळे यति न

य ॥४॥ शर्म मांहि चाचो पमद्या ॥ बोल्यो नेहि मुख  
लाज ॥ उठ्यो करीने वंदणा ॥ चिते न सर्यो काज ॥५॥

ढाळ ॥ हांजरनी ॥ उदयन तेमी जाय ॥ शाह  
चाचानेहो मंदिर आपणे ॥ जोजन भगति कराय ॥  
पान सोपारीहो देइ इम जणे ॥६॥ धन ताहरो अवता  
र ॥ तुं नर मांहिहो सिंह समोवनि ॥ कुळ उतायो पा  
र ॥ अन्य जमारोहो ताहरी एक घनी ॥७॥ तें दी  
धो सुत दान ॥ नव खंम मांहिहो नाम रखावियो ॥  
गुरुनो राख्यो मान ॥ तुं जग धरमीहो धरम सुहावी  
यो ॥८॥ तुं मुज साहमी आज ॥ विण लक्ष सोवन  
हो ए ल्यो माहरा ॥ करो धरमनां काज ॥ चरण स  
दाइहो नमीये ताहरा ॥९॥ जेव कहे तिणवार ॥ विण  
लक्ष सोवनहो जेइ हुं शुं करुं ॥ में दीधो सुत सार ॥  
पुण्यने काजेहो मन काधुं खरुं ॥१०॥ लाजे देइ पुत्र  
॥ चाचो आंव्योहो पोताने घरे ॥ जिव शासननो सू  
व ॥ संघे राख्योहो असो ओखव करे ॥११॥ तव व  
रषानो हेव ॥ हुआ दीधीहो दीसां तेहवे ॥ नाम दी  
यो सोमदेव ॥ दिन दिन वापेहो वय गुण जेहने ॥१२॥  
एक दिन गुरुने साध ॥ ताली आव्याहो नागपुरी मू

री ॥ वसे धनद बहु आधि ॥ सुखीआ जैहनिहो गी  
 महिखी तुरी ॥ ८ ॥ कोइक पूख पाप ॥ तास पसाइ  
 हो ने निवहारीओ ॥ पाम्यो दुःख संताप ॥ निर्धन  
 हुओहो धन सह हारीओ ॥ ९ ॥ धनद चिते मन मा  
 ह ॥ पुण्यन कीयोहो तो निरधन थयो ॥ चितामें  
 दिन जाय ॥ भूमि खणेवाहो उद्यमेवंत जयो ॥ १० ॥  
 उदी खणी विवार ॥ मांहि जिहाळाहो झाझा निसर्या  
 ॥ द्वारे कीधो अंवार ॥ मुनी गोचरीहो आंवी संच  
 रया ॥ ११ ॥ धर्मलाज मुनी दीध ॥ नर नारि बेहो मन  
 मां दुख देहे ॥ मुनीवर पगलां कीच ॥ घेस दीयतांहो  
 किम लज्या रहे ॥ १२ ॥ गळगळ खर नर नार ॥ भा  
 खे स्वामीहो घेस किमा दीजिए ॥ छे सुजतो आहार ॥  
 कृपा करीनेहो जगवंत लीजिए ॥ १३ ॥ वोहरी घेस ते  
 वार ॥ कीध समश्याहो चेले गुरु भणी ॥ धन आंगणे  
 अवार ॥ घेस वोहरावीहो दीसे कीरपणी ॥ १४ ॥ शेव सु  
 एयो सुदक्ष ॥ शिष्य उपानीहो कोयलो उररे बेसार्थो  
 परतक्ष ॥ हाट कटीलोहो हुओ इणीपरे ॥ १५ ॥ फली म  
 नोरथ माल ॥ हीयने हरख्योहो गत लखनी लही ॥  
 बाजीशमी थर टाळ ॥ सहुने आगेहो जिनहरपे कही

॥ १६ ॥ सर्व गाथा ४० ए.

दाळ २३ मी.

दुहा ॥ श्री गुरुजी तुमे मादरी ॥ राखी जगमां  
लाज ॥ तुज सुपसाये में लक्षो ॥ गयो निधान सु आ  
ज ॥ १ ॥ धन विण कोइ गणे नहीं ॥ धन विण न ध  
रे प्रेम ॥ धन विण हुए अळखामणो ॥ धन विण धर्म  
न नेम ॥ २ ॥ धन अधिको संसारमें ॥ धन विण मांय  
न ताय ॥ एह्यो धन ते सुगुरुजी ॥ पाम्यो तुज पसा  
य ॥ ३ ॥ हेम धयो कोयला टळी ॥ बाध्यो हर्ष अपा  
र ॥ १ गुरुने पद आपस्यो ॥ करीश महाछव सार ॥  
४ ॥ योग्य जाणी पद आपीयो ॥ सोमदेवने ताम ॥  
हेमचंद्रसुरे दीयो हेमाचारज नाम ॥ ५ ॥

दाळ ॥ वीळीयानी ॥ मुने वहाजोरे लागे वी  
ळीयो ॥ १ देशी ॥ कासमीर जणी चाल्या हवे ॥ सार  
व आवी सनमुखरे ॥ हेम कर्म तणे बळे थड छती ॥  
वर आपी तास प्रतक्षरे ॥ का ० १ ॥ एक दिन निज गुरु  
सिद्धचक्रनो ॥ मंत्र शीखवीयो धरी भेनरे ॥ देवाधिदि  
त ते मंत्रने ॥ शुद्ध भावे साधे ते हेमरे ॥ का ० २ ॥ दे  
वेंद्र मलयगिरि मुनीवरु ॥ हेमाचारज पुण्यवंतरे ॥

देवेंद्र मलयगिरि मुनीवरु ॥ हेमाचारज पुन्यवन्तरै ॥  
 ९ त्रिणे मीलीने चालीया ॥ सुग्राम कुमारे आवन्तरे ॥  
 का० ३॥ धौवी धुवे जिहां लुगमां ॥ चीर उगाव्युं ति  
 हां दीवरे ॥ जमरा गुंजारव करी रक्षा ॥ लोभाणा गंध  
 इवरे ॥ का० ४॥ जमर प्रेम विलुंधा नमी रक्षा ॥ पदमणी  
 मारीने चाररे ॥ गंध पदम-सुगंधे मोही रक्षा ॥ तेहशुं मां  
 मी रक्षा शीररे ॥ ५॥ सामी जमरा देखी करी ॥ हरख्या  
 श्री हेमसुरिशरे ॥ एहवुं देखीने पुछीयो ॥ धौवीने धरीय  
 जगेशरे ॥ का० ६॥ इण चारे जमरा रणझणे ॥ पहेरे  
 ते कुण छे नाररे ॥ धौवी कहे मुनीपरं सांजळो ॥ तु  
 मने कहुं विचाररे ॥ का० ७॥ इण गाम तणो अधिका  
 रीयो ॥ पदमणी छे तेहनी नाररे ॥ नामे ते रतनवती  
 सती ॥ तेहना ९ चिर विचाररे ॥ का० ८॥ आचारज  
 अधिकारी घरे ॥ धर्मलाज आवीने दीधरे ॥ अधि  
 कारी ऊठी जावशुं ॥ आवी वंदन कीधरे ॥ का० ९॥  
 आश्रम आपो रहेवा जणी ॥ रहीये तो पंच रातरे ॥  
 उतार्या निरवद्य थानके ॥ उपदेश दीये बहु जातरे ॥  
 का० १०॥ सुंदर वाणी सहु रीझवी ॥ समतारस पोषण  
 दागरे ॥ देवेंद्रमजीश्वर देशणा ॥ सांजळी रीझे नर ना

ररे ॥ का० ११ ॥ इम चोमासो पुरो कयों ॥ अधिकारी  
 ने कहे तामरे ॥ हवे इहाथी अमे चालशु ॥ रहेवु नही ए  
 कए ठामरे ॥ का० १२ ॥ आचार अमारु पाळवुं ॥  
 सुविहित न रहे एक ठामरे ॥ रहेतां सजम मेलु हुवे ॥  
 अधिकारी जाखे तामरे ॥ का० १३ ॥ कोइक काम क  
 हो मुज जणी ॥ ओसीकल थाऊ केमरे ॥ अल आ  
 गळ धर्म कहो जलो ॥ तुमशु तो लाग्यो प्रेमरे ॥ का०  
 १४ ॥ देवेद्रसुरीश्वर इम कहे ॥ छे काम अपूरव एकरे  
 ॥ कहेतां पण, जिज वहे नही ॥ न कथा किम, थाय  
 विवेकरे ॥ का० १५ ॥ छे लाज तणी ९ वारता ॥ तेह  
 थो विद्या सिद्ध थायरे ॥ जिनहर्ष दाळ बेवीसमी ॥ इ  
 णीपरे जाखे मुनीरायरे ॥ का० १६ ॥ सर्व गाथा १३००

दाळ १४ मी.

दुहा ॥ तुज नारी छे पदमनी ॥ नगनपणे ते  
 थाय ॥ वस्त्र तजी साधु अम्हे ॥ विद्या सिद्धि उपाय  
 ॥ १ ॥ अल्ले करु मत्र साधना ॥ तुं लेइ रहे तरुआर  
 ॥ जो चुके तन मन वचनथी ॥ तो हणजे तिणवार  
 ॥ २ ॥ गुणरज्यो राजा कयों ॥ तहत वचन तिणवा  
 र ॥ त्रिणहे आचारज मिली ॥ पडुता गढ गिरनार ॥

३॥ जिन पतिमा आगळ रही ॥ नागी पदमणी नार॥  
आचारज मंत्र साधना ॥ नृप हाथे तरुआर ॥४॥ मे  
रु चूलिका नवि चळे ॥ न तळे शेष फुण्ड ॥ विधि  
लीखत जिम नवि चळे ॥ न चळे चित्त मुण्ड ॥५॥

ढाल ॥ चुनडीनी ॥ तिणे अवसरे ते परतक्ष ॥  
थयो विमलेश्वर, ततकाळरे ॥ कहे मागी जे मुनी जो  
इए, ॥ आपुं वर तुम सुविशाळरे ॥१॥ आचारजने सु  
र इम कहे ॥ इम विमलेश्वर जक्षरे ॥ करजोनी  
हुए परतक्षरे ॥२॥ ए आंकणी ॥ देवेंद्रसुरीसर मागी  
यो ॥ कातिथि जिन मांसादरे ॥ श्री सेरी समें आ  
णवो ॥ मुजने यो विद्या वादरे ॥ आ०३॥ वळी मलय  
गिरि मुनी मागीयो ॥ मिद्धांत तणी करु वृत्तिरे ॥ परत  
क्ष थयो ॥ तो तुं हवे ॥ मुजने ये ए शक्तिरे ॥ आ०४॥ हे  
माचारज कहे देवता ॥ मुजने ये विद्या एहरे ॥ जिन  
वचन बळे नृप बुझनुं ॥ शासन दीपावे तेहरे ॥ आ०

मेरे ॥ आ० ७ ॥ गुरु नमी उनी शासन सुरी ॥ कहे वचन  
 श्शं परतक्षरे ॥ पदवी लायक छं आपजे ॥ हेमाचारज  
 तुंज शिष्यरें ॥ आ० ८ ॥ एहवु कहोने देवी गर ॥ ध्या  
 नधी उठला स्वय मेळिरे ॥ मनमांझि हतुं देवी कसो ॥  
 दूषने वळी साकर जेळिरे ॥ आ० ९ ॥ आचारज नाग  
 पूरी जणी ॥ चाल्या लेंह परिवाररे ॥ जिहां बसे धनद  
 विवहारिणो ॥ आल्या हरख्यो नर नाररे ॥ आ० १०  
 ॥ संधु संघ चतुर्विध आगळे ॥ आचारज करे व  
 खाणरे ॥ दान सिळि नें तप जावना ॥ च्यारे धर्मना भे  
 द सुजाणरे ॥ आ० ११ ॥ ध्यारे धर्म आराधतां ॥ शि  
 व सुख लहिण अनंतरे ॥ इंद्रो दमोय तप कीजिये ॥  
 जिनवर गुरु भक्ति करंतरे ॥ आ० १२ ॥ सदगुरुनी दे  
 शना सांगळी ॥ पद ओछव कीधो धनंदरे ॥ निज लख  
 मि खरची बहु परे ॥ थाप्या श्री हेमद्रुणिंदरे ॥ आ० १३  
 ॥ पाटे थापी श्री हेमने ॥ गुरु आव्हा पाटण मांहीरे ॥  
 पाटण राजा जेसंगदे ॥ रयवाडी चाल्यो उळांहरें ॥  
 आ० ॥ हेमाचारज नूप निरखियो ॥ हीयमे हरख्यो  
 तिणिवाररे ॥ राजा कहे श्री हेमसुरिने ॥ आघो नित  
 मटेज मझाररे ॥ आ० १५ ॥ मुजने तुमे धर्म सुणाश्चो ॥



॥ उपजावो हर्ष विशाळरे ॥ जिनहरष कहे पूरी थड  
॥ एटले चोवीशमी दाळरे ॥ आ० १६ ॥ सर्व गाथा ४,५१.

दाळ २५५ मी. २५५ ॥ १६ ॥

हुता ॥ राजसभाए जायने ॥ बेसे हेमसुरिंद ॥  
धर्म कहे बहु जुगतिशुं ॥ हितशुं सुणे नरिंद ॥ १ ॥ स्व  
ट दरमण मांहि सुगुरु ॥ साचो खोटो धर्म ॥ किम  
जाणीजे ते कहो ॥ किम जागे मन भर्म ॥ २ ॥ धर्म प  
रीक्षा कीजीए ॥ तजीए दूर कुवट्ट ॥ कसणे पोहोच  
ते खरो ॥ जिम कंचण कसवट्ट ॥ ३ ॥ सहुतो जोइ पटं  
तरो ॥ जोइो भांति उभति ॥ खरो धरम जव ॥ पामी  
ये ॥ थाये निरमळ मत्ति ॥ ४ ॥ यशोमति नारी परे ॥  
जो कीजे सुखरीख ॥ धर्म खरो तो पामीये ॥ जो ध  
रीये गुरु शीख ॥ ५ ॥

दाळ ॥ हमीरीयानी ॥ हरीआमनि जागो ॥ ए  
देशी ॥ शस्त्रपुरी शस्त्र वाणीयो ॥ यशोमती तस नारीरे  
राजेसर ॥ मन मानी नही तेहशुं ॥ परएयो बीजी वा  
रे ॥ रा० ॥ शं० १ ॥ नवजोवन न्हानी प्रिया ॥ पोते गरदो  
जाणरे ॥ रा० ॥ रंग लाग्यो ते नारीशुं ॥ सुख विलस  
सुविहाणरे ॥ रा० ॥ शं० २ ॥ स्त्रीनो वचन लापें नही ॥

करे नित जिजिकाररे ॥रा०॥ कस्यो खमे रंगे रमें ॥  
 जमे भेळा नरनाररे ॥रा० शं० ३॥ पहेळीने ते नवि ग  
 मे ॥सोकमी सूळी सालरे ॥रा०॥ खटके ह्यमे अहनि  
 शि ॥ जेम मरमनी भाळरे ॥रा० शं० ४॥ इण अवस  
 र मंत्रवादीयो ॥आयो यशोमती गेहरे ॥रा०॥ वेसामी  
 तिणि आगळे ॥ कर्म कथा कहे तेहरे ॥रा० शं० ५॥  
 तेहने करुणा उपनी ॥दीध मूळी मंत्र तासरे ॥रा० ६॥ ह्यी  
 वळद हुशये धणी ॥ फळशे ताहरी आशरे ॥रा० शं०  
 ६॥ यशोमति कीधि रसवती ॥ मंत्र मूळी घाली मां  
 हरे ॥रा० ७॥ जौमाव्यो भरतारने ॥ हियमा मांहि उळां  
 हरे ॥रा० शं० ७॥ नर फीठी पोठी थयो ॥ नाठां दा  
 ढी मूछरे ॥रा०॥ लांवा कांन हलावतो ॥ लांवा सी  
 गने पूछरे ॥रा० शं० ८॥ पूछ हलावे हरखशुं ॥ देखी  
 न्हानी नाररे ॥रा० ९॥ न्हानी नारी रावळि ॥ धव धव ग  
 इ तिवाररे ॥ रा० शं० ९॥ स्वामी माहारा कंतने ॥ शो  
 क्ये पोठी कीधरे ॥रा०॥ ते नारीने तेडिने ॥ फळ आ  
 पो सुप्रसिद्धरे ॥रा० शं० १०॥ राय तेमावी यशोमति ॥  
 पुछी तेहने वातरे ॥रा० ११॥ वळद कीयो कां ए भणी ॥  
 फेमी नरनी जातिरे ॥रा० शं० ११॥ यशोमति कहे नृ

प शुणां ॥ नाहरो इहां नही दोषरे ॥ रा० ॥ प्रीतम वश  
 करी राखीयो ॥ बळी मुज उपरे रोशरे ॥ रा० शं० १२  
 ॥ मुजने प्रीतम अवगुणी ॥ एहनो हुइ रक्षो दासरे ॥  
 रा० ॥ रीश सवळ मुज उपनी ॥ पोठी कीधो तासरे ॥  
 रा० शं० १३ ॥ एहनो दोष सहुअछे ॥ बोढी एहनो शी  
 सरे ॥ रा० ॥ लेइ चडावो रासमे ॥ तो मुज उतरे री  
 शरे ॥ रा० शं० १४ ॥ राय वस्त्रोमे बे जणी ॥ बे सरिस्त्री  
 तुमे नाररे रा० ॥ बळद यशोमतिने दीयो ॥ रुमी परे  
 ए चाररे ॥ रा० शं० १५ ॥ जळ पाये चारी बने ॥ करें  
 स्त्रीजमत संभाळरे ॥ रा० ॥ कहे जिनहर्ष इश्यो कयों  
 ॥ इण पचवशमी ढाळरे ॥ रा० शं० १६ ॥ सर्व गाथा  
 ४७२ ॥

। ढाळ १६ मी.

दुहा ॥ विद्याधर विद्याधरी ॥ वेशी विमाने जाय  
 ॥ दुखिणि देखी यशोमति ॥ इणी परे पुछे शाय ॥ १  
 प्रीतम शुण मुज वातडी ॥ ए दुखिणी काम नार ॥ व  
 नमां झूरे एकली ॥ ते मुज कहो विचार ॥ २ ॥ सां  
 भळ नारि सुलक्षणि ॥ पशु कीयो निज कंत ॥ पशु  
 टळी थाये पुरुष ॥ ते नवि पुछ्यो तंत ॥ ३ ॥ दया उ

पनी नारिने ॥ पुछ्यो निज जगतार ॥ पशु टळी था  
ये पुरुष ॥ दाखवो तेह विचारि ॥ ४ ॥ विद्याधर बोल्यो  
जडी ॥ छे वेठो जिहां नार ॥ ते खरावे बळदने ॥  
पुरुष थाय निरधार ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ मेघमुनी कांइ मग मग मोले ॥ ए देशी  
चाल्यो विमान विद्याधर केरो ॥ शब्द ग्रहो तिण ना  
रि ॥ तिहां उग्यां विण खड वन वेली ॥ चुंटी लीध  
बुहारी ॥ १ ॥ नृपति सुणें धर्म तणो अधिकारी ॥ जो  
पुछे तो जोइ विचारी ॥ यशोमती चित धारी ॥ नृ०  
२ ॥ छोड इकेको चारे तेहने ॥ आव्यो ते शुद्ध मूळ  
॥ बळद टळीने पुरुष थयो तव ॥ थयो नारी अनूक  
ळ ॥ नृ० ३ ॥ वनस्पति सघळी सोझतां ॥ साचे मूळ  
पतिजे ॥ ज्ञान धरी हियमे महाराजा ॥ खट दरशण  
परखीजे ॥ नृ० ४ ॥ साचो धर्म हुवे ते ग्रहीजे ॥ खोटो  
ते परीहरीजे ॥ शुद्ध देव गुरु सेवा कीजे ॥ शुद्ध धरन  
आदरीजे ॥ नृ० ५ ॥ हरख्यो मन मांही जेसंगदे ॥  
सांजली श्री गुरु वयण ॥ शुद्ध धरम सांजळतां श्रवणे ॥  
जाग्यां ज्ञानना नयण ॥ नृ० ६ ॥ सिद्धपुरीमां राय मं  
द्याव्यो ॥ रुद्र तणो तिहां थान ॥ ऊंचोने उतंग स

तोरण ॥ रुद्रमाळो अग्निधान ॥ नृ० ७ ॥ आभे मंत्रि  
 तेहनी पासे ॥ गाम राय-विहार ॥ श्री जिनवर प्रासा  
 द मंढाव्यो ॥ ऊंचो अति विस्तार ॥ नृ० ८ ॥ विर जि  
 नेश्वर मुरति थापी ॥ सुंदर अद्भुत रूप ॥ आव्यो  
 श्री जिनवरने देहरे ॥ देखी हरख्यो भूप ॥ नृ० ९ ॥  
 हेमाचारज पासे आवी ॥ वांदी गुरुना पाय ॥ इश्वर  
 ने अरिहंत विचे अंतर ॥ ते कहो श्री मुनिराय ॥ नृ०  
 १० ॥ हेमसुरी कहे सांभळ राजा ॥ अंतर विच अनं  
 त ॥ इश्वर शीश निशापति सोहे ॥ ते जिन पाय नमं  
 त ॥ नृ० ११ ॥ पूछो वळी सूतार नरेश्वर ॥ ते कहेशे  
 अधिकार ॥ नृप तेमीने पूछ्यो तेहने ॥ कहो तुम्ह  
 शास्त्र विचार ॥ नृ० १२ ॥ सुणो नृपति अम्ह शास्त्र मां  
 हि ॥ एदवुं कह्युं जगदीश ॥ नर सामान्य घरे पंचशा  
 खा ॥ सात शाखा पुढविश ॥ नृ० १३ ॥ इश्वर भूवन क  
 ही नव शाखा ॥ श्री जिन गृह एकविश ॥ देवळ ईश  
 तणो वन मांहि ॥ नगर भुवन जगदीश ॥ नृ० १४ ॥  
 मंडप एक हुवे शिव मंदिर ॥ जिन गृह एकसो आठ ॥  
 तिन छत्र शिर उपरे लाजे ॥ सिंहासन शुभ घाट ॥ नृ०  
 १५ ॥ पदमासन सोहे जिन मुद्रा ॥ नव ग्रह शेवे पाय

॥ आदिशक्ति रहे जेहने चरणे ॥ ते कह्यो जिन  
 राय ॥ नृ० १६ ॥ जय उपजे नहीं जेहने देखी ॥ दाता  
 परम उल्लास ॥ ढाल थइ जिनहरण इटली ॥ छवीसमी  
 इण रास ॥ नृ० १७ ॥ सर्व गाथा ४१४.

ढाल २७ मी

दुहा ॥ अन्य देवने एहवी ॥ रचना करे न कोय ॥  
 करे करावे हठ चमटो ॥ ते नर दुखीयो होय ॥ १ ॥  
 अन्य देवना हाथमां ॥ चक्र बाण तरुआर ॥ जिनव  
 रना कोइ हाथमां ॥ दीसे नहिं हथियार ॥ २ ॥ ब्रह्मा वि  
 श्नु महेशने ॥ पासे थापे नार ॥ जिन पासे दिसे नहीं  
 ॥ नारी तणो परिवार ॥ ३ ॥ विश्वकर्मा एश्म कस्यो ॥ वा  
 सग शास्त्र मझार ॥ सांगळी राजा हरखीयो ॥ जैन ध  
 र्म जग सार ॥ ४ ॥ जिन जुवने कंचन कळस ॥ राय  
 चढाव्यो रंग ॥ सैन्य सहित जेसंगदे ॥ आव्यो पाटण  
 द्रंग ॥ ५ ॥

ढाल ॥ नाचे ईंद्र आणंदशुं ॥ ९ देशी ॥ पाटण  
 मांही आवीयो ॥ वांदी श्री गुरु पायोरे ॥ तिण अव  
 सरे जिन मंदिरे ॥ नेमि चरित्र वंचायोरे ॥ पा० १ ॥  
 पांडव शत्रुं जय चमो ॥ सिद्ध थया विचारोरे ॥ ब्राह्मण ते न

खमी शक्या ॥ वोल्या वयण विचारोरे ॥ पा० २ ॥  
 पामव हिमालय गळि ॥ पहोता मुगति मझारोरे ॥ छ  
 ररोहिण मांहे कसो ॥ पुछे राय तिवारोरे ॥ पा० ३ ॥  
 स्वामी ए भट शु कहे ॥ सांभळी राय विचारोरे ॥ म  
 हाभारथ माहि कसो ॥ तेह कहुं अधिकारोरे ॥ पा० ४ ॥  
 पामवनो काको कसो ॥ साचो सील गंगेवोरे ॥ दीघी शी  
 ख कुटंबने ॥ सांभळज्यो ॥ सह्य हेवोरे ॥ पा० ५ ॥ जुंइ  
 कुमारी वाळज्यो ॥ एहवु कही मृत भृंगोरे ॥ उपाढव्यो  
 गगेवने ॥ जे गया पर्वत शृंगोरे ॥ पा० ७ ॥ विश्वानर  
 जब मुकियो ॥ शब्द थयो मतवालोरे ॥ सो जीपम वा  
 ळ्या इहां ॥ त्रिणसे पामव आलोरे ॥ पा० ७ ॥ दाध्या  
 छे इण भूमिका ॥ दुग्धोधन हजारोरे ॥ करण तणी  
 सख्या नही ॥ महाभारथ अधिकारोरे ॥ पा० ८ ॥ स्या  
 पामवनी भट कहे ॥ वात पुछे जेसंगोरे ॥ पामव पा  
 दु नरिदना ॥ शिद्धा शत्रुजय शृंगोरे ॥ पा० ९ ॥ हरख्यो  
 राजा इम कहे ॥ साचो श्री जिन धर्मोरे ॥ दिप्र न जा  
 णे शास्रमा ॥ भूल्या मिथ्या जर्मोरे ॥ पा० १० ॥ एक दि  
 न ब्राह्मण वळी कहे ॥ सुण जेसगदे रायोरे ॥ आदि ध  
 र्म नही एहनो ॥ वेद वास्र कहेवायोरे ॥ पा० १

શુચી મઠે કરી ૯ જર્યા ॥ પવિત્ર નહીં મુલ અંગોરે ॥  
 ધરમ મરમ જાણે નહીં ॥ ન કરે જ્ઞાન પ્રસંગોરે ॥ પા ૦ ૧૨ ॥  
 ઉશ્ચ નિર પુણ્યે પીડ ॥ ધણ મુલે દેર વોલેરે ॥ અંન  
 પાક માગી સ્વાથે ॥ અશુચિ ન કોઈ તોલેરે ॥ પા ૦ ૧૩  
 ॥ ૬૯ વચ્ચને રાય સ્વિજીયો ॥ તુલ્ય વિપ્ર મુલ્લા વોલોરે ॥  
 નવો ધરમ ૯ કિમ કહો ॥ વાસગ શાસ્ત્ર સંખાલોરે ॥  
 પા ૦ ૧૪ ॥ તેમાં જિન મંદિર તણા ॥ ગ્રેદ કક્ષાં વંદુ મર્મો  
 રે ॥ પહિલિ તે નિર્ણય કરો ॥ પછે ઉપાપો ધર્મોરે ॥  
 પા ૦ ૧૫ ॥ મૂલ ધર્મ છે જોહનો ॥ જૈન ધર્મ કુળ તો  
 લેરે ॥ ઢાલ સતાવીશમો ॥ જિનહરુષ નૂપતિ રમ વોલેરે  
 ॥ પા ૦ ૧૬ ॥ સર્વ ગાથા ૫૧૫.

ઢાલ ૨૮ મી.

દુહા ॥ જેણે ધર્મે અશ્વ અજ ॥ હોમે નર પુન્ય  
 કાજ ॥ તેણે ધર્મે કિમ કહો ॥ જાહેરો શિવપુર રાજ ॥  
 ૧ ॥ સ્વોટો કિમ કહી ૯ સ્વરો ॥ હિંસા ધરમ ન હોય ॥  
 જિનશાસન માંહિ દયા ॥ ઇશો ધર્મ નહિ કોય ॥ ૨ ॥ ૯  
 ટલા દિન મૂલો જમ્યો ॥ ગુરુ કરિ માન્યા વિપ્ર ॥ હિં  
 સા ધરમ સમાચર્યો ॥ હવે તે છોડ્યા વિપ્ર ॥ ૩ ॥ ત  
 ન જાણો ધર્મનો ॥ મૂલા જમો સદીવ ॥ અજ્ઞાની ન



वी ओळखो ॥ सुक्ष्म वादर जीव ॥ ४ ॥ ब्राल्लण सह  
 हांक्या नृत ॥ लाज्या मनमां ताम ॥ हेमशुरिना अह  
 निश ॥ राय करे गुण ग्राम ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ जीराना गीतनी ॥ जाणो नृपनो ला  
 ग्यो सुरंग ॥ साचोरे साचो श्री जिन धर्मशु ॥ जेसंग  
 दे सुण वात ॥ नथो करुं व्याकरण पंचांग ॥ हेमारे हे  
 साचारज कहे, इशुं ॥ १ ॥ जेसंगदे सुण वात ॥ निसु  
 णी ताहरी जग ख्यात ॥ जीनेरे जीजे निज कहिए  
 किशुं ॥ जे० २ आंकणी ॥ राय कहे सांजळ मुनीरा  
 य ॥ मुजनेरे मुजने शुं पुछो तुम्हे ॥ जे० ३ ॥ जिम तुम  
 ने स्वामि सुख धाय ॥ कीजेरे कीजे छुं राजी अम्हे  
 ॥ जे० ४ ॥ हेमसुरिसर कहे कासमिर ॥ सारदेरे सारद  
 भंमार छे ॥ जे० ५ ॥ आदि व्याकरणनी प्रत गंजिर ॥ बी  
 जेरे बीजे ठामे ते नथी ॥ जे० ६ ॥ वेंगे सोय अणावो  
 महाराय ॥ रचनारे रचना करुं व्याकरणनी ॥ जे० ७ ॥  
 श्री सारद केरे सुनसाय ॥ प्रक्तिरे प्रक्ति श्री गुरु चर्ण  
 नी ॥ जे० ८ ॥ राये तेढव्या निज प्रधान ॥ भास्वेरे भा  
 खे कासमीरे जइ ॥ जे० ९ ॥ तिहां श्री सरस्वति भगवति  
 थान ॥ लावोरे लावो तुमे पोथी सही ॥ जे० १० ॥ आ

णा निज प्रभुनी शिर धार ॥ चाल्यारे चाल्या काम  
 मोरे जणा ॥ जे ० ॥ आव्या जिह्वां सारद जमार ॥ की  
 धारे कीधां अगरनां धूपणा ॥ जे ० ६ ॥ तुडी सारद दे  
 वी ते वार ॥ आपीरे आपी आठे पुस्तिका ॥ जे ० ॥  
 छेइ आव्या ते असवार ॥ नृगनेरे नृगने दिधी स्वस्ति  
 का ॥ जे ० ७ ॥ दीठी पोथी सुद्ध रूप ॥ आपीरे आपी  
 हेमसुरिंदने ॥ जे ० ॥ पोथी छोमी जोवे अनुर ॥ तुठि  
 रे तुठि माय मुज मंदरे ॥ जे ० ८ ॥ शणमी सारद चरण  
 सुरंग ॥ हेमारे हेमाचारज सुरवरे ॥ जे ० ॥ कीधां ति  
 णे व्याकरण पंचांग ॥ दीधोरे दीधो राजाने कहे ॥ जे ०  
 ९ ॥ राये तेमद्या पंमित जाण ॥ जोवोरे जोवो व्या  
 करणी तुम्हे ॥ जे ० ॥ कीधां ते व्याकरण प्रमाण ॥ प्रत्य  
 यरे प्रत्यय देखी ग्रहं अम्हे ॥ जे ० १० ॥ काममीर दे  
 श सारद चद्रिकांति ॥ मूर्गतिरे मूरति प्रत्यय छे खगे  
 ॥ जे ० ॥ आंगळ छे जळ कुम अत्राति ॥ पोथीरे पोथी  
 ते मांही धरो ॥ जे ० ११ ॥ मनमां राय विचारे ताम ॥  
 एतोरे एतो द्वेष अजी वहे ॥ जे ० ॥ निष्कारण  
 ए वयरनी वाग ॥ जळमारे जळमां कागळ किम रहे  
 ॥ जे ० १२ ॥ भ्रातृणने न गने मुनि-नान ॥ फोफटरे

फोड़त मेच्छर मन धरे ॥ जे ० ॥ हेम भणी पुछे नृप  
 ताम ॥ बालणरे बालण एहवुं उचरे ॥ जे ० १३ ॥ हेम  
 कहे नृप वार म लाय ॥ तेमव्यारे तेमव्या सह पंथित  
 भणी ॥ जे ० ॥ राये निज प्रधान बोलाय ॥ भाखेरे जा  
 खे वाणी सोझामणी ॥ जे ० १४ ॥ चालो पोथी लेइ सु  
 जाण ॥ चाल्यारे चाल्या गर्व हीये धरी ॥ जे ० ॥ जां  
 वा करता भयार्ण ॥ आव्यारे आव्या सारद देहरे ॥  
 जे ० १५ ॥ पोथी मुंकी कुंम मझार ॥ जाण्योरे जाण्यो  
 गळि जाशे सही ॥ जे ० ॥ बाळ अठावीशमी अवधार ॥  
 रुंडोरे रुंडी जिनहरेसे कहि ॥ जे ० ॥ सर्व गाथा ५३६.

बाळ एणें मी.

दुहा ॥ हंस करे किना सरे ॥ तिन पोथी जळ  
 माह ॥ झीजे पण भीजे नहीं ॥ जळ मेल्लो अवंगा  
 ह ॥ १ ॥ काढी पुस्तक जोश्यो ॥ भीनो नहीं लगार  
 ॥ बालण मुख झांखा पड्या ॥ आव्या नगर मझार  
 ॥ १ ॥ राजा आगे आवीने ॥ कहे पंडित प्रधान ॥ हे  
 मसुरि मोटो यति ॥ साचो एहनो ज्ञान ॥ ३ ॥ एहवो  
 कुण पंथित अवर ॥ कर व्याकरण जेह ॥ जळ मां  
 हि पोथि तरी ॥ नयणे दीवी तेह ॥ ३ ॥ नृप हरख्यो

संभळी वयण ॥ तेडा लैद्या ताम ॥ त्रिण वर्ष लगे त्रि  
 एतें ॥ मोह मांग्या ये दाम ॥ ५ ॥ सोवन अक्षर पुस्त  
 का ॥ मेळी देश अदार ॥ क्रोध रिश-जाय वांचतां ॥  
 हियडे हर्ष अपार ॥ ६ ॥

ढाळ ॥ जलालीयानी ॥ श्री हेमाचारज वमोरे ॥  
 नहीं कोर एहनी जोडरे ॥ जगमां यति ॥ आठ व्या  
 करण तया जिकरे ॥ उजा रहे कर जोमरे ॥ ज० श्री० १ ॥  
 लाख सवा हेम विस्तर्योरे ॥ बीजा-द्वे न सुहायरे ॥  
 ज० ॥ अमृत भोजन जिणे मळ्युरे ॥ ते किम स्वीन्न  
 न स्वायरे ॥ ज० श्री० २ ॥ क्षारो दाधि जळ किम रुचरे  
 ॥ जिणे कीधां पय पानरे ॥ ज० ॥ माणक हीरा विण  
 जीघारे ॥ मणिहारी किणि ग्यानरे ज० श्री० ३ ॥ हेम  
 व्याकरण दीठो जिणेरे ॥ तेहने न गमे अन्यरे ॥ ज०  
 हेम तणी वाणी मळीरे ॥ सहुको कहे धन धन्यरे ॥  
 ज० श्री० ४ ॥ लागी प्रीति सुरीतशुरे ॥ जेसंगदे ने हे  
 मरे ॥ ज० ॥ विण दीठां मन दूमणोरे ॥ दीठां बाधे मे  
 नरे ॥ ज० श्री० ५ ॥ हेम वयण श्रवणे सुणीरे ॥ पाप मीरु  
 ययो रायरे ॥ ज० ॥ ओहेडो वायों सहुरे ॥ मच्छी  
 जाळ जलायरे ॥ ज० श्री० ६ ॥ कोमी सेनश्या वरप

નારે ॥ સ્વરચે નૃપ પુણ્ય કાજરે ॥ જ૦ ॥ મીણલ ના  
 મે મુકીયોરે ॥ અકર મહી મહારાજરે ॥ જ૦ શ્રી૦ ૭ ॥  
 અકર કરે જે નર નવોરે ॥ સો ગાય હસ્યાનો પાપરે  
 ॥ જ૦ ॥ અકર ઉતારે તેહનેરે ॥ ગૌં કોઠિ છોડ્યાનો  
 જાગરે ॥ જ૦ શ્રી૦ ૮ ॥ દૃઢ ધર્મા નૃપ જાણીનેરે ॥ હેમ  
 સુરી કયોં વિહારે ॥ જ૦ ॥ તારે પર પોતે વરેરે ॥ પ્ર  
 તિબોહે નર નારે ॥ જ૦ શ્રી૦ ૯ ॥ શ્રીફલ પાન સોપારી  
 યારે ॥ સુધી કનક મહાકાયરે ॥ જ૦ ॥ જિમ જિમ  
 ઘુરે સંચરેરે ॥ તિમ તિમ મુહગાં ધાયરે ॥ જ૦ શ્રી૦ ૧૦ ॥  
 ઉપ્ર વિહારે વિહરતારે ॥ દેતા શુદ્ધ ઉપદેશરે ॥ જ૦ ॥  
 તિણ અવસરે એક દેવતારે ॥ મધ્ય રાતે સુવિશેશરે ॥  
 જ૦ શ્રી૦ ૧૧ ॥ કર જોડી કહે હેમનેરે ॥ સ્વામી તજો  
 અન્ય દેશરે ॥ જ૦ ॥ રહો તુમ્હે ગુજરાતમાંરે ॥ ધાર્યો  
 લાજ અશેશરે ॥ જ૦ શ્રી૦ ૧૨ ॥ સૂર વંચને ગુરુ આવી  
 યારે ॥ પાટણ નગર મજારે ॥ જ૦ ॥ પાયે નન્યો જે  
 સંગદેરે ॥ હરહ્યાં સહુ નર નારે ॥ જ૦ શ્રી૦ ૧૩ ॥ વં  
 શ વિમલ ચોલક તણેરે ॥ વિમલદેવ મહારાજરે ॥ જ૦



रुआ गुरु जणी ॥ पोशाले बहु प्रेमेशुं ॥ कुमारपाल  
 कर जोडि ॥ बेठो आगले ॥ हित लाग्यो श्री हेमशुं  
 ॥ २ ॥ पूछे कुमर नरिंद ॥ हेम मुण्डने ॥ नर सोहे  
 किए गुण करीए ॥ सांभल राय सुजाण ॥ सत्व गुणे  
 करी ॥ परदारा संग परिहरि ॥ ३ ॥ यह गणसां जि  
 म चंद ॥ तेज दियाकर ॥ नृपमां राम नरेतरुए ॥ सुर  
 मां सुरपति देव ॥ कंचण धातुमां ॥ सत्व गुणे तिम सुं  
 दरुए ॥ ४ ॥ एकलको जिम सीह ॥ वन माहे वसे ॥  
 सत्व गुणे बीहे नहीं ॥ रवी गयणं गण एक ॥ तिमि  
 र नसाढतो ॥ जग उद्योत करे सहीए ॥ ५ ॥ सत्व वि  
 ना नर जेह ॥ ते पशु सारीखा ॥ लेखामां न गणीजी  
 येए ॥ सत्वे सिद्धे काज ॥ सत्वे शूर नमे ॥ अंगे सत्व  
 धरीजीयेए ॥ ६ ॥ यतः ॥ सुर सुभट जल पंच जण ॥  
 कायर सो पंचास ॥ नीसत्व जक्ष लेखे नही ॥ सुरो  
 एको खास ॥ १ ॥ चाल पुर्वनी ॥ सुर पुरुष संबंध ॥  
 सुणज्यो सह जणा ॥ शिव शास्त्रनी छे कथाए ॥ ह  
 स्ति नागपुर द्रंग ॥ पांडव तिहां वसे ॥ सत्व सील गु  
 ण नही तथाए ॥ ७ ॥ यज्ञ करेवा ताम ॥ पांडव उमझा  
 ॥ राय युधिष्ठिर तेडीयोए ॥ अर्जुनने कहे एम ॥ लावे

कुमार ॥ कनक तिहांधी खेमोयो ॥ ८ ॥ एकाकी व  
 लवंत ॥ आव्यो वेगशुं ॥ खेतबंध रामेसरु ॥ आगे र  
 थ नवि जाय ॥ अढकीने रह्यो ॥ चिहुं दिशे जोये नर  
 वरु ॥ ९ ॥ काष्ट पापाण न दीत ॥ हरि हरे जोय्यो  
 ॥ दीतो तातो ऊंदरा ॥ अर्जुन चिते ताम ॥ सोल सा  
 घर तरी ॥ राम नाम महिमा खरो ॥ १० ॥ पाणीने  
 पापाण ॥ सक्ति न तेहनी ॥ तिम इहां कारण छे सही  
 ॥ ऊंदरनो शो जोर ॥ रुधे वाटने ॥ पण मळ पाखे ए  
 नही ॥ ११ ॥ दव दानव जक्ष जेह ॥ थाये ते इहा ॥  
 मतक्ष थइ बोल्यो इहां ॥ आ पुढवी हनुमंत ॥ वो  
 ल्यो इणि परे ॥ अर्जुन जाइश किर्हा ॥ १२ ॥ मुज  
 ने मुक्यों राम ॥ रखवांलण भणी ॥ इण पाजे कोइ  
 नर बीजो ॥ जाण न पामे राम ॥ तणी नही आग  
 न्या ॥ अर्जुन मनमां मत खीजो ॥ १३ ॥ अर्जुन क  
 हे तिणवार ॥ में जावुं सही ॥ सोवन लेवा इणे पंधे  
 ॥ ताहरो पति श्री राम ॥ खडसे तो किम ॥ जज्ञ का  
 म पुण्यनां कथे ॥ १४ ॥ करो तुम्हे पण पुण्य ॥ का  
 रज उत्तम ॥ क्रोध काळ दूरे हणी ॥ ठाळ थइ ॥  
 बीश ॥ अर्जुन इम कसो ॥ कहे जिनहर्ष हनु भणी



५ ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ५७८ ॥

ढाल ३१ मी.

दुहा ॥ पद्म पुराणे हरी कसो ॥ करे करावे जे  
ह ॥ अनुमोदे साहाज्य घे ॥ सरिखुं पुण्य कहेह ॥ १ ॥  
॥ सांजळ अर्जुन कपी कहे ॥ कंचणशुं जो फाज ॥  
तो जा बीजी वाटमी ॥ जाण न धुं इण पाज ॥ २ ॥  
अर्जुन कहे कपीनाथ सुण ॥ जाएवुं इण वाट ॥ क  
हे तो पाज बीजी करुं ॥ करुं सुगम वळी घाट ॥ ३ ॥  
उठयो अर्जुन सत्व धरी ॥ वाहि असंखित वाण ॥ पा  
ज रची हनुमान कपी ॥ करे परीक्षा पाण ॥ ४ ॥ सा  
त तामनो रुप करी ॥ उछळी पनियो जाम ॥ पाज  
उपरे वानरो ॥ वांकी वळी न ताम ॥ ५ ॥ अर्जुन वळ  
देखी करी ॥ कषि चिते तिणिबार ॥ संग्रामे पुढुचुं न  
हीं ॥ एहनो सत्व उद्धार ॥ ६ ॥

ढाल ॥ देह अराची करी पुरियोए ॥ १ देशी ॥ क  
र जोमी हनुमंत कहेरे ॥ कांइ करो संग्राम ॥ सोनो  
आपु तुज गणीरे ॥ कहे ते करुं वळी काम ॥ १ ॥ सुवि  
चारीरे राजन साजळ कुमर नरिद ॥ धर्म एहथी  
पामीए ॥ इम कहे हेम मुणिंद ॥ सु० ॥ सत्यवंत नर आ

नळरे ॥ कोइ न माने पाव ॥ आपो आंगनीया पळे  
 रे ॥ कुण राणो कुण राव ॥ सु० ५ ॥ वाहरो सत्व जो  
 या मंणीरे ॥ एह परीक्षा कीध ॥ कनक लेंइ अर्जुन  
 चळ्योरे ॥ भ्रात मंणी आणी दीध ॥ सु० ६ ॥ अर्जुन  
 सत्वे आगळोरे ॥ गुण गावेः सहु कोध ॥ संख्यवंतने  
 सहु नमेरे ॥ व्यश पामे त्रय लोय ॥ सु० ७ ॥ सत्त्व शो  
 भे नहीं एकलोरे ॥ एकलो न सर काम ॥ बाध मिथ  
 गज अति बळोरे ॥ पशुंय धरावे नाम ॥ सु० ८ ॥ रथ  
 न चले चक्र एकलोरे ॥ एक हाथे न लुणाय ॥ एक  
 हाथे रोटी न्हविरे ॥ एक पंगे न चळोय ॥ सु० ९ ॥ सत्व  
 सीज जो वे मिलेरे ॥ धाये कारज सिद्ध ॥ पंग पंग पामे सं  
 पदो ॥ रग पग लहे नरनिद्ध ॥ सु० १० ॥ परनारिजे परिहररे  
 ॥ तिण घर कोमं कल्याण ॥ परदार संगम करेरे ॥ निश्चे जा  
 ये प्राण ॥ सु० ११ ॥ राम घरणी रावण हरीरे ॥ तो छे  
 दाव्यां सीश ॥ कीचक द्रुपदी कारणेरे ॥ जीम दक्षा  
 करी रिश ॥ सु० १२ ॥ परनारी नवी राचीएरे ॥ सांभळ  
 मोळा सीख ॥ धार धणी परनारथीरे ॥ घर घर मांगे  
 जीख ॥ सु० १३ ॥ कळीकळे सोनी थयोरे ॥ साह ज  
 लो संग्राम ॥ रत पाखे आंवो फळ्योरे ॥ मेह बुज्यो

अभिराम ॥ सु० ११ ॥ सीजे तणी महीना इसीरे ॥ देव  
 दानव जक्ष दक्ष ॥ सीज थकी पुष्टचे नहीरे ॥ खा  
 मी थाए जस्त ॥ सु० १२ ॥ तिणे कारण परस्त्रि तजीरे  
 ॥ पाळो सीळ अखंड ॥ सत्व सीळ अगे धरेरे ॥ महि  
 मा वधे चिहु खंड ॥ सु० १३ ॥ कुमर नरेश आगळरे  
 ॥ वचने कक्षा इम हेम ॥ परनारिनो मुज जणीरे ॥  
 पुज्य करावो नेम ॥ सु० १४ ॥ नीयम लीयो परनारी  
 नोरे ॥ सीळ धर्यो अभिराम ॥ कहि जिनहर्ष एकत्री  
 समारे ॥ ढाळ थई इणे ठामे ॥ सु० १५ ॥ सर्व गाथा

ढाळ ३२ मी.

दुहा ॥ श्री गुरुने करी वदना ॥ उठ्यो कुमर न  
 रिद ॥ पडुतो मंदिर आपणे ॥ धरतो मन आणंद ॥  
 १ ॥ हेमसुरीना गुण वश्या ॥ निरमळ हिया मझार ॥  
 पर उपगारी एहवा ॥ थोडा इण संसार ॥ २ ॥ थोमो  
 कंचन धातुमा ॥ थोडो चंदण वृक्ष ॥ तिम जग माहि  
 थोमला ॥ पर उपगारी दक्ष ॥ ३ ॥

ढाळ ॥ श्री धर्मण पासजी पुलियेजी ॥ ५ देशो  
 ॥ राग गोडी ॥ जेमंगदे सुत त्रिण दुख धरेजी ॥ सु

व विण सुनो घरवास ॥ निसिदिन रहवुं उदाश ॥ जे०  
 ॥ इण अवसर जेसंगदे राजा ॥ छुरे हीयमा माही ॥  
 रात दिवस चित चिंता निवसे ॥ मुज घर अंगज  
 नाहिं ॥ जे० १ ॥ कोनि उपाय करे सुत कारण ॥ खर  
 चे द्रव्य विशेषे ॥ जे जिम दाखे राय करे तिम ॥ अ  
 रथो दोष न देखे ॥ जे० २ ॥ कनक तणो आवास अनोपम  
 ॥ दीपक कोडि मझार ॥ जिण घर पुत्र नहिं अजु आळो ॥  
 तिण घर घोर अंवार ॥ जे० ३ ॥ रतन कनक मणी  
 साणेक मोती ॥ लिखमी पार न कोइ ॥ तोही पण ते  
 निरधन कहिये ॥ जिण घर पुत्र न होइ ॥ जे० ४ ॥  
 इम राजा मनमाहि विमासे ॥ कुण भोगवशे राज ॥  
 हस्यो विमासी चित उदाशी ॥ आळ्यो जिहा गुरुरा  
 ज ॥ जे० ५ ॥ हेमाचारजने नृप पुछे ॥ मुज सुत छे  
 के नाहिं ॥ जेहवुं होय तेहवुं जाखो मुत्ति ॥ मत रा  
 खो मनमाहि ॥ जे० ६ ॥ अंवादेवी ध्यान धरेवी ॥ प्रत  
 क्ष थड तिणवार ॥ गुरु पुछ्यो तेणे ना जाख्यो ॥ ही  
 यडे धरीय विचार ॥ जे० ७ ॥ श्री हेमाचारज कहे  
 ताहरे ॥ नंदन नहिं राजिंद ॥ एसहु राज तुम्हारो  
 राजन ॥ लेस्ये कुमर नरिंद ॥ जे० ८ ॥ मुणी विखवा

द थयो मनमांहि ॥ बाहिर वात न काढि ॥ घर आ  
 व्यो पण मनमां विलखो ॥ अगेनि परे देह गाढी ॥  
 जे० ९॥ पंडित सहु तेमद्या रायंगण ॥ पुछे मुंज घर  
 पुत्र ॥ थास्ये कह्ये ते मुज जाखो ॥ जेहथी रहे ध  
 र सुत्र ॥ जे० १० ॥ यथ शास्त्र जोईने पंढित ॥ 'जाखे  
 तास विचार ॥ ताहरे पुत्र नहीं न दुवाहिश ॥ जो क  
 रे लाखे प्रकार ॥ जे० ११ ॥ ताहरी राज्य तणो पति  
 थास्ये ॥ कुमारपाल भूपाल ॥ सांभळी हियमा मांहि  
 छठी ॥ दुख पावकनी झाल ॥ जे० १२ ॥ शोकातुर रा  
 जाने जाणी ॥ 'एक विप्र कहे 'वाणी' ॥ स्वामी अमारो  
 कसो करीजे ॥ गंगा जइ लावो पाणी ॥ जे० १३ ॥  
 पग अहुआणा पाळा जळ लेइ ॥ सोमेश्वर जइ  
 पुजो ॥ थाणहार ले तो सुत थास्ये ॥ नही उपाय को  
 कुजो ॥ जे० १४ ॥ अरथी काम करे नही श्यां श्यां ॥  
 पाज बंधावी राम ॥ इश्वर लाज तजीने नाच्यो ॥  
 अरथे चलयो नृप ताम ॥ जे० १५ ॥ आणी जळ पु  
 ज्यो सोमेश्वर ॥ जगते नामी सीश ॥ कही जिनहर्ष  
 वत्रीशमी ढाळे ॥ अरज करे अवनिश ॥ जे० १६ ॥ स  
 र्वे गाथा ६१८.

.ढाळ ३३,मी.

दुहा ॥ जाव, ज़क्ति बहु, ज़ुक्तिशुं ॥ पूज्या एम  
खट मास ॥ वे-कर जोमी इम कहे ॥ पूर पूर मुज आ  
श ॥ १ ॥ इश्वर, आगळ विनती ॥ करे एम जेसंग ॥  
सुत आपो, सुपसन थइ ॥ जिम मुज हुवे उल्लरंग ॥ २  
॥ इश्वर, कहे जेसंग, शुण ॥ पनियो छे शुं जर्म ॥ में  
शुत किम जाये दीयो ॥ त लिख्यो त्हारे कर्म ॥ ३ ॥  
राय रीसाणो, इम कहे ॥ इश्वर, थइ वइत ॥ शुत नधि  
दीधो जाय तो ॥ सक्ति, पायाळ पइठ ॥ ४ ॥ इश्वर, क  
हे हुं शुं कहं ॥ लिख्यो न मेदयो जाय ॥ जेहवुं जेना  
कर्ममें ॥ तेहने तेवुं थायु ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ करताशुं तो, प्रित, सहु हुंसे, करेरे ॥ ६ ॥ दे  
शी ॥ इश्वरना, शुणी बोल-नृपति, घरे आवीयोरे ॥ ७ ॥  
॥ पुरजन लोके ताम, सुमामी बधावीयोरे ॥ सु ० ॥ ना  
खे मुख निस्सास उडाम, सदा रहेरे ॥ ८ ॥ वे कंरा जो  
मी ताम सुतागुणी इम कहेरे ॥ सु ० ॥ दीसो कौ दी  
लगीर सधीरपणो किहारे ॥ स ० ॥ चिंता तुमने आज  
किस्यो, कारण इहारे ॥ कि ० ॥ राय कहे चित लाय के  
राणी सांभळोरे ॥ के ० ॥ हियमे सबळी चित के

मुज मन जागळोरे ॥ के० २ ॥ पुत्र नही मुज राज क  
 हो कुण राखशेरे ॥ क० ॥ पुत्र विहुणी रीद्धि निशा श  
 शी विणजशेरे ॥ नि० ॥ आराध्यो स्वर्त मास इश जग  
 दीशनेरे ॥ इ० ॥ तिणे जोग्यो इम पुत्र नही तुज सीशमेरे  
 ॥ न० ३ ॥ साजळी नृपेनां वयण नेयण आंसू झरेरे ॥ न०  
 ॥ जाणे घुटवो हार सघन मोती खरेरे ॥ स० ॥ मसके  
 रोवे नार किसी गति राजनारे ॥ कि० ॥ पामी रीद्धि स  
 मृद्धि किशाए काजनीरे ॥ कि० ४ ॥ काणी पुत्री होय तो  
 ही दुख-उनसमेरे ॥ तो ॥ ज्ञांझ तणो अपवाद टळे स  
 हु लोकमेरे ॥ ट० ॥ निज हाथे निज माण हणेषु सोहि  
 लुरे ॥ ह० ॥ वांझीयडानुं लोक महेणुं दोहिलुरे ॥ म०  
 ५ ॥ मगळ ठामे अमगळ माने वांझणीरे ॥ मा० ॥ होय  
 तेने अपमानान माने निज धणीरे ॥ न० ६ ॥ काई सरजी  
 फिरतार पुकारे कामिनीरे ॥ पु० ॥ श्यां किघा मे पाप  
 लक्षा दुख जे भणीरे ॥ ज० ६ ॥ रित ॥ वांझ पुकारे  
 थळ चर्मी ॥ हुं का जन्मी माये ॥ पुत्र नहि कोल्यो पाल  
 णे ॥ बहु न लागी पाय ॥ १ ॥ मंदिर मोटो धन घणा  
 ॥ घर हाथी केकाण ॥ जस घर बाळके नहि रमे ॥  
 ते घर जाण मशाण ॥ २ ॥ मंदिर सुनावाळ विण ॥

सुतथी वंश वर्धत ॥ सुत द्विर्गुं घर जेहनुं ॥ ते कुल  
 सही गळंत ॥३॥ ढाल पुर्वनी ॥ कालं विना जेम मेह  
 नेह विण रुसणोरे ॥ने०॥ लुण विना जेम धान मान  
 विण बेसणोरे ॥मा०॥ जोवन विण शणगार संपत्ति  
 विण माहुणोरे ॥सं०॥ तिम मंदिर विण पुत्र न होये सो  
 हामणोरे ॥न०७॥ दत विना गजराज राज विण पा  
 टवीरे ॥रा०॥ वस्तु, अनोपम देखि विना धन साटवी  
 रे ॥वि०॥ पंखी जिम विण पंखं सरोवर जळ विनारे  
 ॥स०॥ वास विना जिम फुल सुगुरु विण आमनारे  
 ॥सु०८॥ राय राणी मन मांहि विचारे एहवुरे ॥वि०॥  
 ॥ पुत्र विना घरबार न शोभे तेहवुरे ॥न०॥ आलुं  
 सयळ निधान बघोवध तेहनेरे ॥व०॥ जे कोई ये पुत्र  
 दीउ रिद्धि तेहनेरे ॥दी०९॥ जोगी जंगम सिद्ध सहु पु  
 छया जणारे ॥स०॥ तोही न हुवे पुत्र उपाय कया  
 घणारे ॥उ०॥ राय तणा मन मांहि कुमति आवी इशी  
 रे ॥कु०॥ माहुं कुमर नरिद पुत्र मुज थाइशेरे ॥पु०  
 १०॥ वांकी करे विचार के स्वारथ आपणेरे ॥के०॥  
 जण्यो गण्यो बुद्धिवंत अज्ञान पमट्यो घणेरे ॥अ०॥  
 स्वारथ वासो जीव न बीहे पापथारे ॥न०॥ स्वारथ



सरिखो नीच जगतमां को नथीरे ॥ ज ० ११ ॥ कनकको  
तु नृप पुत्र हृष्यो निज स्वारथेरे ॥ ह ० ॥ लोभे कृश उपाय  
करे सायर मथेरे ॥ क ० ॥ लोभे कोणिकराय श्रेणिक  
ने मारीयोरे ॥ श्रे ० ॥ लोभे करे अकाज रहे नही वा  
रीयोरे ॥ र ० १२ ॥ जग सहु स्वारथ जूत विचार नही  
किमेरे ॥ बि ० ॥ निःकारण मति मूढ बैर बांधेरे इमेरे ॥  
वै ० ॥ राय हुतो बुद्धिवंत गई बुद्धि जेहनरीरे ॥ ग ० ॥  
ढाळ थइ जिनहर्ष तेनीशमी एहनरीरे ॥ ते ० १३ ॥ सर्व  
गाथा ६३६.

ढाळ ३४ मी.

दुहा ॥ हरण नाजी कस्तूरिका ॥ मणि अहि सि  
ण धरंत ॥ हाये नावे जीवतां ॥ बाघ दंत गय दंत ॥ १  
॥ रात दिवश जेसंगदे ॥ जावे दाय उपाय ॥ पुण्य  
जाम पोते घणो ॥ कुमरपाळ न मराय ॥ २ ॥ कुमर  
पाळ मनमां चकळो ॥ न करे तास वेसास ॥ हाथ न  
आवे रायने ॥ आवे पण नही पास ॥ ३ ॥

ढाळ ॥ चरणाखी चामुंरु रण चमे ॥ ए देशी ॥  
हवे जेसंगदे नृप कोपीयो ॥ मुंकट्या सुप्त सनुरोरे ॥  
मारो वेगे दहथळी ॥ कुमर नरिंद कुळ चुरोरे ॥ ह ०

१॥ सुहृद लेइ नृप आगन्या ॥ चाल्या थइ असवारो  
 रे ॥ संनद्ध वद्ध थइ करी ॥ ल्येइ सह हथीयारोरे ॥  
 ॥ह० १॥, वींटी वेगे दहयळी ॥ जुद्ध थयो असराळोरे  
 ॥ नाटो कुमर नरेशरु ॥ माथो तिहुअणपाळोरे ॥ह० ३॥  
 ॥ पाटणमां आवी रखो ॥ खवर नही भूवाळोरे ॥ का  
 रण पाखे जोइज्यो ॥ कोप्यो राय कराळोरे ॥ह० ४॥  
 ॥ कुमरपाळ मन चिंतवें ॥ आतम काजे देशोरे ॥ छां  
 नी रह्यो वेगळा ॥ शास्त्रे कक्षो, उपदेशोरे ॥ह० ५॥  
 यत. ॥ त्यजे देकं कुल स्यार्थे ॥ ग्राम स्यार्थे कुलं  
 त्यजेत् ॥ देश स्यार्थे-त्यजे ग्राम ॥ आत्मार्ये सकलं  
 त्यजेत् ॥ १॥ चाल पुर्वनी ॥ चित विमाशी चालीयो  
 ॥ कुमर, नरेशर तामोरे, ॥ आव्यो वनेवी जिहां ॥ कू  
 श्रदेव, इण तामोरे ॥ह० ६॥, बहु, नेहे मिलीला वन्हे ॥  
 मांमी कक्षो वृतांतोरे. ॥ कृश्रदेव कहे सांजळो ॥ मन  
 मां धरीळ निरांतोरे ॥ह० ७॥ दिन सरिखा नहीं केह  
 नां ॥ सुरिय तारा चंदोरे ॥ ऊगे ने वळी आधमे ॥  
 कवही तेज कवही मंदोरे ॥ह० ८॥ सुर चक्रि अरिहं  
 तने ॥ सरिखा दिन नवि जायोरे ॥ मोटा पण आ  
 पद लहे ॥ अउरतुं शुं कहेवायोरे ॥ह० ९॥ किण दित

छत्र घरावतो ॥ करता हाज कळोळोरे ॥ किण दिन मा  
 गी जीखडी ॥ उजा उलाउलोरे ॥ ह० १० ॥ किण दि  
 न वागा पहेरणे ॥ किण दिन नगन विरुपोरे ॥ सोभा  
 गी दोभागीयो ॥ कर्मनो एह सरुपोरे ॥ ह० ११ ॥ छा  
 नो वेशी रहे हवे ॥ वांका छे तुज दिशोरे ॥ पुंस्य दड  
 य ज्यारे हुश्ये ॥ छत्र परावीश सिसोरे ॥ ह० १२ ॥  
 सुखे समाधे इहां रहो ॥ न करो त्रिता कांशेरे ॥ कुमा  
 रपाळ हवे तिहां रहे ॥ जेसंगधे सुद्धि पाशेरे ॥ ह० १३  
 ॥ छानो हेरु आवीयो ॥ थयो अवधुत पुजायोरे ॥  
 पाटणमां आव्यो फिरी ॥ गरमा जेळो थायोरे ॥ ह०  
 १४ ॥ दिन केटला तेमां राखो ॥ जेसंगने थड जाणो  
 रे ॥ चोरी जेह सुगंधनी ॥ दांकयो न रहे भाणोरे ॥  
 ह० १५ ॥ छानो कहोने किम रहे ॥ जीक्षारीमां झूपो  
 रे ॥ दाळ थड चोवीशमी ॥ कही जिनहर्ष सरुपोरे ॥  
 ह० १६ ॥ सर्व गाथा ६५५ ॥

दाळ ३५ मी.

हुहा ॥ गरमा तेढ्या जीमवा ॥ जेसंगधे भूपा  
 ळ ॥ आव्या राउल सहु मिला ॥ गरदा धनवा वाळ  
 ॥ १ ॥ पाय पखाळि तेहनां ॥ लक्षण जोवे राय ॥ ज

रमा पग निर लक्षणा ॥ कुमर पखाळें पाय ॥ २ ॥  
 दीवां लक्षण नूप तणां ॥ मंगळ मच्छ आकार ॥ घ  
 ज सायर तोरण धनुष ॥ छत्र चामर उदार ॥ ३ ॥ चि  
 त चमक्यो नूप चिंतवे ॥ कुमरपाळ ए होय ॥ हवे  
 आव्यो छे सांकडे ॥ जिम अहि घडी समोय ॥ ४ ॥  
 मंगळ पदयो अजानीये ॥ निकळी न शके जेम ॥ रा  
 य पडयो तिम सांकमे ॥ कहो निकळशे केम ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ छांहलीनी ॥ राय जेसंग विचारीए ॥  
 मंत्रि तेनद्या ते वारेए ॥ वारेए एहने जाका मत दीयोए  
 ॥ १ ॥ भरनो जो जाश्येए ॥ तो तुलने दुख धाश्येए ॥  
 भासेए जाण न पावे इम कीयोए ॥ २ ॥ एहवुं कही नू  
 प घर आवेए ॥ जोजन जात रंधावेए ॥ ध्यावेए कुमर  
 पाळ मनमां इश्योए ॥ करमें मुजं इहां आस्योए ॥ रा  
 ये पण मुज जास्योए ॥ नास्योए एहनो वीहकें में  
 किश्योए ॥ ३ ॥ कुड रच्यो मुज काजेए ॥ वयरी जेस  
 ग गाजेए ॥ वाजेए मरण नगरां मुज शिरेए ॥ मूढ  
 जाणंतो हुं हुओए ॥ देखी पाखीने कूओए ॥ जुओ ए  
 आवीने मांहीं पडयो खरोए ॥ ४ ॥ रसना वशे दुख ल  
 हीयेए ॥ फहो हवे केहने कहीयेए ॥ सहीयेए इंद्रीने

वशे दुख घणाए ॥ कोइ उपाय हवे करुंए ॥ ९ संक  
 दथी उगरुंए ॥ परिहरुंए भोजन श्हांथी भाजणाए ॥  
 १॥ जिमवा तेमवा रायेए ॥ जरमास्युं मिलि जायेए  
 ॥ खायेए तिम इज बळी पाछो वमेए ॥ उभो थइने उव'  
 केए ॥ छटि जरिया सहु वकेए ॥ ते तकेए निकळवा  
 नो कोइ समेए ॥ ५॥ जरमे मिलि हांकी काढ्योए ॥  
 खरमे मीले ते नाठोए ॥ माठोए रहेता थाये माहरोए  
 ॥ जेसगराय आव्यो जिशोए ॥ जरमा देखे नहीं तिसेए ॥  
 नृपतिशए मंत्रीस्युं स्त्रीज्यो खरोए ॥ ६॥ किहां राउळ दी  
 से नहींए ॥ तुम आगळे नावो सहीए ॥ इम कह्यो हांक्या  
 सहु तुम्हे शुं कीयोए ॥ मंत्री कहे राजन सुणोए ॥ मुखे  
 वमन कर्यो घणोए ॥ सुगामणोए जरमे काढी मुंकी  
 योए ॥ ७॥ सीह संकदथी छुटियोए ॥ नावे तेह अपु,  
 वियोए ॥ रुठियोए ते हवे जाये किम ग्रहोए ॥ लावो  
 तेहने पकमी ॥ हाथ पावतशुं जकमी ॥ फरडीए न  
 ही तो थास्यो नृप कस्योए ॥ ८॥ राउळ केमे चाल्यो  
 ए ॥ सेना लेइ माल्योए ॥ साल्योए सेनानीने दुख घ  
 णोए ॥ कुमर तणा जोतो पायए ॥ केमे उजाएयो जा  
 यए ॥ ते थायए अली कुभारनो भाहुणोए ॥ ९॥ वी

हयो अलीनो घरं जडए ॥ कुमरनरिंदने शुद्ध थडए ॥  
 घरमेंए छे काढी घे इम शणें ॥ नहिं तो मारीश तु  
 जनेए ॥ दोष म देख्श मुजनेए ॥ वजनेए सगति करीजे आ  
 पणीए ॥ १० ॥ अलि भाखे धीरज धरीए ॥ कां तुल  
 सहुनी, मति फरीए ॥ इम करीए दंड किस्यो लेवा मतोए  
 ॥ कुडो कलक न दीजीयेए ॥ चोर करी दंम लीजी  
 येए ॥ कीजीयेए मुज घरमां जोइ छतोए ॥ ११ ॥ जो  
 निंसरे मुज घरमां हिए ॥ तो हणज्यो सहुने साहीए ॥  
 इम कांए रैयत लोकने दुख दीयोए ॥ वचन इस्यां  
 अलिनां सुणीए ॥ रीसणो सेना घणीए ॥ अवगणीए घर  
 तेहनो, जोवंरावीयोए ॥ १२ ॥ जोवंता लाध्यो नहींए ॥  
 तिण खेद लहो मन मां हिए ॥ तो किहांए न जडयो फ  
 री पाटण गयोए ॥ सेनानी राय पायतमीए ॥ दाळ थ  
 इ पांवीशमीए ॥ घमघमीए नूप जिर्नहर्ष रावो थयोए  
 ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ६७३ ॥

दाळ ३६ मी.

१. दुहा ॥ राय रोशे थयो रातमो ॥ भाखे वयण  
 फवोर ॥ मुहुं लेइ शं आवीयो ॥ जो लाव्यो नहि  
 चोर ॥ १ ॥ नूप खिज्यो जाणी करी ॥ रे चो तिण

वार ॥ वळी आवे अलि मंदिरे ॥ जेई बहु-असवार ॥  
 २ ॥ अलि जाण्युं वाजी वुरि ॥ हवे न राख्यो जाय ॥  
 मंड थकी काढी करी ॥ कहे सांभळ महाराय ॥ ३ ॥  
 तुजने राखी नवि शकुं ॥ आव्यो वळी कटुक ॥ उजो  
 मारहिश हवे इहां ॥ उतरि जाहि अटुक ॥ ४ ॥ कटुक  
 वचन कहुं जे भणी ॥ मुज वळ नहि लवलेश ॥ रा  
 य तणो भय छे वणो ॥ तुजने भलो निदेश ॥ ५ ॥ प  
 रजापति सांभळी वलण ॥ भाखे कुमरनरिंद ॥ वळरो  
 जे दि मुज दिहमा ॥ तो थास्ये आणंद ॥ ६ ॥  
 डाळ ॥ धन धन श्री रिपिराय अताथी ॥ ७ ॥ दे  
 शी ॥ देई विलासा इणी परे अलिने ॥ चाल्यो कुमर  
 भूपालजी ॥ अयरीना जय-शांगी जाये ॥ जाण थई  
 ततकाळजी ॥ दे ० १ ॥ सैनानी तव कैमे उजाणो ॥ जे  
 कटक सिरदारजी ॥ पाछो फिरी जेवे राजेशर ॥  
 केमे उमि स्नेह अपारजी ॥ दे ० २ ॥ एतो केमे माहरें  
 बाहर आवी ॥ हवे नासी किहां जाउंजी ॥ श्रीमसिंह  
 हाजी सरणे पश्टो ॥ राखे राखे हुं दुख पाउंजी ॥ दे ०  
 ३ ॥ जेसंग नृपनोरे लश्कर आव्यो ॥ मुजने पकडी  
 जास्येजी ॥ ४ ॥ जयथी मुजने उगारशे ॥ पुण्य वणो

तुज थाशेजी ॥दे० ४॥ उंडीरे खाड ते मांहीं बसायाँ ॥  
 उपर झांखर नांख्यांजी ॥ धायो सेनानी पग पग  
 आयो ॥ वयण इश्यां तिहां झाख्यांजी ॥दे० ५॥ उर  
 उपरो जोतां दटे न आवे ॥ भीमने पुछे सेनानीजी ॥  
 इहां आव्यो ते किहां गयो एक नर ॥ भीम कहे सन  
 मानीजी ॥दे० ६॥ इहां तो आव्यो कोइ न दीठो ॥ न  
 वी मानो तो जोओजी ॥ कून कहुं तो आण जेसंग  
 नी ॥ फोकट खोटी मत होओजी ॥दे० ७॥ सेनानी  
 कोप्यो भीम उररे ॥ खेन फिरी सहु जांबेजी ॥ खा  
 न झांखर तिहां आवी रोसे ॥ जाला अणीए प्रोवेजी  
 ॥दे० ८॥ कुमर नरिंद कळा निज फोरवी ॥ आउध  
 अणी नवि लाग्योजी ॥ राखणहारे राखी लीधो ॥  
 अय तेहनो पण जाग्योजी ॥दे० ९॥ यतः ॥ जिनकुं  
 राखे सांश्यां ॥ मारी न शके कोय ॥ बाळ न वंका  
 नच्छी ॥ जो जगे वयरी होय ॥ १॥ चाल पूर्वनी ॥  
 सेनानी झांखो थइ वळियो ॥ भीमसेन हाजी ते वार  
 जी ॥ झांखर परहां करीने काढ्यो ॥ गुज्जरपति सु  
 विचारजी ॥दे० १०॥ तुं साहसवंत जगमां मोटो ॥  
 जीव दयानो जाणजी ॥ पर उपगारी तुं सुविचारी ॥





॥ धन उपरे अत्यंत ॥ धन काजे नारे मरे ॥ करे कृक  
 न अनंत ॥ ५ ॥ धन काजे ऊंदर मुओ ॥ में मायों  
 धन काज ॥ ६ ॥ धनथी शुं सीझशे ॥ पस्तावे महारा  
 ज ॥ ६ ॥

॥ द्वाळ ॥ चमर दळावे रायजाहो राणी महोलमेंजी ॥  
 ए देशी ॥ चाल्यो लेइ तिहांथीहो कुमर नरेशरु ॥ आ  
 व्यो कंवरी गाम ॥ देव नारीनेहो घरे-आवी रस्यो ॥  
 पुण्य तणो ते ठान ॥ चा० १ ॥ उत्तम देखीहो नर तिण  
 नारीये ॥ कीधी बहु मनुहार ॥ पंथी जाणीनेहो ते दिन  
 मते करे ॥ भोजन भक्ति अपार ॥ चा० २ ॥ परउपगा  
 रीहो माणस जे हुवे ॥ जे दुखिया आधार ॥ स्वारथ  
 पाखेहो हितशुं जे मिले ॥ ते विरला संसार ॥ चा० ३ ॥  
 आगळ चालंतांहो तीन दिवश थयां ॥ भूखे पिढ्यो  
 अंग ॥ स्वसुर भूवनथीहो इभ्य वधू जाये ॥ निज पी  
 हर मन रंग ॥ चा० ४ ॥ कुमर कुमलाणोहो दीवो ना  
 रीये ॥ आणी भाई प्रेम ॥ सालि करंवोहो सुरभि जि  
 मामीयो ॥ तूपत थइ कहे एम ॥ चा० ५ ॥ यत कर  
 चलु पाणी एणवि ॥ अवसर दिनण मुछ्छायो जिय  
 ॥ पछ्छा मुआण सुंदरि ॥ धन सय दिनेण कंतेण

॥ १ ॥ जं अवसरेण न हुयं ॥ दाणं विणो सुजा सियं व  
यणं ॥ पच्छा गय कालेण ॥ अवसर रहिएण कितेण  
॥ २ ॥ चाल पूर्वनी ॥ कुमर खुशी थरहो कहे ॥ तिण  
नारीने ॥ तुं मुज बहेन अमोल ॥ राज्य हुं लहीशुं हो  
तिलक करावुं ॥ तुज हापे मुज बोल ॥ चा ० ६ ॥  
इम कही चाल्यो हो राय तिहां थकी ॥ आव्यो दह  
धली गाम ॥ राय जेसंगने हो जाण थइ जिशे ॥ आ  
व्यो लशकर ताम ॥ चा ० ७ ॥ आवीने वीटयो हो गाम  
ते दहधली ॥ जाण न पावे राय ॥ पास बंधाणा हो  
मृगलानी परे ॥ आकुळ व्याकुळ थाय ॥ चा ० ८ ॥  
साजन नामे हो तिहा कुंभार छे ॥ आव्यो सरणे तास ॥  
राखे मुज हाणतां हो तुं परजापति ॥ करी आव्यो तुज  
आश ॥ चा ० ९ ॥ इट नीमाहा हो मांही घालीयो ॥ जा  
णे नहीं तिहां कोइ ॥ सुजट सहु आव्या हो पुर मांही वही ॥  
घर घर मुंक्यो जोइ ॥ चा ० १० ॥ जोतां नवि लाथ्यो  
हो कुमर नरिंदने ॥ आव्या साजन ठाय ॥ पकडी  
साजनने हो सुजट कहे इशु ॥ कहेरे किहां गयो राय  
॥ चा ० ११ ॥ खराने उखाणो हो करोछो सहु तुम्हे ॥  
धोवीनो वाही वाही ॥ न चले स्त्री केमे हो वळ त्यारे

कूटे ॥ गाधीनीने साही ॥ चा० १२ ॥ तिम तुमे न श  
 क्याहो कुमर जणी ग्रही ॥ मांटवो एह उपाय ॥ प  
 रज लूटेवाहो पण छे शिर धणी ॥ जेसंगदे महाराय  
 ॥ चा० १३ ॥ धीर थइनेहो बोल्यो आकरो ॥ दलपति  
 चित्त विमासी ॥ घरमां नवि दिसेहो किहांए कुंमारने ॥  
 कुमरपाळ गयो नाशी ॥ चा० १४ ॥ सैन्य लेइनेहो सेना  
 नी वळव्यो ॥ जइ धीनवीयो राय ॥ चोरनी गोढेहो  
 किहांक नाशी गयो ॥ कीमती न झाल्यो जाय ॥ चा०  
 १५ ॥ साजन काढव्योहो कुंमरने मांहुपी ॥ विप्र आ  
 व्यो तिण ताम ॥ त्रिण जण भेळोहो वात मिली करे ॥  
 साजन पिता कहे ताम ॥ चा० १६ ॥ वात मिलीनेहो  
 प्रण जणेशी कैरो ॥ लेश्यो गढ चित्रोम ॥ साजन  
 पितानेहो कुमर कहे इशुं ॥ शी काढोछो खोम ॥ चा०  
 १७ ॥ वात कहुंछुंहो अम्हे उपगारनी ॥ मोटो जग उ  
 पंगार ॥ ढाळ थइछेहो ए सत्रीशमी ॥ कहे जिनेहर्ष  
 विचार ॥ चा० १८ ॥ सर्व गाथा ७१६ ॥

ढाळ ३८ मी.

दुहा ॥ धिग तेहनो अपवित्र कुळ ॥ धिग तेह  
 नो अवतार ॥ धिग तेहनो मांटीपणो ॥ जे न करे उ

पगार ॥ १ ॥ पर काजे तरु अर फळे ॥ पर काजे जळ धारा ॥  
 पर काजे नर सा पुरुष ॥ लीधो जग अवतार ॥ २ ॥ उपगारी  
 भारी खमा ॥ सहने चाहे सुख ॥ ते विरला संसार मां ॥ जे  
 भाजे पर दुख ॥ ३ ॥ जे नर उपगारी नही ॥ ते सरज्या  
 कांड जग ॥ निगुण जन्म अहिले गम्यो ॥ जिम व  
 न केंरो मृग ॥ ४ ॥ एहवुं सांभळी नृप वयण ॥ हिरण  
 कहे फिरि ताम ॥ निगुण जन्म मुजने करो ॥ पण सांभ  
 ल मुज गुण ग्राम ॥ ५ ॥ (ढाळ ॥ नदी जमुना के तीर  
 उमे दोय पंखीयां) ॥ ए देशी ॥ पगिहा मंसाहारी मंस च  
 रम तापस आहे ॥ सींग आहे जो गिंद नाभी मल महम  
 हे ॥ नारी उपम नक्षत्र नाद जीनो रहूं ॥ परीहां नीगु  
 ण सरीखो मुज कियो तुज शुं कहूं ॥ ६ ॥ दुहा ॥ मृ  
 ग वाणी श्रवणे शुणी ॥ भाखे कुमर नरिंद ॥ निर्गुण  
 पुरुष पशु सारिखो ॥ जाणे गायीं वंद ॥ ७ ॥ वण ज  
 क्षण चुं खीर वहीं घृत उजळां ॥ पमिवा देखुं चंद स  
 दा दृग् निरमळा ॥ गोवर करुं पवित्र वेतरणी तारहुं ॥  
 गाय कहे सम निगुण न करे नृप वारिहुं ॥ ८ ॥ गाय  
 वचन श्रवणे सुणी ॥ कुमर पाळ कहे वाण ॥ नहीं जे  
 , हमां उपगार गुण ॥ ते नर गर्ह्य जाण ॥ ९ ॥ सरीखो

रहुं खट रित्ति के लोटुं छारमां ॥ भार बहुं निशि दिश  
 न धुजूं ठारमां ॥ बोल्यो यु बहु रिद्धि के.रीश घरं न  
 हीं ॥ परिहां गर्दभ निगुण उपमा किम लही ॥ १० ॥  
 गर्दभ वयण सुणी करी ॥ राजा करे विचार ॥ गुण  
 हीणा नर आवीया ॥ काग तण अवतार ॥ ११ ॥ प  
 हिलो पावस नास के माळो हुं करुं ॥ पोखुं सह  
 कुटंब धनुषधरथी डरुं ॥ कोइ न देखे भोग के स  
 उजन मेळवुं ॥ काग कहे सुणो राय निगुण नहीं भे  
 लवुं ॥ १२ ॥ काग वयण नु सांजळी ॥ जाखे. एम. सुजा  
 ण ॥ निगुण पुरुष अज सारिखो ॥ जन्म तास अप  
 माण ॥ १३ ॥ होम हुवे मुज मांस विप्र वेदी जखे ॥ दे  
 वी पुज प्रमाण न होवे मुज पखे ॥ न पीहुं डोही नीर  
 न बिख पोहोवि अही ॥ छाग कहे किम राय तें मु  
 ज उपम कही ॥ १४ ॥ निगुण पुरुषनी उपमा ॥ जेहने दि  
 जे जोय ॥ राय कहे इण जगतमां ॥ इशो न दीशे को  
 य ॥ १५ ॥ साजन तहारो सुत जलो ॥ कीधो मुज उ  
 पगार ॥ मुजने राख्यो जीवतो ॥ धन तु जाति कुंनार  
 र ॥ १६ ॥ साजनने राजा कहे ॥ सांजळ मीत्र उछां  
 ह ॥ मुज कुटंब लेइ जाइजे ॥ पुर उजेणी मांह ॥ १७ ॥

दाळ ॥ नंदनकु मिसला हुल्लरावे ॥९ देशी॥ मननी  
 खांते विप्र संघाते ॥ चाल्यो कुमर नरिंदरे ॥ इच्छा  
 चलतो पुर पुर भगतो ॥ धरतो मन आणंदरे ॥ म० १  
 ॥ थयो मध्यान समे एक गामे ॥ आव्या लागीं ग्रीव  
 रे ॥ राय कहे ब्राह्मणेने एहवुं ॥ ग्रीव तणुं छे दूखरे  
 म० २ ॥ भोजननी शी परे हवे करशुं ॥ गांवे नहीं छे  
 दामरे ॥ दाम विनां कांई काम न थाये ॥ ब्राह्मण वो  
 ल्यो तामरे ॥ म० ३ ॥ ग्रीव तणी विद्या मुज मांहिं ॥  
 ग्रीव ग्रीवारी मांयरे ॥ अन्न घणोहि मांगी लावीश ॥  
 चिंता न करे रायरे ॥ म० ४ ॥ चाल्यो ग्रीव भणी  
 ते ब्राह्मण ॥ जसो करंवो साररे ॥ अन्न उदक लेइने  
 आव्यो ॥ राय आगळे तिणिवाररे ॥ म० ५ ॥ दिव्य क  
 रंवो ओळवी राख्यो ॥ लेई रोटी जातरे ॥ ग्रीव था  
 ळ नून आगळे मुक्यो ॥ राय विचारी वातरे ॥ म०  
 ६ ॥ अवसर देखी दाव न चुके ॥ ते कहिये वृद्धिधंत  
 रे ॥ दात सहु मिठी अवसरनी ॥ अवसर जग वळवं  
 तरे ॥ म० ७ ॥ इम जाणीने राजा कीधो ॥ ग्रीव तणो  
 आहाररे ॥ द्यणी कपट निद्राए सुतो ॥ कुमर नरिंद  
 तिवाररे ॥ म० ८ ॥ ब्राह्मण उठी जिम्यो करंवो ॥ जा

सक पेट भरेयरे ॥ सेप लेइने राजापासे ॥ आधी एम  
 कहेयरे ॥ म० ९८ ॥ स्वामी एह करंवो खाओ ॥ तुमति क  
 रो निज प्राणरे ॥ न घटे ए जिमवो मुजने ॥ सांभळ  
 मित्र सुजाणरे ॥ म० ९९ ॥ मुज छानो तें नख्यो करं  
 वो ॥ लालचे घाल्यो वित्तरे ॥ विप्र कहे सांभळ नर  
 नायक ॥ वात कहूं तुज नित्तरे ॥ म० १०० ॥ करंवो ए  
 उघाडो आख्यो ॥ तिण में पहिलो लीधरे ॥ मुजने प  
 च्युं तिण तुम आप्युं ॥ तबको बोछो सिधरे ॥ म०  
 १०१ ॥ विप्र आहार जाणोने खाघो ॥ तुलने किम देवा  
 यरे ॥ करी परीक्षा तुमने लाव्यो ॥ दोष म देशो रा  
 यरे ॥ म० १०२ ॥ अवसर देखी राय न बोल्यो ॥ बो  
 ल्यां जाये पितरे ॥ ॥ भुप करंवो ते आरोग्यो ॥  
 राखी प्रिति सुरितरे ॥ म० १०३ ॥ विप्र भणी वयणे सं  
 तोख्यो ॥ चाल्यो राय प्रजातरे ॥ चालतां चालतां  
 कुशल खेमे ॥ आव्यो नगर खंभातरे ॥ म० १०४ ॥ वा  
 हिर वेठो छे तिण अवसरे ॥ दीवो अचरिज रायरे ॥  
 अहि मस्तके दीवो गंगेठो ॥ नाचंतो अजीरामरे ॥ म०  
 १०५ ॥ इण अवसरे हेमाचारज मुनी ॥ थंमेल भूमें जा  
 येरे ॥ देखी अहि मांथे गंगेठो ॥ सकुन विचार सोहा



वेरे ॥ म० १७ ॥ गुरु गीतारथ सघलुं जाणे ॥ सर्वज्ञ  
पुत्र कहावेरे ॥ ढाळ थर अडवीशमी ९ ॥ जिनहर्ष  
भली परे गावेरे ॥ म० १८ ॥ सर्व गाथा ७५० .

ढाळ ३९, मी.

हुहा ॥ मावे जिमणे जोवता ॥ दीठा राय कुमा  
र ॥ तिणे पण दीठा हेमने ॥ विधे वाद्या तिणवार ॥ १  
॥ करजोडी कहे गुरु जणी ॥ हुं प्रभु भक्त्यो अपार ॥  
अजीस राज न पामीयो ॥ दुखनो नाव्यो पार ॥ २  
॥ हेमसूरि हरखे कहे ॥ चिता मननी टाळ ॥ अहि म  
स्तके गगेटीयो ॥ इण सुकने भूपाळ ॥ ३ ॥ इग्यारे न  
वाणुए ॥ महा वदि चोथ अदित ॥ पुण्यनक्षत्रे मध्य  
दिन ॥ राज्य लहीश सुवदित ॥ ४ ॥ इण वचने नृप ह  
रखीयो ॥ लाग्यो मुनीने पाय ॥ वचन अमोघ तमार  
नो ॥ थाशे सही शिपिराय ॥ ५ ॥ उदयन मन्त्री तिण स  
मे ॥ आव्यो वदण जाम ॥ कुमारपाळ गुरु पुछियो  
॥ एह रहे क्रिण ठाम ॥ ६ ॥

ढाळ ॥ महिदी लेवाने गइरे लाल ॥ लहुनो दे  
वर साथरे ॥ रंगभीना सुधा साहीवा घर आइज्यो ॥  
महिदी रंग लाग्यो ॥ ७ ॥ देशी ॥ जिनशासननो दीवलो

रे लाल ॥ जीवदया प्रतिपाळरे ॥ उदयन नामे वाणी  
 योरे लाल ॥ जाति जाली श्रीमाळरे ॥ गुरु भाखे सह  
 साखे ॥ साहीवा तुम्हे सुणज्यो एहनी कहुं कथा ॥  
 ९ आंकणी ॥ चउमासा जांहीं घालीयोरे लाल ॥ धृ  
 त जेवाने कामरे ॥ कोइ सकुन थयो सकुनी तिहारे ला  
 ल ॥ तेडीने कहे तामरे ॥ गु० १ ॥ सांजळ तुंतो वाणी  
 यारे लाल ॥ तुज न मळे इहां रिद्धरे ॥ करणावती  
 गुज्जर देशमारे लाल ॥ तिहां पामीश नवतिद्धरे ॥ गु०  
 २ ॥ च्यार पुत्र उदा तणेरे लाल ॥ बाहम अंबम दो  
 यरे ॥ सोहलो चोहम च्यारे जलारे लाल ॥ गुण वो  
 ले सह कोयरे ॥ गु० ४ ॥ सुत नारि सांये करीरे लाल  
 ॥ आव्यो गुज्जर ठामरे ॥ एक देवी सिणीधर मत्तके  
 रे लाल ॥ बेठी दीठी तामरे ॥ गु० ५ ॥ बोल्या देखी सड  
 णवीरे लाल ॥ सांजळ वणीक सुजाणरे ॥ धाय रि  
 जा के मंत्रवीरे लाल ॥ सकुन तणे परमाणरे ॥ गु० ६  
 ॥ सकुन नमी आव्यो तिहारे लाल ॥ नृप मुजरो ज  
 इ कीधरे ॥ ततखिण राजा सुमर्सन थरे लाल ॥ मं  
 त्री मुद्रा दीधरे ॥ गु० ७ ॥ जेसंगरय बोलावीयोरे ला  
 ल ॥ उदयन मंत्री तामरे ॥ ते आव्यो अमने वांदवा

रे लाल ॥ उत्तम छे परिणामरे ॥ गु० ८ ॥ कुमर नरिं  
 द्र जळावीयोरे लाल ॥ उदयनने गुरुरायरे ॥ घर तेमी  
 जइ कुमर तणारे लाल ॥ भक्ति करे चित्त लायरे ॥  
 गु० ९ ॥ इण अवसरे जेसंगनेरे लाल ॥ दोषी जइ क  
 ही वातरे ॥ उदयन मंत्राशरने घररे लाल ॥ कुमर र  
 हे खभातरे ॥ गु० १० ॥ जेसंग कटक चलावीयोरे ला  
 ल ॥ लावो पकमी तासरे ॥ मुहुताने जाण आगळ  
 थी यइरे लाल ॥ कुमर भणी कहे भासरे ॥ गु० ११  
 ॥ आव्यो दळ जेसंगनोरे लाल ॥ इहांथी परहो नाश  
 रे ॥ तुजने मुजने दूख आपंशेरे लाल ॥ वैरीनो शो  
 येसासरे ॥ गु० १२ ॥ ताहरा गुण मुज् मन वश्यारे ला  
 ल ॥ तुं गीहओ गुण खाणारे ॥ तुंजने हुं राखी नवी श  
 कुंरे लाल ॥ ते हुं पशु प्रमाणरे ॥ गु० १३ ॥ कुमर कहे  
 मंत्री सुणोरे लाल ॥ एशुं बोल्या बोलरे ॥ उपगारी  
 तुं ज्ञारी खमोरे लाल ॥ नहीं कोइ ताहरी तोलरे ॥ गु०  
 १४ ॥ उपगारी तु माहगेरे लाल ॥ तुं मुज ता  
 त समानरे ॥ ताहरा गुण विसरशे नहीरे लाल  
 ॥ रहेशे हियमे ध्यानरे ॥ गु० १५ ॥ लश्कर आ  
 व्यो तटलेरे लाल ॥ नाठो कुमर नरिंदरे ॥ अ

शाले पाधरोरे लाल ॥ वेढा हेमसुरिदरे ॥ गु० १६ ॥ क  
र जोडी कहे मुज मणीरे लाल ॥ राखो हेमसुरीतरे  
॥ पुण्यादव्य पुरुष जाणी करीरे लाल ॥ घाल्यो भुंर  
रे अगनीशरे ॥ गु० १७ ॥ लेइ भुंराने वारणेरे लाल ॥  
खडकयां पुस्तक माजरे ॥ गुणचाळीशमी पुरी धरे  
लाल ॥ जिनहर्ष कहे ए दाळरे ॥ गु० १८ ॥ सर्व गा

ढाळ ४० मी.

• 'दुहा' ॥ सेनानी आयो तिसे ॥ जोया उदयन गे  
ह ॥ तिहां किहां पाम्यो नही ॥ जोयो नगर फिरेह ॥  
१ ॥ आव्या सुभट उतावळा ॥ हेम तिणी पोशाळ ॥  
कुमरपाळ आव्यो हुवे ॥ तो गुरजि देवाळ ॥ २ ॥ हे  
म कहे इहां कोड नथी ॥ तेहने राखुं सीध ॥ जोयो  
फिरी उपासरो ॥ सधळी सुद्धि क्रिध ॥ ३ ॥ खोल्यो पण  
लाध्यो नही ॥ सुभट थया दिलगीर ॥ कटक गयो  
पाछो फिरी ॥ काढ्यो कुमर सधीर ॥ ४ ॥ हेम कहे  
सांनळ कुमर ॥ नहि इहा रहेवा लाग ॥ जा परदेशे  
निकळी ॥ फळशे ताहरो भाग ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ म्हारे आगणीये आवलो मोरीयो ॥ ६ ॥

देशी ॥ जिण देशो नहीं कोइ आपणो ॥ जिण देशे ब  
 यरीनां साल ॥ तजीये ते दूरे देशनो ॥ तिहां रह्यानो  
 नहीं कोइ हवाल ॥ जि० १ ॥ यतः ॥ हस्ती हस्त सह  
 स्त्रेण ॥ शत हस्ते न बाजिना ॥ शृंगीणां दश सहस्ते  
 ह ॥ देश त्यागे न दुर्जनः ॥ १ ॥ चालें पुर्वनी ॥ तु  
 स्तने परदेशे भाइ जलो ॥ नवि जाणे जिहां नाम मुकाम ॥  
 तिहां रहेतां कोइ न पराभवे ॥ सुख लहीये तेहिज निज  
 ग्राम ॥ जि० २ ॥ हरख्यो नृप वर्चन सुणी करी ॥ पाय  
 लागी कहे वचन स्याळ ॥ मुजने तुले राख्यो ॥ जीव  
 तो ॥ सह प्राणीना तुझे छो भतिपाळ ॥ जि० ३ ॥ पहि  
 ली पण मुज उररे तुमे ॥ राख्यो छो हित भिति अपार ॥ ब  
 ली ए उपगार कीयो घणो ॥ ओसिंकल थाश्युं फिण  
 वार ॥ जि० ४ ॥ एहवुं कही राजा चालीयो ॥ आ  
 ख्यो वटवद्र नगर मझार ॥ बेठो दीठो एक घाणीयो ॥  
 तेहनो नाम छे कुटक विचार ॥ जि० ५ ॥ तेहने हांटे  
 राजा गयो ॥ खादिमनो तस पूछे पाम ॥ ए इमज  
 ए इमज नाखे मुखे ॥ राय चिंते दीशे छे अनाम ॥ जि०  
 ६ ॥ तोळावी लोधा दाळीया ॥ बेशी तिहां ठुंगे राय  
 ॥ हरमंथ भखी पाणी पीयो ॥ उठी चाल्यो ते केने पा

य ॥ जि० ७० ॥ अंचल गही उजो राखीयो ॥ मुखे वो  
 ले बली भूँडो गाल ॥ दोमे छे कोइ देवाळीयो ॥ नि  
 अंछि कहो मुख परो, वाल ॥ जि० ७१ ॥ दोकडां दे नूढ़  
 चणा तणा ॥ रायं जाखे शेठ म करे पुकार ॥ हवैणो  
 तो गावे नही ॥ आपीशं हूं ॥ तुज वीजो वार  
 ॥ जि० ७२ ॥ दाम देइ जा झलमारीमां ॥ फोर्कट खा  
 ५ किम जाइश माज ॥ माणस मिलियां तिहां चोके  
 नां ॥ मुख चाने वाये बली गाल ॥ जि० ७३ ॥ सांति  
 लज्यो तुसे सहु शेर्वाया ॥ थयो मुजने चणां उपर मे  
 म ॥ एहने में पूछ्यो किम दियो ॥ कसो ऐणो ए एमज  
 एम ॥ जि० ७४ ॥ में जाण्युं फांसुं ॥ दीयेगां लेइने खा  
 धा तिणवार ॥ हवै करे विगोवा बाणीयो ॥ हवै की  
 जे कहो किशो विचार ॥ जि० ७५ ॥ लोके पणं बायो  
 नहिं रहे ॥ धर्मधमीयो तव कुमर नरेश ॥ समजे ऐ  
 तो सही आपधी ॥ दीक पाहुं जो करीये पेश ॥ जि०  
 ७६ ॥ नाख्यो नीचो नृप गळ ग्रहो ॥ बळो दीधो उपर  
 जत मार ॥ समजापी तिहांथी चालीयो ॥ विण मा  
 रे थाये नहीं सार ॥ जि० ७७ ॥ मुख खिर मुंज सु  
 लोहंमो ॥ विण कुट्यां ५ नावे हाथी जीनहरपे ठाल

॥ दुहा ॥ दइणो सवहीथी वुरो ॥ देणे न रहे लाज  
 ॥ दइणे दिणो हुंर रहे ॥ दइणो विसो अकाज ॥ १ ॥  
 मोटा पण दइणा थकी ॥ सहे पीयारी ॥ गाळ ॥ दइणा  
 थी लघुत लिहे ॥ दइणो परहो वाळ ॥ २ ॥ सुखे न  
 आवे निदनी ॥ मुखे सदा निसासि ॥ रहे उदास ॥ भु  
 खनी ॥ माथे दइणो जास ॥ ३ ॥ लेइ पाछो न विदी  
 ये ॥ परधन खाइ रहंत ॥ परभव ते भैंसा थर ॥ ले  
 इ जार रहंत ॥ ४ ॥ साजि दालि घृत गोळथी ॥ भुलो  
 ज विष आहोर ॥ परधनथी सुख भोगवे ॥ ते सुख  
 किशो संसार ॥ ५ ॥ मुहं मारी खाइ रहे ॥ पाछो जे  
 न दीयंत ॥ पण रिणो वैरा झुना न्हेवे ॥ जदि तदि आ  
 इ लीयंत ॥ ६ ॥ परधन लेइ विद्रवी ॥ जाणे माणुं सु  
 ख ॥ पण जग मांही जोतता ॥ दइणा ससो न दुख ॥ ७ ॥  
 ॥ ८ ॥ दाळ ॥ घर आबोजी आबो मारीयो ॥ ९ ॥ देशी  
 ॥ इम चित्त रीतो नृप त्वालीयो ॥ जोगानो कीधो रूपा  
 ॥ निज हांथे खडग ग्रही करी ॥ आव्यो जरुचमां भू

१॥ मुख लांबी दाढी हती ॥ हुताज वीरला दंत ॥ पा  
न तणो ए भोगीयो ॥ जोगी सुणो दत्तंत ॥ २॥ किम  
जाण्यो माझ तुल्यो ॥ ए कसा जे बोल ॥ नारि कहेरे जो  
गिया ॥ साभळ वयण अमोल ॥ ३॥ पुढे आकार व  
णि तणो ॥ स्वाधे कुंमळ तास ॥ गौर रिड्य चीजी  
कहे ॥ दाढी मोटी तास ॥ ४॥ दिग्ध नख टिची आ  
गुळी ॥ जाणु विरला दंत ॥ अगूढो चूने भर्यो ॥ भ  
क्षण पान करत ॥ ५॥ तेहना उतर सांगळी ॥ हरख्यो  
मनमा भूप ॥ चतुर विचक्षण कामिनी ॥ ए गामनी  
अनूप ॥ ६॥

ढाळ ॥ घमळे भार मराळां राज वातां केम क  
रोछो ॥ ७॥ हेशी ॥ तिहांधी आवी सरवर पाळे ॥ देव  
भूवन आलोकरे ॥ माहि थाये मस्तक पूजा ॥ नर  
नारी सहु थोके ॥ ८॥ मनमा एम विचारे राय ॥ ए  
शो अचरिज दीसे ॥ पूजाराने पुळे योगी ॥ मस्तक  
केम पूजायरे ॥ पूजारो कहे साभळ आश ॥ सुणता  
अचरिज थाय ॥ म० १॥ आगे ययो मकरध्वज रा  
जा ॥ सरवर एह खणाव्योरे ॥ पाणी अमृत अमृत  
सागर ॥ नाम कही बोलाव्यो ॥ म० ३॥ सरवर पाणी



जयों अनोरम ॥ विवे कमळ एक, होयरे, ॥ तेमां म  
 स्तक बोले एके ॥ बूमे छे सहु कोय ॥ म० ४ ॥ वच  
 न सुणी, मकरध्वज राजा ॥ पंढित सहु तेडाव्यारे ॥  
 कहो ए मस्तक शुं बोले छे ॥ अरथ कहो मन भा  
 व्या ॥ म० ५ ॥ पंढित सहु विमासण पडिया ॥ उत्तर  
 नवि देवरायरे ॥ मूढ, थया समकाळे सघळा ॥ बो  
 ल्यो, पण नवि जाय ॥ म० ६ ॥ अवसर विद्या काम न  
 आवी ॥ ते विद्या सें काजरे, ॥ अवसर जो जळधर  
 नवी वरसे, ॥ तो फोकट शुं गाजे ॥ म० ७ ॥ आप आ  
 पणे ठामे सहुको, ॥ पंढित नाम धरावेरे ॥ पण पुछ्या  
 नो उत्तर आपे ॥ पंढित ते, वम दावे ॥ म० ८ ॥ नुफ  
 पूछ्यातो, उत्तर, न थयो ॥ पंडित सहु विलखाणारे ॥  
 साते बोल भाहे हियमांमां ॥ खटके साल समाणा ॥  
 म० ९ ॥ पूछ्या उत्तर, नवी देवराणो ॥ वेळा झूर्यो  
 जायरे ॥ वाद वेळाये गाथा नावे ॥ गाता कंठ, बंधा  
 ये ॥ म० १० ॥ व्याख्यानी व्याघात करीजे, ॥ शास्त्र  
 अरथ शुद्ध मरडारे ॥ सजा मांही तुंकार बोलावे ॥ ए  
 साते उझरमी ॥ म० ११ ॥ उत्तर पंडित देइ न शक्या ॥  
 मनमा खरा लजाणारे ॥ अवधि लेइ खट मास तणी

॥ परदेसो ते उजाणा ॥ म० १२ ॥ आव्या नव कोटी म  
रु मंमळ ॥ पंमित एक मिहाळरे ॥ सुंदर रुप अनोप  
म दाढी ॥ दाढी दूखण टाळे ॥ म० १३ ॥ नागरवल्ली  
पान सरिखी ॥ दाढी जेहनी सोहेरे ॥ वचन द्रोहने  
माया मच्छर ॥ ज्ञानवंत जग मोहे ॥ म० १४ ॥ नारी  
विकथा करे कतुहळ ॥ ज्ञान वचन मुख बोलेरे ॥ हा  
श्याविनोद करे ते दाढी ॥ कहूं पांजणी तोळे ॥ म०  
१५ ॥ खावानो संवरें नहीं जेहने ॥ पेर स्त्री इच्छा गा  
ढीरे ॥ क्रोध लोभ कामारस तेहने ॥ झांखरे कहोये  
दाढी ॥ म० १६ ॥ पुंछ पापनी वांति न जाणे ॥ न करे  
धरम परीखरे ॥ वरत न पाळे तेहन दाढी ॥ जाणे छा  
ज सरीख ॥ म० १७ ॥ कंचण वरण सरूप सकोमळ ॥  
दीवो पंडित वारुरे ॥ मुख दाढी सोहे अति सुंदर ॥  
आव्या पूछण सारु ॥ म० १८ ॥ तेह अरथ पूछीजे ए  
हने ॥ ए कहेशे ततकाळरे ॥ कहे जिनहर्ष पंडित ते  
थोडा ॥ वेताळीशमी ढाळे ॥ म० १९ ॥ सर्व गाथा ८१२.

ढाळ ४३ मी.

दुहा ॥ पंमित गुण मंडित पवर ॥ जाणी तेहनी  
पास ॥ आव्या ते च्यारे जणा ॥ कीध जेहार सु ता

स ॥१॥ एके बुढो जग सहु ॥ एहनो कहो विचार  
 ॥ तुमने पुछेवा जणी ॥ आव्या छुं इण वार ॥२॥ ते  
 कहे हुं जाणुं नहि ॥ कहेशे महारो बाप ॥ बाप क  
 ने ते आवीया ॥ पूछे तास जबाप ॥३॥ तिणे देखा  
 रुयो निज पिता ॥ तिहां पहुता ततकाल ॥ ते कहे मु  
 ज कहेशे पिता ॥ तिहां गया ते बाळ ॥४॥ गरढो ता  
 त देखाडीयो ॥ दोन्ही गया संताप ॥ ते कहे कहेशे  
 अरथ ॥ ओ वेठो सहुनो बाप ॥५॥ ते पास च्यारे  
 गया ॥ पूछे तास विचार ॥ ते पंडित बोल्यो इशुं ॥  
 विद्यानो जंडार ॥६॥

ढाळ ॥ मुज सुधो धरम न रमीयारे ॥ लही स  
 मकित आले गमीयो ॥ ए देशी ॥ मरु पंडित, कहे न  
 हीं दोहाखारे ॥ एहनो छे अरथ तो सोहीलो ॥ तुम  
 ने मुकीश समझावीरे ॥ एहवी तिणे वात बनावी ॥१॥  
 तुम्हे लो ब्राह्मण परदेशीरे ॥ इहां अन न कोइ देशी  
 ॥ धन पाखें दूखीया थाऊंरे ॥ तुमने एक बुद्धि शि  
 खाऊं ॥२॥ च्यार खान लेइ तमे पाळोरे ॥ चहुटे  
 जइ तेह दीखालो ॥ तेहनो धन परिघल आस्थेरे ॥  
 सुत टाळीन दूरे जाशे ॥३॥ लोभी ब्राह्मण धन

रे ॥ च्यारे खान च्यारे जण लीधा ॥ पाळीने मोटा की-  
 धारे ॥ कमे लेइ आव्या सीध ॥ १॥ पूछे कहे अग्य  
 विचारोरे ॥ पंक्ति बोल्या तिणवारो ॥ बुद्धिद्विष्टा लो-  
 च्वारेइरे ॥ समज्या नहीं अरथ अजेइ ॥ ५॥ शास्त्र क-  
 ह्यो अरथ सभाळोरे ॥ गरज रजस्वळा चंदाळो ॥  
 मद्यपात्र देश गृह खानोरे ॥ फरसंता उपजे स्तानो ॥ ६॥  
 उत्तम ब्राह्मण महाराजोरे ॥ एके बुद्धा तुम्हे आजो ॥  
 मस्तक ए अरथ प्रकाशारे ॥ सहज जगने लोभ विणा-  
 सी ॥ ७॥ लोभे करे नीच कमाइरे ॥ भाईन मारे भा-  
 ई ॥ लोभे पुत वापने वंचेरे ॥ लोभे बहु पातक संघे-  
 ॥ ८॥ समज्या सुणी अरथ विचारोरे ॥ आव्या निज  
 ठामे तिवारो ॥ राजाने दीध आशीसोरे ॥ संभळाव्यो  
 अरथ जगीसो ॥ ९॥ राघ खरो विचारी जोयारे ॥  
 एके लोभी जगत विगोयो ॥ राघे ए पुत्रन कराव्योरे  
 ॥ पाहण मस्तक मंढाव्यो ॥ १०॥ वात सांजळी कुम-  
 र नरिंदोरे ॥ मत्त मांहीं थयो आणंदो ॥ पापी ए लो-  
 भ विगोवेरे ॥ कीरती कमळा सह खोवे ॥ ११॥ जे  
 लोभ तजे नर नारीरे ॥ तेहने जाऊं बलीहारी ॥ चा-  
 एवं चींतिवतोरे ॥ मत्त मांहीं थयो आणंदो ॥

१२॥ तिहां कुलंब पाटण भूमिशोरें ॥ तेहने कस्यो इ-  
 श्यो ॥ कालहे तुज पाटण आस्थरे ॥ गुज्जर देशाधि-  
 प थाश्ये ॥ १३॥ करजे शेवा सुखदायारे ॥ चिहुं दिशे,  
 चरराय पठाया ॥ सुभ लक्षण कुमर निहाळरे ॥ ते  
 मि लाव्या ततकाल ॥ १४॥ नूप उठी आदर कीधो  
 रे ॥ अरधासण वेसंण दीधो ॥ ए राज्य तुझे प्रभु ली-  
 जेरे ॥ ताहरी शेवा अहे कीजे ॥ १५॥ कहे कुमर न-  
 ल्युं हो राजोरें ॥ तो पण कहो कोइक काजो ॥ मु-  
 जनो आव्यो इहां जाणरे ॥ ते करें राजन इण ठाणे  
 ॥ १६॥ नामे प्रासाद कराव्यो ॥ नाणो कुमरांक जरा  
 व्यो ॥ बहु भक्ति करी दीपाव्योरे ॥ केटलां दिन तिहां  
 रहाव्यो ॥ १७॥ राय कुमारपाल झमजाखरे ॥ परदेशी  
 ने कुण राखे ॥ उत्तम तुम सरीखा होइरे ॥ आदर  
 आपोते जोइ ॥ १८॥ धन्य तुं जग मांही कह्योरे ॥  
 तुज समवत को नवी जहीये ॥ वेंताळीशमी इण दा-  
 ळेरे ॥ जिनहर्ष कसो भूपाळे ॥ १९॥ सर्व गाथा ८६३.

हाळ ४४.मी।

दुहा ॥ राय तणा गुण वर्णवी ॥ चाल्यो कुमर  
 नरिंद ॥ आयो उजेणीपुरी ॥ धरतो मन आणंद ॥ १॥

॥ महाकालनो देहरी ॥ जोवे फरि फरि भूष ॥ डि  
 प्री दित्री मासाडमां ॥ वांचे तेह स्वरूप ॥ २ ॥ एकादश  
 नवाणुए ॥ होस्ये कुमर नरिद ॥ विक्रम राजा सारिखो  
 ॥ प्रजा लोक आणंद ॥ ३ ॥ वांची अक्षर आवीयो ॥  
 नयर उजेणी मांह ॥ विप्र मिल्यो तिहां वांसिरि ॥ मि  
 ल्यो कुटंब उछांह ॥ ४ ॥ हिली मिली त्यांधी चलयो  
 ॥ गयो दसपुर भूपाळ ॥ प्रसमामृत जोगी मिल्यो ॥  
 चरण नम्या ततकाळ ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ अलवेलो हाली हळ खंमेहो ॥ म्हारी  
 सदारे सुरंगी लावे जात ॥ ६ देशी ॥ जोगीने नृप पूछी  
 याहो ॥ च्यारं प्रश्न तिणवार ॥ स्नान दान वळी ज्ञान  
 तो ॥ ध्याननो वळीहो कहो मुजनं एह विचार ॥ १ ॥  
 जोगीने राजा श्म कहेहो ॥ तुम्हे चतुर विचक्षण जो  
 याधार ॥ जौ० स्नान संयम जळ कीजीयेहो ॥ दा  
 न अत्रय शिरदार ॥ ज्ञान तेह निलोमता ॥ ध्यान  
 कीजेहो विश्वंसारसनो परिहार ॥ जो० २ ॥ च्यारे अ  
 रथ राजा सुणहो ॥ हसव्यो चित्त मझार ॥ दोल ज  
 ला च्यारे कला ॥ धन धन नरहो जे पाळे ए हथी  
 चार ॥ जो० ३ ॥ जोगी चरण नमी करीहो ॥ आव्यो

गढ त्रीश्रीम ॥ शाति जिनालय जइ नम्यो ॥ राम मु  
 निनेहो जइ वाद्या वे कर जोम ॥ जो० ४ ॥ कुमर नरे  
 शर पूछीयोहो ॥ कहो नगरीची आद ॥ साभळ नृप  
 मनीवर कहे ॥ मध्यमापुरीहो इहांथीचण गाठ भेर्याद  
 ॥ जो० ५ ॥ आगे रघुवशे थयोहो ॥ चिनांगड नृप पा  
 स ॥ एक जोगी तिहां आगीर्यो ॥ सिंह साथेहो अमृ  
 त फळ धे खट मास ॥ जो० ६ ॥ नृप रज्यो जोगी म  
 तेहो ॥ इणीउरे कहे सुण नाथ ॥ कहे ताहरे शुचा  
 हीये ॥ जे जागेहो ते आपुं तुजने आथ ॥ जो० ७ ॥  
 जोगी कहे सुण नरपतिहो ॥ विद्या अधुरी एक ॥ तेह  
 सधाये तुज थकी ॥ जो धायेहो महाराजा ताहरीटे  
 क ॥ जो० ८ ॥ रुप गुणे रळीयामणोहो ॥ वत्रीश लक्षण  
 वत ॥ सूरवीर नर साहसी ॥ थाये तेहथीहो विद्यानो  
 साधन तत ॥ जो० ९ ॥ सामुद्रिक शास्त्रे कद्याहो ॥ न  
 र लक्षण वत्रीश ॥ ते तुज माही छे सह ॥ मुज की  
 जेहो उपगार निसुण अक्कीश ॥ जो० १० ॥ यदु० कं०  
 ॥ सामुद्रिके ॥ पंच दीर्घचतुः हरस्व ॥ चतुः सूक्ष्मपट्ट

रं तरंचैव ॥ पंचदीर्घं प्रशस्यते ॥ २ ॥ ग्रीवा प्रजननं प्र  
 टि ॥ हरस्वैजंघेच पूज्यते ॥ हरस्त्वा निज - स्य चत्वारि  
 ॥ पूजा मामोति मानवः ॥ ३ ॥ सूक्ष्माण्यं गुलपर्वणि ॥  
 केशस्थि दशनातथा ॥ चतुःसूक्ष्माण्येषास्यु ॥ स्ते  
 नरादीर्घजीविनः ॥ ४ ॥ कक्षाकृक्षिश्रघ्वाण स्कंधलला  
 टिका ॥ सर्वं जूतेषुर्दिष्टं ॥ पटुनतं प्रशस्यते ॥ ५ ॥ पा  
 णीपातलौ रक्तौ ॥ नेत्रांतानि नखास्तथा ॥ तालु जिह्व  
 धरौटौच ॥ सप्तरक्तोर्धवान् जवेत् ॥ ६ ॥ उरःशिरोलला  
 टंच ॥ त्रिविस्तीर्णं प्रशस्यते ॥ त्वरं सत्त्वं च नाभिश्च ॥ धिगं  
 जीरं प्रशस्यते ॥ ७ ॥ इति द्वाविंशल्लक्षणानी ॥ ढाळ पु  
 र्वनी ॥ पर उरगारी नृप सुणीहो ॥ उठौ चलयो तिर्ण सा  
 थ ॥ डुंगर उपर वे चढ्या ॥ पावंकनोहो कुंड की  
 धो जोगी होथ ॥ जो ० ११ ॥ राजा सहुं विधी कीधी  
 जोगनेहो ॥ नृपने कहे तिणवारा ॥ अगनी कुंन पाखळे  
 फिरो ॥ जिम थायेहो विद्या सिद्धि जंग आधारा ॥ रा ०  
 १२ ॥ राय उपाय विचारीयोहो ॥ जोगीने धन पास ॥  
 तास वेसास न कीजीयेहो ॥ पर घरनोहो मागी स्वाये  
 जे पास ॥ रा ० १३ ॥ सोना पुरिसो ए करेहो ॥ कुंन  
 देहे मुज देहे ॥ ढाळ थइ चौमाजीशमी ॥ इम चिते



हो जिनहरर्ष नरेश्वर तेह ॥ रा० १४ ॥ सर्व गाथा ८८२.

। ॥ ढाळ ४५ मी. । ॥

दुहा ॥ हुं बाळुं जो ए, भणी, ॥ सोना पुरिसो हो  
 य ॥ महारे धननो काम छे ॥ एहने, काम न कोय ॥  
 १ ॥ योगीने इणीपरे कहे ॥ आगळ कारज तुज ॥  
 तुम पाखे हु किम फिरुं ॥ समज पडे नही मुज ॥ २ ॥  
 जोगी तव आगळ फिरे ॥ केडे राय फिरत ॥ फिरता  
 नूप जोगी भणी ॥ नाख्यो माहि, तुरत ॥ ३ ॥ जोगी  
 फिटि पुरिसो थयो ॥ राजा लीधो ताम ॥ धन कार  
 ण अनरथ करे ॥ करे, सु, न करे काम ॥ ४ ॥ खवार क  
 रे धन नर भते ॥ फेरे देश विदेश ॥ सीश कपावे नर त  
 णो ॥ वाघे झोडि, किलेश ॥ ५ ॥ घर फामी चोरी क  
 रे ॥ नरने, नेळे धूल ॥ मति, ज्ञानावे ॥ पांटु ॥ धन  
 अनरथतो मूळ ॥ ६ ॥ लखमी घर आख्या पछी ॥ आ  
 वे तन अहकार ॥ लिखे न गणे केहने ॥ मोटासु विव  
 हार ॥ ७ ॥ स्त्री घर भैरी सेंजडी ॥ वख पान अहार ॥  
 नरने धन आख्या पछी ॥ साता उपरे खार ॥ ८ ॥

ढाळ ॥ नान्हो नाहलोरे ॥ ९ देशी ॥ रामचट मु  
 नीवर कहेरो ॥ धननो एह स्वरूप ॥ राजा साजळोरे ॥ १०

आगलः शुं थयुं ते कहोरें ॥ पूछै इणी परै जूयें ॥ रा० १  
 ॥ ते पुरिसो लेइ करीरे ॥ नूपे आव्यो निज गाम ॥  
 रा० २ ॥ गढ मांडयो गिरी उपरै ॥ सुंदर विषमी ठाम ॥  
 रा० ३ ॥ दिवश चिणे गढ जेटलेरें ॥ राते तें पडि  
 जाय ॥ रा० ४ ॥ मास थय्या खट इणी परैरे ॥ कारज सि  
 छि न थाय ॥ रा० ५ ॥ भगट थय्यो सुर कूटनोरें ॥ राय  
 भणी कहे तामि ॥ रा० ६ ॥ इहां गढी करवां तो दीअरें ॥  
 जो राखे मुज नाम ॥ रा० ७ ॥ बोल देइ गढ कय्यो  
 रे ॥ अति कंचो अजिराम ॥ रा० ८ ॥ चित्रांगद राये ध  
 र्योरें ॥ चित्रकूट गढ नाम ॥ रा० ९ ॥ कीमो धज विव  
 हारीयारे ॥ गढ मां चउद हेजारे ॥ रा० १० ॥ धसे कीटनी त  
 ल हटारे ॥ लखपतिनो नहीं पारै ॥ रा० ११ ॥ चित्रकूट  
 रळीयामंणेरें ॥ पृथ्वी लीचन एक ॥ रा० १२ ॥ अन्य ली  
 चनने पामवारे ॥ तप तपे धरिय विवेक ॥ रा० १३ ॥ उं  
 चो गढ चित्रोडनोरें ॥ रा० १४ ॥ चित्रांगद भूपाल ॥ एह क  
 था श्रवण सुणीरे ॥ हरख्यो कुमरपाल ॥ रा० १५ ॥ गढ  
 उपरें चढी जोइयारे ॥ नवनवां अहीठाण ॥ रा० १६ ॥ सको  
 सला वाघणी तणोरें ॥ जिणे ठामे निरवाण ॥ रा० १७ ॥  
 श्री जिन भूवन जुहारियारे ॥ चाल्यो कुमर नरेश ॥

रा० ॥ पवन तणी परे हींमतोरे ॥ आव्यो कुंवज जि  
 हां देश ॥ रा० १० ॥ नगर नीवेश जोइ करीरे ॥ तिहां  
 थी चल्पो नरिंद ॥ रा० ॥ आव्यो काशी वणारशीरे ॥  
 देखी थयो आणंद ॥ रा० ११ ॥ बोलाव्यो एक वाणीये  
 रे ॥ आर करी अपार ॥ रा० ॥ निज मंदिर लेइ ग  
 योरे ॥ भोजन कराव्यां सार ॥ रा० १२ ॥ गुण ग्रही  
 राजा तेहनोरे ॥ फिरी नगर जोवंत ॥ रा० ॥ तिणे अ  
 वसर मरणे गयोरे ॥ मदन शेठ धनवंत ॥ रा० १३ ॥  
 धन तेहनो राजाग्रहोरे ॥ सज्जन करे आक्रंद ॥ रा०  
 ॥ फिरतो फिरतो आवीयोरे ॥ पुछे कुमर नरिंद ॥ रा०  
 १४ ॥ कां रोवे ए सजन मिलीरे ॥ कसो सयळ विर  
 तंत ॥ रा० ॥ सांभळी करुणा उपनीरे ॥ दुख हियनो  
 विहसंत ॥ रा० १५ ॥ धिग धिग ए राजा भणीरे ॥ धिग  
 धिग ए राय जन्म ॥ रा० ॥ जेहने सुत नहीं पाळळरे ॥  
 तेहनो लीजे धन ॥ रा० १५ ॥ लोक मांही कहीये इश्यो  
 रे ॥ लोकपाळ भूपाळ ॥ रा० ॥ कही जिनहर्ष पुरी यइरे  
 ॥ पीस्ताळीशमी ढाळ ॥ रा० १६ ॥ सर्व गाथा ए० ६ ॥

ढाळ १६ मी

दुहा ॥ मन मेलो वैदह तणो ॥ वांछे धनं

ग ॥ बांछे मृत मशाणीयो ॥ नारद वेढी संयोग ॥ १ ॥  
 छलवा बांछे शाकिनी ॥ कणपति काळ विचार ॥ दो  
 पी बांछे छोदने ॥ असती वध जरतार ॥ २ ॥ तिन मृ  
 त नर बांछे नृपति ॥ अधम नरपति अवतार ॥ मृतक  
 तणो धन संग्रहे ॥ न हुये छुटकवार ॥ ३ ॥ पाप करे  
 दश खाटकी ॥ तेढलो एक कुंभार ॥ बालण दश कुं  
 भार सम ॥ दश द्विज वेश्या नार ॥ ४ ॥ दश वेश्या सम  
 राजवी ॥ पातक तणो निधान ॥ नरक तणो अधिवा  
 रियो ॥ द्विये वसे दुर ध्यान ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ दूणा ढेरे ॥ ९ देशी ॥ पुन्य संजोगे जो  
 लहुं ॥ गुजर देशनो राजरे ॥ सुत न होवे जेहनै पा  
 छळे ॥ ते धन शुं नहीं काजरे ॥ १ ॥ धन न लीयुंरे  
 हुं धन न लीयुं ॥ धन न लीयुं हुंतो एहवुं ॥ अगम  
 करी में आजरे ॥ ध० २ ॥ पण करी तिहांधी चालीयो ॥  
 पामलीपुरे पहुतरे ॥ नव सोवननी डुंगरी ॥ दोठी नृ  
 अद्भुतरे ॥ ध० ३ ॥ नेळो करी मुंकी गया ॥ जोधो  
 लोभ सरुपरे ॥ दान भोग मुज धन हुस्ये ॥ चितवी  
 चालो भूपरे ॥ ध० ४ ॥ राजग्रही नगरी गयो ॥ सालि  
 भद्र गृह ठामरे ॥ निरमाइल धन कूपिका ॥ सहु जो

वा फिरी तामरे ॥ध० ४॥ गिरी वैभार चमी करी ॥  
 धन्ना शाळीभद्र ठामरे ॥ सिद्धा जिहां अणसण क  
 र्यो ॥ जोइ कीध प्रणामरे ॥ध० ५॥ चतुर तिहांथी चा  
 लीयो ॥ गयो नवद्वीपक देशरे ॥ जयपुर पुस्वर वा  
 हिरे ॥ पुष्कोत फळीत विशेशरे ॥ध० ७॥ मनोरम उ  
 द्यानमां ॥ तीरथ शक्रावताररे ॥ तिहां जइ पुर पुरुषने  
 ॥ पुछ्यो तास विचाररे ॥ध० ८॥ तिणे कस्यो श्री रु  
 पतना ॥ सो सुतमां जय नामरे ॥ तिणे ए नगर वसा  
 वीधो ॥ जयपुर सुखनो ठामरे ॥ध० ९॥ जिन पूजा  
 ने कारणे ॥ एह कीयो उद्यानरे ॥ सांभळी नृप चित  
 चितवे ॥ अहो धरमं महिमानरे ॥ध० १०॥ आदि देव  
 प्रणमी करी ॥ आव्यो कामरु देशरे ॥ कामाक्षा देवी  
 तिहां ॥ पूजि स्त्री सजी वेशरे ॥ध० ११॥ तिहांथी ना  
 गेंद्रपाटणे ॥ आव्यो कुमर नरिदरे ॥ नागराज राजा  
 तिहां ॥ राज्य करे नरददरे ॥ध० १२॥ वृद्ध पुरुषने  
 पूछीयो ॥ नाग नृपति विरतंतरे ॥ पंथी सांभळ तुज  
 कहु ॥ एह तणो सहु तंतरे ॥ध० १३॥ नागकुमागे वा  
 शीयो ॥ नागेंद्रपाटण एहरे ॥ श्रीकांत  
 ॥ थयो सकळ गुण गेहरे ॥ध० १४॥

गुण तेहमां ॥ क्रोध प्रवळ निश दिशरे ॥ एक दिन घर  
 अंधारमां ॥ थांजे फुटव्यो सीशरे ॥ ध० १५ ॥ मूयो तेह  
 अपुत्रीयो ॥ क्रोध वशे थयो नागरे ॥ सत फणा वळी  
 शोभतो ॥ न करे करनो त्यागरे ॥ ध० १६ ॥ वार वा  
 र झाली करी ॥ मुंकी आवी रानरे ॥ फिरी फिरी  
 आवे वळी ॥ छांडे नहीं निदानरे ॥ ध० १७ ॥ सून्य  
 राज्य जाणी करी ॥ वैरी वीटव्यो त्यागरे ॥ लोक स  
 हु संकट पमया ॥ समयो नागकुमाररे ॥ ध० १८ ॥ आ  
 वी ज्ञाने जोश्यो ॥ माहरे कुळ उपनरे ॥ ए पाटण  
 नो राजीयो ॥ नाग थयो आसनरे ॥ ध० १९ ॥ ए पा  
 टणनो ते धणी ॥ थाप्यो करी अजिपेकरे ॥ राज्य  
 करे निजंयपणे ॥ देव गयो सुविवेकरे ॥ ध० २० ॥ ना  
 गराय साम्राज्य ए ॥ कहि जिनहर्ष विशाळरे ॥ लोक  
 सुखी नय को नहीं ॥ छेनाळीसमी ढाळरे ॥ ध० २१ ॥  
 सर्व गाथा ए३२ ॥

ढाळ ४७ मी.

हुहा ॥ पाटण मांही आवीयो ॥ ज्यां वालचंद्र  
 चमार ॥ पाणही कारण तेहने ॥ हाटे गयो कुमार ॥  
 १ ॥ ल्यो स्वामी ए पाणही ॥ पहिरो न लीऊं मुळ ॥

तुम्ह पग लायक एअछे ॥ दीसो तुम्हे अमुल ॥ २ ॥  
 मीठां वृचन चमारनां ॥ सांजळी थयो खुरयाल ॥ नि  
 च जाती पण जीतमां ॥ अमृत झरे रसाळ ॥ ३ ॥ त  
 पीयोने उपसम धरे ॥ निर्धन सुद्ध विवहार ॥ ५ ॥ जग  
 सांही थोडला ॥ मधुर वचन दातार ॥ ४ ॥ गुण लेइ नू  
 प चालीयो ॥ दीठो वन सहकार ॥ लुंव लेइ खावा  
 भणी ॥ वेठो तिहां कुमार ॥ ५ ॥  
 ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥  
 ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥  
 ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥  
 ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥  
 ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥  
 ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥  
 ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥  
 ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥  
 ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥  
 ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥  
 ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥  
 ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥  
 ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥  
 ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥  
 ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥  
 ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥  
 ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥  
 ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥  
 ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥  
 ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥  
 ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥  
 ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥  
 ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥  
 ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

॥ आवा तुज फळ पामीयेहोजी ॥ जो तुंसे किरतार  
 ॥ सु० ५ ॥ आवा खाये गुग यहेरे लाल ॥ कुमारपाळ  
 प्रूपाळ ॥ आव्यो तिणें विन एढलेहोजी ॥ आवांनी र  
 खवाळ ॥ सु० ६ ॥ गोळ देहनें इम कहेरे लाल ॥ कांरे  
 मूढ गमार ॥ आवा खाये रावळेहोजी ॥ पामीशं मुं  
 हुकम मार ॥ सु० ७ ॥ अणसमंज्यो वाल्यो धणुरे लो  
 ल ॥ आशी नुपने रीश ॥ झांलो तेहने बांधीयाहोजी  
 ॥ बांधी चलयो अधीश ॥ सु० ८ ॥ एक नर मिलीयो  
 आगळेरे लाज ॥ नारी तणे विचोग ॥ विरह वियो  
 शी तेहनोहोजी ॥ तिणे दुखे लोधी जोग ॥ सु० ९ ॥ कु  
 मर नरेशर पुळीयोरे लाले ॥ कामें ते लोधी जोग ॥  
 सपुरिस सुणि ते नर कहेहोजी ॥ क्रम तणे मुज जो  
 ग ॥ सु० १० ॥ मुज घर नारी पदमणीरे लाले ॥ पुरपति  
 लोधी तेह ॥ ते मुजने नवी वासरेहोजी ॥ तिणे दुखे  
 दाधी देह ॥ सु० ११ ॥ मन गमती रमती हीयेरे लाले ॥  
 मिनयवति सुसनेह ॥ तिण दुखे हुं जोगी थयोहोजी ॥  
 दुखनो कारण एह ॥ सु० १२ ॥ आज्ञा मंडण बीजळी  
 रे लाल ॥ काण्ड मंडण चोळ ॥ घर मंडण चुडाली  
 यांहोजी ॥ मुख मंडण तंबोळ ॥ सु० १३ ॥ राम रडयो



सीता प्रतेरे लाल ॥ दोलो मारुणी काज ॥ तिम हुं  
सुरं ते वीना होजी ॥ अन्न पान कीयो ताज्य ॥ सु० १४  
॥ मुजने बहाली पेदमणी रे लाल ॥ चढी पियारे हाथ  
॥ हवे हुं एकल मो थयो होजी ॥ नारी यिना अनाथ  
॥ सु० १५ ॥ पर दुख भँजण को नहीं रे लाल ॥ में जा  
एयु निघंत ॥ कुमर पाळ राजा ॥ हुस्ये होजी ॥ मुज दुख  
करो अंत ॥ सु० १६ ॥ बात सुणी राजा केहरे लाल ॥  
सांगळ तु जोगिंद ॥ तुजे हनी आश्या करे होजी ॥  
ते हुं कुमरा न रिंद ॥ सु० १७ ॥ दुखीया आगळे दूख  
कसोरे लाल ॥ जोणे रोयो रान ॥ दाळ थई समता  
ळा शमी होजी ॥ केहे जिन हेर्य सुग्धान ॥ सु० १८ ॥ स  
व गाथा ए० ५९९ ॥ श्री गौरी कृष्ण ॥ श्री लक्ष्मी ॥ श्री  
विष्णु ॥ श्री राम ॥ श्री कृष्ण ॥ श्री हनुमान ॥ श्री  
ब्रह्मा ॥ श्री विष्णु ॥ श्री शिव ॥ श्री महादेव ॥ श्री  
मुनि ॥ श्री ऋषि ॥ श्री योगी ॥ श्री साधु ॥ श्री  
पंडित ॥ श्री ज्ञानी ॥ श्री संत ॥ श्री धर्म ॥ श्री  
अर्थ ॥ श्री काम ॥ श्री मोक्ष ॥ श्री निर्वाण ॥ श्री  
निराश ॥ तेहनो कोई न विरह्यो ॥ धिगे जिमारो ता  
स ॥ २ ॥ तरस्यो नर सरवर गयो ॥ नीर ने पास्यो मा  
ह ॥ तेतो लग्या सरवर ॥ नरेन लाज न कांय ॥

॥ रत्न फलदो देखी करी ॥ अरधी, खावा जाय ॥  
 दाढ गळावे ये नहीं ॥ ते तरु लघुता थाय ॥ ४ ॥ तें दु  
 ख मुज आगळ कसो ॥ जाणीने सिरदार ॥ हें दुख  
 भागी नवि शक्यो, ॥ मुजने, पंढरो धिक्कार ॥ ५ ॥ कि  
 णही आगळ आपणो ॥ दुख न कहिये राय ॥ सगति  
 भरम गमाव्ये ॥ वाढी न लीये कोय ॥ ६ ॥ कीयो, हु  
 श्ये भगवंतनो ॥ पामीश जो हूं राज ॥ तो दुख तहा  
 रो जाजसु ॥ ७ ॥ मुजने छे, लाज ॥ ८ ॥

ढाळ ॥ तुंतो वीजामारा वावलीया, वढाशे रतना  
 वहील घुमावे लुजा, वाजिणी ॥ ९ ॥ देशी ॥ १० ॥ कही  
 चाल्यो, जूमे राजिंदा, ॥ शेव सुरहीयो साहमो मिल्होरे  
 लाल ॥ तिण दीवो कुमर नरिंदरे ॥ रा० ॥ पढा अहीनो  
 णे अटकळ्योरे लाल, ॥ १ ॥ ते भाखे दहोयळी मांहीं  
 रे ॥ रा० ॥ पद्म कुमार पाड हतोरे लाल ॥ बीजो नहीं  
 किणहीनी पाव्यरे ॥ रा० ॥ बहु दीवशे थयो तुं छतोरे ला  
 ल ॥ २ ॥ तुज थाशे वहिलो राज्यरे, ॥ रा० ॥ जोतिपी  
 मुख में सांभळ्योरे लाल ॥ आण फरशे देश अदार  
 रे ॥ रा० ॥ किणही न जाये तुं कळ्योरे लाल ॥ ३ ॥  
 तुंतो तदि करजे मुज साररे ॥ रा० ॥ फिरतां जनम ग

યો વહુરે લાલ ॥ મેંતો સુખ ન લજ્યો સંસારરે ॥રા०  
 મુજને લોક હસે સહુરે લાલ ॥ ૪ ॥ હુંતો સ્વાંધે કોથ  
 લો કરેહરે ॥રા० ॥ ઊઠી સવેરે સાંચરુંરે લાલ ॥ મુજ પ  
 હિરણ સ્વાસર પોતરે ॥રા० ॥ ઉદર પૂરણ દોહિલી કહું  
 રે લાલ ॥ ૫ ॥ નિજ દોહિલમ દાસે શેઠરે ॥રા० ॥ દિ  
 ન વચન મુખ દાસવેરે લાલ ॥ કરે કુમર નરિંદ વિ  
 ચારે ॥રા० ॥ વિનય કરી મધુરો ચવેરે લાલ ॥ ૬ ॥ સુ  
 ર વિનય થકી વશ થાયરે ॥રા० ॥ વિનયથી ગુરુ વિ  
 ધા ઢીધેરે લાલ ॥ વઢી નાગ તજે તિજ રીશરે ॥રા०  
 ॥ વિનયથી અરીયણ નામીધેરે લાલ ॥ ૭ ॥ હમ રીઝ  
 વ્યો કુમર નરેશરે ॥રા० ॥ વિનય કરી તિણ વાણીધેરે  
 લાલ ॥ તવ વોલ્યો ઈણીપેરે રાયરે ॥રા० ॥ ચિંતારે મ  
 નમાં નાણીધેરે લાલ ॥ ૮ ॥ જદી પામીશ ગુજ્જર રાજ  
 રે ॥રા० ॥ નગરશેઠ તુજને કરુંરે લાલ ॥ તુજ ગમશું  
 ખૂસ ને દૂસરે રા० ॥ વચન સ્વરું માન માહરુંરે લાલ ॥  
 ૯ ॥ તિહાંથી પ્વાલ્યો ગુણવંતરે ॥રા० ॥ ખૂસ જામીરે  
 ધૂજે દેહમીરે લાલ ॥ ત્રિણ દિન પામ્યા થયા અનરે

लाल ॥ सान्ही मिली कळवण नाररे ॥रा०॥ 'माग्यो  
 रे ते कन्ह सोगरारे लाल ॥ ११॥ तव बोली नारी कुहा  
 मीरे ॥रा०॥ रोटीरे भावे तुजने माहरीरे लाल ॥ को  
 इ दीसे छे दाळाद्र डंगरे ॥रा०॥ अकल गशरे कां ता  
 हरीरे लाल ॥ १२॥ किम दिवराये ए भातरे ॥रा०॥  
 जाउंछुरे पुत्र जिमाश्वारे लाल ॥ मुख बोले गाळ अ  
 पाररे ॥रा०॥ वाघणी धशी जाणे खाश्वारे लाल ॥ १३  
 ॥ शु आपे दळिद्रि लोकरे ॥रा०॥ जमवारे दीधो नहीं  
 रे लाल ॥ जिणे दीधो हुए ये तेहरे ॥रा०॥ दशणोर  
 दोहिलो छे सहारे लाल ॥ १४॥ निज हिये विचारयो  
 भूपरे ॥रा०॥ काळ भाव आज छे एहवरे लाल ॥  
 रोटी जीधी नूत्र झुटिरे ॥रा०॥ वेळा दीठी कीधुं तेहवुं  
 रे लाल ॥ १५॥ धिग धिग ए पापिणी भूखरे ॥रा०॥  
 हाथ उठावे मोटा भणीरे लाल ॥ अनताळीशनी धइ दा  
 लरे ॥रा०॥ सुणो जिनहर्ष मृन्मणीरे ॥ १६॥

माग्या सन माठुं नहि ॥ माग्या न रहे मान ॥ लोक  
 माहि महिमा घटे ॥ कोइ न ये सनमान ॥ १ ॥ तात  
 दीया पंडित गुणी ॥ धरमी लज्ज्यावंत ॥ रूप रंग चि  
 त चातुगी ॥ माग्या सहु गळत ॥ ३ ॥ वीश विश्वानो  
 आदमी ॥ माग्या न रहे एक ॥ कुळ खांपण ते जणी  
 ये ॥ मागीजे अविवेक ॥ ४ ॥ मार्ग्याथी मरेणो जलो ॥  
 पण मागीजे नहि जाय ॥ इंद्र चंद्र नर राजवी ॥ मा  
 ग्या लघुता थाय ॥ ५ ॥ रहीये नगन दिगंबर ॥ वशी  
 ये वगडे वास ॥ पण करोमी जे नही ॥ सज्जन किण  
 ही पास ६ साळी दाळि पकवान्थी ॥ कोस्यो धान पण  
 खास ॥ चीर थकी खासर जलो ॥ मकरीश परनी  
 आश ॥ ७ ॥ जब मागे पर घर जई ॥ पाचेइ दैवत ॥  
 नाशी ततस्त्रिण देह्यी ॥ श्रीरिद्धि घूति किंन ॥ ८ ॥ सत  
 धारी सहु धापता ॥ मागे नही महत ॥ पण भूल्या मागे  
 नहि ॥ साचा ते सतवत ॥ ९ ॥

ठळ ॥ उमादे जठीयाणीना गीतनी ॥ ९ देशी ॥  
 इश्यो विमाशी राग्र चाल्यो ॥ आगे दोठीहो साभळ  
 ज्यो जान सोहामणी ॥ हरख्यो चित्त नरिद ॥ शेठ भ  
 णी शिर नाम्योहो सांभळज्यो जश्ने तिहां कणी ॥ १ ॥

जिहां जइ उतरी जान ॥ काम वतुं कमी बांधीहो ॥ सा.  
 जान तणुं करे ॥ उगटणुं अंघोल राय करावे सहुनेहो  
 पाय धोवे अधिके आदरे ॥ १ ॥ दुहा ॥ कवही माणस  
 लख लहि ॥ कवही लख सवायू ॥ कवही कोमी न ल  
 हि ॥ वाजि वाय कुवाय ॥ १ ॥ दैव नचावे जिणी परे ॥  
 तिम नचवे रंक राय ॥ कुमारपाळ नर सारिखा ॥ धो  
 वे परना पाय ॥ २ ॥ ढाळ ॥ पाय पखाळी राय मनमां  
 आस्या जेणेहो ॥ सा० ॥ भोजननी धरी ॥ भोजन थयो  
 तिणीवार ॥ जाणी सहु जिमेवाहो ॥ सा० ॥ बेठा जइ क  
 री ॥ ३ ॥ पाणी भरे नरेश ॥ जिमी उठ्या सहुकोहो  
 जानी गहगही ॥ धोयां थाळ कचोळ ॥ तोही पण  
 भूख्यानीहो ॥ सां० ॥ खबर ग्रही नहीं ॥ ४ ॥ मूढमति  
 नर नार ॥ भूख्यो राख्यो राजाहो ॥ सां० ॥ सहूनी म  
 ति गइ ॥ नहीं क्रिण मांही विवेक ॥ कुमर नरेशर स्त्री  
 ज्योहो ॥ सां० ॥ क्रोध वशे थइ ॥ ५ ॥ इण मुज खबर न  
 लीध ॥ मति छति बुद्धि गुणहिणाहो ॥ सां० ॥ सहु  
 वाणीया ॥ राये पूछी जात ॥ जान सहु पाटणीहो  
 ॥ सां० ॥ लाड पिळाणीया ॥ ६ ॥ कुमरपाळ तिणवार ॥  
 इहवुं मन धार्युहो ॥ सां० ॥ राख्य इहस्ये यदा ॥ वाळीश

९ सहु वैर ॥ ईए कीधो तिम करस्युहो ॥ सां० सुख  
 होशे तदा ॥ ७ ॥ भूखे पीनयो अंग ॥ चाली न शके  
 पग भरीहो ॥ सां० तिहां उमो रसो ॥ धृत कुमलीयो  
 एक ॥ आवीने उतरीयोहो ॥ सां० नूर मन गहगसो  
 ॥ ८ ॥ तेणे नर तिहां आइ ॥ जिनण करेवा मांमयोहो  
 ॥ नूर अंधण पाणी आणीयो ॥ थंइ रसोइ ताम ॥ भू  
 खयो जाणी पहीलोहो ॥ राय कुमर भणी बइसानीयो ॥ ९  
 ॥ जिमाडयो भरपूर ॥ कुमलीयो दानेशरहो सेजे दाता  
 गुण जेहमां ॥ परं, उपगारी जेह ॥ गुणधारी सुविचा  
 रीहो ॥ उत्तम गुण लहीये देहमां ॥ १० ॥ सहेजे गुण  
 सुविनीत ॥ अलंप कपाइ सहेजेहो ॥ दक्षिण दया उ  
 पसम धरे ॥ सहेजे मधुरी भास ॥ धर्म तणी मति सहे  
 जेहो ॥ मूख कुम वचन नवि उचरे ॥ ११ ॥ धन धन  
 तुं जग मांही ॥ सहेज गुणाय तुम्हीनोहो ॥ कुमलीया  
 दान तणो सही ॥ हुं थाऊं भूपाळ ॥ त्यारे आवे वहेजो  
 हो हुं भगति करीश तुज उमही ॥ १२ ॥ इम कही चा  
 ल्यो भूत ॥ इए अवसर जेशंगदेहो ॥ राय केरो मरण  
 सनय धयो ॥ तेडया मंत्री च्यार ॥ कृश्नदेव कान्ह  
 डेनेहो ॥ सामा साजणने इम कसो ॥ १३ ॥ करवाहो

नुज कोट ॥ महारा बारहा जो छोहो तोराज कुं  
मरने मत दीयो ॥ कीधो वचन प्रमाण ॥ कंठे हाय  
लगायोहो जेसगंदनो मन राखीयो ॥ १४ ॥ मरण ल  
सो जेसग, ॥ करणी कीधो जेहवीहो ॥ तेहवी गती मा  
हे संचर्यो ॥ ढाळ, उगणपचास ॥ पूरी ॥ इण अधिकारे  
हो ॥ जिनहर्ष ग्रस विस्तार्यो ॥ १५ ॥ सर्व गाथा १००२.

, ढाळ ५० मी.

दुहा ॥ सज्जन सगा मत्रि मिली ॥ लेइ गय्या म  
शाण ॥ चंदण अगर कपुग्शु ॥ चहे बाळी तिण ढा  
ण ॥ १ ॥ सोनावरणी चेह वळे ॥ जोवे नर सह कोय  
॥ कंकुवरणी देहमी ॥ अग्नि प्रजालि जोय ॥ २ ॥  
जे शिर चीरा बांधता ॥ सालू कसत्री पाग ॥ तास तणि  
शिर तुमली ॥ चाच समारे काग ॥ ३ ॥ जे नर र्हाले  
पोढता ॥ करता हान्य विलास ॥ ते नर मल भाटी हु  
आ ॥ उपर उग्या घास ॥ ४ ॥ जोवा चदन चरचता  
॥ वावरता मुख पान ॥ ते नर पोढ्या अग्निमां ॥ का  
या काजळपान ॥ ५ ॥ चिरं पितावर पहेरत ॥ कवे मुग  
ताहार ॥ ते नर नागा परजळे ॥ जोवे सह संसार ॥  
६ ॥ जे शिर छत्र धरावता ॥ चढता गइनर खंध ॥ ते



हने अते लेश गया ॥ देहे देई बंध ॥ ७ ॥ दिवा करि  
 करि पोढ़ता ॥ कामिनी कंठ लैगाय ॥ ते नर पोढ़्या  
 पाधरे ॥ जंबु कषाय जाय ॥ ८ ॥ चंपकवरणी देइ  
 ॥ कोमल कदली जंघ ॥ ते नर सुनर कटि ॥ ९ ॥  
 मे भडो गड मंग ॥ १० ॥ देह विटवण नर मुली ॥ न क  
 रीश तूभा लाख ॥ जेसंग रुखि मज्जवी ॥ कट्टी  
 कीया राख ॥ ११ ॥

कुमर नरेशने ॥रा० शकुन अनोपम थायरे ॥रा० कुं०  
 ५॥ कन्या गायसवाछडी ॥रा० दधि फळ जेरी शंख  
 रे ॥रा० शिणगायों गज सामहो ॥रा० आपे लाज  
 असंख्यरे ॥रा० कु० ६॥ वेश्या वहेल बे माछिजां ॥  
 रा० मदिरा माटी अनरे ॥रा० ७ खट जो साहमा  
 मिजे ॥ रा० तो पामे बहु धनरे ॥रा० कु० ७॥ कुंभ  
 करेवो चीवरी ॥रा० हनुमंतने हरणां जेहरे ॥रा० रा  
 जा झाझा साथशुं ॥रा० जिमणा जिजे एहरे ॥रा०  
 कु० ८॥ सांभ सारस ने खरतुरी ॥रा० लाली मावा हुतरे  
 ॥रा० शकुन जला ए जाणीये ॥रा० अफळयां वृक्ष  
 फळंतरे ॥रा० कु० ९॥ शुभ शकुने नृप आवीयो ॥रा०  
 पाटण नगर मझाररे ॥रा० वंहनेवी कुश्वदेवने ॥रा०  
 मिलीयो जइ कुमाररे ॥रा० कु० १०॥ भेमल जगिनी  
 भेमशुं ॥रा० जाइने करावे अंधोलरे ॥रा० दूर्गादेवी  
 तेहमां ॥रा० झोल करे कल्लोलरे ॥रा० कु० ११॥ शि  
 कुनपावक एहवुं कहे ॥रा० शकुन तणे परमाणरे ॥  
 रा० राज्य हुश्ये दीन सातमे ॥रा० शिर धरश्ये सह  
 आणरे ॥रा० कु० १२॥ इण अवसरे मंत्रि मिजी ॥रा०  
 सुभट तेमद्या शिरवाजरे ॥रा० करे विचार सह मि

ली ॥ रा० कोने देस्यां राजरे ॥ रा० कु० १३ ॥ क्षत्री  
 चौलक वंशना ॥ रा० महीपाल रत्नपाळरे ॥ रा० तेहने  
 राज्य देवा जणी ॥ रा० तेडाव्या ततकाळरे ॥ रा० कु०  
 १४ ॥ कुमर भणी पण तेढीयो ॥ रा० मिलीया सह पर  
 धानरे ॥ रा० महीपाल राजा थापीयो ॥ रा० मागे आं  
 देश देह मानरे ॥ रा० कु० १५ ॥ तास उठानी मुंकीयो  
 ॥ रा० बेसायो रत्नपाळरे ॥ रा० ते पण तिमहीज बोली  
 यो ॥ रा० उठान्यो ततकाळरे ॥ रा० कु० १६ ॥ तेनी कु  
 मर नरेशने, ॥ रा० बेसारयो राज काजरे ॥ रा० सचि  
 वादिक प्रणमी कहे ॥ रा० किम पाळेस्यो राजरे ॥ रा०  
 कु० १७ ॥ खमग देखाड्यो आपणो ॥ रा० एहने वळे  
 मुज राजरे ॥ रा० एहने वळे सह साधशं ॥ रा० एहने  
 वळे मुज लाजरे ॥ रा० कु० १८ ॥ यतः ॥ नश्रीः कुल  
 क्रमायाता ॥ शासने लिखितानतु ॥ खडगेनाकम्य भुं  
 जंति ॥ वीर जाल्या वसुंधरा ॥ १ ॥ दाळ पुर्वनी ॥ सिं  
 हासन बेसारीने ॥ रा० कीधो नृप अजिपेकरे ॥ रा० ॥

## ढाळ ५१ मी

दुहा ॥ सेर मोती न्युंछणे ॥ करी वधाव्यो राय  
 ॥ कुशदेव भट प्रमुख सहु ॥ आवी लाग्या पाय ॥ १  
 ॥ नूप मंमळीके परय्यो ॥ कुमरपाळ भूपाल ॥ पट  
 हस्ती खंधे चडयो ॥ दीपे तेज विशाल ॥ २ ॥ मेघामंवर  
 र छत्र शिर ॥ वे दिश चामर धार ॥ वींझे चामर नि  
 रमळा ॥ जाणे गंगाधार ॥ ३ ॥ लेतो पुरजन आशिपा  
 ॥ घुरते निसाणेहे ॥ हय गय रथ पायक सहित ॥ दे  
 तो दान जणेहे ॥ ४ ॥ राजभुवन राय आवीयो ॥ का  
 नडेदे परमुख ॥ चरण कमळ नमीया सहु ॥ मोटा सु  
 भट पुरुष ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ श्रेणीक मन अचिरज थयो ॥ ९ देशी ॥  
 पुण्योदयथी पामीयो ॥ पाटणपुरनो राजोरे ॥ पुण्ये दु  
 समण दहवटे ॥ पुण्ये सिधां काजोरे ॥ पु० १ ॥ अंग्या  
 र नव्वाणुंए ॥ रुडो मगशिर मासरे ॥ काळीचौदशने दि  
 ने ॥ वेठो राज उलासरे ॥ पु० २ ॥ गरढा परधानो भणी ॥  
 न गमे कुमर नरिंदोरे ॥ दाव विचार्यो मास्वा ॥ सहु  
 मिली रचीयो फंदोरे ॥ पु० ३ ॥ वड्ड अंधारी निशी स  
 मे ॥ गोपुर घातक राख्यारे ॥ पुण्य सखाइ रायने ॥

किण्हीक भेदू दारुयारे ॥ पु० ५ ॥ मुंकी ते पुर पोळने  
 ॥ वारीमां थर पेठारे ॥ कुशळखेमे आवीयो ॥ निज  
 सिहांसन वेठारे ॥ पु० ५ ॥ ते परधान तेमावीया ॥ यम  
 पुर दिसे चलाव्यारे ॥ तेज देखी राजा तणो ॥ सहु  
 चरणे चली आव्यारे ॥ पु० ६ ॥ कृश्वदेव किणि अवस  
 रे ॥ पूरव मर्म प्रकासेरे ॥ सजा समले एहवुं ॥ राय  
 कहे मत जासेरे ॥ पु० ७ ॥ जिम जाणे तिम बोळिजे ॥  
 एकांते नहीं तावोरे ॥ वार्यां तोही नवी रहे ॥ न मिटे मू  
 ल सभावोरे ॥ पु० ८ ॥ रीस गुपत राजा तणो ॥ रिदय  
 जयां जरपूरोरे ॥ मल्ल संकेते कृश्वना ॥ अंग कीया  
 चक्रचूरोरे ॥ पु० ९ ॥ नयन जुगल काढी करी ॥ था  
 प्यो लेइ आवासोरे ॥ राजा मीत्र केहनां नहीं ॥ एहवुं  
 जग प्रति जासेरे पु० १० ॥ यतः ॥ काकेशौचं द्यूत का  
 रेपु सत्यं ॥ सर्पेक्षांतिः स्त्रीषु कामोप शांतिः ॥ लक्रीवधै  
 र्यं मद्यपे तत्त्वचिंता ॥ राजा मीत्रं केन दृष्टं श्रुतं वा ॥ १  
 ॥ ढाळ पुर्वनी ॥ निती वयण संभारीने ॥ उदयन नि  
 ज उपगारीरे ॥ तस सुत बाह्मदे कीयो ॥ महामात्य  
 सुविचारीरे ॥ पु० ११ ॥ महा प्रधान पद आपीयो ॥ उ  
 दयनने अभीरामोरे ॥ आलिग नाम कुलाजने ॥ दी

धा सातसें गामोरे ॥ पु० ११ ॥ झांखर ढांकी राखीयो ॥  
 हाली शीम बोलाव्योरे ॥ पोता पासे राखीयो ॥ अं  
 ग रक्षक करी थायोरे पु० १२ ॥ दीध करवो कामिनो  
 ॥ तेहने धोळकुं दीधुरे ॥ साजणने संतोखीयो ॥ धणी  
 चीत्रोडनो कीधोरे ॥ पु० १३ ॥ लाटदेश जट वोसिरि ॥  
 कुलंब पाटणनो रायोरे ॥ तेहने घणुं वधारयो ॥ ओ  
 सिंकल इम थायोरे ॥ पु० १४ ॥ काशीदेशनो वाणीयो ॥  
 राख्यो जिणे वर मांहेरे ॥ सोळ गाम तेहने दीयां ॥  
 मिलीयो घणे उमाहेरे ॥ पु० १५ ॥ तमी सामंत थापी  
 यो ॥ बाळचंद्र चमारोरे ॥ तेहना गुण संजारीने ॥ गा  
 म दीयां तसु वारोरे ॥ पु० १६ ॥ ढाळ थइ एकावनमी ॥  
 कहें जिनहर्ष विचारोरे ॥ बळी उयगारी जेअ छे ॥  
 सुणज्यो तस अधिकारोरे ॥ पु० १७ ॥ सर्व गाथा  
 १०५४ ॥

ढाळ ५२ मी.

दुहा ॥ आंवा वन रक्षक पुरुष ॥ जाग्यो तेहनो  
 जाग ॥ तेमी तास जळावीयो ॥ वर पोतानो वाग ॥  
 १ ॥ जे नर नारी विजोगियो ॥ देवरावी तस नार ॥  
 दुख जागो तेहनो सह ॥ धन पण दीध अपार ॥ २ ॥

शेर सुरहीयो थापीयो ॥ नारी कळवण जास ॥ झणपी  
 लीधी राटली ॥ बीस गाम दीयां तास ॥ ३ ॥ घृत कु  
 मलीयो तेहने ॥ दीधो सोरठ देश ॥ शुकनपाटकने आ  
 पीया ॥ सात गाम सुविशेश ॥ ४ ॥ मरण लखो कंदर  
 जिहां ॥ जुवन कराव्यो सार ॥ श्री जिननो रळीग्राम  
 णां ॥ नामे ऊंर विहार ॥ ५ ॥ शिर विण पुरुष कया  
 कही ॥ तेडी पंचे नार ॥ अकेकुं गाम तेहने ॥ दीधी वा  
 त संभार ॥ ६ ॥ मस्तक वात कही जिणे ॥ तेढाव्यो  
 नृप तास ॥ सहेस सोवन तेहने दीया ॥ मुहूत वधार्यो  
 खास ॥ ७ ॥ जिणे कयों गुण जेटलो ॥ राय संभार्यो  
 तेह ॥ सडुनी आश्या पूरवे ॥ मोटा नरने नेह ॥ ८ ॥

ढाळ ॥ सीता रामनी चोपाइ ॥ ९ देशी ॥ हेमा  
 चारज विसर्या ॥ किणही परे चित नाव्यारे ॥ उदयन मंत्री  
 अन्यदां ॥ हेमसूरी भणी बोलाव्यारे ॥ हे० १ ॥ आव्या  
 अधिक महोळये ॥ मंत्रीशरने इम जासेरे ॥ आज न  
 वे राणी घरे ॥ उपसर्ग निशा नध्य थास्येरे ॥ हे० २ ॥  
 तेह भणी तिहां मत पोढज्यो ॥ इम कही राजाने वारे  
 रे ॥ पूछे जो आदर करी ॥ तो नाम अमारुं सारेरे  
 ॥ हे० ३ ॥ मुहुते राजा वारीयो ॥ निशी विज थयो उ

संपातरे ॥ राणी मंदीरमां दळी ॥ नृप चिते टळी मुज  
 घातारे ॥ हे० ४ ॥ राये पुछ्या सादरे ॥ केहनो अनाग  
 त ज्ञानोरे ॥ उपगारी कुण एहवो ॥ मुजने दीधो जी  
 वीत दानोरे ॥ हे० ५ ॥ मंत्री कहे राजन सुणो ॥ इहां  
 हेनसुरीस पधार्यारे ॥ तिणें ज्ञाना मुजने कसो ॥ तु  
 मने में ते जणी धार्यारे ॥ हे० ६ ॥ राय सुणी प्रमुदि  
 त थयो ॥ बोलाव्या हेमसुरिदोरे ॥ राज सभाए आ  
 वीया ॥ बडे गुरु चरण नरिदोरे ॥ हे० ७ ॥ कर जोमी  
 राजा कहे ॥ जगवंत किम मुख देखालुंरे ॥ तुमने ओ  
 सीकल न हुवो ॥ जो अनृत पाय पखाळुंरे ॥ हे० ८ ॥  
 धन तीरथमां राखीयो ॥ चीठी मुज लिखी दीधीरे ॥  
 तोही संभारया नही ॥ तुमने में माठी कीधीरे ॥ हे० ९ ॥  
 ॥ तुम मुजने पहिजो कियो ॥ निःकारण प्रजु उपगा  
 रारे ॥ मुज माथाधी तुम तणो ॥ उत्तरशे रण किण  
 वारारे ॥ हे० १० ॥ सुरी कहे राजन सुणो ॥ मन माही  
 डिलगीर न धड्येरे ॥ जे उत्तम नरने कर्यो ॥ उपगा  
 र न लोपी कहीयेरे ॥ हे० ११ ॥ श्री जिन धर्म समाच  
 रो ॥ अमने एहीज उपगारारे ॥ राय वचन अंगी क  
 र्यो ॥ एतो मुजने हितकारारे ॥ हे० १२ ॥ कृपा करी इ



॥३॥ आइवो ॥ आचारजने इम जाखेरे ॥ गुरु संगे मि  
 थ्या तजी ॥ जिन धर्म रसायण चाखेरे ॥ हे० १३ ॥  
 हवे श्री कुमर नरेशरु ॥ चतुरंग सेनाश्रुं चालेरे ॥ ध्या  
 रे दिशे साधन भणो ॥ अरीयणना दळ वळ पालेरे ॥ हे०  
 १४ ॥ पयम दक्षिण दिशे संचर्या ॥ कर्णाट तिलंग ला  
 ट देशारे ॥ विध्याचळ साधी आवीया ॥ फेरी निज  
 आण विशेशारे ॥ हे० १५ ॥ सेतुबंध जोइ करी ॥ वळी  
 फरस रामाश्रम जोइरे ॥ तिहांधी पश्चिम आविया ॥  
 जाने आण सहु कोइरे ॥ हे० १६ ॥ सोरट सोवीर पंच नद  
 सिंधू ॥ ब्राह्मण बाहक सहु देशारे ॥ साधी सहु पोताना  
 क्रीया ॥ विधी विधीनी आणे पेसारे ॥ हे० १७ ॥ सिंधु प  
 श्चिम तट पदमपुरे ॥ राय पदम पुत्री गुणवंतीरे ॥ जाते  
 ते छे पदमणी ॥ पदमावती नाम लहंतीरे ॥ हे० १८ ॥  
 खोमस निज सरिसव रागना ॥ परणी तिहां कुमर न  
 गिडोरे ॥ सात कोमी द्रव्य सातसें ॥ दीधा हयवर वृ  
 षोरे ॥ हे० १९ ॥ तिहांधी उत्तर आवीया ॥ कास्मिर  
 उमीयाने हिमालोर ॥ सर्वा लक्ष पर्वत वळी ॥ जालध  
 र स्वस सुविशालोरे ॥ हे० २० ॥ एम साधी च्यारे दिशा  
 ॥ चरताही आण अखंतीरे ॥ दाळ धइ वावन भली ॥

जिनहर्ष सुजस नव खंमारे ॥ हे० ११ ॥ सर्व गाथा  
१०८३ ॥

ढाळ ५३ मी.

ढुहा ॥ राजा अचरिज जोवतो ॥ पूरव दिशे पडु  
त ॥ कुशावर्त सुरसेन कुरु ॥ विदेह दशार्ण . सहित ॥१॥  
वळी साध्या निज जुज वळे ॥ नागधने पंचाल ॥ देश  
देशचा देशपति ॥ आइ नम्या ततकाळ ॥२॥ हेय गय  
रथ पायक प्रचल ॥ निशाणा शिर पाव ॥ जळत पताका  
पामीने ॥ आघ्यो पाटण राय ॥३॥ शोपलदे पटरागि  
णी ॥ आठां शुं रंगरोळ ॥ पंच विपद्य सुख भोगवे ॥  
अहनिशी करे कलोल ॥४॥ देश अढार तणो धणी ॥  
हस्ति सहेस अग्यार ॥ बाजी लाख अग्यार वळी ॥  
रथ पंचसे हजार ॥५॥ बहुत्तर वळ आगळा ॥ जेहने  
सूर सामंत ॥ अढार लाख पायक मिले ॥ रिद्धि न  
लाभे अंत ॥६॥

ढाळ ॥ प्रभु प्रणमुरे पास जिणेशर थंजणो ॥ १ दे  
शी ॥ न्याइ रायेरे अन्याय कोइ करे नहीं ॥ अकराके  
ररे न करे डंम न ल्ये सही ॥ दंम देवळरे वंधण कोइ  
न बांधीये ॥ वंधायरे जूषण अंगे सांधीये ॥ सांधीये

नारी कंचु? बध ॥ बंध'मस्तक वेर्णाय' ॥ बंध घाटक  
 पेट ने वळी ॥ बंध सुमनस श्रेणीये ॥ बंक नही कोइ  
 लोकमां जिहां ॥ बंक स्यदन चक्रमा ॥ वळी पांक क  
 माण मांही ॥ अवर तेह नही वक्रमा ॥ १ ॥ जिण नयरेरे चो  
 र कोइ दीसे नही ॥ निज गुण कंरे परन न चोरे उ  
 मही ॥ मार एहवोरे शब्द कोइ न उचरे ॥ ते जापोरे  
 मारन लोहार मुखे धरे ॥ मुखे धारी मारी रणमां 'मारी  
 भाषा नीगमे ॥ पर तणा अवगुण लीयणे ॥ मुंगा दोष  
 देण संयमी ॥ छिद्र नही कोइ लोक मांही छिद्र मा  
 एक मोतीए ॥ दमन नही जिण नगर मांही ॥ दमन  
 अरि गज होतीए ॥ २ ॥ नवि दीसेरे माणस कोइ घडो  
 किही ॥ रवी सशनिरे राहु ग्रहे अवसर जही ॥ अथ  
 वा वळीरे कन्यानो कर वर ग्रही ॥ एहवुं पुरे लोक स  
 दा सुखीयां रहे ॥ रहे एहवा लोक सुखीया हहा वा  
 वन जिहां मळे ॥ हेम आचारज मुनीसर हेम व्याक  
 रण झळहळे ॥ हेम बीब हरी तणी ॥ मूरति दान देवा  
 हिरा कही ॥ हीये बुद्धि अने हसावे हसे नहीं पोते स  
 ही ॥ ३ ॥ हरीयाळीरे चतुर कहे हठीया घणा ॥ नरहा  
 क्यारे तुरत बढे नही कामणा ॥ हय हाथीरे हथिणी

हथियार हड धणी ॥ हेम हीरारे हीर जाति दिसे घली  
 ॥ घणा दीसे नहीं हिंसा हट्ट श्रेणि सो जड ॥ हाथ दाता दो  
 लती सहु दुसीयां मन मोहड ॥ हरी सरीखा लोक सु  
 स्त्रीया जिहां हांसल अति घणो ॥ हेमाचळनी वस्तु  
 आवे हरी मति नर बोलणो ॥ ४ ॥ नर भोगीरे रति हेम  
 तण सह ॥ हेसमीनारे गुंज तिहां दिसे बहु ॥ हितुया न  
 रहे हालाहल हाली जिहां ॥ हरिवंसीरे हरियम देहुत  
 वसे तिहां ॥ तिहां वसे हींदूयाना हरिहरादिक देहरा ॥  
 हरिणां स्त्री हरीलंका नारी हंसगमण मनहरा ॥ होली  
 होली सवरणा हरी हंस होलाइया ॥ हरिण वनमां रहे  
 सुखीया हीमोला मन आश्वा ॥ ५ ॥ बळी हय गतीरे  
 हसीत वदनने हस्तिनी ॥ हांस हियेरे हलुएं चाले को  
 मिनो ॥ ६ ॥ वाव नरे पुर मांही जामे हया ॥ बळी चाव  
 नरे ववा ते दूरे गया ॥ दूरे गया ते विकेल विटनर  
 विसन बांका तुही जिहां ॥ विपरीत आखे नर विरोधी  
 वक्र विधन तेही तिहां ॥ वात विरु नही वंचक वाट  
 पामा प्रण तेही ॥ विश्वासघाती वधक तेही जिहां व्यर  
 वाद नहीं सही ॥ ६ ॥ वासी भोजनरे नरनारी खाये न  
 हीं ॥ वेठ न करे कोर किणहीसुं सही ॥ विद्या विरु

रे तेह न कोइ फोरवे ॥ वाणी कहुँरे मूखा वचन को  
 नवी लवे ॥ लवे नही कोइ वाद न करे ॥ वासना भु  
 ली तजे ॥ वात निदा तणी न करे ॥ बेठां नर नवी  
 सपजे ॥ सीलवती वसे वनीता ॥ नहीं जिहां विभवा  
 रीया ॥ वर वर्गधी नवी टळे कोइ बागरी पुर वारी  
 या ॥ ७ ॥ प्रजवे नहीरे केहने वितर वितरी ॥ धिछी  
 विपधररे सरीखा नर पुर परीहरी ॥ वारुणीनारे पान  
 करे नर तेहने ॥ वारु वातनारे भजणहारा एहने ॥ ए  
 हने काढया, नगर बाहिर वणीज कुवणीज नवी करे  
 ॥ रीस माये-विप्र न खाये विलगणा नर नही पुरे ॥ व  
 चन गुरु जणनो न माने बंधी बोले जे घणो ॥ वारीया  
 न रहे नगर बाहिर वंस काढयो तेह तणो ॥ ८ ॥ वळी  
 नही कोइरे वेरो वराम जिणे पुरे ॥ प्राये थोडीरे विध  
 वा नारी घरघरे ॥ विस वाणीजरे उत्तम कोइ करे न  
 ही ॥ वेंगणनारे भक्ष करे नहीं नर लही ॥ नर लही  
 न करे भक्ष वेंगण विगथ पाचे परिहरे ॥ ए ववा वाव  
 न कुमर नरपति, काढीया पुर बाहिर ॥ लाड जाती  
 त्राणीया ते कुटी बाहिर काढीया ॥ रीश वाळी जान  
 वाळी वळी आमी चाढीया ॥ ९ ॥ चोर पाळेरे ला

मं रक्षा ते जइ करी ॥ जीवंतारे नृप मुंक्क्या करुणा  
 धरी ॥ उत्तम नररे मूल थकी मारे नहीं ॥ बाहुबळरे  
 भरत जणी न हएयो सही ॥ सही न हएयो राय उदा  
 इ चंद प्रद्योत धारीयो ॥ मांज देइ मुंकीयो पण जीव  
 धी नवि मारीयो ॥ तिम रांक उपरे रीश केही जाणी  
 राजा परीहरे ॥ ए ढाल घेपनमी कहो जिनहरप इणी  
 परे ॥ १० ॥ सर्व गाथा १८९९.

ढाल ५४ मी

हुहा ॥ तिण अवसर एक आवीयो ॥ रागांगी  
 गंधर्व ॥ भाव भेद सह रागना ॥ गाइ जाणे सर्व ॥  
 १ ॥ तिण गंधर्व आलापीयो ॥ दोठो मेघ मल्हार ॥ त  
 तखिण चमकी बीजळी ॥ सेह वूठयो तिणवार ॥ २ ॥  
 हेमाचारज आवीया ॥ रांग आलाप्यो ताम ॥ सू  
 को ठुंठो पालयो ॥ नृप हरख्यो तिण ताम ॥ ३ ॥ ए  
 क पुरुष आव्यो तिसे ॥ नाम्यो नृपने सीश ॥ कर जो  
 मीने इम कहे ॥ सांजळ श्री जगदीश ॥ ४ ॥ देवकइ  
 पाटण देहरो ॥ सोमेश्वर महादेव ॥ तेह पढ्यो छे ते  
 हनी ॥ सार करावो हेव ॥ ५ ॥ एहवी कीधी आखडी  
 ॥ जां देवळ नवि धाय ॥ मांस भखु नहीं तिहां ज

गे ॥ अगळ करी इम राय ॥६॥

ढाळ ॥ वहरागी थर्यो ॥१॥ देशी ॥ नृप देवळ  
ते उधर्योरे ॥ खावा लाग्यो मांस ॥ हेमसुरीशर ॥ इम  
कहेरे ॥ सांभळ राय सुवसारे ॥१॥ राजन सांभळो  
॥ मनयी तजी विखवादोरे ॥ तम्हे करावीओ ॥-इ  
श्वरनो प्रासादोरे ॥ रा० २ ॥ आपण चालो जोंइरे ॥  
श्री सोमेश्वर इश ॥ मांस तणी ल्यो आखमीरे ॥ त्यां  
सुधी अवनीश ॥ रा० ३ ॥ सांभळी नृप मन हरखीयो  
रे ॥ लेंइ नरवर वुंड ॥ चाल्यो कुमर नरेशकरे ॥ सा  
थे हेमसुरिदोरे ॥ रा० ४ ॥ राय कहे ल्यो पालखीरे ॥  
वसो श्री गुरुराय ॥ हेम कहे मुनीवर हुवेरे ॥ ते चा  
ले निज पायोरे ॥ रा० ५ ॥ चालो आगळथी तुलेरे  
॥ शत्रुंजय गिरनार ॥ अले जुहारी आवशरे ॥ इश्व  
रने दरबारोरे ॥ रा० ६ ॥ नृप देवकीपाटण चलयोरे ॥  
गया शत्रुंजय हेम ॥ आगळथी आर्वा करीरे ॥ देह  
रे वेठा खेमोरे ॥ रा० ७ ॥ ब्राह्मण द्वेषी रायनेरे ॥ क  
हे सांभळ पुहमीश ॥ सड्डको माने इशनेरे ॥ हेम न  
नामे सीशोरे ॥ रा० ८ ॥ हेम जणी राजा कहेरे ॥ तम्हे

नामो सीशोरे ॥ रा० ७ ॥ हेम कहे नरपति सुणोरे ॥ ह  
 री ब्रह्मा जिन इश ॥ मोक्ष तणुं सुख जे दीयेरे ॥ ते  
 हने नामुं सीशोरे ॥ रा० १० ॥ राय खुशी थइ इम कहे  
 रे ॥ खट दरीशण मुनीराय ॥ सहूनी जुदी प्ररुपणारे ॥  
 धर्म न मालम थायोरे ॥ रा० ११ ॥ केइ काया मल ध  
 रेरे ॥ केइ पखाळे देह ॥ केइ नगन रहे सदारे ॥ केइ त  
 न लावे खेहारे ॥ रा० १२ ॥ केइ शिर लुंचन करेरे ॥  
 केइ वधारे केश ॥ धर्म कहो केहमां खरोरे ॥ ते क  
 हीये सुंविसेशोरे ॥ रा० १३ ॥ खोटो परिहरीये परोरे ॥  
 जोइ करीये सार ॥ ढाळ चोपनमी ए थइरे ॥ कहि  
 जिन हर्ष विचारोरे ॥ रा० १४ ॥ सर्व गाथा १११९ ॥

ढाळ ५५ मी.

॥ ॥ ॥

दुहा ॥ हेम कहे राजन करो ॥ इश कहे जे  
 धर्म ॥ इश्वर खोटो नवी कहे ॥ श्युं राखो मन भर्म ॥  
 १ ॥ पूछे सोमेश्वर जणी ॥ राजा धरी जगीश ॥ ख  
 रो धर्म कहो केहनो ॥ पूछुं तुज जगदीश ॥ २ ॥ शं  
 कर वोल्हो निज मुखे ॥ सुण राजा मुज वाच ॥ ध  
 रिजे मनमां धर्म तुं ॥ हेम कहे ते साच ॥ ३ ॥ जग  
 मांही जोगी खरो ॥ निरमळ एहनो शील ॥ इश्वर क



हे ए शेष तुं ॥ जिम पामे सुखजील ॥ ४ ॥ पहिली तु  
मतिरे कस्यो ॥ परदारानो निम ॥ अगढ करावो मां  
सनी ॥ जां जावुं त्यां सीम ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ प्रणमं श्री गुरु पाय ॥ ९ वैशी ॥ अगढ  
करी नरनाह ॥ श्री गुरु पासे उछांहु ॥ पाटण आवी  
याए ॥ सहू मन भावीयाए ॥ १ ॥ खट दरशण अवनि  
श ॥ तेमटा धरीय जगीश ॥ कुण देव धारीयेए ॥  
काशी झुहारीयेए ॥ २ ॥ नारायण कहे एक ॥ पुरुषोत्त  
म सुविवेक ॥ ईश्वर कोइ कहेए ॥ आदि न को लहेए  
॥ ३ ॥ ब्रह्मा कहे एकं कोइ ॥ जेहथी ए जग होइ ॥  
सुरिज तम हरेए ॥ देव सहू सीरेए ॥ ४ ॥ कोइ कहे आ  
दि मात ॥ आदि न कोइ लहात ॥ भक्ति मुक्ति दीये  
ए ॥ शुद्ध सेवा कीयेए ॥ ५ ॥ हेम भणी कहे राय ॥ तु  
मचो देव बताय ॥ नृप तमे सांजळोए ॥ मुकी आम  
ळोए ॥ ६ ॥ दोष अढार रहित ॥ तेहिज देव तहत्त ॥  
क्रोध मान गंजीयाए ॥ माया लोभ भजीयाए ॥ ७ ॥  
रति ने अरति अग्यान ॥ मद मच्छर भय आंन ॥ मे  
म निद्रा नहीए ॥ सोक चोरी दहीए ॥ ८ ॥ जूठ वंचन  
जीव घात ॥ हाश्य विनोद विलास ॥ नही दोश एद

लाए ॥ देव तेहीज जलाए ॥ ९ ॥ जेहना सुंदर अंग ॥  
 नारी तणो नही संग ॥ तेह आराधीये ॥ शिव पद सा  
 धीये ॥ १० ॥ गुरु मुनीवर नीग्रथ ॥ चाले सुद्धे पथ  
 ॥ आरंभ नवी करे ॥ निज किरिया धरे ॥ ११ ॥  
 ल्यो आहार नीहाळी ॥ दोष बेताळीश टाळी ॥ ते गुरु  
 बंदीये ॥ पाप निकदीये ॥ १२ ॥ केंवळी जापीत धर्म  
 नही जेहमां कोइ जर्म ॥ जीव दर्यो घणीए ॥ ते शिव  
 सुख जणीए ॥ १३ ॥ आराधो ए धर्म ॥ जेहथी नुटे क  
 र्म ॥ सकाँ तजी ग्रहोए ॥ साँचो सहोए ॥ १४ ॥ वि  
 ष तणो उपदेश ॥ राजा सुणो सुविशेश ॥ हेम वचन  
 खराए ॥ न धरे आकराए ॥ १५ ॥ राजा मन ममनोज  
 ॥ साचा जूठा बोझ ॥ निर तिन कापमीए ॥ मच्छ  
 जिम तडफडेए ॥ १६ ॥ सूरी वचन सुप्रमाण ॥ माने न  
 ही गुरु आए ॥ राजन सांभळोए ॥ काँ तमे खळजळो  
 ए ॥ १७ ॥ हठ छोमे नही जहे ॥ सुख नवी पामे तेह  
 ॥ जोह वणिक परेए ॥ पस्तावा करेए ॥ १८ ॥ तेह जणि  
 तसे नरपत्त ॥ आराधो तिन तत्त ॥ कुमती न आणीये  
 ए ॥ साच पिछाणीये ॥ १९ ॥ पचावनमी ढाळ ॥ कहि  
 जिन हर्ष विशाळ ॥ हेम समजावीयो ॥ राय मन शा

वीर्योए ॥२०॥ सर्व गाथा ॥ ११४४:

ढाळ ५६ मी

दुहा ॥ राय एवो उपदेश सुणि ॥ रिझवो चित्त  
मझारा पाये लागी हेमने ॥ तार तार कहे तार ॥ १ ॥  
गुरु कहे देहराशर करी ॥ पूजे शांती जिणंद ॥ घर  
देहराशर थापीयो ॥ पूजे नित्य नरिंद ॥ २ ॥ वात सु  
णी तव वांभणे ॥ हीयमे उठी झाळ ॥ देवबोध ब्राह्मण  
भणी ॥ तेढाव्या तंतकाळ ॥ ३ ॥ आडंबरशु आवीयो  
॥ साथ छात्र अनेक ॥ बोलावे विरुदावळी ॥ बारु  
जास विवेक ॥ ४ ॥ केळ पाननी पालखी ॥ कमळना  
ळनो डंड ॥ बांधी काचे तांतणे ॥ चुटे नहीं अखंम  
॥ ५ ॥ वरस आतना छोकरा ॥ कांधे ले चकमोज ॥  
आवी पाटण मांही ते ॥ होइ रसो रमझोळ ॥ ६ ॥

ढाळ ॥ पणरी विंदली मन लागो ॥ ७ देशी ॥  
रायसभाए आवीयो ॥ धरतो मन अभिमान ॥ मोरा जाल  
॥ पवन साधन विद्याधरे ॥ गारुड मंत्र विधान ॥ मोरा  
जाल ॥ रा० १ ॥ हारे जाल ॥ ज्योतिष शास्त्र भएया  
घणा ॥ वळी व्याकरण विशेष ॥ मो० तर्क शास्त्र क  
वि चातुरी ॥ जाणे मंत्र अलेख ॥ मो० रा० २ ॥ हां

सानिध जेहने देवनी ॥ सिद्ध धरावे नाम ॥ मो० पंच  
 सयां पोती नर्या ॥ पूस्तकशु 'अभिराम ॥ मो० रा० ३  
 ॥ हां० पेटे पाटो बांधीयो ॥ छात्र करे कुटाल ॥ मो०  
 नीसरणी राखे कन्हे ॥ अभिमानी वाचाल ॥ मो० रा०  
 ४ ॥ हां० राजाने एहं कहे ॥ त्तरा नगर मझार ॥  
 मो० वाद करे जे मुजस्युं ॥ तेहने तुरत हकार ॥ मो०  
 रा० ५ ॥ हां० हुं हारुं तो माहरा ॥ ए पोटी ल्ये तेह ॥  
 मो० ते हारे तो माहरी ॥ लागे लुली पाएह ॥ मो०  
 रा० ६ ॥ हां० राये तेमया हेमने ॥ आया मुनी दरवा  
 र ॥ मो० कुण वादी नुन तेहस्युं ॥ कीजे शास्त्र विचा  
 र ॥ मो० रा० ७ ॥ हां० राय कहे तुले एकजा ॥ एहने  
 बहु परीवार ॥ मो० किम जिपेश्यो एहने ॥ पूछुं तेह  
 विचार ॥ मो० रा० ८ ॥ हां० सूरी कहे राजा सुणो ॥ ए  
 क रहे वन सिंह ॥ मो० वनचर वनमां तेहनों ॥ राखे  
 सहूको वीह ॥ मो० रा० ९ ॥ हां० रवि गयणं गण एक  
 लो ॥ करे अंधारो दूर ॥ मो० एक वज्र परवत पमो ॥  
 भांजि करे चकचूर ॥ मो० रा० १० ॥ हां० मांहे छति  
 मति जोइये ॥ लाख मिल्या तो काख ॥ मो० सूर ए  
 क कायर घणा ॥ उमाने जिम राख ॥ मो० रा० ११ ॥

हां० हेम वचन सणी गहगहो ॥ धन धन हेम मुण्डि  
 ॥ मो० हेम भणी कुण आगमे ॥ एम कहें कुमर न  
 रिद ॥ मो० रा० १२ ॥ हां० राय हुकम बोल्या बने ॥ सं  
 स्कृत भाषा सार ॥ मो० तर्क काव्य बोले विचे ॥ वै  
 याकरण विचार ॥ मो० रा० १३ ॥ हां० संन्यासी सम  
 श्या कहे ॥ पूरे हेमसूरिंद ॥ मो० गाजी सिंह तणी  
 परे ॥ जोवे नृप नरचंद ॥ मो० रा० १४ ॥ हां० जीपी  
 न शके हेमने ॥ गारुड विद्या ताम ॥ मो० कीधी तिण  
 संन्यासी ॥ हेम जीपेवा काम ॥ मो० रा० १५ ॥ हां०  
 ऊंदर आव्या धसनशी ॥ साप रच्या गुरु त्यार ॥ मो०  
 जोगी तेमच्या नोळीया ॥ गुरु तेढ्या माजार ॥ मो०  
 रा० १६ ॥ हां० जोगी मुख झांखो थयो ॥ फोकट जा  
 शे मान ॥ मो० व्यय चित्त पंमित थयो ॥ प्रबळ य  
 तिनो ज्ञान ॥ मो० रा० १७ ॥ हां० एतो परतक्ष सरस्व  
 ती ॥ ए आगळे कुण जाण ॥ मो० ढाळ थइ ॥ छप  
 नमी ॥ कहि जिनहर्ष सुजाण ॥ मो० रा० १८ ॥ हां०  
 सर्व गाथा ११८६.

ढाळ ५७ मी.

दुहा ॥ देवबोधने नृप कहें ॥ वळी आज्ये

नात ॥ तुम संप्राते धर्मनो ॥ करवी छे धे वात ॥ १ ॥ नि  
 ज धानक जोगी गयो ॥ हेम गया पोशाळ ॥ संन्या  
 शी व्याहणे थये ॥ आव्यो वळी ततकाळ ॥ २ ॥ नृप  
 आगळ निज धर्मनी ॥ कया कहे सुविशेश ॥ आदि  
 धर्म छे शीवनो ॥ मोटो देव महेश ॥ ३ ॥ ब्राह्मण गुरु  
 भगवानए ॥ तिरथ निरमळ गंग ॥ ए च्यारे आराधतां ॥  
 पाप रहित हुवे अंग ॥ ४ ॥ संन्याशी राजा जणी ॥  
 परम कसो चित्त लाय ॥ पूजानी वेळा थड ॥ सजा  
 विसर्जे राय ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ मन मधुकर मोही रस्यो ॥ ६ देशी ॥ दे  
 त्रप्रबोध राजा विन्हे ॥ करता वातं विनोदरे ॥ देहरास  
 रमा आवीया ॥ घरता परम प्रमोदरे ॥ दे० १ ॥ स्नान क  
 रे नृप शुची जळे ॥ पूज्या पहिली इशारे ॥ पासे प्रतिमा  
 जित तणी ॥ पूंजी नाम्युं सीशारे ॥ दे० २ ॥ खीजी रा  
 जा उमरे ॥ योगी बोल्यो तामरे ॥ इशर पासे ए ठवी  
 ॥ जित प्रतिमाश्र्युं श्र्युं कामरे ॥ दे० ३ ॥ चंपा वनमां  
 आक्रमो ॥ गज पासे खर जेमरे ॥ जिन प्रतिमा शिव  
 प्राखती ॥ शोभ न पामे तेमरे ॥ दे० ४ ॥ गंगाजळ कुण  
 छोनीने ॥ पीवे थोडें नीररे ॥ कोही कुण पांए रावनी

॥ छांडी अमृत, खीररे ॥ दे० ५ ॥ आंबो छोमी आक  
 नां ॥ कुण मूरख फळ खायरे ॥ सीलवती तजी कामि  
 नी ॥ कुण वेश्या घर जायरे ॥ दे० ६ ॥ आदि धरम शि  
 व ताहरो ॥ शिवशंकर तुज देवरे ॥ ते छांमी मांमी व  
 ळी ॥ जिनप्रतिमानी शेवरे ॥ दे० ७ ॥ जिनप्रतिमा जिन  
 धर्मने ॥ दूरे तजो महाराजरे ॥ सैव धर्म हरजा न्हयी  
 ॥ ए भव जळनिधी पाजरे ॥ दे० ८ ॥ घणो कसो पण रा  
 जवी ॥ कसो न माने तासरे ॥ हरीहर ब्रह्मा आवीने ॥  
 बाल्या राजा पासरे ॥ दे० ९ ॥ सांभळ कुमर नरिंद तुं ॥  
 पूरव धरम म छंडेरे ॥ हरिहर ब्रह्मा देव ॥ एहशुं मा  
 या मंजेरे ॥ दे० १० ॥ प्रतिबोधे इम देवता ॥ साते परि  
 या आइरे ॥ राजा आगळ इम कहे ॥ एह श्यो आ  
 यो दाइरे ॥ दे० ११ ॥ जैन धरमने आदर्यो ॥ अन्ह थ  
 यो दूरगति पातरे ॥ ते माटे ए मुंकी यो ॥ जो अन्ह  
 चाहे सातरे ॥ दे० १२ ॥ इश्युं कहीने रोवता ॥ करता  
 रीव विलापरे ॥ हाहा अन्हें दूखीया थया ॥ पान्या  
 तुजथी संतापरे ॥ दे० १३ ॥ मुंकी धरम कही उतपत्या  
 ॥ देव संघाते सातरे ॥ राजा मन विघ्नम थयो ॥ मन न  
 समाये वातरे ॥ दे० १४ ॥ तेमज्यो उदयन मंत्रवी ॥ वा

या सुणावी तासरे ॥ चिता म करो चित्तमां ॥ हेमसु  
री छे पासरे ॥ दे० १५ ॥ उदयन जइ जणावीर्यो ॥ श्री  
गुरुने अवदातरे ॥ इहां राय तेनी लावज्यो ॥ जब था  
ये परभातरे ॥ दे० १६ ॥ प्रात थयो रवी उगीयो ॥ आ  
व्या सहगुरु पासरे ॥ सात वाजोठ ठवी करी ॥ वेठा  
हेम मुनीशरे ॥ दे० १७ ॥ रीझववा चित्त रायनो ॥ की  
धो आसण दूरेरे ॥ अंतरीक्ष श्री गुरु रत्ना ॥ वेठा आ  
सण पूरीरे ॥ दे० १८ ॥ मेघुर खरे घे वेशणा ॥ भाखे ध  
र्म रसाळरे ॥ थइ जिनहरप प्रमोदशुं ॥ सत्तावनमी दा  
ळरे ॥ दे० १९ ॥ सर्व गाथा ११८२.

हाळ ५८।मी.०

हुहा ॥ दया करो परजीवनी ॥ 'दया' घरमनो  
मूळ ॥ दान दया इंद्रिय दमन ॥ 'ए शिव सुख अनुकु  
ळ ॥ १ ॥ जेणे शिव पदवी लही ॥ करे इंद्र पाय शेव  
॥ दूषण अढारे रहीत ॥ कर्म रहित ते देव ॥ २ ॥ शुद्ध  
मारग जे उपदीशे ॥ जेणे तेंज्या कषाय ॥ ल्ये भीक्षा  
जे सुझती ॥ सुगुरु ते कहेवाय ॥ ३ ॥ आदरशुं ए आ  
दरो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥ एहनी संगत परीहरो ॥  
जिम भाजें जव भर्म ॥ ४ ॥ सदहिणा धरिये खरी ॥



जीवादिकं लही भाव ॥ ९ समकित शुध राखीये ॥ ज  
वसायरनी नाव ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ भावन भावो भावीया ॥ ९ देशी ॥ खो  
टो ते धर्म न कीजीये ॥ थाये भव भव हाणोरे ॥ वि  
ना द्रव्य जिम जळहळे ॥ न चले खोटो नाणोरे ॥ १

॥ सुण सुण कुमर नरेशरु ॥ गाखे हेम सुरीशोरे ॥ दु  
रगती पढतां जीवने ॥ धारे धर्म जगीसोरे ॥ सु ० २ ॥

ज्ञान नजरे करी जोश्ये ॥ तजीये कदापह दंभोरे ॥  
देव गुरु धर्म ते स्वरा ॥ जिहां नहों कोइ आरंभोरे ॥

सु ० ३ ॥ आरंभ धर्म समाचरे ॥ गुरु पण आरंभ था  
रोरे ॥ देव कपाइ विषय श्रिया ॥ किम ते तारे संसा

रोरे ॥ सु ० ४ ॥ कवीत्व ॥ दीठा देव अनेक ॥ सोय प  
ण लंपट लोभी ॥ हाथे लीये हथीयार ॥ दैत्यने हणे

सथोभी ॥ रगत मांस आहार ॥ भोग भेंसानो मांगे ॥  
देखीने कुड पमे ॥ पुरुष जे पाये लागे ॥ तत्व वात

बुझे नहीं ॥ देव देव सहुको कहे ॥ श्री हेम कहे मूर  
ख घणा ॥ देव न सावो कोलहे ॥ १ ॥ आक धंतुरा

फुल ॥ पूज पातरी चडावे ॥ रुममाल गळ मांही ॥ २

ल एक खांडो बांडो ॥ घर घर मांगे जोख ॥ कहूं दे  
 व के गानो ॥ वाह वाह सहुक्रो कहे ॥ भलो ते सा  
 चे सही ॥ श्री हेम कहे नही देव गुण ॥ देव सगती कि  
 णी परे लही ॥ २ ॥ बाघ चरम पाथरे ॥ हाथ डमरु  
 धजावे ॥ आगे रुप अपार ॥ और विभूति लगावे ॥  
 पूरे सींगी नाद ॥ सीश बहु झटा वधारे ॥ माथे राखे  
 गंग ॥ ध्यान चित्तशुं न जावे ॥ बळी नाम धरावे इश  
 वर ॥ करणी तो एहवी करे ॥ श्री हेम कहे ५ देवनें ॥  
 पूजे ते कहो किम तरे ॥ ३ ॥ ढाळ पुर्वनी ॥ तारे नहीं  
 निज आतमा ॥ परने ते किम तारेरे ॥ जोह सीजा  
 सरीखा कक्षा ॥ कुगुरु कुदेव विचारोरे ॥ सु० ५ ॥ देव  
 गुरु धर्म शुद्ध विना ॥ कोइ न पामें पारोरे ॥ पण मूर  
 ख दढरागीया ॥ समजे नहींये लगारोरे ॥ सु० ६ ॥ हे  
 म वचन नृप सांझळयां ॥ रंज्यो चित्त मझारोरे ॥ गु  
 रु उपदेश पूरो करी ॥ तेढ्यो राय ते वारोरे ॥ सु० ७  
 ॥ वेठा ध्यान मुनीशरु ॥ देखे जिन चोवीसोरे ॥ कं  
 चन वरण नरेशरु ॥ बळी निज कुळ एकवीसोरे ॥ सु०  
 ८ ॥ आव्या जिनवर पुजवा ॥ मन धरता आणंदोरे ॥  
 केसर चंदन लेइ करी ॥ भगते अरचे जिणंदोरे ॥ सु०

१॥ श्री जिननाय नमी करी॥ये एहवी आसीशारे ॥  
 जीवे तुं कुमर नरेशरु ॥ कोमाकोमी वरीसारे ॥सु०  
 १०॥ सुते जिन धर्म समाचर्यो ॥ तास पसाये गहग  
 हतारे ॥ नरक थकी अले निकळया ॥ सुरभुवने अ  
 ले पुहतारे सु० ११॥ धरम खरो हवे तें लखो ॥ न प  
 ढीश बीजी भामरे ॥ श्री जिन भापित धरमथी ॥ तुज  
 पूरवज सुख पामरे सु० १२॥ चौवीस जिनवर मूरति॥  
 मुखे घोली तिण वारारे ॥ धर्म न म्हेलीश नरपति॥ ए  
 शिव सुखनो दातारारे ॥सु० १३॥ धरम धरम सहकुं  
 कहे ॥ धरम न जाणे मरमारे ॥ एक धरमथी सुख व  
 धे ॥ एक धरमथी कमारे ॥सु० १४० जिनवर धरम भ  
 णी तजे ॥ ते दुख पामे प्राणीरे ॥ नरग निगोद भने  
 धर्णु ॥ राय शुणी एहवी वाणीरे ॥सु० १५॥ इम कही  
 मूरति उतपती ॥ पूरवज पण नवी देखेरे ॥ धरम विषय  
 दृढ चित्त थयो ॥ धरम कहे सुविशेपरे ॥सु० १६॥ हे  
 मसरीशर पाय नमी ॥ राजा वे कर जोमारे ॥ आज

सु० १.८॥ सर्व गाथा १२१५.

ढाळ ५१ मी.

दुहा ॥ किणहीक दीवशे' देशना ॥ देतां चलयो  
विचार ॥ श्रावक कहिये तेहने ॥ जे धारे व्रत वार ॥  
१ ॥ व्रत पाखे नर तेहने ॥ लागे अविरत वार ॥ ते  
माटे व्रत आदरो ॥ जिम पामो जव पार ॥ २ ॥ श्राव  
कनां व्रत सोहिलां ॥ पाळे धरीय विवेक ॥ ते प्राणी  
निश्चे करी ॥ सुर सुख लहे अनेक ॥ ३ ॥

ढाळ ॥ रिपो तुं वेयावंच करे ॥ ९ देशी ॥ हेम  
शुरीसर' इम कहेए ॥ सांजळो कुमर' नरिद ॥ व्रत वि  
ए पशु सारीखोए ॥ व्रत विना मूरख मंद ॥ १ ॥ पाळो  
व्रत उजळाए ॥ पामो अधिक ओणंद ॥ राय' कहे क  
र जोडीनेए ॥ कहेवां ते व्रत वार ॥ किंम' पाळीये ते  
हनांए ॥ दाखवां सयळ विचार ॥ पा० २ ॥ प्रथम सुव्रत  
पाळीयेए ॥ तजीये व्रत जीवनी घात ॥ आरंजे ज  
यणा' कहीए ॥ श्री जिनवरनी ए वात ॥ पा० ३ ॥ किर  
मवाळादीक' कीमलाए ॥ देहना जीव' अनेक ॥ कर  
णा करी काढतांए ॥ दोष नहीं धरीय विवेक ॥ पा० ४  
॥ जीव दया थकी हाथीयोए ॥ मरी थयो मेघकुमार

॥ अकाइ जीव मारतोए ॥ सातमी गयो विचार ॥ पा०  
 ॥ ५ ॥ व्रत हवे बीजो सांभळीए ॥ पंच अलक परीहार ॥  
 जयणाअ छे अवरनीए ॥ बोलीये करी विचार ॥ पा० ६  
 ॥ नारद सुगती गयो साचथीए ॥ परवत नृप वसु जानी ॥  
 दुख पामीयां नरकनां ॥ साखंजरी खोटी ताणि ॥ पा०  
 ७ ॥ तीसरो व्रत हवे सांभळीए ॥ लीजे नहीं परधन ॥  
 जिम लोह पुरो चोरटोए ॥ जीवथी थयो विपन्न ॥  
 पा० ८ ॥ चौथो व्रत शुद्ध पाळीये ॥ परिहरीये परदा  
 र ॥ संतोष निज् नारीनो ॥ जश थाये त्रिजग अ  
 पार ॥ पा० ९ ॥ सीलथी लील लहीजीये ॥ थाये सु  
 रनर अनुकुळ ॥ राणी तजी रायनी ॥ पाल्यो शी  
 ल जिम वक्रचूल ॥ पा० १० ॥ शेट सुंदरसण पाळीयो ॥  
 सुळी सींधासण धाय ॥ कलंक शिर उतारीयो ॥ की  
 ध महीमा सुर आय ॥ पा० ११ ॥ विषयथी रावण खो  
 द्या ॥ प्रवळ बळवंत भुज बीस ॥ दत्त सीश छेदावी  
 या ॥ जे हुतो लंकनो दश ॥ पा० १२ ॥ पांचमो व्रत  
 परीग्रह तणो ॥ कीजीये तास परीमाण ॥ अती लो  
 भथी दुख हुवे ॥ जाये जाये लोभथी नाण ॥ पा०  
 १३ ॥ भुम्भण नंद सागर तणा ॥ सांभळी एह दटांत

॥ मन लोभथी वाळीये ॥ पामीए सुख अनंत ॥ पा०  
 १४ ॥ व्रत छठो हवे तुम्हे सांभळोए ॥ कीजीये दिसी  
 परिमाण ॥ नूप काकजंध पाळीयोए ॥ जागी नहीं जिन  
 आण पा० १५ ॥ सातमो व्रत धरो निरमळोए ॥ जोग  
 उपजोग परिमाण ॥ अनरथ दंन टाळीयेए ॥ बोलीये  
 कठिन नहीं वाण ॥ पा० १६ ॥ महसेन सुरसेनना सुणो  
 ए ॥ रसण वयण अवयोग ॥ कविण वयण मुखे बोल  
 तांए ॥ महसेन जीज थयो रोग ॥ पा० १७ ॥ सुरसेन म  
 धुर मुखे उचरेए ॥ रंजित धाय सहु लोग ॥ ते गुण  
 थकी पामीयाए ॥ मनुष्य तणां शुभ जोग ॥ पा० १८ ॥  
 आठमो व्रत इम पाळीयेए ॥ पामीये सुख सुविशाळ ॥  
 जिनहर्ष पुरी करीए ॥ ओगणसावमी ढाळ ॥ पा० १९  
 ॥ सर्व गाथा १२३७ ॥

ढाळ ६० मी.

दुहा ॥ नवमो व्रत चित्तमां धरो ॥ सामाईक व्रत  
 सार ॥ चंदवतंसक नूप परे ॥ शुर सुख लहे अपार  
 ॥ १ ॥ देसावकासिक व्रत जलो ॥ दशमो पाळो एह ॥  
 चवद नियम नित साचवो ॥ रिदल विवेक धरेय ॥ २ ॥  
 समिच जणी व्रत ए फल्यो ॥ रक्षो जीवतो तास ॥ टा

भे प्रेतिहारी मुखो ॥ अतः पत्रस्वाणै न आस ॥ ३॥ पो  
 ध्येध व्रत-इग्यारमो ॥ ४॥ पाळवोत्सागरत्वंद ॥ ५॥ अगनि-सीश  
 त्वेदत्त सही ॥ ६॥ यी नमसेन मुण्ड ॥ ७॥ ४॥ वीर-श्रवक-चुल  
 णी प्रियाता ॥ पोप्रधर सुविचारगा ॥ ८॥ विद्यप्राती ॥ सुरनील  
 रीता वेदन सही अंगार ॥ ९॥ साचवच व्रत-वामो ॥ अ  
 र्दितुयी ॥ संविज्ञांग उदार ॥ १०॥ सधु-जणी देह प्रच्छेद ॥ पोते  
 क्रिरे-आहार ॥ ११॥ धनशेते-शिवप्रद लसो ॥ १२॥ वळी संगम  
 लोकाळना ॥ सुनीवरु दान-यकी-ययो ॥ १३॥ सांलिभद्र ॥ सुक  
 ॥ १४॥ ॥ १५॥ श्रीर-जीव-नियसंभर-जत्रे ॥ १६॥ द्रोघु-उत्तम दान  
 ना ॥ तो-भव-सत्तावीसमे ॥ १७॥ अया-वीर-जंगवात् ॥ १८॥ आ  
 त्वे-पृत-वहेरावीयो ॥ अंगे-धरी ॥ आणंद ॥ १९॥ जीव-तेह  
 ॥ धनसारनो ॥ २०॥ ययो-अथम-जिज्ज-वर्द ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥  
 ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥  
 ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥  
 ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥  
 ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥  
 ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥  
 ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥  
 ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥  
 ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥ ॥

॥ एकने छायर नहीं साजाजी ॥ ३०३ ॥ एकने पोछण  
 पलंग सजाइ ॥ सीर पसोमी तळाइजी ॥ एकने त्रुटि  
 खाट मिले नहीं ॥ गोदमी फाटी साइजी ॥ ३०४ ॥ ए  
 कने पहिरण वारु वागा ॥ एक फिरे नर नागाजी ॥  
 एक नारी सोवन शिणगारी ॥ एकने चीन नहीं सारी  
 जी ॥ ३०५ ॥ लाख टवी नर एकण कोढो ॥ एक दुखे  
 दिन गेडेजी ॥ एक सजा एक रंक कहावे ॥ दीधा बी  
 ण कीम पावेजी ॥ ३०६ ॥ तिणे कारण लिखमी खरची  
 ने ॥ दान मुपात्रे दीजेजी ॥ कीरपी थइने वैशी रहे जो ॥  
 आगळ शु पाइजेजी ॥ ३०७ ॥ कीरपी खावे नहीं धन  
 संचे ॥ धन कासण पर वंचेजी ॥ याचक आव्ये मुहु क  
 री काळो ॥ जाणे घश्यो लीहाळोजी ॥ ३०८ ॥ कीरपी  
 दान दाये नहीं केहने ॥ जलो कहे कुण तेहनेजी ॥ की  
 ढो संचे तितर खाये ॥ कीरपीनो धन जायेजी ॥ ३०  
 ९ ॥ साहमि साधने घर न दिखावे ॥ देवळ कोइ न क  
 रावेजी ॥ सत्रुकार न संघ चलावे ॥ कारण किणही न  
 आवेजी ॥ ३०१० ॥ यतः ॥ रन्नतलाई वेमी वड ॥ कायर  
 हाथ खडग ॥ गहिली जोवन कृपण धन ॥ कारण  
 किणही न लग्ग ॥ १ ॥ दाळ पुर्वनी ॥ हेम कहे राजा



सुण वाणी ॥ दीजे छलट आणीजी ॥ ९ माया जिणे  
 स्वाइ न जाणी ॥ ते बुड्या जव प्राणीजी ॥ ६०११ ॥  
 लिखमीनो फळ दान कहावे ॥ दान सुजस बोलावे  
 जी ॥ दाने देव तणां मन रंजे ॥ दाने अरिहल गंजेजी  
 ॥ ६०१२ ॥ दान थकी सनमान लहीजे ॥ दाता विरुद्ध  
 वहीजेजी ॥ दाने आदर आपे राजा ॥ दाने वाजे  
 बाजांजी ॥ ६०१३ ॥ दाने नितप्रते हालकलोला ॥ विं  
 ट्या रहे नर होलाजी ॥ दान सहुने लागे मीठे ॥ प  
 रतक्ष नयणे दीवोजी ॥ ६०१४ ॥ दाने भूत नर्थकर ना  
 से ॥ दाने दूरित विनासेजी ॥ दाने ग्रह पण न करे  
 पीना ॥ दाने बाधे ब्रीमाजी ॥ ६०१५ ॥ पोते न दीये  
 दान के वारे ॥ परने देतां वारेजी ॥ ते पमश्ये घण  
 घोर अंधारे ॥ उपरे देव पचारेजी ॥ ६०१६ ॥ अक्षय  
 सुपात्र सुगति सुख संपा ॥ ऊचीत किरती अनुकंपाजी  
 ॥ भोगवीये सुख ए संसारे ॥ दान दीये वित सारेजी  
 ॥ ६०१७ ॥ अनंत जिणेश्वर थया वळी थाश्ये ॥ ते स  
 हू दान प्रकासेजी ॥ पहिली दान तिर्यकर आपे ॥  
 दालिद्र सहुनां कार्पेजी ॥ ६०१८ ॥ इम जाणीने दान  
 समापो ॥ महीयले किरती थापोजी ॥ साठमी सुल



एतिपातनोरा॥न कहुं बस प्राणी संहाररे ॥ जयणा पर  
 उपगार आरंभनीरे ॥ एहनां पांच तजुं अतिचाररे ॥  
 रा० २ ॥ रीसे मारुं गाढि बंधणे बाधुरे ॥ पुंते भरु बहु भार  
 रे ॥ छविछेदुं राखुं भूख्यो बरयोरे ॥ दुख पामे ते जी  
 व अपाररे ॥ रा० ३ ॥ पहिला व्रत उपरे सुणज्यो कथा  
 रे ॥ अनरपुरी सुधिव नरिंदरे ॥ विमळा राणी कुखे उ  
 पनोरे ॥ अमरसय जाणे कुळ चंदरे ॥ रा० ४ ॥ एक दि  
 न कुमर रेवाडी संचर्योरे ॥ वांजण हाथे दीवो छागरे ॥  
 कुमरे पुच्छ्यो ते ब्राह्मण जणीरे ॥ कंही अरथे ए महा  
 भागरे ॥ रा० ५ ॥ तव बोल्यो ब्राह्मण सुण राजधीरे ॥  
 मे आरंभ्योछे एक ज्यागरे ॥ मांही होमीश पुन्य होशे  
 घणोरे ॥ अमरपुरे पोहोचशे छागरे ॥ रा० ६ ॥ कुमर क  
 हे सुण ब्राह्मण वातमीरे ॥ जीव हण्यां किम थाये पु  
 न्यरे ॥ लोही खरमळो लोही धोश्यरे ॥ निरमळ न ह  
 वे हिया शुन्यरे ॥ रा० ७ ॥ पाप करीने कहो किणीपरे त  
 रेरे ॥ जीव हणीने जाणे धर्मरे ॥ है है देखो मूरख मा  
 नवीरे ॥ अस भूला किम करे कुकर्मरे ॥ रा० ८ ॥ जी  
 व हणीने जो सुखीया हुवेरे ॥ तो दुखीया नवी थाये  
 कोयरे ॥ इम उपदेश अमर कुमरे दीयोरे ॥ तटले ए

क मुनी परगट होयरे ॥रा० १॥ ते सांभळतां राये पु  
 लीयोरे ॥ कहो रीपि जीव हृष्यां सुख होयरे ॥ साधु  
 कहे विष भक्षण जो करेरे ॥ मरण लहे के जीव सो  
 यरे ॥रा० १०॥ पावक मांही पेठो नवी कळरे ॥ न व  
 ले पावक केरे कुंमरे ॥ झीली नाल गळीना कुंमारे  
 ॥ जो नवी ॥ थयो कळो जुंमरे ॥रा० ११॥ तो हिंसा  
 थी पाप हुवे नहींरे ॥ न हणीस ब्राह्मण न करीश पा  
 परे ॥ एणे पहिली याग करव्यां घणारे ॥ ५ तुज पुरव  
 भवनो वापरे ॥रा० १२॥ ते सांभळ तुज आगळे हुं क  
 हुंरे ॥ कुंम खणाव्यो ताहरे तातरे ॥ रोप्या दक्ष धणा  
 ते पाखतारे ॥ होमे छाग तणा तिहां वातरे ॥रा० १३  
 ॥ ते पापे ए छाग थयो श्हारे ॥ तें झाली आय्यो पशु  
 एहरे ॥ एह कथा सुणी पांम्यो वोकडेरें ॥ जातीसमरण  
 ज्ञान सदेहरे ॥रा० १४॥ वात न माने जो तुं माहरीरे  
 ॥ तो तुजने दाखुं अहीनाणरे ॥ तुज घर दादव्यो धन  
 ताहरे पितारे ॥ जा देखामे छाग सुजाणरे ॥रा० १५  
 ॥ लोभी ब्राह्मण अज घरे ले गयोरे ॥ धन देखाल्यो  
 मानी वातरे ॥ ब्राह्मणना मननो सांसो टाळीयोरे ॥  
 ५ माहरो सही पुर्वज तातरे ॥रा० १६॥ दीक्षा लेश

द्विज मुगतै गयोरे॥ अणसण करी अज हुवो देवरै॥  
 एकसठमी इम ढाळ पुरी यइरे॥९ जिनहरष कही संपेव  
 रै ॥रा०१७॥ सर्व गाथा १२८८.

ढाळ ६५ मी.

दुहा ॥ अमरसिंघ छपगार करी ॥ परिचल पुस्यो  
 पाय ॥ तिहांथी परदेशे चलयो ॥ सिद्धनाथ मिल्यो  
 आय ॥१॥ कुमर तणो कर झालीयो ॥ मारैवा तरवा  
 र ॥ काढी तेण जोगी तिहां ॥ कीधी अज सुर सार  
 ॥२॥ योंगीने समजावीयो ॥ कुमर उगार्यो तेण ॥  
 अनुक्रमे पाम्यो राज पुण ॥ जीव दया पुण जेण॥३॥  
 ॥ दया सरीखो धर्म नहीं ॥ हिंसा समो न पाप ॥  
 तिण कारण न उपजाविये ॥ पर प्राणीने ताप ॥४॥  
 कुमरपाळ राजा थयो ॥ दया तणो प्रतीपाळ ॥ पढहु  
 फिरे नित देशमां ॥ पाळो दया दयाळ ॥५॥ एक सह  
 स गज एकसो ॥ हयवर लाख इग्यार ॥ असी सहें  
 स गो भेंस सब ॥ गळत्यां पीत्ये ते चार ॥६॥

ढाळ ॥ मारा मन मान्योरे वस्तीया ॥ ९ देशी ॥  
 वरतावी नृप इणी परे दया ॥ मारे नहीं कोंइ जीवरे ॥  
 इण अवसर देश मेवाढमां ॥ एक नगरअ छे सुख दी

वरे ॥ व० १ ॥ तिण नगरे एक विवहारियो ॥ निज ना  
 री जोवे सीशरे ॥ जू मारी नारी ते काढीने ॥ सांभळी  
 ते पाटण इशरे ॥ व० २ ॥ कोप आणी राजा धमहडयो  
 ॥ जाणे घुत पमट्यो अग्नि मझाररे ॥ जू मारे कुण पा  
 पी इश्यो ॥ बांधी लावो इण वाररे ॥ व० ३ ॥ राय  
 मोकलीया निज आदमी ॥ बांधीने लाव्या तासरे ॥  
 राजा धिग धिग तेहने कयो ॥ उपजावी अधिकी घा  
 सरे ॥ व० ४ ॥ तुं पाहणीयो के वाहणीयो ॥ जेयो न द  
 याजळ मांहीर ॥ ते मूरख बोल्हो इणी परे ॥ सांभळ  
 तुं श्री महाराघरे ॥ व० ५ ॥ करमी खाये तेहने हणुं ॥ फो  
 कट राय म करो रीशरे ॥ राय कहे तो हुं तुजने ह  
 णुं ॥ मुज सुद्धि आण न धारी सीशरे ॥ व० ६ ॥ ते दो  
 ष नहीं मुज मारतां ॥ तेमाव्या तुरत तलाररे ॥ एव  
 णि जणी वहीला हणो ॥ मार पाखे न लहे साररे ॥  
 व० ७ ॥ शेवने लेइ चाल्या मारवा ॥ मंत्री नुपने क  
 हे तामरे ॥ कीमी कंथू आने नवी हणे ॥ किम माण  
 स मारे आमरे ॥ व० ८ ॥ झूंइ पमट्यो धन जे नवी लीये ॥  
 पर घांरी न करे तेमरे ॥ नवयोवन परणी परिहरे ॥ पर  
 रमणी फरसे केमरे ॥ व० ९ ॥ एकेंद्रीने दुहवे नहीं ॥ पं

चेंद्री मारी घायरे ॥ ए वात विचारण सारिखी ॥ उ  
 गारो ए महारायरे ॥ व० १० ॥ मुंकाळो जीवंतो ते वा  
 णीयो ॥ जिनभुवन कराव्यो साररे ॥ दमडा लाग्या  
 तिहां शेठना ॥ नाम दीयो यूकाविहाररे ॥ व० ११ ॥ को  
 इ पाप करे नहीं वीहतो ॥ राज्ञानी आण प्रचंमरे ॥  
 नवराती पातिक दिन आवीया ॥ धांगे जीव तणा खं  
 ड खंडरे ॥ व० १२ ॥ देवी पूजारा आवीया ॥ कर जो  
 डी कहे सुण रायरे ॥ भोग मांगे देवी केटसरी ॥ भेंसा  
 वाकर दीवरायरे ॥ व० १३ ॥ सातमि दिन जोइये सात  
 सें ॥ आठसें आठमने दिवशरे ॥ नवसें नवमि दिन मा  
 रवा ॥ तुज राज्य अखंम अधीशरे ॥ व० १४ ॥ राजा न  
 न माहीं विचारीयो ॥ मुज छाजे नहीं ए पापरे ॥ दे  
 वीने वळ देइ वोक्रमा ॥ उपजाळं किम संतापरे ॥ व०  
 १५ ॥ पूजाराने नृप इम कहे ॥ माहं नहीं कीमी मात  
 रे ॥ माहं किम भेंसा वोकडा ॥ मुज एह म कहेश्यो  
 वातरे ॥ व० १६ ॥ समजावो तुम्ह देवी भणी ॥ में पाम्ये  
 आवक धमरे ॥ तुज देवळमां धरूं जीवता ॥ पण न क  
 रूं एह कुकर्मरे ॥ व० १७ ॥ ते माटे में करवो नथी ॥ ए  
 पातक विसवाविसारे ॥ जिनहरष बासठमी जाणव्यो ॥

९ दाळ रसाळ जगीसरे ॥ व० १८ ॥ सर्व गाथा १३१२.

दाळ ६३ मी

दुहा ॥ महिष न आपे नरपती ॥ देवी खीजी ता  
म ॥ आवी अति उतावळी ॥ नृप सुतो जिण ठाम ॥  
१ ॥ आवी देवी इम कहे ॥ सांजळ वात नरेश ॥ महिष  
न आपे मुज जणी ॥ ते. हुं किम मुकेश ॥ २ ॥ आगळ  
बहु राजा थया ॥ किणही न जोपी नीति ॥ तुं तेहथी  
अधिको थयो ॥ नागे पूर्व रीति ॥ ३ ॥ विनय करी रा  
जा कहे ॥ तुं सहुनी रखवाळ ॥ जीव मरावे एटला ॥  
मोटो ए जंजाळ ॥ ४ ॥ भोजन भगति करुं घणो ॥ खी  
र खांड पकवान ॥ लाडू सेव सुंहाळियां ॥ रुमां रुमे  
वान ॥ ५ ॥ कहे ताम. कंटेसरी ॥ अमचो भोजन मां  
स ॥ सींह करे सो लंघणा ॥ तोही न जखे घास ॥ ६ ॥  
राय कहे मुज नेम छे ॥ हणवा परनत पाण ॥ नीन  
न भागुं माहरो ॥ म करीश खाचरं तण ॥ ७ ॥

दाळ ॥ सांती सुधारस कुंममां ॥ झीजे रातने दीह  
रे ॥ १ ॥ देशी ॥ कोपी देवी रायशुं ॥ परिसह प्रतिकुळों  
रे ॥ कीधो तेहवो आकरो ॥ सिशे धर्यो विसूळोरे ॥  
को० १ ॥ ततखिण राय कोढी थर्यो ॥ अंगे वेदन वा.



धारे ॥ रूप कुरूप काया थइ ॥ जाणे दवनी दाधीरे ॥  
 को० २ ॥ राधि परु लोही वहे ॥ दीसे अति विकराळो  
 रे ॥ देखी सरूप काया तणो ॥ झांखो थयो भूपाळोरे  
 ॥ को० ३ ॥ चिंता नहीं मुज देहनी ॥ जिन धरम निंदा  
 श्येरे ॥ जिनशासननो लोकमां ॥ अपयश बहु थाश्ये  
 र ॥ को० ४ ॥ मंत्री उदयन तेनीयो ॥ भूप कहे शुण भा  
 इरे ॥ वेडन थइ मुज कोढनी ॥ तेहनी चिंता न कांइ  
 रे ॥ को० ५ ॥ ह्रीजा थाश्ये धर्मनी ॥ लोकमां अपवादो  
 रे ॥ धर्म तज्यो निज कुळ तणो ॥ पाम्या एह सबाधो  
 रे ॥ को० ६ ॥ उदयन गुरु पासे गयो ॥ कस्यो सकळ  
 वृत्तांतोरे ॥ हेमसुरीशर बोलीया ॥ न करो मन चित्तो  
 रे ॥ को० ७ ॥ जळ मंत्री मंत्री भणी ॥ आप्यो मुखमां  
 न्हेलोरे ॥ अंग सयळ वळी छांटज्यो ॥ थाश्ये रोग  
 उवेलोरे ॥ को० ८ ॥ जळ आणी नृप छांटियो ॥ रोग  
 गयो ततकाळोरे ॥ कनक वरण काया थइ ॥ मन  
 हरज्यो भूपाळोरे ॥ को० ९ ॥ सैन्य लंड गुरु वांदवा ॥  
 आव्यो नृप सुविचारीरे ॥ बंदी वेठो एटले ॥ रोती  
 सुणी एक नारीरे ॥ को० १० ॥ करुणा स्वरे ए कुण रमे ॥  
 पुळे कोमळ वाणीरे ॥ ए ताहरी कुळ देवता ॥ इहां

बांधी आणोरे ॥को० ११॥ तुजने वेदन जिए करी ॥  
 मुंकीयो गस्तक धायोरे ॥ पाप तणां फळ भोगवे ॥  
 कीधां जे निज कायोरे ॥को० १२॥ नृप कहे श्रीगुरु  
 सांजळो ॥ एह अवळा नारोरे ॥ कीडी उपरे कोपश्यो  
 ॥ तुम्हे परउपगारोरे ॥को० १३॥ करुणा करी ९ मुं  
 कीये ॥ कहे नृप अवतंसोरे ॥ हेम कहे छोडुं एहने ॥  
 जो महेजे ९ मांसोरे ॥को० १४॥ हठ न करे तुजशुं  
 वळी ॥ फिरे पेश अहारोरे ॥ कोइ हणेछानो जीवने ॥  
 तेहनी कहे सारोरे ॥को० १५॥ कुमर नरेशर उढीयो  
 ॥ पुहता देवीनी पासोरे ॥ गुरु कहे तिम जो तुं करे ॥  
 छुटे तो तुज पासोरे ॥को० १६॥ देवी कहे नृप सां  
 भळो ॥ हवे जीव न मांगुरे ॥ जीव हणे तुज देशमां  
 ॥ तेहने मरमी जागुरे ॥को० १७॥ देवीपणे दयावंत  
 थइ ॥ न करे जीव आहारोरे ॥ हेम सुगुरु सुपसाउले ॥  
 बरत्या जय जयकारोरे ॥को० १८॥ हेम कुमर नृप  
 सारीखा ॥ नहीं कोइ दयाळोरे ॥ त्रैसठमी पुरी थइ ॥  
 जिनहरप ९ दाळोरे ॥को० १९॥ सर्व गाथा १३३८ ॥

दाळ ६४ मी.

डुहा ॥ तीन लोक जो सोझीये ॥ स्वर्ग मृत्यु

पायाज ॥ हेमसुरी सरिखा यति ॥ दूहला दुपमकाळ  
 ॥१॥ कळिकाळे ए वे हुवा ॥ कुमरपाळ नृप हेम ॥  
 ओ आवक ने ओ सुगुरु ॥ अविचळ जेनो भेन ॥२॥  
 वनचर वस्तीमां फिरे ॥ कोइ न करे आळ ॥ जिम  
 राजा परजा तिसि ॥ जीव तणा प्रतिपाळ ॥३॥ हेमसुगी  
 ने जीव सहु ॥ छे एहवी आसीप ॥ भरण थकी उगा  
 रीया ॥ चीरंजीव निश दिश ॥४॥ जग मांहीं हुवा घणा  
 ॥ अजयदान दातार ॥ पण इण कुसर नरेश-सम ॥ कोइ  
 नही संसार ॥५॥

ढाळ ॥ तप सरिखो जग को नहीं ॥ ए देशी ॥  
 दयासु धरम दीपावीयो ॥ जीव दान दातारहो ॥ राज  
 न ॥ धरमी लोक कीया सहु ॥ वासी देश अदारहो  
 ॥ रा० द० १ ॥ गुज्जर सौरव माळवो ॥ कर्णाटक मरु दे  
 शहो ॥ रा० ॥ सिंधु भंभेर कुंकण करी ॥ जालंधर सु  
 वितेशहो ॥ रा० द० २ ॥ झाट कच्छ राष्टर वळी ॥ स  
 वा लाख परवत राजहो ॥ रा० दीपक नीर आजीरुं  
 ॥ वळी मेवाम मुराजहो ॥ रा० द० ३ ॥ एसहु देश पोता  
 तणा ॥ ए मांहीं न मरे जीवहो ॥ रा० सहु नरपति शि  
 र सेहरो ॥ स्ववी वंशे दीवहो ॥ रा० द० ४ ॥ काशी देश व

णारशी ॥ दलपंगुल जयचंदहो ॥ रा० करि मित्राई नैं  
 ठणो ॥ देइ कुमर नरिदहो ॥ रा० द० १॥ सरग नरग  
 त्रिय पठ करी ॥ समजाव्यो जयचंदहो ॥ रा० दया  
 पळावी ते कन्हो ॥ धन धन कुनर नरिदहो ॥ रा० द० २॥  
 एक दिन नूर काउसग रह्यो ॥ मंकोमो एक आइहो  
 ॥ रा० पाये ते विळगी रह्यो ॥ उखेनयो नवि जायहो  
 ॥ रा० द० ३॥ करुणा नूर आणी करी ॥ चिते मनमां ए  
 महो ॥ रा० रखे दुख पाने पाणीयो ॥ करुण उपरे मे  
 महो रा० द० ४॥ काया एह असासती ॥ पंथीतो विश्रा  
 महो ॥ रा० आवे सुकीयारथी ॥ मंकोमाने कामहो ॥  
 रा० द० ५॥ दया विचारी एहवी ॥ शस्त्रे छेद्युं मांसहो ॥  
 रा० लोड अळगो मुकीयो ॥ तिणे न छोडयो डंसहो ॥ रा०  
 द० ६॥ पहिलो व्रत इम पाळीयो ॥ कुमरपाळ भूपाळ  
 हो ॥ रा० राजवीयामां एहवो ॥ न हुओ कोइ दया  
 लहो ॥ रा० द० ७॥ वीजो व्रत हवे उचरे ॥ सुखा त  
 णो परिहारहो ॥ रा० पंचे कूड दूरे तजुं ॥ पाप तणा  
 जमारहो ॥ रा० द० ८॥ कन्याली गाय भूमिनो ॥ साख  
 कूटीनो जाखहो ॥ रा० थापण मोसो पांचमो ॥ टाळुं  
 गुरुनी साखहो ॥ रा० द० ९॥ तज्जीये राजन वेगळा ॥

एहना पंच अतिचारहो ॥ रा० कुडो आळ न दीजीये ॥  
 ॥ परना मर्म न विचारहो ॥ रा० द० १४ ॥ बीजो वळी  
 नवी कीजीये ॥ स्वदारा मंत्र भेदहो ॥ रा० मुखोपदेश  
 न दीजीये ॥ कुमा लखो छेदहो ॥ रा० द० १५ ॥ अ  
 तीचय परपंच टाळवा ॥ बीजो व्रत राजानहो ॥ रा०  
 बीजो व्रत हिव हुं धरुं ॥ थूळ अदत्तादानहो ॥ रा०  
 द० १६ ॥ खातर पामी नवि लीजं ॥ गांठ छोमी न ल्युं  
 कासहो ॥ रा० भूमि निधान पम्बो जहुं ॥ धर्म धान  
 क करुं तासहो ॥ रा० द० १७ ॥ पांच अतिचार संज्ञा  
 लो ॥ चोरी वस्तुनो ताजहो ॥ रा० भेळ करे नही व  
 स्तुमां ॥ न दीये चोर सहाज्यहो ॥ रा० द० १८ ॥ विरु  
 ध गमण पण नवि करे ॥ कुडा तोला मापहो ॥ रा०  
 एहिज पांचे टाळीये ॥ एहथी लागे पापहो ॥ रा० द० १९ ॥  
 इम सुद्ध व्रत नृप पाळतो ॥ न लीये परनो धनहो ॥  
 रा० राख्यो कारण उपने ॥ थिर पोतानो मत्तहो ॥  
 रा० द० २० ॥ पुरुष रयण ए मोटको ॥ कुमरपाळ भू  
 पाळहो ॥ रा० कहे जिनहरष विचारीये ॥ चोसउनी ए  
 टाळहो ॥ रा० द० २१ ॥ सर्व गाथा १३६४.



ढाळ ६५ मी.

दुहा ॥ धन देखी मन नवि रहे ॥ मोहणगारो  
 धन ॥ जे धन देखी नवी घळे ॥ ते जगमां धन ध  
 न्न ॥ १ ॥ जिण दीते मन विचले ॥ तरुणी पसारें ह्मथ  
 ॥ वाळ वृद्ध जुना पुरुष ॥ मोह्या सहु गरथ ॥ २ ॥ घर  
 फामे चोरो करे ॥ मारे धननी आस ॥ एकण काढी  
 कारणे ॥ वीस करे बेपास ॥ ३ ॥ पांचसें वाहन धन  
 नर्या ॥ मुंढ्यां कुमर नरेश ॥ सावधान थड सांभळो  
 ॥ दास कथा सुविसेश ॥ ४ ॥

ढाळ ॥ मधुकर आज रहारे जिन चलो ॥ ५ ॥ दे  
 शी ॥ वारह व्रतधारी वसे ॥ पाटणमां एक शेठ ॥ सु  
 णज्यो कुबेरदत्त नामे जलो ॥ धनवंत जेहने हेठ ॥  
 सु० वा० १ ॥ चवद कीर्ती धन लेइ करी ॥ पांचसे वा  
 हण मांह ॥ सु० रतनद्वीप जणी चलयो ॥ धरतो मन  
 उछांह ॥ सु० वा० २ ॥ सायर विचे डंगरो ॥ ते विचे  
 मारग दीउ ॥ सु० वाय कुवाय तणे वंशे ॥ ते विचे  
 पोत पश्ट ॥ सु० वा० ३ ॥ आगळ वाट दीसे नहीं ॥ मा  
 लम थया संचित ॥ सु० चाल्या वाहण नवी चले ॥  
 क्रीया उनाय अनंत ॥ सु० वा० ४ ॥ इण अवसर एक

होमीये ॥ आव्यो बेशी पुरुष ॥ सु. कीयो झुहार तिण  
 शठने ॥ वयण पयंपी मुस्र ॥ सु० वा० ५॥ पंचश्रंग ना  
 मे द्वीप ॥ तिहां सुतसागर राय ॥ सु० तिणे सगर्भा हि  
 रणली ॥ मारी कीथ अन्याय ॥ सु० वा० ६॥ एहवुं दे  
 स्त्री रायने ॥ दया उपनी ताम ॥ सु० राजा मनमां चिं  
 तवे ॥ नरग तणी मुज ताम ॥ सु० वा० ७॥ एक जी  
 वने कारणे ॥ माहं जीव अनेक ॥ सु० जीव तणो हुं  
 स्वादीयो ॥ मुज माहिं नहीं शिवेक ॥ सु० वा० ८॥ पर  
 जवथी नृप बीहृतो ॥ आज पछे मुज नीम ॥ सु० जी  
 व न माहं जाणीने ॥ ज्यां जीवुं त्यां सीम ॥ सु० वा० ९॥  
 वाहण पोभ्यां तुम तणां ॥ राये जाण्यां तेह ॥ सु० तु  
 रत मोकल्यो मुज जणी ॥ इहां हुं आव्यो एह ॥ सु० वा०  
 १०॥ वाहण आव्यां पांचसें ॥ तुम पहिली इण ठाम ॥  
 सु० सहस वाहण भेळां थयां ॥ चली शके नहीं जा  
 म ॥ सु० वा० ११॥ तेह पुरुष कहे सांजळो ॥ आ हुंग  
 रने श्रंग ॥ सु० देव जवम छे तेहमां ॥ जोडी नगरां  
 चंग ॥ सु० वा० १२॥ तिहां वजावी जइ करी ॥ निश  
 णी तास अवाज ॥ सु० उढे जारंम पंखीया ॥ वाये च  
 ले जहाज ॥ सु० वा० १३॥ जे जाये ते तिहां रहे ॥

सुमोढो संताप ॥ सु० एहवो कुण जाये तिहां ॥ मरण  
 आगमी आप ॥ सु० वा० १४ ॥ नामे व्रत वार उचर्या ॥  
 १ ॥ भाखे शेठ विसेश सु० किणहीते मुख माहरे ॥ न दी  
 ऊ ए आदेश ॥ सु० वा० १५ ॥ शेठ वारतां उठीयो ॥  
 हुं जाइश इण काम ॥ सु० मुखथी ए सह उगरे ॥ पहु  
 तो तिणे ठाम ॥ सु० वा० १६ ॥ जिन प्रतिमा पणमी क  
 री ॥ च्यारे सरणां कीध ॥ सु० सागारी अणसण करी  
 ॥ घाव नगारे दीध ॥ सु० वा० १७ ॥ सारो परवत गु  
 जीयो ॥ पंखी पमत्तां जगांण ॥ सु० पंख वाये वाहण  
 चल्यां ॥ जाणे देव विमान ॥ सु० वा० १८ ॥ पुत्तीया ते  
 पाटण जणी ॥ आव्या जरुअच ठाण सु० मुंकी नाल ज  
 री, करी ॥ लोक मांही थइ जाण सु० वा० १९ ॥ व्या  
 पारी, आव्या मिली ॥ शेठ न देखे जाम ॥ सु० मुहुताने  
 पूछे सह ॥ शेठ किहां, किण ठाम सु० वा० २० ॥ पाछ  
 क आगळ विचे कहे ॥ आवे छे अम शेठ ॥ सु० वा  
 त मिले, नही केहनी ॥ खोटी न चले नेट ॥ सु० वा०  
 २१ ॥ इम उत्तर आले सह ॥ सह बोले मुखे आळ  
 ॥ सु० कहे जिनहरप पूरी थइ ॥ पांसठमी ए दाळ ॥  
 सु० वा० २२ ॥ सर्व गाथा १३९०



ढाळ ६६ मी

दुहा ॥ वामदेव मंत्री कहे ॥ शुणज्यो साची वा  
 त ॥ पात विषम छे शेवती ॥ कहेता ह्यो जरात ॥  
 १ ॥ शेट अमंगळ वास्ता ॥ पोहती पाटण माह ॥  
 चिंतातुर सहको थया ॥ मनमां वाध्यो दाह ॥ २ ॥  
 राय पुरुष सह मिली कशी ॥ विनवीयो भूपाळ ॥ कू  
 वेरदत्तना धन तणी ॥ स्वामी करो संभाळ ॥ ३ ॥ मू  
 ओ तेह अपूनीयो ॥ सांभळीयो छे आज ॥ धन आ  
 णीजे तेहनो ॥ ढील न कीजे राज ॥ ४ ॥ एत वचन  
 सजा शुणी ॥ वचन पर्यपे एम ॥ ए धन मुज कलपे  
 नहो ॥ म्हारे एहनो नेम ॥ ५ ॥ जे धन खाश्ये एहनो  
 ॥ धाश्ये जे सुत बाप ॥ धन लेइ घर मनुष्यनो ॥  
 किम उपजाउ ताफ ॥ ६ ॥

ढाळ ॥ जाल माहारो इमर ओल्लि ॥ ए देशी ॥  
 दुरजन नर बोल्या वळी ॥ सांभळ श्री महारायरे ॥  
 वीस कोमी सोमन तणी ॥ लेतां किश्यो अन्यायरे ॥  
 दु० १ ॥ जेहने सुत पाळळ नही ॥ तेहनो धन ल्ये रा  
 योरे ॥ आगळ जेसग नृप थयो ॥ ते पण लेतो आ  
 योरे ॥ दु० २ ॥ कुमरपाळ बोल्हो दशी ॥ मूरख का म

तिं नांठारें ॥ मुजने इणी परे शिखवो ॥ मध्यम कर  
 णी माठीरें ॥ दु० ३ ॥ वाप थयो देवाळीयो ॥ तो श्यु  
 शुत पण थायरे ॥ वाप हल्यारो जे हुवे ॥ शुत तिण प  
 थें जायेरे ॥ दु० ४ ॥ कालक शूरियो पातकी ॥ तेहनो सु  
 त थयो धर्मांरें ॥ लोहपुरो तस्कर शिरे ॥ रोहीणीयां  
 थयो शर्मांरें ॥ दु० ५ ॥ तीर्थकर सहु परणीया ॥ नेमी  
 नारी छांमीरें ॥ कीरती वाधी के घटी ॥ जोवो हियो  
 उग्रान्तरें ॥ दु० ६ ॥ आदरीये करणी जलजी ॥ तजीये ना  
 ठी दूररे ॥ राय थइ पर धन लीये ॥ नीति मारग ते  
 चूररे ॥ दु० ७ ॥ प्राण अभ्यंतर जे हणे ॥ तेहने कहीये  
 पापीरे ॥ तेहथी भारी जे हणे ॥ बास प्राण संतापीरे ॥  
 दु० ८ ॥ तेह कारण धन नवि लीजं ॥ त्रिजुं व्रत किम खंडुरे  
 ॥ जे व्रत गुरु मुखे आदरयो ॥ धन कारण किम छंडुरे ॥  
 दु० ९ ॥ वळी बोल्या मंत्री तिसे ॥ स्वामी धन मले  
 श्योरें ॥ पण पाउधारो तस घेरो देहरासर निरखेश्योरें  
 ॥ दु० १० ॥ इण वचने नृप हरखीयो ॥ चाल्यो धरीय  
 उमाहोरें ॥ आव्यो विवहारी घरे ॥ जिन वंदन उछां  
 हेरे ॥ दु० ११ ॥ गुणथी नृप देखी करी ॥ कांश्क ल्यो  
 पग जाडोरें ॥ काम नहीं मुज एहशु ॥ देहरासर देखा

टोरे ॥ दु० १२ ॥ गुणश्री आगळ थड करी ॥ देहरासरे  
 देखामटोरे ॥ देखी हरस्त्रीत चिंतवे ॥ इंद्र जुवन निरधा  
 डटोरे ॥ दु० १३ ॥ रतन जडित सोवन तणां ॥ सुंदर  
 थंज विराजेरे ॥ मणोमय भूरति जिन तणी ॥ ज्योति  
 झगमग छाजेरे ॥ दु० १४ ॥ चैत्यवंदन विधंशु कर्यां ॥  
 भावना भावी सारीरे ॥ धन खरच्युं देहरासरे ॥ धन  
 धन ९ विवहारीरे ॥ दु० १५ ॥ आज कृतार्थ हूं थर्यो ॥  
 कीधी जाच ममाणोरे ॥ वसे इश्या विवहारीया ॥ ध  
 न्य नगर गुण खाणोरे ॥ दु० १६ ॥ टीप लिस्त्री दीठी नृ  
 पे ॥ वांची ताम कुमारोरे ॥ परिग्रहनो परमित्त क्रियो  
 ॥ तेहनो लिख्यो विचारोरे ॥ दु० १७ ॥ खट कोमी क  
 नक निधानमे ॥ रुपैया अठ कोमोरे ॥ जाल्य रतन  
 मणी सुंदर ॥ सहेम पंच दुजोमोरे ॥ दु० १८ ॥ दोय  
 सहस घुम घुत तणा ॥ कुंभ चोसठ मण मानोरे ॥ ए  
 क खाटी सोले कुंभे ॥ बे सहेंस खांमि धानोरे ॥ दु०  
 १९ ॥ हस्ती एक सहेंस जला ॥ वाजी सहेंस पंचासोरे  
 ॥ आव गोकुळ शुरजी तणां ॥ पांच सय घर सुप्रकासो  
 रे ॥ दु० २० ॥ पंच सय हज्र मुज मोकलां ॥ वळी पंचस  
 य मुज हाटोरे ॥ मोटां वाहण वळी पांचसे ॥

हे जळ वाटोरे ॥ दु० २१ ॥ सकट पंचसें नित वहे ॥ ए  
धन मुज परमाणोरे ॥ दाळ छासठमी पूगी थइ ॥ कही  
जिनहरप मुजाणोरे दु० २२ ॥ सर्व गांधा १४१९.

दाळ ६७ मी.

दुहा ॥ वांची टीप उठे जिसे ॥ गुणश्री रांती दी  
० ॥ पुत्र धिरह दुख उलटयो ॥ हंता मांही अंगिर ॥  
१ ॥ क्रिण कारण तुं दुख धरे ॥ राय कहे शुण राय  
॥ स्वामि सुत गति ९ थइ ॥ ते दुख पाम्यो न जाय ॥  
२ ॥ अन्न पान मुज नवि रुचे ॥ दवे कारशुं अपघात ॥  
जगमां को न सह्यो शके ॥ मोटां दुख ९ सात ॥ ४ ॥ उ  
पजतां चाल्यो गिता ॥ जणतां मुइ माय ॥ बीजो दु  
ख निरधनपणो ॥ चौथो परवश थाय ॥ ४ ॥ पांचमो दु  
ख बेटी घणी ॥ घरमां भूख अचाल ॥ उठु दुख अ  
ती दोंहिलुं ॥ घर मांजे अधकाळ ॥ ५ ॥ गरदपणे वं  
टो भरे ॥ दुख सातमो कहाय ॥ ९ ॥ दुख इण संसारमां  
॥ खिण खिण साले राय ॥ ६ ॥ गुणश्री कहे में पुत्रनी ॥  
यात शुणी महाराय ॥ प्राण दुश्ये हवे भाहुणा ॥ हियमां  
दुख न समाय ॥ ६ ॥

दाळ ॥ तुंगियागिरी शिखर सोही ॥ ९ देशी ॥ कः

रण विण काइ माइ रोवे ॥ तेह दाखवे वातरे ॥ गुण  
सीरी कहे राय साजळो ॥ पुत्रनी शुणी घातरे ॥ का० १॥  
॥ किले ९ तुज वात दाखी ॥ ते इहां तेमायरे ॥ तास  
पुछी निरती कीजे ॥ खरी खोटी धायरे ॥ का० २॥  
वामदेव तेमो पुछीयो नृप ॥ कसो सयळ द्विचाररे ॥  
शेठ हुंगर रक्षो उररे ॥ नहीं संवळ लाररे ॥ का० ३॥  
जीवतो तिहां किम रहेश्ये ॥ इहा आवे केमरे ॥ वा  
त एहवी शुणी राजा ॥ गहगशो कहे एमरे ॥ का० ४॥  
॥ जास पुण्ये भर्या वाहण ॥ कीयां बहु उपगाररे ॥  
तेहनी कांइ चित म करो ॥ कुशळ छे निरधाररे ॥  
का० ५॥ तेह मिलशे माय तुजने ॥ मानजे मुज वात  
रे ॥ पाये न हुवे बलन खोटे ॥ सातनो सुविख्यातरे  
॥ का० ६॥ राय तपशी देव बाळक ॥ सुगुरु अतिशयवं  
तरे ॥ साधु सज्जन सातनो इन ॥ वचन तुरत फळंत  
रे ॥ का० ७॥ एटले आकाश मारग ॥ आव्यो एक वि  
मानरे ॥ कुंवरदत्त स्त्री-साथे मांही ॥ भर्यां बहुत नि  
धानरे ॥ का० ८॥ राय पाये आइ लग्यो ॥ मिल्यो  
नाने धायरे ॥ नारि कमळा सह सज्जन ॥ वणु हरखि  
त धायरे ॥ का० ९॥ रिद्धि देसी राय हरख्यो ॥ क

हो पामी केमरे ॥ शेठ कहे महाराज निशुणो ॥ कहं  
 कया थइ जेमरे ॥ का० १० ॥ रिदय अहिंठ थ्यान  
 धरतो ॥ पूजतो जिनरायरे ॥ जोवतो वन फिरु हुंग  
 र ॥ एटले तिणे ठायरे ॥ का० ११ ॥ जळ भयो एक  
 कुप दीठो ॥ उनरोयो ते माहीरे ॥ एक दीठी तिहां वा  
 री ॥ चलयो चित उछांहेरे ॥ का० १२ ॥ नगर दीणे  
 एक आगे ॥ मांही नहीं नर नारीरे ॥ राजगृही सात  
 मी भूमे ॥ दीठी एक कुमारीरे ॥ का० १३ ॥ बोलावी  
 ते बाळीकाने ॥ पुछ्यो सवळ सरुपरे ॥ ते कहे सुण  
 पुरुष उत्तम ॥ केहुं वात अनूरे ॥ का० १४ ॥ एह ति  
 लकापुरी नगरी ॥ पाताळकेत अधीशरे ॥ कर्म व्योगे  
 सुमति नाठी ॥ मंसासी निसी दीशरे ॥ का० १५ ॥ एक  
 दिन एक जीव आण्यो ॥ रांधणीयाने देयरे ॥ तेह मारी  
 मंस पचवीयो ॥ मांजारी गइ लेयरे ॥ का० १६ ॥ सो  
 झीयो पण किहां न मिल्यो ॥ राय शय मन चितरे ॥  
 मूओ बाळक लेइ आव्यो ॥ अगनी मांही पचतरे ॥  
 का० १७ ॥ विविध योगे ते निपाव्यो ॥ राय भोजन का  
 जरे ॥ आवी बेढो थाळ माहे ॥ तेह मुंकीयो साजरे  
 ॥ का० १८ ॥ मांस खातां खाद लाग्यो ॥ भूवने तिणी

वाररे ॥ आज किम थयो अधिक सुंदर ॥ कहै ताम  
 सूआररे ॥ का० १९ ॥ वात सांजळी स्वाद लंपट ॥ थ  
 यो ताम भूपाळरे ॥ लेंइ आवी नगरमांथी ॥ एके को  
 नीतुं बाळरे ॥ का० २० ॥ जीभ लंपट थयो जे नूर ॥  
 तेह दुरगति पातरे ॥ ढाळ थइ जिनहरप पुरी ॥ साठ  
 छपरे सातरे ॥ का० २१ ॥ सर्व गाथा १४४७ ॥

ढाळ ६८ मी

दुहा ॥ बाळक खाये नित मते ॥ लोक गया सहु  
 नास ॥ नगर एम सुनो थयो ॥ हुं पुत्री छुं तास ॥ १ ॥  
 हिवणां ते इहां आवशे ॥ देखी दृणशे तुज ॥ राखुं हुं  
 सही जीवतो ॥ जो तुं परणे मुज ॥ २ ॥ में तेहनो ना  
 न्यो कथन ॥ फूल तणा ढग मांय ॥ संतामी मुज रा  
 खीयो ॥ आव्यो राक्षस राय ॥ ३ ॥ तिणे पुत्रीने पुछी  
 यो ॥ इहां कोइ नर गंधाय ॥ तुज आगळ नर कुण  
 रहे ॥ नासी दूरे जाय ॥ ४ ॥ मुज वरवा वर नवि मळे ॥  
 इहां न आवे कोय ॥ मुज कुमारी राखशो ॥ इणी  
 परे भाखे रोय ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ मुनरों देखे जालम जाटणी ॥ ६ देशी ॥  
 मुख करमाणो कमळ तणी परे ॥ रातां नयण कीयां

शेइरे ॥ वर परणावां हो मुजने वापजी ॥ ९ आंकिणी  
 ॥ एक सुता हुं तुमने वालही ॥ ते पण मिठ विण दु  
 खणी होय ॥ व० १ ॥ श्यां सुख प्रितम विण संसारनां ॥  
 मिठ विण कुण नारी आधार ॥ व० मात पीता बांधव  
 साजन सगां ॥ प्रितम विण कोइ न करे सार ॥ व० २  
 ॥ वर पाखे नारी शोभे नहीं ॥ नर विण म जहे आ  
 दरमान ॥ व० मननां दुख नर विण किणने कहे ॥ न  
 र पाखे मदिर समशान ॥ व० ३ ॥ तिण कारण तुमने  
 कहूं लाजती ॥ कहेवानो नहीं छे व्यवहार ॥ व० पण  
 सोया विण धवरावे नहीं ॥ बाळकने सुविचक्षण नार  
 ॥ व० ४ ॥ राय कहे वेढी तुज सारीखो ॥ जोयो पण  
 न मिले वरराज ॥ व० कुमरी कहे तुमने वर कुण मि  
 ले ॥ मिले तो जक्षणो तुम काज ॥ व० ५ ॥ तुज व  
 रने हुं जक्षण नवि करूं ॥ जो कोइ होय तो मुज दे  
 खाल ॥ व० सम कीधा तिण राये आकरा ॥ मगट  
 कीयो मुजने ततकाल ॥ व० ६ ॥ पुत्री परणावी नृप मु  
 ज भणी ॥ वर कन्या मिलाव्या हाथ ॥ व० कन्यानो तो  
 मुकुं सही ॥ मंस तजो तुम्हे नर नाथ ॥ व० ७ ॥ कुम  
 री कहे सांभळ मुज वातजी ॥ स्वाधे जीवने भिपतो धा



य ॥ व० स्वातां स्वातां जनमारो गयो ॥ भूख्यो एक  
 दिन जो नवि स्वाय ॥ व० ८ ॥ चउ गतिमा जीव जमं  
 तमे ॥ भोजन कीधा अनन अमार ॥ व० तोही भूख्यो  
 पापी प्राणीयो ॥ एहने समता नहीं जगार ॥ व० ९ ॥ क  
 हीये ए इद्री धावि नहीं ॥ जो बोधीजे दिन ने रात ॥  
 व० थोडा दिनना सहुको प्राहुणा ॥ जीव तणी किम  
 कीजै घात ॥ व० १० ॥ आगे पाप तुलै कीधां घणां ॥  
 करो अगह वर छोमे हाय ॥ व० पुत्री वयणे ततखी  
 ए वळयो ॥ मास नक्षण छेमलो नरनाय ॥ व० ११  
 ॥ पुर जन लोक वळी आवी वश्या ॥ राजा राज  
 करे सुखदाय ॥ व० रिद्धि स्मृधि विमान भरी करी ॥  
 दीधो भेन धरी तिण राय ॥ व० १२ ॥ तिणे विमाने हुं  
 वैशी करी ॥ आव्यो पुण्य तणे सुपसाय ॥ व० तुं सो  
 भागी भाग्य तणो धणी ॥ तुजधी आपद सहु टळी जाय  
 ॥ व० १३ ॥ ए धन ए सहिला पुण्य मिली ॥ पुण्य त  
 णो तुं छे भमार ॥ व० तुज आव्यां सहुने आण्ड थ  
 यो ॥ करो कुटव तणी हरे सार ॥ व० १४ ॥ हु जि

ओ मतिवंत ॥ १५ ॥ चौथो व्रत हवे राजा उचरे ॥ टा  
 ली सील महाधत्त दोष ॥ व० विधवा नारी तेह न गो  
 गवुं ॥ परदारानो क्रियो संतोष ॥ व० १६ ॥ तिर्यय नारी  
 कुमारि कन्यका ॥ बांछुं नहीं एहनो संभोग ॥ व० व  
 निता मुजने आठज मोकळी ॥ अवर तणो न करुं  
 संयोग ॥ व० १७ ॥ च्यार महीना चोमासा तणा ॥ पाळे  
 वो में निमरळ सीळ ॥ व० पांच अतिचार टाळुं एहनां  
 ॥ जिन पामु अविचळ सुखलील ॥ व० १८ ॥ हाश्य वि  
 नोद क्रिडा ते नवि करे ॥ पोपे नहीं वाते सिणगार ॥  
 न करे ते कुचेश केहश्युं ॥ पाळे इम ब्रह्म सुविचारा ॥  
 वे० १९ ॥ पटराणी आठे राजा तणी ॥ कर्म योगे ते म  
 रण लहाय ॥ व० राय जणी कहे सहु मंत्री मिली ॥ प  
 रणो नारी तुले नहाराय ॥ व० २० ॥ स्त्री धिण राज नो  
 हैं शास्त्रे कसो ॥ परणो ते माटे भूपाळ ॥ व० कहे जि  
 नहर्प हवे सहु सांजळो ॥ अडसठमी पुरी थइ ढाळ ॥  
 व० २१ ॥ सर्व गाया १४७३.

ढाळ ६९ मी.

दुहा ॥ कुमारपाळ कहे सांजळो ॥ वर परहरियें  
 प्राण ॥ प्राण गयो तो जाणदे ॥ व्रत किम तजि

ये जाण ॥१॥ जे व्रत गुरु मुख आश्रया ॥ छांतीजे कि  
म तेह ॥ सपुरिष वद्यण न उचरे ॥ उच्चरे ते करेह ॥  
२॥ जेहने नहि कांइ आखनि ॥ ते पापी कहेवाय ॥  
लेइ भाजे जे आखनी ॥ ते महापापी थाय ॥ ३॥ का  
दव्या वयणज मुख थकी ॥ निरवा ह्ये सनूर ॥ काम  
पनव्या साहस धर्या ॥ तेहीज कहिये सूर ॥ ४॥ साधु  
सती अरु सुरीमा ॥ ज्ञानी नर गज दंत ॥ उलट अ  
पुठा न मिटे ॥ जो जग जाय अनत ॥ ५॥ जात पटो  
ळे जे पडी ॥ लोहमे पनी जे स्त्रीह ॥ न मिटे तिम उत  
म पुरिष ॥ वयण कक्षां जे जीह ॥ ६॥

ढाळ ॥ म्हाका माहिलारे जीती जूआ म्हारी ॥ ए दे  
शी ॥ राग नारु ॥ राय कहे मत्री सुणारे ॥ म कहो  
आळपंपाळ ॥ कायर सूर हुवे नही ॥ सीह हुवे नसी  
आळ ॥ १॥ पाटण राजवीगे ॥ व्रत पाळे निरदोष ॥ नुरी  
तणी ममता नही ॥ समता चित्त सतोष ॥ पा० २॥ चि  
त्त चूके नही रायनारे ॥ सीळ धर्यो अजिराम ॥ करी  
सोवननी पूतळी ॥ पटराणी तस नीम ॥ पा० ३॥ हिये  
धरे व्रत पाचमारे ॥ परिग्रहनो परिमाण ॥ राये कीधो  
गुरु मुखे ॥ सुणव्यो तेह सुजाण ॥ पा० ४॥ छ कोडि

कनक निधानमेरे ॥ रुँपया अठ कोड ॥ दस सहेंस तो  
 ला मणी ॥ रिद्धि सहुनी जोम ॥ पा० ५ ॥ पाच लाख  
 तेजी तुरारे ॥ एक सहेंस गजराज ॥ सोळ सहेंस रथ  
 रुअमा ॥ ऊट सहेंस इक साज ॥ पा० ६ ॥ वे सहेंस कुं  
 श घूत तेलनारे ॥ वे सहेंस खांसी धान ॥ हज्र हजार  
 संख्या करी ॥ पांचसें हाट प्रधान ॥ पा० ७ ॥ मुंढर म  
 दिर पांचसेरे ॥ शकट पंचसय मान ॥ बाहण वळी स  
 बापांचमे ॥ लावे जळवि निधान ॥ पा० ८ ॥ असी सहें  
 स गाय दुझतीरे ॥ पोता तणे आयत्य ॥ सकळ सैन्य  
 संख्या कहूं ॥ सांभळज्यो सहु सत्य ॥ पा० ९ ॥ इग्यार  
 सहेंस गज गाजतारे ॥ लाख तुरंग इग्यार ॥ सहेंस पं  
 चास रथ रुअडा ॥ पायक लाख अटार ॥ पा० १० ॥  
 इम धननी संख्या कहारे ॥ अविरती टाळी राय ॥  
 लोभ तजी समता भजी ॥ व्रत पाळे चित्त लाय ॥ पा०  
 ११ ॥ अल्प संसारी जे हुवेरे ॥ अल्प लोभ हुवे ता  
 स ॥ बहु लोभे बहु दुख जहे ॥ गुरु कहे कया विला  
 स ॥ पा० १२ ॥ च्यार पुरुष धन कारणेरे ॥ चाल्या  
 मिली परदेश ॥ बाटे ते तरश्या थया ॥ जोवे नीर  
 निवेश ॥ पा० १३ ॥ दीठी वलमी वन विचेरे ॥ तेहनां

'शिखर चीठार ॥ जाण्युं इहां पाणी सही॥दुश्ये कीध  
 विचार ॥पा० १४॥ शिखर एक भाग्यो जिशेरे ॥ प्रग  
 टव्यो अमृत साव ॥ पीथो ठाम जरि लीयां ॥ बीजा  
 उपरे दाय ॥पा० १५॥ बीजो शिखर विदारीयोरे ॥ प्र  
 गटव्यो कनक निधान ॥ बाध्यो लोभ घणुं घणो ॥  
 बीजो भाग्यो निधान ॥पा० १६॥ रत्नराशि मांहीं निस  
 रीरे ॥ लाभथी लोभ अत्यंत ॥ चोथो शिखर विदा  
 रीये ॥ लहीये रिद्धि महंत ॥पा० १७॥ एक पुरुष कहे  
 सांनळोरे ॥ कीजे नहीं अती लोभ ॥ रिद्धि घणी पु  
 न्य मिली ॥ हवें मन राखो थोभ ॥पा० १८॥ त्रिण्ह पु  
 रुष तेहने कहेरे ॥ रहे रहे करतो रुढ ॥ जो बीहेतो  
 इहां थकी ॥ जा परहो तुं मूढ ॥पा० १९॥ रतन अम्  
 लिक सग्रहीरे ॥ तिहांथी चाल्यो तेह ॥ कुशळे निज  
 घर आवीयो ॥ बाध्यो कुटंब सनेह ॥पा० २०॥ त्रिणे  
 पुरुष मिली करीरे ॥ भाग्यो चोथो पुंज ॥ दटी त्रिण  
 मांही निसर्गो ॥ विष पावकनो मंज ॥पा० २१॥ चाळो  
 जर्म त्रिणहे कीयारे ॥ अति लोभी नर तेह ॥ समता  
 लोभी जे हुतो ॥ वे जव सुख जहेह ॥पा० २२॥ तुं प  
 ण तिण नर सारीग्रोरे ॥ अल्प लोभ विस्तार ॥ सद्ध

મતિ તણો વિઞ્ઞાગીયો ॥ છે તુજ અલ્પ સંસાર ॥ પા ૦  
 ૨૩૫ વચન શુણી સદમુરુ તણારે ॥ વહુ તજ્યો પરિગ્રહ  
 જૂન ॥ ઢાલ શ્વર જિનહરપ ૯ ॥ અગનોતરની અનૂપ  
 ॥ પા ૦ ૨૪ ॥ સર્વ ગાથા ૧૫૦૩.

ઢાલ ૭૦ મી.

દુહા ॥ પરિગ્રહ વહુ મુકલો નૃપતિ ॥ અલ્પ પરિ  
 ગ્રહ ધાર ॥ વ્રત પાલે ઢાલી વલી ॥ પાંચતાસ અત્રિચા  
 ર ॥ ૧ ॥ હવે છઠો વ્રત આદરે ॥ ચિહુંદિશીનો પરિમા  
 ણ ॥ ડંચી નોચી ક્રૂમીકા ॥ જીવળ કીસ સુજાણ ॥  
 ૨ ॥ સાતમું વ્રત વલી ઉચરે ॥ જોગ અને વ્યજોગ ॥ ચ  
 ઉદ નિઅમ નિત સાચવે ॥ છતિ દેહ નિરોગ ॥ ૩ ॥ સ  
 ઢિચત એક વહ્ણી પરણ ॥ આઠ વીમાનો નૈક ॥ આઠ  
 દ્રવ્ય લેવા સદા ॥ વિગલ્ય ચોમાસે એક ॥ ૪ ॥ સદા ક  
 રે એકાસણો ॥ નિસા કરે ચઢવિહાર ॥ પાન ન લ્યે  
 ચઢમાસમાં ॥ તજી અખલ અહાર ॥ ૫ ॥

ઢાલ ॥ માગશર શુદ અઘ્યારસ વમી ॥ ૬ દશે ॥  
 રાગ મલ્હાર ॥ એક દિવસ નૃપ કરે આહાર ॥ ઘેવર ની  
 ઘં અતિ શ્રીકાર ॥ ઘી જોનાં સીનાં કરકરાં ॥ માંસ  
 સંજાર્યો તિણ અવસરાં ॥ ૧ ॥ હાહા વલી કરે પશ્ચાતાપ ॥

फोकट ए किम वांध्यो पाप ॥ पाडु परहा दंत वत्रीस  
 ॥ राय जणी एम आवी रीश ॥ १ ॥ उती आव्यो गु  
 रुनी पास ॥ वात कही सहु चित्त उदास ॥ गुरु ये  
 राय प्रते प्रतिबोध ॥ दंत उपर कांइ करो करोध ॥ ३  
 ॥ तुज मुखमां छे दंत वत्रीश ॥ वत्रीश घडा बंध त्रिभु  
 वन इश ॥ तास करावो अचळ भासाद ॥ दंत कळ  
 स धज घटा नाद ॥ ४ ॥ वरण वरणना जिन चोवीस ॥  
 धापो माहि धरीय जगीस ॥ हेमाचारज लहि उपदेश ॥  
 बीब जराव्या तुरत नरेश ॥ ५ ॥ पाप भीरु एहवो अधी  
 श ॥ अनंतकाय मुंक्यां वत्रीश ॥ वस्तु अनेरी दोष  
 सहित्त ॥ ते पण मुकी आतम हित्त ॥ ६ ॥ पांच अति  
 चार तेहना तजे ॥ अचित्त गम सचित्त शुं भजे ॥  
 अचित्त वस्तु सचित्त प्रतिबद्ध ॥ अपक्क दुपक्क आहार  
 निपिद्ध ॥ ७ ॥ तुच्छ ओखधी तणो आहार ॥ धरमी  
 न करे फिणही वार ॥ ओळा ऊवी पुंख न स्वाय ॥  
 पापमी ममुख न आवे दाय ॥ ८ ॥ इणी परे पाळे व्रत  
 राजान ॥ टाळी पनरह कर्मादान ॥ इट लिहाळा प  
 चवे वाळ ॥ ते कहीजे कर्म इगाल ॥ ९ ॥ वन छेदी  
 छेदाये वृक्ष ॥ ते वन कर्म कहे परतक्ष ॥ १० ॥

लां हल व्यापार ॥ तेह करम सामी निरधार ॥ १० ॥  
 जामे कर म बळदने उंट ॥ वहेल गाडलां आपे खुंट ॥  
 सरवर कुप खणावे खाण ॥ फोडि करम तेहनूं जाण  
 ॥ ११ ॥ दंत वाणीजनो शुणो विचार ॥ दंत चरमने न  
 खला सार ॥ कस्तुरी आढोक ए कक्षां ॥ लाख साजी  
 सावू सर दक्षा ॥ १२ ॥ नीठुं तेल अरणेटो वळी ॥ ला  
 ख वाणिज ए सहू अटकळी ॥ रस वाणिज मांखण  
 घृत तेल ॥ मधु मदिरादिक पातिक खेल ॥ १३ ॥ द्वि  
 पद चतुपद तणो व्यापार ॥ केश वाणिज ए न करे  
 कथार ॥ सोमलखार अमल वळनाग ॥ शस्त्रादिक वि  
 स वाणिज त्याग ॥ १४ ॥ यंत्रां पीलण मूसळ उखली  
 ॥ घाणी कोल्हु घरटी वळी ॥ पशुआं केरा कोपे का  
 न ॥ फाडी नाक समारे वान ॥ १५ ॥ न करे एह नी  
 लखण कर्म ॥ जिणे जाण्यो हुवे श्रावक धर्म ॥ पुण्य  
 काज वन दव नवि दीये ॥ दया धरम जाण्यो छे जि  
 ये ॥ १६ ॥ कूप वाव द्रह सजळ तळाव ॥ ते सोपे न  
 हीं किणे प्रस्ताव ॥ वळी ते न करे असती पोष ॥ पो  
 पट स्वान माजार सदोष ॥ १७ ॥ ए परनह कक्षा कर्मा  
 दान ॥ पाप तणा ए वाण सुजाण ॥ सितेरमी पुरी थ



५ ढाळ ॥ ए जिनहर्ष तज्या भूपाळ ॥ १० ॥ सर्व गा-  
था १५२६ ॥

ढाळ ७१ मी

दुहा ॥ पाप कर्म नूप परिहरे ॥ करी सुदढ जिन  
धर्म ॥ अरे पुन्य भंगार निज ॥ डरे पूरव कृत कर्म ॥  
१ ॥ हिचे अटम व्रत आदरे ॥ टाळे अनरथ दम ॥ खे-  
ळा नाटक पैखणुं ॥ नवि जावे पाखंड ॥ २ ॥ सेयुंज वा-  
जी सोगठां ॥ खेले नहीं नरेश ॥ च्यारे विकथा परि-  
हरे ॥ तिव्र राग न धरेस ॥ ३ ॥ हिचोळे हिचे नहीं ॥  
नवि झीले जळ ठाण ॥ भोंसा घेदा कूकडा ॥ जेठीम-  
ल सुजाण ॥ ४ ॥ ए वढतां जावे नहीं ॥ बळी हणतां  
चोरे ॥ सती अग्निमां वाळतां ॥ मन परिणाम कठोर  
॥ ५ ॥ माटी बीज कपाशीया ॥ नील हरी जळ तेम ॥  
काज विना चापि नहीं ॥ पाप लगावे केम ॥ ६ ॥ दूध  
वही घृत तेजनां ॥ नीरु तक्रनां ठाम ॥ उघामां नवि  
मूकिये ॥ हिंसा होय अकाम ॥ ७ ॥

ढाळ ॥ मोमलरो हेमाउ हेमिसरी ठाकुर महेंदरो  
॥ ८ देशी ॥ पांच अतिचार टाळी एहनां ॥ कंदर्प राग  
कुभाष ॥ काय कुचेष्टाहो ॥ पापो पगरण भोगे अति

लाप ॥३॥ इणी परे पाळेहो व्रत निज निरमळा ॥ टाळे  
 व्रत अतिचार ॥ दोष लगामेहो नहीं कोइ व्रत भणी ॥  
 धन धन राय कुमार ॥३० १॥३ व्रत पाळेहो इणी परे आ  
 ठंमुं ॥ नोमुं धारे राय ॥ समता प्रणामेहो सामायक करो ॥  
 दहि करम समुदाय ॥३० ३॥ पांच अतिचारहो एहनां प  
 रिहरे ॥ त्रिविधे दुप्रणी ध्यान ॥ अणपडिलेहीहो वैसे आ  
 सणे ॥ उघाडे नुख गान ॥३० ४॥ दूषण टाळीहो सामा  
 यक तणां ॥ जेहे कक्षां वनीशा ॥ नरपति चूकळोहो न  
 वि कारण पमे ॥ सांजळज्यो सुजगीस ॥३० ५॥ किण  
 इक अवसरहो नृप साकंवरी ॥ पूरण नाम कहाय ॥ कु  
 मर नरेशरहो भगनीनो धुणी ॥ गज रथ कमी न काय  
 ॥३० ६॥ ते निज नारीशुंहो सार पासे रमे ॥ सारी देतो  
 दाण ॥ मारो मुंठा शिर घाव वळे करी ॥ नाखे इम  
 अयाण ॥३० ७॥ त्रिण वार रायेहो शब्द मुखे कसो ॥  
 राणी बोली तामा ॥ कठिण न वोलोहो भीतम बोळना ॥  
 फोकट एहवे काम ॥३० ८॥ लाज न राखोहो जो त  
 म्हे माहरी ॥ साळा सांमुं जोइ ॥ मार निवार्योहो शब्द  
 नृपति जिणे ॥ मुनी शिर घाव म ढोइ ॥३० ९॥ कहे  
 वुं जे थायेहो ते मुजने कहो ॥ पण मुनी न दीयो गा

ल॥ मुनी अवहीलाहो करतां पामीये॥दुरगतिनां दुख  
 आळ ॥६०१०॥ नारीने वचनेहो खीज्यो महीपति ॥  
 पाटू दीध प्रहार ॥ हंस म राखेरे मूरख कामिनी ॥ जा  
 निज वीर पुकार ॥६०११॥ वेगे चढावीरे बंधव लाव  
 जे ॥ देख्वाडु मुज हाथ ॥ गणी गणी पाडुरे दात चढ  
 का तणा ॥ नारी कहे सुणो नाथ ॥६०१२॥ कीमी पं  
 खाळीहो ते मरवा जणी ॥ तिम ताहरो अभिमान ॥ ग  
 रव न कीजेहो कंत शक्ति विनां ॥ घर सूरु अभिधान  
 ॥६०१३॥ मारा भाश्नेहो वळ आगळे रहे ॥ तेह न दी  
 से कोय ॥ गरव उतारेहो ते वळीया तणा ॥ काढे वां  
 क पलोइ ॥६०१४॥ नारीनां नीशुणीहो वयण कोधे  
 ज्यो ॥ एहने मगवो भीख ॥ नारी तो पगनीहो कहीये  
 पाणही ॥ ते मुजनें धे शिख ॥६०१५॥ धतः ॥ जस घर  
 सहिजा मंत्रणे ॥ दुज्जन केरी शिख ॥ सावणवी तिहळ  
 करी ॥ त्रिण्हे मागे भीख ॥ १ ॥ ढाळ पुर्वनी ॥ धिग धि  
 ग नारीहो ताहरा बोलमा ॥ धिग धिग कुमर नरिंद ॥  
 धिग धिग ताराहो एजिन धर्मने ॥ धिग धिग हेमसुरिं  
 द ॥६०१६॥ भीतमने वयणेहो अती राणी तपी ॥ पीह  
 र चाली उठ ॥ एह बोल्यानोहो फळ तुझे जोइज्यो ॥

जीभ कटावुं पुंठ ॥३०१७॥ एहवुं कहिनेहो चाली पी  
हरे ॥ जासी मिलीयो एक ॥ ब्राह्मण जइनेहो पाटण  
रायने ॥ जाण करे सुविबेक ॥३०१८॥ ब्राह्मण चाल्यो  
हो जेई आगन्या ॥ पुहुतो पाटण माहि ॥ ढाळ इकोतर  
मीहो पण ए थइ ॥ कहि जिनहरप उछाह ॥३०१९॥  
सर्व गाथा १५५१.

ढाळ ७९ मी:

दुहा ॥ पाटण लोक सोहामणो ॥ देखी हरखीत  
होय ॥ विम तणो रुव वर्णवुं ॥ ते सुगज्यो सहू कोय  
॥१॥ दाढी तो गाढी बधी ॥ मुंछ नहीं लवलेश ॥ का  
ळो कामळ सारिखो ॥ खीण शरीर विशेष ॥२॥ मोटो  
सीश, त्रीपुणीयो ॥ नान्हो जास, निलाड ॥ वांको वदन  
भिराजीयो ॥ गाले उंमी खाम ॥३॥ हांठ जेहना लम  
बने ॥ लाळा मुख झरंत ॥ उमी आख्यां तगतगे ॥ रा  
सभना जाणे दंत ॥४॥ बैठे नाके चीपमो ॥ बहे ली  
टनी रेल ॥ कोट टूंक्री जांबो नळो ॥ अंगे झाझो मे  
ल ॥५॥ हाथ पाय वांका वळव्या ॥ सकट पीजणी  
जाण ॥ कडि लंकु घाणी सारिखो ॥ चूंयो बांध्यो ता  
ण ॥६॥ पहिरयो फाटो घेतियो ॥ तुंवो लीधो हाथ ॥

मस्तक फरके घोटली ॥ जोट पोटली साथ ॥ ७ ॥

ढाळ ॥ करेलनां घनी देरे ॥ ९ देशी ॥ रुपहिए  
नर दामणारे ॥ दीसंतो विकराळ ॥ अवगुणमां गुण ए  
क छेरे ॥ पंक्ति चतुर वाचांल ॥ १ ॥ जोसीयमो जो  
ज्योरे ॥ जोज्योरे चतुर छंछाल ॥ जो ० २ ॥ आंकणी ॥  
पोळे जइ उजो रसारे ॥ हिये विचारे आम ॥ पूछुं  
किणहीक नर शणीहो ॥ ब्राह्मण मिलीयो ताम ॥ जो ०  
३ ॥ मस्तक नामी तेहनेरे ॥ पुछे कहो कृपाळ ॥ कि  
ण ठामे मुजने मिलेरे ॥ पाटणनो भूपाळ ॥ जो ० ४ ॥  
कुमरपाळशुं विमने ॥ जाग्यो वैर संबंध ॥ तिहुअण  
पाळ सुत जीवतोरे ॥ मुओ वैरी अंध ॥ जो ० ५ ॥ क  
ठिण वग्रण तेहनां सुणारे ॥ दूते जाण्युं दुख ॥ पूरां सात  
नोहे कदारे ॥ सुण ब्राह्मण मूरख ॥ जो ० ६ ॥ अग  
नि विम यम राजवारे ॥ सागर उदर सुगेह ॥ पूराये  
नहीं पूरतारे ॥ निशी दिन जो पूरेह ॥ जो ० ७ ॥ ईशुं  
कही आगे चल्थोरे ॥ दीगो एक हनुमार ॥ ते पासे  
वांजण जइरे ॥ पूछे नूर समाचार ॥ जो ० ८ ॥ खान  
जेम थइ आकुळारे ॥ खीजी बोल्यो ताम ॥ तुं भू  
री वांजणारे ॥ राजाशु शयो काम ॥ जो ० ९ ॥

परख्यो ततस्त्रिणारे ॥ वीवो तेहवी जात ॥ विरियो कां  
 ५ पूछीयेरे ॥ जीभ जणावे जात ॥ जो० ९ ॥ कण व्या  
 पार मशाणीयोरे ॥ वळी भुअंग विलाम ॥ वैद्य अने  
 हडमारीयोरे ॥ मझला मननां चाम ॥ जो० १० ॥ जोशी  
 झम कही चालीयोरे ॥ अर्चक नर एक दीठ ॥ राय  
 खवर पूछे जिश्योरे ॥ आघो आभडसे धीठ ॥ जो०  
 ११ ॥ दूत कहे स्त्रीजी करीरे ॥ बोले श्युं पापोट ॥ आ  
 भमछेटनां तुज कहुरे ॥ थानक सुण अनिष्ट ॥ जो०  
 १२ ॥ मोटी कन्या कुमारीकारे ॥ पर नारीशुं रंग ॥ दे  
 व तणो धन विद्रवारे ॥ निति पापी परसंग ॥ जो० १३  
 ॥ पेट भरी प्राणी हणारे ॥ परनिंदा करे जेह ॥ पर भो  
 जन आश्या करेरे ॥ पवित्र कंदे नहीं इह ॥ जो० १४ ॥  
 इश्युं कही भट चालीयोरे ॥ ब्राह्मण मीलीयो ताम ॥ पू  
 छी नूपनी वारतारे ॥ अवहील्यो तिणे ठाम ॥ जो० १५  
 ॥ दूत कहे किणे कारपोरे ॥ बोले मोटा बोल ॥ सात  
 अदेखा ९ हुवेरे ॥ सांजळ विप्रनी टोळ ॥ जो० १६ ॥  
 हाट पमोशी नवि सहेरे ॥ याचक मीढो मल्ल ॥ पंडित  
 पामो कुतरारे ॥ सात अदेखां सल्ल ॥ जो० १७ ॥ इश्युं  
 कही आगे चल्योरे ॥ मिलायो सालो वाळ ॥ पूछ्यो

राय निले किहारे ॥ बोल्यो आळपंपाळ ॥ जो ० १८ ॥  
 दूत श्रयो मन दुमणारे ॥ निरमळ बुद्धि विचार ॥ पर  
 वेदन जाणे किशुरे ॥ बाळक नर निरधार ॥ जो ० १९ ॥  
 ॥ विप्र अग्नि यम पारधीरे ॥ राजा बाळक चौर ॥ प  
 र वेदन जाणे नहींरे ॥ साते पडावे सार ॥ जो ० २० ॥  
 जोशी इम कही चालीयारे ॥ सूतो नर एक दीव ॥ ज  
 इ जगाड्यो तेहनेरे ॥ वचन पयंपे मीठ ॥ जो ० २१ ॥  
 पाटण पति मिलश्ये किहारे ॥ जाति कवाढी न्याय ॥  
 लोइ कुहानो उठीयारे ॥ आव देखालुं राय ॥ जो ० २२ ॥  
 ॥ वांजण बीहतो इम कहरे ॥ श्यो लाग्यो मुज पाप  
 ॥ बोलावतां निसयारे ॥ उंदिर बीलथी साप ॥ जो ०  
 २३ ॥ तुं मूरख सूतो जलारे ॥ जाग्यो करे विराम ॥  
 खान सिंघ मूरख नरारे ॥ बाळक जाग्यो किण कां  
 म ॥ जो ० २४ ॥ मांजारी नर पातकीरे ॥ भुंजी निजरे  
 भुअंग ॥ ए साते सूता जलारे ॥ जाग्यां करे विरंग ॥  
 जो ० २५ ॥ वांजण मनमां चितवेरे ॥ किम नळशे भूपाळ ॥  
 कहे जिनहरप पूरी थरे ॥ बहोतेरमी ए ढाळ ॥ जो ०  
 २६ ॥ सर्व गाथा १५८४ .



ढाल ७३ मी

दुहा ॥ इम चीतिवी आधो चलयो ॥ वेढो दीढो  
 एक ॥ जाते शुद्ध विवहारीयो ॥ चतुर घण सुविवेक ॥  
 ६॥ ते. पासे. जइ पूछीयो ॥ अहो सपुरिषः सुण भाप ॥  
 किहां मिलश्ये पाटण धणी ॥ ते मुजने तुं दाख ॥ २॥  
 कोल्यो तव विवहारीयो ॥ राजपंथ. सत्तमुख ॥ इण वा  
 टे तुजने नृपति ॥ मिलश्ये जाशे. दुख ॥ ३॥ पण तुज  
 देखी मुज भणी ॥ मननां अचरिज थाय ॥ चतुरपणे, वा  
 चाल तुं ॥ रुप कुरुप दिखाय ॥ ४॥ शेठ वचन बालण सुणी  
 ॥ भाखे उत्तर-तास ॥ सुण भाइ विवहारीया ॥ तें मुज  
 पुछ्यो खास ॥ ५॥ स्वर मीठो थाए नहीं ॥ नीचपणुं नवी  
 जाय ॥ रुप रंग कवी चातुरी ॥ धन स्वरूपे न जहाय ॥ ६॥

ढाल ॥ टुंगर जले दीढो सेंजुंज. तणो ॥ ९ देशी  
 ॥ एहवुं कहीरे भट चालीयो ॥ आव्यो आव्यो पाळ  
 दुवाररे ॥ पोळीया भणीरे पुछ्यो तिणे ॥ किहां मिलश्ये  
 भूर कुमाररे ॥ ९१ ॥ पोळीया हशी करी बोळीया ॥ नूरशुं  
 किसी करशो वातरे ॥ स्वीण काया रुपे हीणता ॥ कि  
 म मिलशो किसी धातरे ॥ ९०२ ॥ मांगण मेजमे लूगने ॥  
 वेश्या ते जावण जाणरे ॥ ठाकुर पडगने उतरें ॥ नि



णहे ए दीमता दीनरे ॥ ए० ३ ॥ यतः ॥ पहिलु माणस दो  
 सतु ॥ बीजु माणस कुण ॥ बीजुं माणम वोळणुं ॥ चो  
 थु माणस कुण ॥ १ ॥ चित्त चतुर मन चित्तवे ॥ अरहुं  
 पसम जोइ ॥ कर उपर कर जे करे ॥ चोथु माणस  
 सोइ ॥ २ ॥ ढाळ पुर्वनी ॥ वांजण भाट पंथिततारे ॥ प  
 रमु पराधान सुक दूतरे ॥ एह तीखा मुखे जो हुवेरे  
 ॥ आडर लहे अदभूतरे ॥ ए० ४ ॥ एहवा वचन शटनां  
 सुणी ॥ खुशी थया दरवानरे ॥ राय जणी जाईसी मे  
 लव्यो ॥ विनती नीसुणी राजानरे ॥ ए० ५ ॥ पूरण रा  
 य महारायजी ॥ देवने गुरु जिनधमरे ॥ निदा करे मुख  
 गाळ ये ॥ केहनी गणे नही शर्मरे ॥ ए० ६ ॥ वाइ देवळ  
 देवी रायने ॥ विनय करी वार्यो जामरे ॥ पादु महा  
 र कीधा तिहां ॥ झुंइ पडी मुस्लीत तामरे ॥ ए० ७ ॥  
 तेह रीसावी आवी इहां ॥ तुम छत करे अन्यायरे ॥  
 तास शिस्वामण दीजीये ॥ जेम सकोमळ थायरे ॥ ए०  
 ८ ॥ छते मृगराज बोले बके ॥ हगिणला समा शीया  
 लोरे ॥ तेह मृगराजने लाज छे ॥ उठो तुम्हे कुमर शू  
 पाळरे ॥ ए० ९ ॥ वात भगिनी तणी सांजळी ॥ हय गय  
 लेइ परीवाररे ॥ राय भेटी जइ दहेनटी ॥ प्रेमशुं मि

त्रिणीवाररे ॥९०१०॥ प्राटण मांहीं लेइ आवीयो  
 ॥ वहेनने घले उछांहेरे ॥ वीर आगळे दुख रोवती ॥  
 भाइमा अलेहव मुज दाहरे ॥९०११॥ एणेर मुज नार  
 उतारीयो ॥ दीधी गुरु भणी गाळरे ॥ पण करी तिहां  
 यी हुं नीसरी ॥ माहकं वचन ते पाळरो ॥९०१२॥ इ जाली  
 आणे तो जीव्या सही ॥ नहीं तो थारये निज हाररे ॥  
 इन मुणी राय खीज्यो घणुं ॥ वहेनडी दुख विसारय  
 रे ॥९०१३॥ भंजा वजमावी मयाणनी ॥ लेइ दळ ला  
 ख इग्याररे ॥ इग्यार सहेंस गज घुमता ॥ पाळो रथ  
 तणो नहीं पाररे ॥ ९०१४॥ सवळ आरावा आरंभ ॥  
 नाळि गोळा हथीयाररे ॥ लेइ चलयो राय झीपण भ  
 णी ॥ घूरे निशान अपाररे ॥९०१५॥ आवीया नदरी  
 साकंवरी ॥ कटक सुभट तणा घाटेरे ॥ जाण नूप कु  
 मर करावीयो ॥ आवीयो जोवतां वाटेरे ॥९०१६॥  
 पूरण नूप लश्कर सज्यो ॥ बांकमा सुभट सधीरे ॥  
 कुमार दळ जोवा पूरणे ॥ मोकल्या दूत वजीरे ॥९०  
 १७॥ कटक निहाळे फिरी फिरी ॥ पुंजणी दीठा प  
 र्हाणरे ॥ दाळ बेहोतरमी थइ ॥ कही जिनदूरप सु  
 जाणरे ॥९०१८॥ सर्व गाथा १६०८ ॥

दुहा ॥ दीठी पल्हाणे पुंजणी ॥ पुंजी धरे पला  
 ण ॥ नीर गळी सह वावरे ॥ हणे नहीं पर पाण ॥ १ ॥  
 दूते मस्तक धुणीयो ॥ दीठो कुमर नरेश ॥ तेमा पृच्छो  
 तेहने ॥ द्वासा तणो विसेश ॥ २ ॥ दृव कहे कर जोमी  
 ने ॥ सांजळ राय सुजाण ॥ पुंजी पुंजीने व्जो ॥ दुगे  
 यां पंठे पलाण ॥ ३ ॥ पालो जीवव्या झो ॥ दृश्यो  
 केम गयंद ॥ सुद्ध करेश्यो किणी परं ॥ पृष्ठे कुमर  
 नरिद ॥ ४ ॥

त पामीरे ॥ पाछो आव्यो राय समीरे ॥ दूत कहे मुण  
 स्वामीरे ॥ ६०४ ॥ वयरो लश्कर पार न लहीये ॥ वळी  
 यो कुमर नरिंदोरे ॥ पूरण राजा मन मांदि चिंते ॥ र  
 चीये, कोइक, फंदोरे ॥ ६०५ ॥ राय, सत्तामां वीमो फेरी  
 यो ॥ जे, मारे अरि रायोरे ॥ सवा लात सौनइया  
 तेहने ॥ आपुं मान, सवायोरे ॥ ६०६ ॥ इण अवसर नृ  
 पं शेवक, माळो ॥ कर जोमो इन जांपेरे ॥ स्वामी एह  
 नुं, दोहिलुं, शुं, छे ॥ तुम पुन्ये सहु थाय्येरे ॥ ६०७ ॥ क  
 री झुहार चलयो ते मारण ॥ छानी राखी पाळीरे ॥  
 आव्यो कुमर कटकमां चाली ॥ छळ वळ जोये माळी  
 रे ॥ ६०८ ॥ अगम, इशी छे कुमर नृपतिने ॥ जो हुं  
 वाटे चालुरे ॥ विचे ग्रामे जिन गृह पूजिने ॥ मुखमां  
 पाणी, चालुरे ॥ ६०९ ॥ वाटे आव्यो देउळ जिननो ॥  
 चालयो पूजण, रायोरे ॥ वायक आगळथी जइ वेठो ॥  
 कोटे, राजा आयोरे ॥ ६१० ॥ ताळां फूल लेइ जिन  
 मंदिर ॥ आव्या घरी आणंदोरे ॥ केसर कस्तुरी घनसा  
 रे ॥ पूजे कुमर नरिंदोरे ॥ ६११ ॥ ते माळी पाळी ले  
 इने ॥ हणवा आतुर थाय्येरे ॥ करे उपाय रायने हणवा ॥  
 वाच, न वाचो जायेरे ॥ ६१२ ॥ वांमण वांगनी वात

न जाणे ॥ किपण न समझे दाणेरे ॥ गायं गरधनी अं  
 ध न सनजे ॥ माळी घाव न जाणेरे ॥ ६० १३ ॥ थाथा  
 मुधा करतो दीठो ॥ उदयन मत्री तामोरे ॥ बोलाव्यो  
 माळी तिण ठामे ॥ उतो तुं किण कामोरे ॥ ६० १४ ॥ हा  
 कीयो माळी तव लहवहीयो ॥ उदयन घाली बाथोरे ॥  
 खाळी तेहने जोयो तेहवे ॥ पाळी दीठी हाथोरे ॥ ६०  
 १५ ॥ यटी मुटी करी मुहकम मायीं ॥ बांध्यो अबळी  
 बांहेरे ॥ साचू कहे कुण तु मंत्री कहे ॥ हणवा आव्यो  
 काहेरे ॥ ६० १६ ॥ तारे वैर के किणहे मुकव्यो ॥ बा  
 ल म बोलीश आळोरे ॥ कहि जिनहरप पूरी थड एट  
 ले ॥ चम्भोतरमी ढाळोरे ॥ ६० १७ ॥ सर्व गाथा १६१९

ढाळ ७५ मी.

हुहा ॥ आरामी नानी करी ॥ मस्तक वे कर  
 जोम ॥ कहे स्वामी सुण वीनती ॥ लाभे आणे खांड  
 ॥ १ ॥ पूरण राय मुज मोरुल्यो ॥ कुमर हणवा का  
 ल ॥ कुमती एह मुज उपनी ॥ तिणे हु आव्यो राज

जटनै आ हणै ॥ करडे नहीं पाषाण ॥ ४ ॥ बरुणामा  
 गर कुमर नृप ॥ मुकट्यो माळी तेह ॥ देउ दमामा नृप  
 चड्यो ॥ साकवरी वीटेह ॥ ५ ॥ दूत मोकली गयने ॥  
 कहेवराध्यो कर युद्ध ॥ जो नहीं करे तो ताहरो ॥  
 धाशये बोल विरुद्ध ॥ ६ ॥

ढाल ॥ चढियो रण झुझेवा चंम प्रद्योत नृप ॥  
 ए देशी ॥ एहवां वयण सुणी राय साकंवरी ॥ कोसी  
 यो आपणो सैन्य साजे ॥ ७ ॥ किश्यो कुमर मुज आगळे  
 बापमो ॥ सींह बलवत अणवीह गाजे ॥ ८ ॥ घूरे द  
 मामा रणतूर बाजे रुमां ॥ सूरमां उल्लेस सूर अंगे ॥  
 जटकता कटक भेळा थया बे दीशे ॥ राय पूरण कु  
 मर निमण जंगे ॥ ९ ॥ हाकता ताकता नाखता बा  
 ण घण ॥ नाचता माचता रण सनूरा ॥ गुरज गुपती त  
 णा घाव बाहे घणा ॥ बहरीयां उरा रोश पूरा ॥ १०  
 ३ ॥ नाळि गोळा गुमे घंडम भूंइ घमहमे ॥ जोर छूटे बि  
 छूटे आरावा ॥ धार तरवार झुझार माये पमे ॥ विक  
 ट सुभटां तणा हुइ खराबा ॥ १० ४ ॥ चंद्र वाणा तणी  
 सोफ बाजे घणी ॥ आपणी आपणी अणी सोहे ॥ टो  
 प बगतर पहेरे जाणे काळा सिहर ॥ कही कही क

रता महिर नहीं मांहे ॥९०५॥ सुहृन् हाथा तणा घाव  
 लागे घणा ॥ धाव ताम रुहिर धार छूटे ॥ अमल रा  
 उमना घूमता घाव ले ॥ लुंवता झुंवता पढी खूटे ॥९०  
 ६॥ राय कुमरेस पग सेस सिरी रोपीया ॥ गांजीवा नी  
 म मन मांहीं धरीयो ॥ कटक वयरी तणो देखी बी  
 हामणो ॥ राय पूरण सर्वळ कोप नरीयो ॥९०७॥ आ  
 फळे फाकळे दळ विन्हे संमिले ॥ जोध कोधे गर्या  
 जोर झुजे ॥ ताट भड उलळे लोह खांमा तणी ॥ धयो अं  
 धार रज रवि न सुजे ॥९०८॥ राय पूरण तणो सुभ  
 ट अरजुन तणो ॥ तीर मूके न चूके किंवारे ॥ आण  
 राजा तणी गांजीवा मुज भणी ॥ इम कही घाय अ  
 रि सीस मारे ॥९०९॥ वढे वीरम गजा शत्रुने घे सजा ॥  
 जीम जाणे भुजा दंन वळीया ॥ वहि तरुआर तिहां धार  
 लोही वहे ॥ राय पूरण जना माण मळिया ॥९०१०॥  
 वन वना वीर रण धीर विजा समा ॥ पाणही छोडे झु  
 झे झके ॥ घाय पमीया लडइ जम लडयमे ॥ कटा  
 कट जोर धइ विन्हे कटके ॥९०११॥ एइसरो आवी  
 यो मांही संपावीयो ॥ देह लाधी तणो लाभ गणतो ॥  
 शत्रु दळ चूग्तो रण अरि उरतो ॥ राय कुमरेसनी

जस्त भणता ॥९०१२॥ आपजा सामा रइ कामि झुझ  
 सुहम ॥ झुझता केइ रण मांहीं रहीया ॥ सुहम केइ  
 उससे केइ पढिया धसे ॥ जोगिणी पत्र नदी रुहिरव  
 हीया ॥९०१३॥ क्षत्रिया हास उलास अंगे वधे ॥  
 कायरं वायरं निसंजारी ॥ नासतां वासतां भूमि भा  
 रण पढी ॥ है है जीवश्यें केम नारी ॥९०१४॥ केइ  
 नासी गया केइ रणमां रक्षा ॥ राय पूरण तणो कटक  
 मुढ्यो ॥ राय हलकारीया वीरव पुकारी ॥ बळी पूर  
 ण तणो कटक भिड्यो ॥९०१५॥ देखी दळ थरहरे  
 चित्त चिता करे ॥ जिपेवा करुंअ उपाय कोइ ॥ ढाळ  
 पंचोतरमी थई ए सही ॥ कहे जिनहरष मुणज्यो स  
 कोइ ॥९०१६॥ सर्व गाथा १६५१.

ढाळ ७६ मी

दुहा ॥ बुद्धि इशी कांइ कोळवुं ॥ जिम नृप ना  
 शी जाय ॥ बळथी छळ अधिको कसो ॥ छळे सह  
 निद्धि थाय ॥ १ ॥ धन सोवन लेइ करी ॥ पूरण कपट  
 धरेह ॥ कुमर तणां सुजटां भणी ॥ छानां आपे तेह ॥  
 २ ॥ सुमटे धन लीधुं सह ॥ न कीयो कोइ विच्यार ॥  
 ३ ॥ लेइ वृयरी तणो ॥ विद्रविये इणीवार ॥ ३ ॥ कुमर



नरेशर चितवे ॥ ६ ॥ श्यो थयो विचार ॥ मुजथी सैन्य  
 सहु फियो ॥ फिकर थइ तिणवार ॥ ७ ॥ नृप चिंतातुर दे  
 खीने ॥ कहे सामल माहत ॥ चिंतातुर कायर हुवे ॥  
 सूर काइ नचित ॥ ८ ॥

ढाळ ॥ मूंघोरे मसाणा उपरे ॥ काइ धडुक्कयो मे  
 होरे ॥ १ ॥ देशी ॥ सुजटे वळ वंधावीयो ॥ कहे कहे ए  
 हवा बोलोरे ॥ अरि दळ दळश्युं जू जूआ ॥ तुल पु  
 न्ये रंगरोळोरे ॥ सु ० १ ॥ अले थोडा वधरी घणा ॥ का  
 यर एम चितेयोरे ॥ एक सूरज उग्यां थकां ॥ तारा  
 कोम छिपेयोरे ॥ सु ० २ ॥ सूर सुजट पांचे जला ॥ का  
 यर सो पंचासोरे ॥ वे पंचाही आगळे ॥ कायर जा  
 इ नासोरे ॥ सु ० ३ ॥ यतः ॥ सीह न जोवे चंद्र वळ ॥  
 नवि जोवे धन रिद्धि ॥ एकलो सहसां जिमे ॥ जिहां सा  
 हस तिहां सिद्धि ॥ १ ॥ वाजां वाजो जण मिलो ॥ जि  
 जोतो राणो राण ॥ मुज दोठे जो डंग जरे ॥ तो जण  
 णी अपमाण ॥ २ ॥ सीह कहे हुं वन वसुं ॥ मो मुंछा  
 परमाण ॥ अवर जग्गां हुं धणी ॥ मुज जग्गां नहीं  
 ठाण ॥ ३ ॥ ढाळ पुर्वनी ॥ सीह तणा गुण लीजीये ॥ ध  
 रीये अंग भझारोरे ॥ सीह सुजट दळ देखीने ॥ विहे न ।

હોં લીગારોરે ॥મુ૦૨॥દેસ્વી નિરમલ ચંદ્રજો ॥ વાધે  
 સાંધર નીરોરે ॥ સવલ સૈન્ય તવ દેસતાં ॥ વલ વાધે  
 વહુ વીરોરે ॥મુ૦૫॥ કાચર નર તે કનકમે ॥ દેસ્વી પ  
 મત્યા ગજ ગાહારે ॥ ઢોલ દમામા વાજતાં ॥ સૂરા હો  
 હ ડહાંહોરે ॥મુ૦૬॥ યતઃ ॥ રણ વાગે સરણાશ્યાં ॥ પા  
 પાસરીયા કેકાંણ ॥ સૂરા ઘરે વધામણાં ॥ કાચર પ  
 ઢે પરાણ ॥૧॥ દેસ્વીતા ઢૂંગર જિશ્યા ॥ કામે કાચર થા  
 ય ॥ પને ડગમણી ઢુંવની ॥ તો આધમણો જાય ॥૨॥  
 મીતમ પાળી આપણો ॥ રાસી શકે તો રાસ ॥ પેંકિણ  
 પાળી ડતર્યો ॥ વલતો ચઢે ન લાસ ॥૩॥ ઢાલ પુર્વની  
 ॥ સામલ કહે સુણ રાજવી ॥ ધરે સાસ આણંડોરે ॥ તા  
 હરો જશ છે ડજલો ॥ મકર મકર તું મંડોરે ॥મુ૦૭  
 ॥ ગાજો સીંહ તણી પરે ॥ હીયો કરો નિજ હાથોરે ॥  
 આપણને નહીં ઝાંજીયો ॥ રાજ દીયો જગનાથોરે ॥મુ  
 ૮॥ યતઃ ॥ કુમારપાલ મમ ચિંત કર ॥ ચિંત્યુ કિપી  
 ન હોય ॥ જેણે રાજ સમપ્પીયો ॥ ચિંતા કરશે સોય ॥  
 ૯॥ ઢાલ પુર્વની ॥ અગની અને ઘૂશશ્યું મિલ્યો ॥ તિલ  
 ણ સ્વડગ વિપધારોમે ॥ કુમર અને વાકારીયો ॥ ધા  
 ધ્યો વલ તિણ વારોરે ॥મુ૦૧૦॥ સુરા તણે અંગે ચઢ્યો

॥ पंचाङ्ग आवाजोरे ॥ साम अरी सेना दीसे ॥ ध  
 धकार्यो गज राजोरे ॥ सु० १० ॥ पूरण दीठो आवतो  
 ॥ कुमर नरेशर जामोरे ॥ मरण थकी नृप दीहतो ॥  
 पाछो खिशीयो तामोरे ॥ सु० ११ ॥ जोवे कुमर चिह्ने  
 दोशे ॥ दीसे नही अरीरायोरे ॥ संध्याकाल थयो इशे  
 ॥ पढिकमणुं तिहां थायोरे ॥ सु० १२ ॥ मन वच का  
 या धीर करी ॥ परिहरी च्यार कखायोरे ॥ पढिकम  
 णु राजा करे ॥ पूरण पाय्यो दायोरे ॥ सु० १३ ॥ कु  
 मर कटक साहमो धश्यो ॥ गांढयो सबळ संग्रामोरे ॥  
 सोर करे रणमां फीरे ॥ कुमर कटक सुंढयो तामोरे ॥  
 सु० १४ ॥ दळ सबळ पण श्युं करे ॥ मांहि नही भूपा  
 लोरे ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थइ ॥ छोतेरमी ए ढालोरे ॥  
 सु० १५ ॥ सर्व गाथा १६७१ ॥

ढाल ७७ मी.

ढुहा ॥ सोरठा ॥ सुजट हराव्या माहरा ॥ कट  
 क कीयो हैरान ॥ थिर रहियो मूगति परे ॥ तोही न मुं  
 कयो ध्यान ॥ १ ॥ नयीये दीप अंधेर ॥ अगनि कन  
 क कमळ किम रहे ॥ पवन निगे नहीं मरे ॥ कुमर

लीधो घत मुंक्वो नहीं ॥ पडिकमणानो काम ॥ करी  
 उठ्यो जुद्ध कारणे ॥ २ ॥ हुं आव्यो कुमरेश ॥ ताह  
 रो दळ दळवा जणी ॥ करि मेल्लो दरवेश ॥ उजो र  
 हिजे पूरणा ॥ ३ ॥ आयो मरण अकाल ॥ अनीयो  
 कुमर नरेशशुं ॥ जय नास्यो भूयाळ ॥ सूतो सींह ज  
 गानीयो ॥ ४ ॥ पहिली मुजने दाव ॥ करेरे पूरण उर  
 णा ॥ पाछिल माहरो दाव ॥ शिर छेदुं के बांधि ल्युं ॥ ५ ॥

ढाल ॥ यतिनी सोरठ रागे ॥ बांधु के तुज शिर  
 छेदुं ॥ एकलो तुज सेना जेदु ॥ माहरे ताहरे छे दावो  
 ॥ तो केम सुजट मरावो ॥ ६ ॥ तुज मरण सही हवे आ  
 यो ॥ तो सूतो सींह जगायो ॥ दोठो नूय काळ कितं  
 त ॥ पूरण जाण्युं करे अंत ॥ ७ ॥ सेनानी सबळो सा  
 द ॥ आवी कीधो सींह नाद ॥ ते नाद सुणी राजा ना  
 वो ॥ राय कुमर चिते थयो माठो ॥ ८ ॥ नूप बुद्धि ध  
 री निज हीये ॥ गज कान भर्त्ता उतररीये ॥ वा पूका  
 रीयो थापोटीयो ॥ दळ भंजण कही कही पोढ्यो ॥ ९ ॥  
 तव हाथी थयो हुंशीयार ॥ मारंतो सुंनि महार ॥ व  
 ळीयो वळीयो गजराज ॥ आव्यो जिहां पूरण राज  
 ॥ १० ॥ भूपति भूपति वे मिलीया ॥ प्राण पूरणना खल

भलीया ॥ गज उपरधी उदकंत ॥ मिरि परे पनियो  
 दुर दंत ॥ ६ ॥ पूरण ग्रहो कुमर अभीह ॥ जिम निवळ  
 हरिने सींह ॥ पंजरमां बांधी घाल्यो ॥ पाटण भणी लेइ  
 चाल्यो ॥ ७ ॥ त्रिण लाख हुता अस्वार ॥ पांचसे ग'  
 यंवर सिरदार ॥ दश लाख पायक वीवाण ॥ ते कुमर  
 कयो बंधीषाण ॥ ८ ॥ बांध्यो नृप अवळी बाहे ॥ गु  
 जर सीमा अवगाहे ॥ बेंगे आवो पाटण माहे ॥ वेढो  
 नृप तखत उछांहे ॥ ९ ॥ राय कुमर नरेश पचार ॥  
 लाज्यो पूरण दरबार ॥ बहु क्रोध चमीयो मन नाहे  
 ॥ करुं शुं मुज राख्यो सांहे ॥ १० ॥ क्रोधागनि मां  
 ही तपावे ॥ मन मांहीं बहु दुख पावे ॥ पण दाव च  
 छे नहीं कोइ ॥ झुरे झुरे इम पंजर होइ ॥ ११ ॥ परवशे  
 दुख वेढी माणी ॥ जाणे नरक तणी नीसाणी ॥ पण  
 न पमे ते कांइ लेखे ॥ शूर भुवन मुगंति नवि पेखे ॥  
 १२ ॥ परवशे दुख स्वमे अपार ॥ छट पोठी सहे बहु  
 मार ॥ भीस भूख सहे ताहि ताप ॥ पण खीण न हुवे  
 तस पाप ॥ १३ ॥ परवशे इम माणस पंखी ॥ भोगवे दु  
 ख तेह असंखी ॥ मन पाखे कष्ट करीजे ॥ तेहथी शु  
 भ फळ न लहीजे ॥ १४ ॥ परवशे बधदंधन सहीये ॥

परवशे दुख काया दहीये ॥ सश्वसि थानो धर्म ॥  
 क्रिजेतो घुटे कर्म ॥ १५ ॥ पूरण नूप परवशे पडीयो ॥  
 पोताने कर्मे नडीयो ॥ चाले नहीं कोइ प्राण ॥ सहे  
 वचन कुमरना बाण ॥ १६ ॥ बोलाव्यो पण नवी बोले  
 ॥ हीयमानी गांठ न खोले ॥ गति नति बुद्धि प्राक्रम  
 गळीया ॥ पंचाइन पण सांक्रळीया ॥ १७ ॥ अगन्याने  
 कर्म उपावे ॥ तेहनां फळ ततखिण पावे ॥ ढाळ सत्तो  
 त्तरमी गाइ ॥ जिनहरप इत्ती वनी आइ ॥ १८ ॥ सर्व  
 गाथा १६१६ ॥

ढाळ ७८ मी.

दुहा ॥ जीज पुंठेथी काढवी ॥ एपापीनी घात ॥ वळी  
 बोले नहि एहवु ॥ वहेन कही ए वात ॥ १ ॥ कहै राजा  
 शुण व्हेनमी ॥ एहवो न कर अन्याय ॥ जीज धणीनी का  
 ढतां ॥ अपज्जश जगसां थाय ॥ २ ॥ दीरय रोश न रा  
 खीये ॥ कीजे काम विचार ॥ सुण सकुलणी वहेनही  
 ॥ भूमोदी जरधार ॥ ३ ॥ घणुं अनुलिक जो हुतो ॥ गाये  
 गळव्यो रतन ॥ पेट विदारे को नहीं ॥ कीजे तास जत  
 न ॥ ४ ॥ उत्तम ते उत्तम दुवे ॥ मध्यम कदे न होय ॥ अ  
 न्याइ तोही आपणो ॥ निज कुळ सामुं जोय ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ परणी राजकुमारी ॥ सोवन तन शणगा  
 री ॥ ९ देशी ॥ इम कह्यो रोश उतार्यो ॥ वीर वचन  
 चित्त धार्यो ॥ उत्तम जे कुळवंत ॥ मुंके रोश तुरंत ॥  
 १ ॥ में कस्यो वचन जे भाइ ॥ ते किम निष्फल थाइ ॥  
 कांडक करो सहीनाणी ॥ एहनो उतारो पाणी ॥ २ ॥ म  
 गला पुंठे आकार ॥ जीअ तणो कींधा ल्यार ॥ जाणे  
 पती जीअ काढी ॥ हरखी वहेनडी गाढी ॥ ३ ॥ पूरणे  
 राज देड ॥ पिती माहो मांही करेइ ॥ पाए लागीने च  
 डियो ॥ निज नगरी दीरो खमीयो ॥ ४ ॥ कुशळे नृप  
 घरे आयो ॥ पूरण मिली वधायो ॥ राय निवारीयो  
 आप ॥ देश सकळ मांहीं पाप ॥ ५ ॥ श्री जिननी वही  
 आए ॥ साधु नमी तजी माण ॥ श्री जिन वरम आरा  
 धी ॥ तिन वरग नित साधी ॥ ६ ॥ धन धन कुमर नरे  
 श ॥ दया पळावी देश देश ॥ सामायक व्रत पाळ्यो ॥  
 पण ते मांही न चाल्यो ॥ ७ ॥ चितरी सामायक चार  
 ॥ समकितने गुत सार ॥ देश विरती सर्व विरती ॥ सुग

प्रकास ॥ गुरु कृत शास्त्र लीखावे ॥ अक्षर कनक दो  
 पावे ॥ १० ॥ देश विरती वीजो नाम ॥ सामायक शुभ  
 काम ॥ वारंहु व्रत धरे अंगे ॥ आण वहे जिन रंगे ॥  
 ११ ॥ कारण पत्नीयां न चूके ॥ रण पडिकमणुं न मूके  
 ॥ निती प्रतित्ती न समाइ ॥ राजा करे सदाइ ॥ १२ ॥ नो  
 मो व्रत इम पाळे ॥ दसमो हवे ए संभाळे ॥ देशावगामि  
 क कहिये ॥ जेहथी शुभ फळ लढीये ॥ १३ ॥ पाळे ग  
 य पवित्र ॥ पांच अतिचार तय ॥ निमि भूँइ निज जेह  
 ॥ वस्तु अणावी न तेह ॥ १४ ॥ मोकले न पणि इयां  
 थो ॥ रुप देखामे न क्यांथी ॥ साद करे नाखी कांक  
 र ॥ थाये छतो इम जे नर ॥ १५ ॥ ते पने भंव दुख  
 मांहि ॥ व्रत भंग करे संवाहिं ॥ दशमुं व्रत शुद्ध पाळे ॥  
 तेहनां दोष सह्ये ॥ १६ ॥ कारण पमये नवि चळी  
 यो ॥ तो दशमो व्रत फळीयो ॥ ते सुणज्यो अधिकार  
 ॥ सफल ह्मये अवतार ॥ १७ ॥ अगम इशी गुरु पासे  
 ॥ कीधी अधिक उल्लासे ॥ कटकी न करुं चोमासे ॥  
 कुमर नृपति इम भासे ॥ १८ ॥ उपति बहु जीव करी  
 ॥ वरपा रिते अधिकारी ॥ अठवोत्तेरमो ए ढाळ ॥ क  
 हि जिनहरप रसाळ ॥ १९ ॥ सर्व गाथा १७२ ॥



ढाळ ७९ मी

दुहा ॥ चोनासे न करे कटक ॥ कुमरपाळ रा  
 जान ॥ वात गड परदेशमें ॥ आव्यो गजनीखान ॥ १  
 ॥ सवळ सैन लेइ मुगल ॥ आतमवाजी साथ ॥ अ  
 व्यो वळी उतावळो ॥ पाटण घाली वाय ॥ २ ॥ मु  
 गल आव्या जाण्या जियो ॥ राय हुकम ततकाळ ॥  
 दरवाजा ताजा जमया ॥ चिंतातुर भूपाळ ॥ ३ ॥ म  
 हाजन लोक चिंता करे ॥ करे चिंता सह लोक ॥ आ  
 वी इहां इमही वश्या ॥ पाटण मांहे फोक ॥ ४ ॥ एक क  
 हे पूर छंडीये ॥ कीहां जइए एक ॥ एक कहे राजा  
 नीसत ॥ मांहे नहीं विवेक ॥ ५ ॥ एक कहे मांटी मुग  
 ला ॥ लेश्ये जोरे राज ॥ एक कहे नूर नाससे ॥ छानो  
 छळ करी आज ॥ ६ ॥

ढाळ ॥ भरत खेत्र जगे परगमो ॥ जंबु वरहे दी  
 व मझार ॥ ७ देशी ॥ एक कहे क्षत्री भणी ॥ नीसंता  
 हो नहीं कांइ लाज ॥ आगे वासण नृप थयो ॥ रण  
 मांहींटो ते गयो भाज ॥ ८ ॥ ३ ॥ पंथी पूछे तेहने ॥ कांइ  
 रावतहो नाठो जाय ॥ दाढी सरम नहीं रहे ॥ क्षत्रीनो  
 हो पूण उयाया ॥ ९ ॥ १ ॥ हवे कितलोइक जाय

खरे तोहो मरवो छे राय ॥ सल्ले धाये झुझाये ॥  
 जो मरीयेहो तोहीज जस थाय ॥ ९० ॥ वासण क  
 हे सहु सुणज्यो तले ॥ नासंताहो नहीं कांइ खोड ॥ ना  
 सी प्राण उगारीये ॥ नवी मरीयेहो केहनी कर हाम ॥  
 ९० ॥ १॥ दाढ़ी मोटी थर ॥ काळी टळीहो ९ घोळी था  
 य ॥ नर नारी सहु मांगळो ॥ नाठानोहो एह पसाय ॥  
 ९० ॥ ५॥ लोक सहु मित्ठी इम कहे ॥ र्धण जळहो न  
 मिले पुर मांहि ॥ सोकातुर सहुको थया ॥ बीनबीयो  
 हो राजाने जाय ॥ ९० ॥ ६॥ कहे नूर सुगो प्रजा सहु ॥  
 में लीधोहो वढवानो नीम ॥ लीधुं व्रत कीम मुंकीये ॥  
 मत बोलोहो चोमासा सीम ॥ ९० ॥ ७॥ इश्यो वचन राजा  
 कहो ॥ चिंतातुरहो महाजन थयो ताम ॥ उदयनने  
 जइ बीनबीयो ॥ श्युं करवुंहो आपण हवे काम ॥ ९०  
 ८॥ उदयन कहे निश्चळ रहो ॥ मन मांहीहो कांइ न  
 करो चिंत ॥ राज दीयो पाटण तणो ॥ ते करश्येहो  
 चिंता एकांत ॥ ९० ॥ ९॥ एहवुं कहो मंत्री चलयो ॥ मन मां  
 हीहो धरतो उल्हाम ॥ हेमाचारजने जइ ॥ मिथि  
 वांथाहो वेठा गुरुने पास ॥ ९० ॥ १०॥ करजोडी उदयन  
 कहे ॥ स्वामी हवेहो कांइ करो उपाय ॥ मुगले पाट

ए वीटीयो ॥ चोमासेहो रण न करे राय ॥ ९०११ ॥  
 लोक थया सह आकळा ॥ ते मोटोहो करो क्रिपा कृ  
 पाळ ॥ लाज सहछे तुम मणी ॥ तुझे कीधाहो अहेने  
 भूपाळ ॥ ९०१२ ॥ हाथ यज्ञानी लाज छे ॥ मोटोनेहो  
 सांमळ मुनीराय ॥ तुम सरीखा गुरु छतां ॥ लये पाट  
 णहो नृन हीणो थाय ॥ ९०१३ ॥ हेम सुणी हित आणी  
 न्यां ॥ राय उपरेहो जेहनो बहु भेम ॥ जिनशासन  
 शोभा वधे ॥ देवीनेहो आराधी हेम ॥ ९०१४ ॥ आवी तुरत  
 चक्केसरी ॥ पाय लागीहो कहे तेढी केम ॥ सुगुरु क  
 हे देवी गुणो ॥ पाटणमांहो चरतावो खेम ॥ ९०१५ ॥  
 जुद्ध अगम छे रायने ॥ गजनीनेहो रजनी नृप पास ॥  
 आणी मुंको एकलो ॥ देवी गइहो निशी मेरे तास ॥  
 ९०१६ ॥ निद्रा मांहीं ढोलीयो ॥ उपानीहो मुंकयो नृ  
 प पास ॥ प्रह उग्ये जग्यो जिश्ये ॥ नवि देखेहो दळ  
 दासो दास ॥ ९०१७ ॥ मुगल हियामां चिंतवे ॥ हिंदुका  
 हो योतो परिवार ॥ कहे जिनहरण पूरी थर ॥ ओग  
 एयासीहो ५ ढाळ विचार ॥ ९०१८ ॥ सर्व गाथा  
 १७४४.

दुहा ॥ चना वखतका भूप ॥ ५६ ॥ इनकी किसी  
 बात ॥ पीर फीरेस्ता कोइ हइ ॥ किसहीं जख्मिया न जा  
 त ॥ १ ॥ चस्म बात देखी अजब ॥ आया में किस वो  
 र ॥ में चित्याया अउर कछु ॥ सांइ चित्या अउर ॥  
 २ ॥ जाण न पाउंगा अवे ॥ हीये कावज कीयाह ॥ मु  
 जकु छोडेगा नहीं ॥ इण मुज पकरी लीयाह ॥ ३ ॥  
 क्या कहोये कहते कछु ॥ बणत नहीं हइ बात ॥ अ  
 व वशरीके वश पमयो ॥ करे जीवकी धात ॥ ४ ॥ हिं  
 दु पकहं ल्युं सहेर ॥ चितवी आया चहु ॥ मनकी  
 मनहीमें रही ॥ ज्युं गुंगाकी गछु ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ परमाहमी प्रनरस ॥ ६ ॥ दिशी ॥ खान इश्युं मन  
 चीतवे ॥ तब कहें राय कुंनार ॥ चिताम करे  
 मुगल मन ॥ हीयहुं करे हुंसायार ॥ १ ॥ ते नें हुवे चो  
 लकवंशी ॥ बांध्या मारे जेह ॥ शस्त्र मदी सामो हुवे ॥  
 सुनट हगेया तेह ॥ २ ॥ विश्वासी जो मारीये ॥ तो  
 क्षत्री न कदाय ॥ ते जणी तुजे मारुं नहीं ॥ इण अ  
 वसर कहें राय ॥ ३ ॥ इश्यां वचन नरवर तणां ॥ सां  
 झळीया सुलतान ॥ खुशी हुआ मन नाहीं तव ॥ ४ ॥ मुं

कवो आरत ध्यान ॥४॥ हुं आव्यो चढो उपरे ॥  
 करवा इणशुं सुझ ॥ मोटो हिंदु गढनती ॥ हरमती राखी  
 मुज ॥ ५ ॥ कुमारपाळ सु<sup>ए</sup> मुगल कहे ॥ भाइ क  
 हुं के मीत्र ॥ भुंकवो मुजने जीवतो ॥ हाथ आव्यो  
 शत्र ॥ ६ ॥ माहोनांही मैत्री थर ॥ गजनीखान नरेश  
 ॥ कटक लोइ पाछो वळवो ॥ आव्यो आपण देश  
 ॥ ७ ॥ इस दशमुं व्रत पाळीयुं ॥ भाग्युं नहींय नरेश  
 ॥ इग्यारमुं व्रत आदरे ॥ आणी भाव विशेष ॥ ८ ॥ पर्य  
 तिथे पोसह करे ॥ पचखी च्यार आहारा राइ पन्निक  
 णुं करी ॥ दिन निद्रा परिहार ॥ ९ ॥ मौनव्रती कार  
 ज पने ॥ गुरुशुं बोले राय ॥ च्यारे विकथा परिहरी  
 ॥ पांच प्रकार सझाय ॥ १० ॥ पांच अतिचार परि  
 हेरे ॥ संधाराने ठाम ॥ थंजेलने वळी मातरुं ॥ क  
 रे शुभ मन विश्राम ॥ ११ ॥ पनिलेही जयणी कगी ॥  
 विधी परठवे सुजाण ॥ कहे अणजाण हजमुप्रो ॥  
 पाळे जिनवर आण ॥ १२ ॥ निण बार गोसिरे कही ॥  
 काळे बाडी देव ॥ संगट न करे सचित्तनो ॥ पन्निक  
 मणानी देव ॥ १३ ॥ संधारा पोरिती जणै ॥ पन्निकन  
 णुं करे सार ॥ पनिलेही अग्रण सहु ॥ पारे विधि

विवहार ॥ १४ ॥ घरे साहनीशुं संजरीए ॥ पूजी श्री  
 जिनराय ॥ करे नरेशर पारणोए ॥ उतमनो ए न्याय ॥  
 १५ ॥ घत पाळे हवे बारमुंए ॥ आपे मुनीवर दान ॥ पात्र  
 पोखी भोजन करेए ॥ राखे चोखुं ध्यान ॥ १६ ॥ जा  
 जनना द्रव्य जेटलाए ॥ ल्ये मुनीर निराग ॥ पोते पण  
 ल्ये तेटलाए ॥ साचवे अतिथी संविभाग ॥ १७ ॥ उ  
 त्तम साधने साधवीए ॥ आधक आधिका संग ॥ संघ  
 चतुर्विध पोखताए ॥ विर्यकर पद होय ॥ १८ ॥ धर्म दा  
 म जोर करीए ॥ आंखे दान नरिंद ॥ दाळ एशीमी ए थर  
 ए ॥ कहि जिनहर्ष मुण्डिंद ॥ १९ ॥ सर्व गाथा १७६८.

दाळ ८१ मी.

दुहा ॥ कुमर नरेशर एक दिन ॥ आख्या वंदण का  
 ज ॥ देखी खासर ओढीयो ॥ हेमसूरी गच्छराज ॥ १  
 ॥ विनय सहित बोल्यो नृपति ॥ सांजळ श्री गुरुराय  
 ॥ देखी खासर ओढीयो ॥ लाजुं छुं मन मांहीं ॥ २ ॥ हे  
 मसुरीसर इम कहै ॥ हुं गोचरीए आज ॥ गयो एक  
 दुर्वळ घरे ॥ वांढा धरी बहु लाज ॥ ३ ॥ कर जोढी  
 मुजने कहै ॥ पूज पधारी आम ॥ वहेरो खासर सु  
 अतो ॥ राखो माहरी माम ॥ ४ ॥ मुनीवरने भमता नथी

॥ श्युं खासर श्युं चीर ॥ जावे आपे ते जलो ॥ ५ ॥  
 वे रावसो खीर ॥ ५ ॥ तेहनो हरख वधारवा ॥ वह  
 रयो खासर एह ॥ अच्छिही विक्रम नृपति ॥ धन ध  
 न आवक तेह ॥ ६ ॥

हाळ ॥ श्रवणना गीतनी देशी ॥ सुण राजेशर तु  
 जने कहू ॥ जे नर पाम्या लिखमी बहु ॥ समज्या  
 शास्त्र तणा सवी भर्म ॥ जाण्यां जेणे धर्म अधर्म ॥ १  
 ॥ ते नर लखमी व्यव नवि करे ॥ धर्म ठाम धन न  
 वि उपगरे ॥ ते श्युं समज्या आवक धर्म ॥ इमही फो  
 कट पमीया भर्म ॥ २ ॥ आज तमे शासन शिणगार  
 ॥ न करो साहमीनी कांड सार ॥ खासर देखी लाज्या  
 आज ॥ तो मुज वचन मानो महाराज ॥ ३ ॥ जे  
 निरधन घर आवक तणा ॥ तेहने घेर थापो धन घणा ॥  
 तुम सरिखा जिन शासन थंभ ॥ साहमी निरधन एह  
 अचंभ ॥ ४ ॥ सांजळी हेम तणो उपदेश ॥ लाज्यो म  
 नमां कुमर नरेश ॥ चरणे लाग्यो धरी उछांह ॥ चू  
 क पमी तुज शेवक मांह ॥ ५ ॥ इम कही कुमारपाळ  
 ॥ वांदीने उठयो ततकाळ ॥ आवी निज घर धन आ  
 रीया ॥ निरधन आवक दूख कापीया ॥ ६ ॥ तमे माह

२ साहमी सिरदार ॥ ल्यो लिखमीने करो व्यापार ॥  
 गुरु वचने कीधो अपगार ॥ साहमीने आप्यो आधार  
 ॥ ७ ॥ सोवन टका वोहोतेर लाख ॥ श्रावक दंत त  
 ज्यो गुरु साख ॥ श्री जिन जगति करे दहु परे ॥ सा  
 हमीवत्छल नित प्रते करे ॥ ८ ॥ साते खेने दित वावर  
 ॥ इणी परे लिखमी सफली करे ॥ अतीचार ए व्रतना  
 पत्र ॥ टाळो पाळो रुडो मच ॥ ९ ॥ अणदेवानी बुद्धि  
 विचार ॥ असुझतो कीधो आहार ॥ असुझतो हुतो  
 जे अन ॥ कहे सुझतो आपो सुभामन ॥ १० ॥ वस्तु  
 पोतानी हुतो सही ॥ कृपणपणे परनी कही ॥ परनी  
 फेडी कही आपणी ॥ अपे भाव चमत्कार मुनी जणी ॥  
 ११ ॥ मुनीपर वहेरण वेळा छळी ॥ आधी तेनण ते  
 अटकळी ॥ एहवा चरित्र करे दातार ॥ तेह जमे ससा  
 र अपार ॥ १२ ॥ सहमी साधु सीसतो भाळ ॥ न करे  
 तेहनी सार संभाळ ॥ तेहनी लिखमी कही असार ॥  
 न करे धर्माधर्मे विचार ॥ १३ ॥ दिनोड्डार जिणे नमि  
 क्षी ॥ उमा घन धरणीमा धर्यां ॥ ते नर जाश्ये दृ  
 गति मझार ॥ जव जव दिन दुखी चित धार ॥ १४ ॥  
 इणी परे व्रत बारह आदर्यां ॥ अतिचार तेहना परि



हर्षा ॥ समकित शुद्ध गुरु मुख उचरयां॥सफल कार्य  
पोताना करयां ॥१५॥ आने हेममुरीशर तणी ॥ कीधी  
भगति नृप अति घणी ॥ संघ भगति कीधी मन रंग ॥  
स्वरध्या द्रव्य घणे उल्लरंग ॥१६॥ दिव्य जिन शा  
सन घणुं ॥ मंद थयुं शिव शासन तणुं ॥ चौलका वशे  
कुमर नरिद ॥ राज रिषि नम धरावे चंद ॥१७॥ य  
यो जैन धर्म शिणगार ॥ धर्म लोका तणो आधार  
॥ इक्याशीमी टाळ सुजाण ॥ कहे जिनहर्ष थया क  
ल्याण ॥१८॥ सर्व गाथा १७९५.

टाळ ७२ मी।

दुहा ॥ कुंमर नरिद इष्टुं कहे ॥ जैन धर्म ज  
ग सार ॥ तेहनी जे निदा करे ॥ ते तजीये परिवार ॥  
१॥ तजीये माता जेहने ॥ जैन धर्मशुं वर ॥ जैन ध  
र्मशुं रुची नही ॥ ते पण तजीये वर ॥२॥ दूषण वो  
ले धर्मन ॥ तजीये तात तुण ॥ बंधव तजीये वेग  
लो ॥ जे जिन धर्म निस्त ॥२॥ भाय जणि तजीये  
वहेन ॥ जिन गुण न सुचे जारा ॥ तजीये सुत पोता  
तणो ॥ नहि जिन धर्म अम्यास ॥३॥ आवक देखी  
उल्लसे ॥ आवक सगति खास ॥ आवकशुं मैत्री

॥ घर श्रावक घर दास ॥ ५ ॥ कुमर कीया श्रावक स  
हु ॥ श्रावकशुं बहु प्रेम ॥ श्रावक जगति करे घणी ॥  
नमे निरंतर हेम ॥ ६ ॥

ढाळ ॥ जणे देवकी किण जोळव्यो ॥ १ देशी ॥  
सौरठ देश सोहामणो ॥ जिहां तीरथ तीरथ जैन महां  
त ॥ राजिंदा ॥ समर नरिंद तिहां भोनीयो ॥ महा व  
ळीयो अति महा दूरदांत ॥ रा० सो० १ ॥ समर हण्यो छा  
नो वोकमो ॥ मज्जमां नाएयो जय जाएयो मुज नहीं  
कोय ॥ रा० कंदेश्वरी आवी कस्यो ॥ एहवो छानो रा  
ज न मानो अनरथ होय ॥ रा० सो० १ ॥ आण न मा  
नी माहरी ॥ बहु खीज्यो घणुं खीज्यो कुमर नरेश ॥  
रा० उदयनने तेमी करी ॥ नृप आपे राय राय इम उ  
पदेश ॥ रा० सो० ३ ॥ सौरठ देश जइ करी ॥ हणवो पा  
पी मस्तक टापी समर नरिंद ॥ रा० मुजने देइ मुंकिवो  
॥ सेना लेइ मंत्री चलेइ जाणी समंद ॥ रा० सो० ४ ॥  
भंव नगरां गडगडे ॥ सद माता घूमता गज असवार  
॥ रा० पाळीताणे जइ करी उतरवो ॥ तिहां रसो क  
टक अपार ॥ रा० सो० ५ ॥ उदयन शत्रुंजय चढवो ॥  
जिन देखी मज्जु देखी हरख्यो ताम ॥ रा० देइ तीन प्र

दक्षणा॥जावै वांघाहे जइवांघा निज शिर नोमी॥रा०सो.  
 ६॥ लघ लागी मत्तु ध्यानशुं ॥ चाल्यो उंदीर हींमव्यो  
 उंदीर दीवो ताणी ॥रा० दीवो पूजारी तिते ॥ मुंकाव्यो  
 मंलाव्यो मुखधी जाणी ॥रा०सो०७॥ मंची मनमां चिं  
 तवी ॥ सवळो अनरथ मांठो अनरथ होवत एह ॥रा०  
 देवार्चक जो नावतो ॥ तो चूकत तो मूकत ध्यान स  
 नेह ॥रा०सो०८॥ जां हुं ध्यान न चूकतो ॥ तो वळ  
 तो ९ वळतो जिन प्राप्ताद ॥रा० तो धिग धिग मुजने  
 पमो ॥ में गमाव्यो नीगमीयो जनम प्रमाद ॥रा०सो०  
 ९॥ सी लखमी तेहनी लही ॥ जिणे न कर्यो नवि उघ  
 र्यो जिणोद्वार ॥रा०जीणोद्वार करावतां ॥ पुण्य थाये  
 लाज थाये अष्ट गुणो संसार ॥रा०सो०१०॥ ध्यार  
 अगम मंची करी ॥ वरा पाळुं सील पाळुं एक आहार  
 ॥रा० सज्या पान न आदहं ॥ न कराउं समराउ ज्यां  
 प्रहार ॥रा०सो०११॥ नीम कर्यो उदयन इश्युं ॥ न  
 वि कांपे सींग चांपे समरनी जाण ॥रा० रण रणतुर वा  
 जि गला ॥ थाइ चंगी दमकी जांगी ढोल नीसाण ॥  
 रा०सो०१२॥ समरशुं समरांग जुडव्यो ॥ चूटी गोळा  
 ताकि ओला कायर जेह ॥रा० घाव वहे तरवारना ॥

॥ वर श्रावक घर दास ॥५॥ कुमर कीया श्रावक स  
हु ॥ श्रावकशुं बहु प्रेम ॥ श्रावक भगति करे घणी ॥  
नमे निरंतर हेम ॥६॥

ढाल ॥ भणे देवकी कृष्ण जोळव्यो ॥ ९ देशी ॥  
सोरठ देश सोहामणो ॥ जिहां तीरथ तीरथ जैन महां  
त ॥ राजिंद्रा ॥ समर नरिंद तिहां भोमीयो ॥ महा व  
ळीयो अति महा दूरदाता ॥ रा० सो० १ ॥ समर हण्यो छा  
नो वोकमो ॥ मनमां नाएयो भय जाएयो मुज नही  
कोय ॥ रा० कंठेश्वरी आवी कथो ॥ एहवो छानो रा  
ज न मानो अनरथ होय ॥ रा० सो० २ ॥ आए न मा  
नी माहरी ॥ बहु खीज्यो घणुं खीज्यो कुमर नरेश ॥  
रा० उदयनने तेनी करी ॥ नृप आपे राय राय इम उ  
पदेश ॥ रा० सो० ३ ॥ सोरठ देश जइ करी ॥ हणवो पा  
पी मस्तक कापी समर नरिंद ॥ रा० मुजने देइ मुंकिवां  
॥ सेना लेइ मंत्री चलै जाणी समंद ॥ रा० सो० ४ ॥  
त्रंव नगारां गडगडे ॥ सद माता धूमता गज असवार  
॥ रा० पाळीताणे जइ करी उतरव्यो ॥ तिहां रह्यो क  
टक अपार ॥ रा० सो० ५ ॥ उदयन शत्रुंजय चढव्यो ॥  
जिन देखी मनु देखी हरख्यो ताम ॥ रा० देइ तीन प्र

दक्षणा॥जावै वांधाहे जइवांधा निज शिर नोमी॥रा०सो.  
 ६॥ लघ लागी प्रभु ध्यानशुं ॥ चाल्यो उंदीर हीमळो  
 उंदीर दीवो ताणी ॥रा० दीठो पूजारी तिसे ॥ मुंकाव्यो  
 मेल्लाव्यो मुखधो जाणी ॥रा०सो०७॥ मंत्री मनमां चिं  
 तवी ॥ सबळो अनरथ मांटो अनरथ होवत एह ॥रा०  
 देवार्चक जो नावतो ॥ तो चूकत तो मूकत ध्यान स  
 नेह ॥रा०सो०८॥ जो हूं ध्यान न चूकतो ॥ तो वळ  
 तो ९ वळतो जिन प्रासाद ॥रा० तो धिग धिग मुजने  
 पमो ॥ में गमोयो नीगमीयो जन्म प्रमाद ॥रा०सो०  
 ९॥ सी लखमी तेहनी लढी ॥ जिणे न कर्यो नवि उध  
 र्यो जिणेंद्वार ॥रा०जीर्णेंद्वार करानवां ॥ पुण्य थाये  
 लाज थाये अष्ट गुणो संसार ॥रा०सो०१०॥ च्यार  
 अगम मंत्री करी ॥ त्रा पाळुं सील पाळुं एक आहार  
 ॥रा० सज्या पान न आदहं ॥ न कराउं समराउं ज्यां  
 उद्धार ॥रा०सो०११॥ नीम कर्यो उदयन इश्यां ॥ न  
 वि कांपे सीम चांपे सगरनी जाण ॥रा० रण रणतुर वा  
 जि गळा ॥ थाइ चंगी दमकी जांगी ढोल नीसाण ॥  
 रा०सो०१२॥ समरशुं समरांग जुडवो ॥ वूढी गोळा  
 ताकि ओला कायर जेह ॥रा० घाव वहे तरवारना ॥

सूर कवाणे वाहे ताणे बाण भरेह ॥रा०सो० १३॥ सन  
 मुल झुझे, सूरिमा ॥साम्हा पावां वाजे घावांरा धम  
 साण ॥रा० उदयन मंत्री, घाये पदव्यो ॥ अरि दळ हा  
 र्यो माझी मार्यो समरो राण ॥रा०सो० १४॥ तेनी वेढो  
 तेहनो ॥राज्ये थाप्यो टीलो आप्यो आण मनाइ ॥रा.  
 कुमर, जणी, सिर मोकल्यो ॥ रावत, राणा, फेरी आणा  
 सोरठ माहिं ॥रा०सो० १५॥ वांसे वांधी, फेरीयो ॥ सचळ  
 देश, जेह, करस्ये छानो पाप ॥रा० ९ परे थाश्ये तेहनी  
 ॥सहु नीहाळ्यो राघ, देखाल्यो परताप ॥स०सो० १६॥  
 जयत, थइ उदयन तणी ॥ पाछो, फिरीयो, घाए भरीयो  
 चिंता, चिंत ॥रा० नीसासा मूक्रे घणा ॥ साथी पूछे तु  
 मने, शुं, छे दुखनी रीत ॥रा०सो० १७॥ झुझव्या रणमां  
 जश, जयीयो ॥ म करो चिंता सहु गुणवंता मरण वसेज  
 ॥रा० सहुने मरवुं, छे, सही ॥ ढळ, व्याशी, कही उजा  
 सी, जिनहरपेण ॥रा०सो० १८॥ सर्व गाथा, १८ १४.

ज ॥ मंमनायक अंवन हुवे ॥ मुजने नीझामण काज  
॥ २ ॥ इहां मुनीवर कोइ नही ॥ किम मुज दरिशाण था  
य ॥ मुनि आराधन नवि सुणे ॥ तो किम सदगति जा  
य ॥ ३ ॥ बाळ मरण संसारनां ॥ कीर्ता अनंतीवार ॥  
मुनी दरिशाण पाम्यो नहीं ॥ न लखो तिण भव पार ॥  
४ ॥ अंत काळ जो पामीये ॥ साधु तणो संयोग ॥ तो  
जागे भव भव तणां ॥ जनम नरण भय सोग ॥ ५ ॥  
तिणे कारण बिंता करुं ॥ झुं हिया मझार ॥ इण  
अवसर मुनीवर नहीं ॥ जमश्रुं बहु संसार ॥ ६ ॥

॥ बाळ ॥ पावननी ॥ राग सिंधुआशा ॥ वात इशी  
उदयन मुखे सांजळीरे ॥ सुगट कहे करजोम ॥ बिं  
ता मकरोरे मंत्रीशर तुलेरे ॥ सफल दुश्ये मन कोम ॥  
वा० १ ॥ पाज बंधाये श्रीगिरनारनीरे ॥ शत्रुंजय उद्धा  
र ॥ मंमनायक अंवन आदर करीरे ॥ ९ ॥ निण दोल  
विचार ॥ वा० २ ॥ बाहमदेने हाथे ९ निणेअ छेरे ॥ मु  
नी चाहो मंत्रीश ॥ जिहां तिहांथी खाळी अहे ॥ आण  
शुरे ॥ जाणो वीसषावीस ॥ वा० ३ ॥ फिरी फिरी जो  
यो पण मुनी नवि मळठोरे ॥ लंघ पुरुष एक आण ॥  
साधु भेस्त्र तेहने पहेरावीयोरे ॥ जीर्ण यति थयो जाण ॥

॥ वा० ४ ॥ दर्या जापा समति सूधी धरेरे ॥ आय्यो उ  
 दयन पास ॥ मुनी दरिशाण दीठु मन गहगहद्वारे ॥  
 हियडे थयो उलास ॥ वा० ५ ॥ पाये लाज्यारे वे कर जो  
 ढीनेरे ॥ तले जले पधार्यारे साध ॥ पाप संताप गया  
 सहु माहरारे ॥ भागी भय आवाक्ष ॥ वा० ६ ॥ ध  
 र्म कथा उदयन आगळे कहारे ॥ मंत्री आलोझे पाप  
 ॥ लाख चोराशीरे जीव खमावीयारे ॥ त्रिविध त्रिविध  
 करी आप ॥ वा० ७ ॥ चउ गती माहेरे जमतां जीवक्रे  
 ॥ कीधां करस अनेक ॥ जीव मरार्यारे मारला हाथे  
 करीरे ॥ मूढपणे अविवेक ॥ वा० ८ ॥ प्राबक केशारे जे  
 यानक कह्यारे ॥ भगट अद्वारह दाख ॥ त्रिविध त्रिविध  
 करी वोसरेरे ॥ सिद्ध सुगुरुनी साख ॥ वा० ९ ॥ क्रोध न  
 राखरे हुं किण जीवशुरे ॥ मान माया ने लोभ ॥ च्या  
 रे सरणारे घों हवे साधुजीरे ॥ पातुं सद्गती सोज ॥ वा०  
 १० ॥ च्यारे सरणारे साधू करावीयारे ॥ हीयडे समकि  
 त धार ॥ काळ करीनेरे सुरगति उपनारे ॥ पाम्या सुख  
 श्रीकार ॥ वा० ११ ॥ लंठ विमाश्यांरे नन मांही हवेरे ॥  
 वेषनो महीमा देख ॥ उदयन सरिखारे मुज पाए नम्या  
 रे ॥ तो ए मोटो वेष ॥ वा० १२ ॥ हवे हुं मुंकरे तो मुज



सारिखोरे ॥ अधम पुरुष नही कोय ॥ राखी न शके  
 रयण चितामणीरे ॥ मूरख कह्यो सोय ॥ वा० १३ ॥  
 धन धन जगमारे वेश यति तणोरे ॥ माने मोटा लोक ॥  
 ते पामीनेरे जो हवे मुंकीयोरे ॥ तो जमवारो फोक ॥  
 वा० १४ ॥ रमत मांहेरे जो आव्यो उदेरे ॥ तो एही आ  
 धार ॥ जाव धरीनेरे हवे आराधशर ॥ जहीशु भवनो  
 पार ॥ वा० १५ ॥ चारित्र राख्युं लंठे दृढ थशरे ॥ जोवो  
 महिमा वेष ॥ वेष सुरिति राखे इणीपरे धर्मनेरे ॥ उप  
 देशमाळा देख ॥ वा० १६ ॥ यतः ॥ धर्म रखइ वेसो ॥  
 सकइ वेसेण दिख्योमिअहं ॥ उमंगेण पढंतं ॥ रखइ  
 राया जण वयत्त ॥ ५ ॥ ढाळ पुर्वनी ॥ राजा राखेरे  
 लोक अन्याए चालतारे ॥ तिम ए वेष निहाळ ॥ कहे  
 जिनहरष लजाए वेष न मुंकीयोरे ॥ व्यासीमी ए ढाळ  
 ॥ वा० १७ ॥ सर्व गाथा १८३७.

ढाळ ८४ मी.

दुहां ॥ वेष लेइ मुनिवर तणो ॥ संके करतो  
 पाप ॥ रखे कोइ भुंडो कहे ॥ वेष तणो ए व्याप ॥ १ ॥  
 नटुअइ राजाने कहे ॥ आण्यो मुनीवर वेष ॥ वेश ते  
 हने तारीयो ॥ औयो वेष अलेख ॥ २ ॥ इण वेशे आ

गे घणा ॥ तारयां बहु नर नार ॥ परलोकें सुख पा  
मीया ॥ संपति राय विचार ॥ ३॥

ढाल ॥ आज हुआ सुविहाण ॥ ए देशी ॥ सुण  
ज्यो ते संबंध ॥ जीखारी पूरव जवेए ॥ घर घर मांगे  
भीख ॥ तांही तृप्तो नवि हुवेए ॥ १॥ इण अवसर दुर  
भक्ष ॥ पनीयो कोइ न उधरेए ॥ जीखारीने कोण ॥  
आपेरी राध कोरेए ॥ २॥ गळ ग्रही नाखे ठेल ॥ देख  
धका काढे पराए ॥ हांकी काढे दूर ॥ जिम हांकीने  
कुतराए ॥ ३॥ श्रावक मुनीने तेम ॥ आपेभात पाणी  
घणाए ॥ वळी झाझां पकवान ॥ पोखे पात्र सुहामणा  
ए ॥ ४॥ एक-दिन मुनी आहार ॥ वहिरिने पाछा धळे  
ए ॥ संपति नूननो जीव ॥ रीव करे मुनी आगळेए ॥  
॥ ५॥ भूखे जाग्यो अंग ॥ स्वामी हुं न स्वमी शकुंए ॥  
घो कटको गुणवंत ॥ माण रहे ए तुम थकुंए ॥ ६॥ दु  
खीयो देखी, दयाळ ॥ मुजने आपो कोळीयोए ॥ तुमने  
धाश्ये धर्म ॥ उमो रहेरो खोळीयोए ॥ ७॥ जीखारी सु  
ण वात ॥ साधु अले आपु नहींए ॥ नहीं अमचो आ  
चार ॥ लोक करे हीला सही? ॥ ८॥ संग्रह करवु था  
य ॥ लेवानी संख्या टळेए ॥ न रहे मुनीवर धर्म ॥

भिक्षाचर बहुला मिले ॥ ए॥ श्रुं कही मुनी जाय  
 ॥ भिक्षारी केमे थयो ॥ पेठा रवि पोशाळ ॥ बाहि  
 र ते वेशी रक्षो ॥ १० ॥ गौयरीया आलोया गुरुने क  
 हे खानी सुणो ॥ भिक्षाचर एक वार ॥ अन्न मागे छे  
 आपणो ॥ ११ ॥ आणा विण न दिवाय ॥ पण कर  
 ण आवी घणी ॥ गुरु कहे तेमी मांह ॥ लावी भिक्षारी  
 भणी ॥ १२ ॥ दुमक भणी तीहां तम ॥ गुरु पुछे कर  
 णा करो ॥ श्रुं मागे छे बाळा ॥ मुख पीमे प्रजु आकरी ॥  
 ॥ १३ ॥ अन्न विना शिपिराज ॥ काया धूजे लडधमे  
 ॥ मुख बाल्यो नवी जाय ॥ आखे अंधारा पमे ॥  
 १४ ॥ गुरु कहे सांजळ वात ॥ अमे सरीखो जो धीये  
 ॥ तो तुजने भरपूर ॥ आहार पाणी आपीये ॥ १५  
 ॥ तो करो कवण विचार ॥ करवु हो ॥ ते मुज करो ॥  
 पण ॥ पापी पेट ॥ एक वारं ठासी जरी ॥ १६ ॥ मा  
 नीश तुम उपगार ॥ दीन दयाळ तुमे दे ॥ चउरा  
 शीमी दाळ ॥ कहे जिनंदरप पूरी थ ॥ १७ ॥ सर्व गा  
 था १८५७

दाळ ८५ मी

दुहा ॥ वेगे तुम सरीखो करो ॥ किश्यो करो हव

सोंच ॥ भिक्षाचरने मस्तके ॥ ततखिण कीधो लोंच  
 ॥ १ ॥ साल दाळ पकवान बहु ॥ आपे तास आहार ॥  
 भोजन सरस कीया पछी ॥ वेदन पेट अपार ॥ २ ॥ मि  
 ल्या जति विवहारीया ॥ ऊखद करे अनेक ॥ गळे  
 ग्रही जे फाढता ॥ तेहिज नर सुविवेक ॥ ३ ॥ उत्तम ते  
 ल लेश करी ॥ जेळी मांही सुंठ ॥ चोळे पेट भली प  
 रे ॥ चोळे वांसो पुंठ ॥ ४ ॥ देखी भगति सोहामणी ॥  
 नव दिख्यत अणगार ॥ चिंते पोते माहरी ॥ पुन्य न  
 ही माजार ॥ ५ ॥ साधु धर्म आव्यो उदय ॥ चिंतामणी  
 सारिख ॥ पण हुं पाळी नवि शक्यो ॥ मुगतां दायिनी  
 दीख ॥ ६ ॥ वारु वेष यति तणो ॥ एहवां फळ इह लो  
 क ॥ जीजीकार करे सह ॥ तारे पण परलोक ॥ ७ ॥

ढाळ ॥ स्वामी शुजंग म ताहरो ॥ ९ देशी ॥ पुन्य  
 प्रवळ पोते नहीं ॥ पूरो न लखो आव ॥ धर्म आराधी  
 नवि शक्यो ॥ इम करे पश्चाताप ॥ पु० १ ॥ एहवे ध्याने  
 चढ्यो ॥ कयों तिहांधी काळ ॥ विदुसार नामे थयो  
 ॥ नृप जस तात कुणाल ॥ पु० २ ॥ संपति नाम बोला  
 वीयो ॥ जात माव लखो राज ॥ जिनवर बिंब भरा  
 वीया ॥ कोनि सवा पुन्य काज ॥ पु० ३ ॥ लाख सवा

ढाळ ८७ मी.

हुहा ॥ भीम जणी मंत्री कहे ॥ तुं मुज साहमी  
सार ॥ आगळ मुंकी तेहने ॥ पंच सयां दीनार ॥ १ ॥  
भीम कहे मंत्री सुणो ॥ मुजने लेवा भीम ॥ इम कही  
ल्याथी चलयो ॥ आब्यो निज घर भीम ॥ २ ॥ हीयढामां  
चिता घणी ॥ नारीअ छे उतार ॥ बढे को जीपे नहो  
॥ ते आगळ नर नार ॥ ३ ॥ बहु बोली अवी आकळी  
॥ फेरी दीये जयाप ॥ रहे सदा रीसे जरी ॥ उपजाये  
सताप ॥ ४ ॥ बखी जसे जिम कूतरी ॥ बोले यणु कुजा  
त ॥ पाये बहु बोला नही ॥ रुडा जगमा सात ॥ ५ ॥  
नारी शेषक दीकरो ॥ मूरख शिण्ण मुनिराय ॥ निरथन  
माणस सातए ॥ बहु बोला न सुहाय ॥ ६ ॥

ढाळ ॥ चतुर सनेही मोहनां ॥ ७ देशी ॥ बहु बो  
ली भीमा वणी ॥ नारी निपट करारीरे ॥ मनसां वी  
हीते थकी ॥ बढश्ये ते हतीयारीरे ॥ व० १ ॥ पुण्य का  
ज जंत्रुजय जइ ॥ में खरच्या सहू द्रामोरे ॥ तेहने क  
हीशुं घर जर ॥ मुज नही राखे मामोरे ॥ व० २ ॥ स्त्री  
ने कहे ते वीहतो ॥ सुण कुळवंती नारीरे ॥ सेत्रुज सा  
मि सुहारीया ॥ खरच्या द्राम पिचारोरे ॥ व० ३ ॥ भीम

तणे पुन्ये करी ॥ बोली अमृत वाणीरे ॥ उत्तम लिख  
 मी तुम तणी ॥ धरम ठाम खरचाणीरे ॥ व० ४५ ॥ भीमा  
 नी चिंता टळी ॥ नारीनां भय भाग्योरे ॥ नारी कुलं  
 ठ थड् भली ॥ रंग धरमशुंलाग्योरे ॥ व० ४६ ॥ एक दि  
 न खीलो गाथनो ॥ बाहिर निसरो पढीयोरे ॥ भूमी ख  
 णी वेसारवा ॥ मांहीं थकी धन जमोयोरे ॥ व० ४७ ॥ पां  
 च हजार सोवन भयो ॥ कळस एक निरखेईरे ॥ ए धन  
 नुज कलपे नहीं ॥ सत्रुंजय गयो लेईरे ॥ व० ४८ ॥ वा  
 इमदे पासे जइ ॥ मुंज्यो कळस विशाळोरे ॥ पुन्य ठा  
 न ए धन करो ॥ मुंज नहीं काम दयाळोरे ॥ व० ४९ ॥  
 बाहम मंत्री चितवे ॥ एहने अल्प संसारोरे ॥ जाधुं ध  
 न राखे नहीं ॥ ए उत्तम निरधारोरे ॥ व० ५० ॥ निरधन न  
 र धन पामीयुं ॥ भुरख्यो भोजन भाणोरे ॥ कामी पामी  
 कामिनी ॥ त्यजतां दुःकर जाणोरे ॥ व० ५१ ॥ ए नि  
 रधन धन धन तजी ॥ अवर न को इण तोलेरे ॥ म  
 धुरे वचने भीमने ॥ बाहमदे मंत्री बोलेरे ॥ व० ५२ ॥  
 भीम सुणो मुज वातमी ॥ ए धन कां नवि राखोरे ॥ तु  
 ज भाग्ये आवी मिल्यो ॥ दुख पामे धन पाखोरे ॥ व०  
 ५३ ॥ खोड नहीं ए धन लेतां ॥ वार वार कहेवायो

॥ इच्छा ए वाहड तणी ॥ जिम तिम सुखीय। थाये।  
 ॥ व० १३ ॥ भीमा-लव लव छोमी दे ॥ जा घर लेइ  
 निधानोरे ॥ चयण कहे इम दुहवी ॥ हित वांछक प  
 रधानोरे ॥ व० १४ ॥ वैद्य-जेह उपगारीयो ॥ कहुओ ओ  
 पध ओपरे ॥ रोगीने साता भणो ॥ रोग कायाना का  
 पेरे ॥ व० १५ ॥ तिम कूडो हितकारणे ॥ बोले पर उ  
 पगारीरे ॥ दाळ सत्याशीमी थइ ॥ कहे-जिनहरप-विचा  
 शरे ॥ व० १६ ॥ सर्व गाथा १९२४०

दाळ ८८ मी.

दुहवा ॥ वृक्षमां कहुओ जीवमो ॥ पण शीतळ परि  
 णाम ॥ रोग सर्वने अपहरे ॥ आवे सघळे काम ॥ १ ॥  
 जीव-सरीखो वाग भट ॥ उपगारी हितकार ॥ भीम-भ  
 णी कहे बहु परे ॥ ले धन म कर विचार ॥ २ ॥ भीम न  
 लये बोले नहीं ॥ व्रत उतर निज ध्यान ॥ मुजने तो  
 पचखाण छे ॥ लीयण अदत्ताशन ॥ ३ ॥ व्रत खंडुं न  
 ही माहरो ॥ ज्या लग घटमां पाण ॥ प्रतक्ष थयो सुर तेट  
 ले ॥ कवम यक्ष कहे वाण ॥ ४ ॥ भीमा ए धन ताह  
 रो ॥ लेतां नहीं व्रत हाण ॥ स्वाओ-स्वरचो विद्रवो  
 ॥ म करो ताणां ताण ॥ ५ ॥

हाळ ॥ मुज हीयंडं हेजाळं ॥९॥ देशी ॥ सुर वच  
 ने श्रीमो खुशी ॥ घणुं थयो मन मांहीं ॥ वाहन मंत्री  
 शुं मिली ॥ आळ्यो घरे उळांहीं ॥ सु० १ ॥ सुखीयो श्री  
 म थयो घणुं ॥ श्रीजिन धर्म पसाय ॥ पाळे व्रत चित  
 उजळे ॥ खरचे द्रव्य सुठाय ॥ सु० २ ॥ जावे शत्रुंजय  
 चमे ॥ जिनवर पूजे त्रिकाळ ॥ पोखे चोखे चित पा  
 वने ॥ जीव दया प्रतिपाळ ॥ सु० ३ ॥ धन धन ते न  
 र नारीयां ॥ धन लही पोखे सुपात्र ॥ वळी धन जीभ्युरे  
 तेहनूं ॥ जे करे शत्रुंजय जात्र ॥ सु० ४ ॥ श्री मुख जिन  
 वर हम कहे ॥ तीरथमां सिरदार ॥ साधु अनंता आंगे  
 थया ॥ इण गिरि पाम्या पार ॥ सु० ५ ॥ सुरजकुंड श्री  
 मकुंडमां ॥ नात्ता नहीं नर जेह ॥ गीतारथ गणधर  
 कहे ॥ मेला तेहना देह ॥ सु० ६ ॥ रिसहेसर जिनमां  
 वडो ॥ मंत्र मांहे नवकार ॥ सहु तीरथ मांही जोवतां  
 ॥ शत्रुंजय शिरदार ॥ सु० ७ ॥ न करी शत्रुंजय जातरा  
 ॥ नवि कीधो उद्धार ॥ निज धन तिहां खरच्यो नहीं  
 ॥ तिणे द्वार्यो अवतार ॥ सु० ८ ॥ जाणी पुण्य वाहन  
 तिहां ॥ मंमाळ्यो उद्धार ॥ उंचुं अती रळीयांमणो ॥ वा  
 छ वळी वीसतार ॥ सु० ९ ॥ काम चलावी प्रासादनो ॥



पाटण आव्यो मंत्रीश ॥ पूरुं भुवन थयुं जिशे ॥ आ  
 व्यो वधामणी इश ॥ सु० १० ॥ हेरेख्यो मन मांहीं मंत्र  
 वी ॥ सोवन जिभ वत्रीश ॥ आपी वळीय वधामणी ॥  
 आवी, बीजे दिश ॥ सु० ११ ॥ श्री जिनभुवन दळी प  
 मयुं ॥ हरख अशाता मन ॥ दीध वधामणीया भणी  
 ॥ चोसठ जीभ सोवन ॥ सु० १२ ॥ दुख ते भुवन कर्युं  
 पमयुं ॥ दळ्यो जीवतां सुख तेह ॥ हुवे कराउं फेरी  
 वळी ॥ जिम चिरकाळ रहेह ॥ सु० १३ ॥ मंत्री इशुं वि  
 माशीनें ॥ चाल्यो धरीय विवेक ॥ श्री शत्रुंजय आवी  
 यो ॥ शीलावट तेमद्या अनेक ॥ सु० १४ ॥ पूछ्यो मं  
 त्री शिलावटां ॥ किम पमयुं जिनगृह एह ॥ देवळ पव  
 न वशे पमयुं ॥ म धरो मन संदेह ॥ सु० १५ ॥ हुवे चउ  
 वारो कहुं जलो ॥ प्रौढो जिन प्रासाद ॥ निश्चल कह्यो  
 ये चले नहीं ॥ करे गगनशुं वाद ॥ सु० १६ ॥ पण एक  
 दोष मोटोअ छे ॥ पाछळ न हुवे संतान ॥ दाळ अ  
 ज्वाशीमी ए थर ॥ कहि जिनहरप प्रधान ॥ सु० १७ ॥  
 पर्व गाथा १९४६.

दाळ ८९ मी.

हुहा ॥ सुणो शिलावट माहुरो ॥ वचन कहुं मन

रंग ॥ फिकर नहीं मुज सुत तणी ॥ कर भासाद उतं  
 ग ॥ १ ॥ पुत्र, अने पुत्री घणी ॥ जेहने केंडे होय ॥ मर  
 तां मात पिता तणे ॥ केंडे नावे कोय ॥ २ ॥ जो ते  
 हाए कुलक्षणो ॥ तो कुल स्वंपण कहेवाय ॥ खोवे ना  
 म पिता तलो ॥ जेहथी उजमयाय ॥ ३ ॥ सरीये मा  
 यो वापने ॥ कोणीक पिता विनास ॥ कंस पिताने दु  
 ख दीयो ॥ पुत्र नहीं ए पास ॥ ४ ॥ माय ताय बेटा  
 बहु ॥ भाइ बहेन कुटुंब ॥ सगा सणीजा, बालहा ॥ ५  
 सहु जगव विटंब ॥ ५ ॥ पुण्य पाप लेइ करी ॥ मणी  
 जाश्ये उठ ॥ सहुको वेठा, जोयश्ये ॥ कोइ न जाश्ये  
 पुंठ ॥ ६ ॥ स्वारथ लगे सहुको, सगो ॥ स्वारथ लगे मा  
 हु नेह ॥ जब स्वारथ पोहोत्ते नहीं ॥ तबही दिखावे

ढाळ ॥ महाविदे खेत्र सोहामणो ॥ १ ॥ देशी ॥ तिणे  
 कारण तमो, कीजीये ॥ चउ वारो भासाद लालरे ॥ रु  
 मो ने रलीग्रामणो ॥ दीठां चित्त आल्हाद लालरे ॥ ति  
 १ ॥ तुरत निपाव्यो देहरो ॥ दीपे तेज दिणंद लालरे  
 ॥ बार इग्यार शनिवासरे ॥ वेठा रिपज जिणंद लालरे  
 ॥ ति ० २ ॥ दंड कळस ध्वज जळहळे ॥ इंद्रधुवन आ

कार लालरे ॥ हेमसुरीस मतिष्टियो ॥ ओहव करिय अपा  
 र लालरे ॥ ति० ३ ॥ चौबीस गाम पूजा जणो ॥ खर  
 चाये तिहां दाम लालरे ॥ गाम वसाव्यो तलहटी ॥  
 बाहमपुर इण नाम लालरे ॥ ति० ४ ॥ तिहां एक करा  
 बोयो ॥ विभुवनपाळ विहार लालरे ॥ पाम जिनेशर  
 थापीया ॥ वरत्यो जय जयकार लालरे ति० ५ ॥ ध  
 न धन बाहड मंत्रवी ॥ सफळ कीयो अवतार लालरे  
 ॥ तिहांथी चुंफे चालीयो ॥ आव्यो गढ गिरनार लालरे  
 ॥ ति० ६ ॥ आसापी अठम कगी ॥ अंबादवी ताम लाल  
 रे ॥ आवी बाहमने कहे ॥ मुज समरी किण काम  
 लालरे ॥ ति० ७ ॥ पाय लागी मंत्री कहे ॥ इच्छा क  
 रवा पाज लालरे ॥ दया कहे तुं तिहां करे ॥ चौखा  
 नाखुं आज लालरे ॥ ति० ८ ॥ दधी वचन कसो जे  
 दजे ॥ साळि तणी थई वृष्टी लालरे ॥ सुन म  
 हुरत जेइ तिहां ॥ पाजा करावे सृष्ट लालरे ॥ ति० ९  
 ॥ दोय कोमी लाख सत्ताणके ॥ सोधन टंका मान  
 लालरे ॥ तिहां लगाव्युं एटलुं ॥ धन बाहम परधान  
 लालरे ॥ ति० १० ॥ बाहमदे उदयन तणो ॥ उतायो  
 शिर भार लालरे ॥ पुत्र जण्यो परमाणने वान न

लोपे कार लालरे ॥ ति० ११ ॥ आव्यो पाटण गहगही  
 ॥ लेई सुजस अपार लालरे ॥ कुमरपाळ भूमाळने ॥  
 आवी कीधा झुहार लालरे ॥ ति० १२ ॥ डंडनायक अं  
 वम कीयो ॥ कीधां तीने काम लालरे ॥ कुळ दीपाव्युं  
 आपणुं ॥ राख्युं उदयन नाम लालरे ॥ ति० १३ ॥ अं  
 वड नुनने पूछीने ॥ जाये जरुअच मांहीं लालरे ॥ श्री  
 मुनीसुव्रत देहरे ॥ आव्यो अधिक उळांह लालरे ॥ ति०  
 १४ ॥ जिन मंदिर रळीयांमणो ॥ सामळीया विहार ला  
 लरे ॥ नाम इश्यो किण कारणे ॥ सुणज्यो तेह विचार  
 लालरे ॥ ति० १५ ॥ समळी एक इणे धानके ॥ वंठी त  
 रुअर माळ लालरे ॥ आहेमी सर सांधीयो ॥ वींधी  
 ते ततकाळ लालरे ॥ ति० १६ ॥ किणे श्रावके तेहने ॥  
 संजळाव्यो नवकार लालरे ॥ तेह मरी थइ कन्यया ॥  
 शुक्र नुप घर अवतार लालरे ॥ ति० १७ ॥ पंच परमंष्टी  
 सुणी जस्यो ॥ जातिसमरण सार लालरे ॥ तिणे करा  
 व्युं देहकं ॥ नाम सामळीया विहार लालरे ॥ ति० १८ ॥  
 अं वम देखी देहरो ॥ पाम्यो हरख विशाळ लालरे ॥  
 कठे जिनहरप पूरी थइ ॥ नव्याशीमी दाळ लालरे ॥  
 ति० १९ ॥ सर्व गाथा १९७२.

दुहा ॥ पण जिन मंदिर जाजरुं ॥ अंवन नय  
ण निहाळ ॥ फेरी नवो कराव्वा ॥ तुरत थयो उजमाळ  
॥ १ ॥ तेमव्या चतुर सिलावटा ॥ मांमी राग विसाळ ॥  
कोपा देवी नरवदा ॥ चांप्या पुरुष पयाळ ॥ २ ॥ बो  
ली वांधी वाकरी ॥ नाखे वयण कसूर ॥ देवळ जेह  
करावशे ॥ मारी करुं चकचूर ॥ ३ ॥ मंत्रीमन वीहनी  
नहीं ॥ चलतो कीधो काम ॥ साहस देखी नरवदा ॥  
वयण पयंपे ताम ॥ ४ ॥ अंबड तुं उत्तम पुरुष ॥ साह  
सीक सतवंत ॥ कर जिनभुवन सुहामणो ॥ हुं तूठी व  
ळवंत ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ नाजी अने मरुदेवी हीयडले हरष अ  
पार ॥ ६ ॥ देशी ॥ वळवाकळ-उळाळ लगन शुभ, मुहुरत  
वार ॥ श्री जिनभुवन करावीयो ॥ उंचो हाथ अठार ॥  
संवत वार वीसांतरे ॥ कीधो सामळीया विहार ॥ श्री  
मुनीसुवत थापीया आपीया प्रव्य अपार ॥ १ ॥ संघ  
घणा आवे मन जावे धरीय आणंद ॥ कुमर नरेश्वर  
आवीया ॥ आवीया हेमसुरिद ॥ विव प्रतिष्ठा तिहा  
करी ॥ बहु परे खरचीया दाम ॥ थापी मूर्ति सूरति

सुंदर मुगतिने काम ॥ १ ॥ मंत्री उतारी आरती ॥ सुज  
 मति कुमार नरिंद ॥ चामर विंजें रीझे देखी जिन मुख  
 चंद ॥ अंबम हरसि वरसे दाने जिम जळधार ॥ आर  
 ती वेळा लाख वप्रीस सोवन दीधा सार ॥ ३ ॥ अंबम  
 देवळ श्रंगे चढीयो हरप धरंत ॥ दंड धजा तळें आ  
 वीयो भावीयो नृत्य करंत ॥ नाचंतो उघामे मस्तके छ  
 ळीयो मंत्रीस ॥ कोपी देवी सींधवा गरुअच कोरी अ  
 धीश ॥ ३ ॥ जाण्युं हेमसुरीसर ईसर देवी विरतंत ॥ दे  
 वी देवळ आवी ठावी काउसग करंत ॥ तोही देवी को  
 प न मेल्ले चेलणो ताम ॥ ओखल चावल खांडतां धू  
 जे देवल ठाम ॥ ४ ॥ तोही न माने सींधवा मायों खी  
 लो ॥ घाय ॥ थरहरी देवी मूरति तोही कोप न जाय  
 ॥ मंत्रने जाप सभारीयो मारव्यो तीसरो घाय ॥ आ  
 वी चौसट जोगणी लागी श्री गुरु पाय ॥ ५ ॥ तारा १  
 त्रिपुरा २ तोतला ३ तुलजा ४ महीपला ५ तारण ६ ॥ हीं  
 गोली ७ हरिसिद्धी ८ हीमाली ९ दुख वारण ॥ चामुंमी  
 १० चंमी ११ ने चंडिका १२ खपरा १३ देवी ॥ सिंध  
 वाहिनी १४ दुरगा १५ खोजा १६ नरसेवी १७ ॥ ६ ॥  
 खोमीयारी १८ वारीही वागेश्वरी १९ महा मा २० ॥

अंवा२१ महाकाळी२२ कंकाळी२३ अंवाई२४ आई  
 ॥ सिंधवाने२५ सचीयाय२६ ॥ साकळी२७ मात्र२८  
 मातंगी२९ ॥ कामाक्षा३० कामरा३१ जगंवा३२ व  
 ण सुरंगी ॥ ३३ ॥ धनुषधरी३३ ज्वाळामुखी३४ स्त्रवज  
 खी३५ सुर सेवी ॥ मात भवानी३६ भद्रका३७ गारी  
 ३८ अविका देवी३९ ॥ मद्यभरी४० वळीय वरुची  
 ४१ गहिली४२ ने वहिरी४३ ॥ आशापुरी४४ पदमा  
 यती४५ कालिका४६ ब्रह्माणी४७ पहिरी ॥ ४८ ॥ विजया  
 ४९ ने गिरिजा४९ चोरवामी५० भैरवी५१ काला५२  
 ॥ लीलावती५३ उर्वसी५४ कालिंगी५५ करे बहु चा  
 ला ॥ हरिसिद्धी५६ वीरसिद्धी५७ गोरज्या५८ उमया  
 ५९ उसंडी ॥ नर्वदा६० गिरि देवी६१ सरवाणी६२  
 महा देवी६३ मुंमी६४ ॥ एं ॥ बांधी चोसठ योगिणि भो  
 गिणी करे पुकार ॥ छोमो ब्रोमो बंधन सूजी करी  
 अन्ह सार ॥ दीन वचन जाखे मुख देवी पाय नमेवी  
 ॥ तु जग जीव तणो प्रतिपाळक तुम पाय शेवो ॥ १ ॥  
 ॥ हेमसूरी कहे सीधवा अंवज मची कां छळीयो ॥ सु  
 कृत काम करंतनां कीधो विघन वळीयो ॥ देवी ताम  
 कहे हुं किकर अवज केरी ॥ २ ॥ माहरो अपराध कि

राधी करुं नहीं फेरी ॥ ११ ॥ छोमी ताम कृपा करी  
 देवी मुनी पाए लागी ॥ हेम नसंस्यो धन धन मुनीसर  
 तुं बडजागी ॥ विघन निवारयां अंवम केरां हेम पसा  
 य ॥ पुन्य दटी करी देवी निज घरे सवळी जाय ॥  
 १२ ॥ आव्या अंवम कुमर सूरुसर पाटण नाहि ॥ गु  
 रु व्याख्यान सुणे नर नृन अधिक उच्छांहे ॥ सुगुरु  
 कहे सुणो कुमर नरेशर एक चित्त होय ॥ सोळ ससा  
 बहु पुन्ये लहोये सांजळो सोय ॥ १३ ॥ सगुरु शेवाने  
 सुकुळ जनम संघ जगति सदहिणा ॥ सुद्रव्य सेवुंज  
 जात्र सुपात्र मुनीसर जहिणा ॥ सात खेच सत्य वचन  
 सुमति समाधान सरीर ॥ सनकित सील सिद्धांत साह  
 स गुण संघपति धीर ॥ १४ ॥ सोळ ससामां संघपति अ  
 धिको जिनसर जाखे ॥ श्री शत्रुंजय संघ कटोत्रे ना  
 मना राखे ॥ इंद्रनाळ पहिरीने संघवी नाम धरावे ॥  
 कहे जिनहस्य टाळ थड निवडई गुणीयण गावे ॥ १५  
 ॥ सर्व गाथा १९७३.

ढाळ ९१ मी

दुहा ॥ व्रतधर श्रावकमां वडो ॥ ते मुनी पाय  
 पडत ॥ मुनी आचारजने नमे ॥ आचारज अरिहंत



॥ १ ॥ अरिहंत संघ शणी नभे ॥ संघमां संघवी सार ॥ ते  
 संघवीपद पुन्ये हुवे ॥ शेवुंज जात्र उदार ॥ २ ॥ अन्य तिर  
 थ स्वट मास लगे ॥ सेव्यां पुण्य प्रकास ॥ शेवुंजय एक  
 खिण रहे ॥ तेहथी अधिकुं तास ॥ ३ ॥ नंदीसर यात्रा  
 करे ॥ युगम गुण फळ होय ॥ कुंडळद्वीप जुहारतां ॥  
 आति म धरज्यो कोय ॥ ४ ॥ रुचकद्वीप त्रिगुणं हुवे ॥  
 पुण्ये जुहारया देव ॥ पुन्य चउगुणं तेहथी ॥ गजदंता  
 नी शेष ॥ ५ ॥ तेहथी विनणुं पुन्य हुवे ॥ जंबु विरखें  
 जाय ॥ छ गुणं देव जुहारतां ॥ घातकी खंडे थाय ॥ ६ ॥  
 पुण्य बावीस गुणं हुवे ॥ प्रणम्यां पुष्करद्वीप ॥ सात गु  
 णं कनका चले ॥ सदगति होय समीप ॥ ७ ॥ सहसगु  
 णं पुन्य ते लहे ॥ समेत शिखर गिरि भाष ॥ लाख गु  
 णं अंजनगिरे ॥ अष्टापद दस लाख ॥ ८ ॥ कोडी गुणं  
 पुन्य तेहथी ॥ शेवुंज करतां जात्र ॥ देवजुगादि जुहारतां  
 ॥ पवित्र हुवे निज गात्र ॥ ९ ॥

ढाळ ॥ श्री विमळासिरि सिर तिलो ॥ ९ देशी ॥ स  
 कळ तीरथ सीर सेहरो ॥ शेवुंजय अमीरान ॥ पाप पू  
 रवला सहू स्वपे ॥ जपतां तीरथ नान ॥ स ० १ ॥ चालें  
 छहरी पाळतां ॥ निरमळ समकित शिळ ॥ गेटे तीरथ

भावशुं ॥ ते नर पामे लील ॥ स० १ ॥ सूरजकुंठ भीम  
 कुंठमां ॥ नाही निरंमळ निर ॥ पूजे जिनवर प्रेमशुं ॥  
 पावन होय शरीर ॥ स० ३ ॥ सात, छठ अठम वळी ॥  
 उपरे सहु चडविहार ॥ विकथा आरंभ, परिहरी ॥ ला  
 ख गणे नवकार ॥ स० ४ ॥ वे गति छेदे मूळथी ॥ वे गति  
 मां अवतार ॥ पशु पंखी जे जीवमा ॥ शेत्रुंजय गति  
 सार ॥ स० ५ ॥ पंच भरत ऐवत मांहे ॥ महाविदेह म  
 झार ॥ तीरथ शेत्रुंजय सारिखो ॥ नही कोइ हीयने  
 विचार ॥ स० ६ ॥ पहिली इण गीरी आवीया ॥ संधवी  
 संघ अजिराम ॥ जीर्ण उद्धार करावीया ॥ तेहनां सु  
 णज्यो नाम ॥ स० ७ ॥ रुपभ वचन भरते कीयो ॥ सोवन  
 मे प्रासाद ॥ प्रथम भरत संधवी थयो ॥ मुंकी सहु वि  
 खवाद ॥ स० ८ ॥ भरत परे संधपति थया ॥ कोनि नवा  
 णुं राय ॥ लाख नवाणुं उपरे ॥ सहेस चोरासी थाय  
 ॥ स० ९ ॥ भरत पाटे आदितजशा ॥ महाजशा वळ  
 वत ॥ अतिवळ पाटे तीसरे ॥ महावळ चोथे हुंत ॥  
 स० १० ॥ बळवीर्य पाटे पांचमे ॥ कीर्त्तिवीर्य जळवीर्य  
 ॥ ९ साते नुप सारीखा ॥ सवळो जेहनो धैर्य ॥ स०  
 ११ ॥ भरत अने साते विचे ॥ वीत्यां पूरव कोन ॥ १२

डवीर्य पाटें आठमे ॥ कीयो उद्धार सजोम ॥ स० १२॥  
 भरत परे संघवी थयो ॥ जग मांहे जस ॥ लीध ॥ इं  
 द्र प्रसंश्यो जेहने ॥ निरमळ निज कुळ कीध ॥ स०  
 १६ ॥ रिपभ तणा आव पाटवी ॥ भुवन आरिसा मां  
 ही ॥ भरत तणी परे केवळी ॥ ९ थया परम उच्छांह  
 ॥ स० १४ ॥ ते वार पछी बीजो कर्यो ॥ शशानेंद्र उद्धार  
 र ॥ चोथो उद्धार करावीयो ॥ मांहेंद्र उदार ॥ स० १५  
 कीधो कद्धार पांचमो ॥ पांचमो ब्रह्मेन्द्र जेह ॥ चंमरेंद्र  
 छठो कदावीयो ॥ सगर सातमो तेह ॥ स० १६ ॥ को  
 ढी पंचास थया भिला ॥ वळी पंचाणुं लाख ॥ सहेंस  
 पंच्योतें संघवी ॥ सगर वारें ९ भाख ॥ स० १७ ॥ द  
 स कोढी लाख सोर्हाभणी ॥ बीस लाख थया उद्धार  
 ॥ सगर समे बीव थापीया ॥ रतन कनक मय सार ॥  
 स० १८ ॥ व्यंतर इंद्रे आठमुं ॥ भुवन कराव्युं सार ॥ ब्र  
 ह्मजशा राजा थयो ॥ नवमो तास उद्धार ॥ स० १९ ॥ द  
 शमो चक्रधर रायनो ॥ राम इग्यारमो जाण ॥ कहे  
 जिनहरप पूरी थइ ॥ एकाणुं ढाळ वखाण ॥ स० २० ॥  
 सर्व गाथा २० २२

## ढाळ ९२ मी.

दुहा ॥ पांडव संघ करी गया ॥ शत्रुंजय सिरदा  
 र ॥ तिणे कराव्यो ऊमही ॥ द्वादशमो उद्धार ॥ १ ॥ वी  
 व कराव्यो काष्टमें ॥ लेपमें प्रतिमा कीध ॥ दीक्षा ग्र  
 ही केवळ लही ॥ थया शत्रुंजे सिद्ध ॥ २ ॥ पांडव बी  
 र विचे वरस ॥ सहस चोराशी जाय ॥ वीर पछी वि  
 क्रम नृपति ॥ च्यारसैं सितेर थाय ॥ ३ ॥ एकसो आठे  
 वळरे ॥ विक्रमथी सुविचार ॥ जावढ शेठ करावीर्यो ॥  
 ९ तेरमो उद्धार ॥ ४ ॥ पांडव जावढ विचे थया ॥ सं  
 घवी पंचवीस कोम ॥ लाख पंचाणुं सहेंस वळी ॥ पं  
 च्योत्तर सुजोम ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ जलेरे पधार्या तुम्हे साधुजीरे ॥ ९ देशी ॥  
 संवत बार चउदोत्तरेरे ॥ मंत्री बाहमदे सुविचाररे ॥  
 श्री शत्रुंजय शोभतोरे ॥ कीधो चउदो जिणे उद्धाररे  
 ॥ धन धन ते नर जाणीयेरे ॥ १ ॥ जिणें कीधा तीर  
 य उद्धाररे ॥ मानव जव जाहो लीयेरे ॥ छेद्यां पूर  
 व करम अपाररे ॥ ध० २ ॥ संवत बार व्यासीयेरे ॥  
 होश्ये संघवी वळी वस्तपाळरे ॥ संघ करश्ये शत्रुंज त  
 एरे ॥ विस्तरश्ये कीर्त्ति विशाळरे ॥ ध० ३ ॥ कोमी अ

ढार वित्त वावरेरे ॥ उपरे लाख गुणचाळीशरे ॥ हेम  
 टका जिणे तीरथरे ॥ रुढा खरचे अधिक जंगीसरे ॥  
 ध०१॥ एकवीस कोमी सोवने जलारे ॥ उपर अधि  
 का लाख छवीसरे ॥ आवू गिरनारे खरजीयारे ॥ सं  
 हु जाणे बीसवावीसरे ॥ ध०५॥ लाख-सवा जिनवर  
 तणारे ॥ रुढा विंव, जराव्या, वस्तपाळरे ॥ संवत तेर इको  
 तरेरे ॥ साह समरो थाश्ये तिण काळरे ॥ ध०६॥ क  
 रश्ये उद्धार ते पजरमोरे ॥ समरा जावम विचे संघप  
 तिरे ॥ विण लाख सहस चोरासीयारे ॥ रुहुं पाळे जे स  
 न्मक्तिरे ॥ ध०७॥ स्तर सहेंस सोनागीयारे ॥ वारु सं  
 घ थया जावसाररे ॥ सोळ सहेंस क्षत्री थयारे ॥ वळी  
 ब्राह्मण पनर हजाररे ॥ ध०८॥ वार सहस कौटंबिकारे  
 ॥ जे उआ कणवी थया नव सहेंसरे ॥ पांच सहेंस पी  
 सताळीशशुरे ॥ शंघवी जाते कंदास जस्सरे ॥ ध०९॥  
 ॥ संवत पनर शल्याशीथेरे ॥ होश्ये करमो शाह सिर  
 शररे ॥ धन खरची उजठ घणारे ॥ करशे शोळमो उ  
 दाररे ॥ ध०१०॥ जे पुण्यवंत नर होश्येरे ॥ जाश्ये शो  
 पुज कोरी जात्रे ॥ जेह सुखेने वित्त वावरश्येरे ॥ न  
 हुवे तेहने दुर्गति पातरे ॥ ध०११॥ दान न दीधुं शेवु

जं जहरे ॥ पाळयुं शील न पोख्यां पात्रर ॥ तास जन  
म अहिल गयोरे ॥ नवि कीची शेवुंजनी जात्ररे ॥ ध.  
१२ ॥ जिन प्रतिमा जिन देहसुरे ॥ न करळां जिणेदी  
नोद्धाररे ॥ शेवुंजगिरी चढीया नहीरे ॥ एळे तेहना ग  
यो अवताररे ॥ ध० १३ ॥ शिड अनंता इहां थयारे ॥ व  
ळी थारये आंग अनंतरे ॥ शत्रुंजय महिमा घणोरे ॥  
इम भाखे श्री जंगवंतरे ॥ ध० १४ ॥ ए गिरीना गुण गा  
वतारे ॥ कोइ पामी न शंके पाररे ॥ बाणुं थइ ढाळ ए  
टलेरे ॥ जिनहरपे जले अधिकाररे ॥ ध० १५ ॥ शर्व  
गाथा २०४२.

ढाळ १३ मी

दुहा ॥ श्री शत्रुंजय गुण घणा ॥ कहेतां किम  
कहेवाय ॥ इंद्र सरिखा देवता ॥ ते पण पार न जाय  
॥ १ ॥ रिषज जिणइ समोसरया ॥ पूर्व नवाणु वार ॥  
तिणे ए तिरय मोटको ॥ सहु तोरथमां सार ॥ २ ॥

ढाळ ॥ अविका ताह्या हुंता अमराथो ॥ ए दे  
शी ॥ शत्रुज भेटोये ॥ जावे गव्य प्राणी ॥ जवनां पा  
तिरु नासे ॥ मुगति तेणें सुख हेजे लहीये ॥ श्री  
जिनपर इम भाषे ॥ शे० १ ॥ गणधर श्री पुंजरिक प्रय

म जिन ॥ चत्री पुनन दीयशे ॥ पंच कोडीशुं मुगति,  
 पुहुता ॥ सूत्र शिद्धांते दीसे ॥ शे० ५ ॥ काति मास तणी  
 पुनम दिन ॥ द्रविमने वारिस्त्रि ॥ मुगति गया दश  
 कोमी मुनीग्रुं ॥ मुंकी माया शल्ल ॥ शे० ३ ॥ नमि वि  
 नमि दोय कोडी जंतीशुं ॥ कीधो शिवपुर वास ॥ फा  
 गुण शुद्धि दशमी सिद्धाचळ ॥ पूगी मननी आश ॥ शे०  
 ४ ॥ पाद असंख्याता रिसहेसर ॥ सहु शत्रुंजय च  
 नीया ॥ सरवारथ शिद्ध शिध्दे पुहुत्या ॥ करम शत्रु  
 शुं लनीया ॥ शे० ५ ॥ राम जरत दसरथना वेटी ॥ लेई  
 संयम भार ॥ वण कोमशुं शेत्रुंज शिध्या ॥ टाळयो  
 जिणे अवतार ॥ शे० ६ ॥ लाख एकाणुंशुं नारद ॥ मुनी  
 चर्मीया शेत्रुंज श्रुंग ॥ मुगति गया मुनीवर पाय प्रण  
 मुं ॥ निज मन केरे रंगे ॥ शे० ७ ॥ सबू प्रजून कुमर  
 केशवना ॥ संयम केवळ वरीया ॥ लाढी अठ कोमी  
 मुनीशुं ॥ शिव शेत्रुंजय सचरीया ॥ शे० ८ ॥ वीश कोडी  
 शु पाचे पामव ॥ मुगतिपूरी गढे लीधो ॥ श्री विनळा  
 चळ अणसण करीने ॥ करम तणो अंत दीधो ॥ शे०  
 ९ ॥ थावेचो मुनी सहेस संधांते ॥ आवी अणसण  
 लीधो ॥ करम स्वपाची केवळ पामी ॥ श्री शेत्रुंजय

सिद्धो ॥शे० १०॥ सुक तापस मुनी सहस्र यतीशुं ॥शे  
 श्रुंज लसो नम्र पाग ॥सेलक पंच सयांश्रुं,पाम्य ॥ मु  
 गति तणां सुख सार ॥शे० ११॥ एम अनेक मुनी मु  
 गते पुहुता ॥ कहेतां पार न लहीये ॥ वळी अनागत  
 काळे जाश्ये ॥ गिरि देखी गहगहीये ॥शे० १२॥ तीर  
 थ यणाअ छे जग मांहे ॥ कोइ नहीं इण तोले ॥ मु  
 गति तणो ए थानक कह्ये ॥ श्री अंधर इम बोले ॥  
 शे० १३॥ शिद्धाचळ जे जात्रा जाये ॥ धन धन ते  
 नर नारी ॥ ढाळ थई ए त्राणुं पूरी ॥ कहे जिनहरथ  
 विचारी ॥शे० १४॥ शर्व गाथा २०५८.

ढाळ १४ मी.

दुहा ॥ विमळाचळ महिमा कसो ॥ मुनीवर हेमसु  
 रिदा ॥ सांजळी मन हरसीत थग्यो ॥ ततखिण कुमर नरिंद  
 ॥१॥ तन धन जोवन कारमो ॥ जात न लागे वार ॥  
 बहि ते वार विमलगिरी ॥ जात्र करुं शिरदारा ॥२॥ धन ख  
 रचुं शेजुंज जइ ॥ पूजु आदि जिणंद ॥ त धन दिन स  
 फळी चमी ॥ चिंते कुमर नरिंद ॥३॥ इतला दिन अहि  
 ले गया ॥ न लसो तीरथ जेद ॥ हेमशुरी सुयसाउजे  
 ॥ हवे मुज थयो उमेद ॥४॥



ઢાલ ॥ મરત નૃપ જાવશું ॥ એ દેશો ॥ કરે સ  
 જાડ નૃપ હવે ॥ ખેટવા તીરથરાય ॥ કુમર નૃપ સંચરે  
 ॥ જાણે ॥ જડે ॥ ઉતાવળા ॥ દીલ ન સ્વમણી જાય ॥  
 કુ ૦ ૧ ॥ ખેટું ખેટું રિષમના પાય ॥ કુ ૦ હીયમે હરસ ન માં  
 ચ ॥ કુ ૦ ૨ આંકળી ॥ ગજ પુંથે દેવલ ઠગ્યા ॥ માંહે જિ  
 નવર ત્રિવ ॥ કુ ૦ મન વંછીત સુખ પૂરવા ॥ જાણે સુર  
 તરુ કંવ ॥ કુ ૦ ૨ ॥ વાહમદે સરિસા મલા ॥ વુદ્ધિવંત  
 મંત્રી ચોવીસ ॥ કુ ૦ અડાર સહેસ વિવહારીયારે ॥ સાથે  
 થયા જગીસ ॥ કુ ૦ ૩ ॥ નગરશેઠનો દીકરો ॥ આખમદે  
 ૨૨ નામ ॥ કુ ૦ સોનડયા લાહણ કરે ॥ શ્રાવક ઘર  
 જિણે ગામ ॥ કુ ૦ ૪ ॥ ગામ નગર વાસી નરા ॥ સાથે  
 થયા અનેક ॥ કુ ૦ મોજન ખુલ્યા દૂવલા ॥ આપે  
 આણી વિવેક ॥ કુ ૦ ૫ ॥ સ્વદ દરિદ્રાણ સાયે ચલ્યાં ॥  
 સહુની લ્યે નૃપ સાર ॥ કુ ૦ હેનાચારજ હરસચું ॥ કા

द बहेता गजराज ॥ कु० इग्यारसैं अति साजताः ॥ ति  
 एगारया झुले साज ॥ कु० ९॥ रतन जमीत कचन  
 जणीः ॥ अवामी शोजत ॥ कु० काने चामर बीजता  
 ए ॥ चाले गति मलपंत ॥ कु० १०॥ हीमावर करता झ  
 लाए ॥ हयवर लाख इग्यार ॥ कु० चचळ चपळ गति  
 चलेः ॥ सोवन साकळ सार ॥ कु० ११॥ लाख अढार  
 पायक पुलेः ॥ रथ पचास हजार ॥ कु० सोवन सी  
 ने बळडीयाए ॥ पाए नेवर झमकार ॥ कु० १२॥ नाथ  
 कनक रतने जडीए ॥ कोटे धूपरमाळ ॥ कु० धम धम  
 चाले उतावळाए ॥ मृग जिम भरता फाळ ॥ कु० १३  
 ॥ अलव धजा नूर आगळेए ॥ आठ सहेंस चालत ॥  
 कु० केर नर बेठा पालखीए ॥ नतवाल्हा मालत ॥  
 कु० १४॥ संध तणी शोभा वनीए ॥ पार नही नर नार  
 ॥ कु० व्यापारी माही घणाए ॥ निज निज करें व्यापा  
 र ॥ कु० १५॥ पटराणी राजा तणीए ॥ भोपदेवी वनी  
 नार ॥ कु० काया कचन सारिखीए ॥ सोळ सज्या सि  
 एगार ॥ कु० १६॥ चंद्रमुखी मृग लोयणीए ॥ वेणी श्या  
 म भुजग ॥ कु० मित्रलंकी सुंदरीए ॥ सुघटी अंग सुरें  
 ग ॥ कु० १७॥ आभरणे अति ओपतीः ॥ इंद्र तणी

जाणे नार ॥ कु० वनता वेश वनावीयाए ॥ नख सी  
ख अवल आकार ॥ कु० १७ ॥ राणी वेठी पालखीए  
॥ चावे मुख तंवोळ ॥ कु० ढाळ चोराणुं ९ थड ॥ क  
रे जिनहरप कलोल ॥ कु० १७ ॥ सर्व गाथा २०८१.

ढाळ १५ मी.

दुहा ॥ व्होतेर सामंत रायने ॥ कोडे सुंदर नार ॥ रुपे  
रंभा सारिखी ॥ पहेरव्या सहु शिणगार ॥ १ ॥ पहेर्या सुंदर  
शोभता ॥ किणइक राता चीर ॥ किणइक पीळा पातळा ॥  
झळके मांहिं शरीर ॥ २ ॥ किणइक धवळा पहेरीया ॥ झी  
णा बूटीदार ॥ सुरिज किरण झगमगे ॥ मुंहगा मोल  
अपार ॥ ३ ॥ निल्या वस्त्र विराजता ॥ पहेरव्या किणइ  
क नार ॥ ओपे जाणे अपछरा ॥ न्हों एहवी संसार  
॥ ४ ॥ श्याम वस्त्र पहेरव्या अवल ॥ गोरी घणे उळांह  
॥ जाणे चमके बीजळी ॥ काळा वादळ मांह ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ चोपस्ती ॥ राग कालहरो परजीयो ॥  
सुंदर नारी कर्या शिणगार ॥ रुप तणो जे करे अहं  
कार ॥ सामलडीने गोरी हसे ॥ श्युं शिणगार करी उ  
ल्लसे ॥ १ ॥ काळी सांभळ गोरी कहे ॥ तुं आदर किहां  
नवि लहे ॥ करमे तुज काळी थड देह ॥ फोफुट गर

व करे शु एह ॥ २ ॥ जो करे तुं शिणगार अनंत ॥  
 तोही बाहली न हुवे कंत ॥ उजि रहे तुं जिहां जिहां  
 जाय ॥ तिहां झवक अंधारो थाय ॥ ३ ॥ सांजळ गो  
 री बोल विचार ॥ फोकट मद कां करे अपार ॥ का  
 ला पाणी आदर लहे घणूं ॥ हास न करीये काळा  
 तणुं ॥ ४ ॥ काळा गज गाजे दरवार ॥ द्रोने देखण स  
 हु संसार ॥ श्याम घटा करी वरसे मेह ॥ सहुने बाह  
 लो लागे तेह ॥ ५ ॥ काळो काजळ नयणे सोह ॥ दे  
 खी नरने उपजे मोह ॥ काळी कीकी नयण मझार ॥  
 ते पाखे सुनो संसार ॥ ६ ॥ काळो मांथे वेणी दंभ ॥ ते  
 बिण शोभा नहीं अखंड ॥ कस्तुरी पण काळो होय  
 ॥ मुंधी आदर घे सहु कोय ॥ ७ ॥ काळी कोयल न  
 धुरो चवे ॥ शब्द सुणी हरखित सहु हुवे ॥ काळा  
 कान्हू नेमीसर पास ॥ दरशण दीठां परम उलास ॥ ८  
 ॥ काळी देखी महसि गमार ॥ मांही गुण जोइजे सार ॥  
 गोरा जो गुणहीण होय ॥ तेहने नान न आने कोय ॥  
 ९ ॥ गोरा बगला बगली जमे ॥ पण कोने दीठां नधि  
 गमे ॥ गोरा भूति माणस होय ॥ तेहनी ठीक करे सहु  
 कोय ॥ १० ॥ धोळा माणस हुए रोगीयां ॥ पूरव पापे

थथा सोगीया ॥ गोरा माथे, देखी, मूआल ॥ वर काम  
 णि भागे ततकाळ ॥ ११ ॥ इण वचने गोरी, धमहमी ॥  
 रहे काळी निज ठामे पमी ॥ लीहाळा सरिखो तुज  
 वान ॥ रुप विना श्युं करे अतिमान ॥ १२ ॥ गोरा ते प  
 रमेशर कीया ॥ गोरा मां सहु गुण आवीया ॥ सोनानो  
 पंजर होय ॥ मांहि काग न घाले कोय ॥ १३ ॥ कि,  
 हां चांदरणो किहां अंधेर ॥ गोरी, काळी एवढो फेर  
 ॥ काळा वायस न गमे अपार ॥ गोरा हंस अल्प त  
 सार ॥ १४ ॥ उजळ गंगा केरो नीर ॥ जेणे थाये पवी  
 त्र शरीर ॥ उज्जळ गयण, विराजे चंद ॥ फोडी तिमर  
 करे आणंद ॥ १५ ॥ गोरो इंद्र तणो गजराज ॥ सुरप  
 ति वाहन करे अवाज ॥ गोरो चुनो स्त्रीने हाथ ॥ के  
 ल करे निज प्रीतम साथ ॥ १६ ॥ उज्जळ मोती मंहर्षा  
 मोल ॥ पुष्प कपूर नहीं किण तोल ॥ रुपो चंदनने  
 घनसार ॥ दूध दर्हीं घृत उज्जळ सार ॥ १७ ॥ गोरी का  
 ली कीधो वाद ॥ पण इणमां को नहीं सवाद ॥ ढाळ  
 थई पंचाणुं सार ॥ हवे जिनहरप सुणो अधिकार ॥  
 १८ ॥ सर्व गाथा २१०४.

हुहा ॥ वारे गरढी आवीका ॥ नाम सरूपदे जा  
 स ॥ नारी वाद निमेनवा ॥ जासे मधुरी भास ॥ १ ॥ पु  
 न्य करे तीरथ जइ ॥ खरचे द्रव्य अपार ॥ कळह उ  
 वाधि वादथी ॥ तेहमां क्रिश्या सवाद ॥ २ ॥ पुन्य करे  
 तीरथ जइ ॥ खरचे द्रव्य अपार ॥ पोखे उत्तम पात्र  
 ने ॥ रुपवती ते नार ॥ ३ ॥ दान दीये कर दाहिणे ॥ न  
 कहे मुख नाकार ॥ पर उपगार करे सदा ॥ सखर वा  
 स शिणगार ॥ ४ ॥ सात ददा अंगे धरे ॥ तेहनो रुप  
 ममाण ॥ दया दान इंद्री दमन ॥ दुख भंजोवा मुजाण  
 ॥ ५ ॥ दिन वचन निज दाखवे ॥ दुरजन न गणे को  
 य ॥ बोलत हाळे जे हुवे ॥ सहमां अधिकी सोय ॥  
 रीस न करश्यो वहेनमी ॥ तम्हे सामिणी सिरदार ॥  
 रुप तुनारुं सोजश्ये ॥ पुन्य धकी निरघार ॥ ७ ॥

ढाळ ॥ छठि कलालण जरे घमोहे ॥ नयणां नी  
 द निवारे ॥ ९ देशी ॥ इणे वचने हरस्वित थइहे ॥ हि  
 यमा मांहीं विचारी ॥ मांही मांहीं स्वमावीयोहे ॥  
 वे गुणवंती नारी ॥ वाइ सांगळोहे ॥ वेनी सांगळोहे ॥  
 सदीयर सांगळोहे ॥ १ ॥ स्वमज्यो मुज अपराध ॥ गो

री वीनवेहे ॥ लुली लुली पाय नमेहे ॥ खंमज्यो मु  
 ल अपराध ॥ ए आंकणी ॥ कोइक कामणी कंतश्युहे  
 ॥ चाले चढि चकडोळ ॥ कोइ गज रथ पालखीहे ॥  
 वंठी करे रंगरोळ ॥ वा० १ ॥ कमळ मुखी मधुरे सरेहे ॥  
 गावे गिरीवर गीत ॥ हियडो हेजे जलसेहे ॥ चाले  
 रुमी रीत ॥ वा० २ ॥ संघ जइ जिहां उतरेहे ॥ तुरत  
 कुमार राजान ॥ भोजन करावे अति जलाहे ॥ विधी  
 पिधीना पकवान ॥ वा० ३ ॥ नाम कही श्युं दाखवुहे ॥  
 जाणे सह संसार ॥ संघ जिमावे आवश्युंहे ॥ मन वं  
 छीत आहार ॥ वा० ४ ॥ उपर आपे अति घणाहे ॥ ल  
 विंग सोपारी मान ॥ भगति करे इम संघनहि ॥ कुम  
 रपाळ राजान ॥ वा० ५ ॥ विंगताळा विवहारीयाहे ॥  
 फांदाळा फावंत ॥ वहेल सुखासन पालखीहे ॥ इम वे  
 ठा चालंत ॥ वा० ६ ॥ माहीं बाई जलजलीहे ॥ सुकु  
 लीणी सीरदार ॥ हाथ छछोहा वावरेहे ॥ लये लाहो  
 इण वार ॥ वा० ७ ॥ कोइक पदचारी चालेहे ॥ कोइक स  
 चित परिहार ॥ चवद नियम कोइ धरेहे ॥ कोइक ध  
 रे व्रत वार ॥ वा० ८ ॥ एहवा संघ माहीं घणाहे ॥ धर  
 शी नरने नार ॥ मज्जल करे गाड पंचनहि ॥ राते

लण निवार ॥ वा० १० ॥ जयणा करतो जीवनीहे ॥  
 चाले संघ समाज ॥ पंथे फळ चूंदे नहीहे ॥ जेट्यां  
 विण गिरीराज ॥ वा० ११ ॥ जयणा करता जाशेहे ॥ त  
 जीये सहू आरंभ ॥ भावे तीरथ जेट्यांहे ॥ लहीये मु  
 गती सुलंभ ॥ वा० १२ ॥ जयणाश्रुं संघ चालतोहे ॥  
 आव्यो धधुके गाम ॥ नगर सयळ लाहण करेहे ॥ सो  
 नईयानी ताम ॥ वा० १३ ॥ तिहांथी वालय चमारडीहे  
 ॥ उतरीयो संघ आय ॥ वे परवत मोठा तिहांहे ॥ वे  
 जिनभुवन कराय ॥ वा० १४ ॥ एक रिषभ जिनवर त  
 णोहे ॥ बीजो पास जिणंद ॥ तिहांथी चाली आवीग्रा  
 हे ॥ शेबुंजे आणंद ॥ वा० १५ ॥ नयणे शेषुंज निरखी  
 योहे ॥ हियने हरखीत थाय ॥ अंजली भरी वधावीयो  
 हे ॥ सोवन फुले राय ॥ वा० १६ ॥ गिरिवर चमीया ग  
 हगही ॥ नयणे दीठा स्वामि ॥ थाळ जरी मुगताफळेहे  
 ॥ रीषभ वधान्या ताम ॥ वा० १७ ॥ देइ तिन प्रदक्षणा  
 हे ॥ प्रणम्या तीरथ राय ॥ नात्या सूरज कुंडमाहे ॥  
 प्रभु चरणे चित लाय ॥ वा० १८ ॥ केसर चंदन कुं  
 कुमेहे ॥ कस्तुरी घनसार ॥ पूजे नूप जिनवर जणी  
 हे ॥ अगर उखेवे सार ॥ वा० १९ ॥ कमळ सुगंधा के



तकीहे ॥ जाइ जुइ नचकुंद ॥ फूल तणी आंगी रचे  
 हे ॥ सइ हथे कुमर नरिद ॥ वा० २० ॥ सत्तरभेद पूजा  
 करीहे ॥ भाव धरी सुविसाल ॥ कहे जिनहरष सोहा  
 मणीहे ॥ थइ ए छन्नुं दाल ॥ वा० २१ ॥ सर्व गाथा  
 १६३२ ॥

हा सूर॥ धनपति आगळ माहरो॥ रति न वाधे नूर॥ ७॥

ढाळ॥ नींदमली वेरण हुइ रहो ॥ ९ देशी ॥ सां  
 झळ नृप कुमर नरेशरु ॥ जिन उपरेहो एहनो बहु राग  
 ॥ कहे हेमसूरी कुमर नरिंदने ॥ जंबुने हित जिम मु  
 गतिशुं ॥ गौतमनेहो वाहलो वितराग ॥ क० १॥ मोटो  
 मोटोहो जगमां सोभाग ॥ क० जिण पाम्याहो शिवपु  
 रनो माग ॥ क० ए आंकणी ॥ जिम मानसरोवर हंस  
 ने ॥ कोयलनेहो वाल्हो सहकार ॥ क० निरधनने जि  
 म धन वाल्हो ॥ बाळकनेहो माताश्रुं प्यार ॥ क० २॥  
 धनपाल महा कवियण भणी ॥ तिम वाल्होहो श्री री  
 पझ जिणंद ॥ क० एहनी नवि थाये वरावरी ॥ ए आ  
 गळहो माहरी मति मंद ॥ क० ४॥ राय कुमर कहे पर  
 गुण ग्रहे॥ ते गिरुआहो गुणवंत गंभिर ॥ क० निज गुण  
 हीणा करी दाखवे ॥ जाणीजेहो ते उत्तम धीर ॥ क०  
 ४॥ मुज नयणे तुम सरिखो यति ॥ कोइ नावेहो जो  
 तां मुनीराय ॥ क० तुज मांहीं दोष न को देखुं ॥ दु  
 ध मांहींहो पूरा नवि थाय ॥ क० ५॥ सुणराजन एंति  
 रथ मोटो॥ कर स्तवनाहो एहनी चित्त लाय ॥ क० इहां  
 पूरव नवाणुं रिपतजी॥ आवी आवीहो फरश्मो गिरिरा

य ॥क०६॥ रायण तळे आवी समोसर्या ॥ तिणे का  
 रणहो एहने द्यो मान ॥क०॥ अठम एक इण ठामे करो  
 ॥ वृक्ष रायणहो पूज्यो धरी, ध्यान ॥क०७॥ रायण  
 नी राय पूजा करी ॥ करव्यो अठमहो फरश्यो गिरीरा,  
 ज ॥क०॥ चिहुं पासे दीध प्रदक्षणा ॥ आवी पूज्याहो  
 प्रभु शिवपूर काज ॥क०८॥ नव रतन नव अंगे धरे ॥  
 सोयनमेंहो वर धज एकवीस ॥क०॥ मोतीनां छ छत्र चा  
 मर कर्या ॥ जिनवरनेहो शिर धर्या, जगीश ॥क०९॥  
 कंचण मणी थाळ भरी, ॥ मुगताफळहो जिन आगळ  
 मेलही ॥क०॥ गुण गीत गावें आगळ रही ॥ दुरगतिने  
 हो इम नाखे ठेल ॥क०१०॥ जिन भगति नृपति उ  
 भो करे ॥ एक चारणहो बोल्यो तिण वार ॥क०॥ एक  
 फूले जे जिनवर पूजे ॥ ते पामेहो नर, शिव सुख सार  
 ॥क०११॥ देखो जिनवरनी भोजिमा ॥ फूल माटेहो,  
 आपे शिवराज ॥क०॥ एहवो जिनवर मोटो, दाता ॥ त  
 जि बीजाहो सेवो किण काज ॥क०१२॥ रुअडो वि  
 मळाचळ राजीयो ॥ जे आपेहो निज अविचल धो,  
 न ॥क०॥ पूजिजे आदिसर भणी ॥ रुअमो वळीहो ते  
 कुमर राजान ॥क०१३॥ एक आदिशर अरिहंतने ॥

धीजो राजाहो पाटणनो जेह ॥ क० जो याचो तो ९  
 याचज्यो ॥ जिम नांजेहो दाळिदनो गेह ॥ क० १४ ॥  
 आज कविन करम सहु निरदळ्यां ॥ आज दीठाहो  
 रिसहेस नरेश ॥ क० पुण्योदय आज थयो सही ॥ म  
 न वंछीतहो आज लाभ लहेश ॥ क० १५ ॥ हवे चा  
 रण कुमर नरिंदनी ॥ करे किरतीहो गुण गावे जास ॥  
 क० जिनहरप ढाळ पूरी थइ ॥ सत्ताणुंहो मनने उछा  
 स ॥ क० १६ ॥ सर्व गाथा २१५५ ॥

ढाळ १० मी.

दुहा ॥ कुमर नरेशर ताहरो ॥ पुढवी प्रगट प्रताप  
 ॥ हीम तणी परे अरियणां ॥ उपजावे संताप ॥ १ ॥ प्र  
 आपाळ भूपाळ तुं ॥ जीवे कोडि वरिस ॥ तुं उगारी  
 सहु तणो ॥ जगत्र दीये आसीस ॥ २ ॥ सूर तो दाता  
 नहीं ॥ दाता तो नहीं सूर ॥ दाता ने सूरपणुं ॥ तुज  
 गुण वे भरपूर ॥ ३ ॥ कुमर राय दीठा पछी ॥ वीजा ना  
 वे दाय ॥ झील्यो गंगा नीरमां ॥ वाहलीया न सुहाय  
 ॥ ४ ॥ मानसरोवर हंसलो ॥ राचे सूर संग्राम ॥ कविय  
 ण राचे कुमरशुं ॥ दान मान अजिराम ॥ ५ ॥ वीजा  
 नर याचुं नहीं ॥ याचुं तो जगदीश ॥ के याचुं कु

भर नरेशने ॥ पूर्वे आश जगीश ॥ ६ ॥ तुं कुळदीपक  
 दिन मणी ॥ तुं साधर गंभीर ॥ कल्यद्रुम याची करी  
 ॥ याचुं केस करीर ॥ ७ ॥ पर मंदिर शेवा करे ॥  
 कुमर न भेटलो ज्यांह ॥ कुमर नरिंद भेटला पळी ॥  
 हाथ न ओढे क्यांह ॥ ८ ॥

ढाळ ॥ श्रेणीकराय हुंरे अनाथी निग्रंथ ॥ राग  
 केदारो ॥ एहवां वचन चारण कक्षां ॥ नृप सांभळी  
 निज कान ॥ नव लाख तस सोवन टका ॥ दीधा रा  
 येरे चारणने दान ॥ ५ ॥ कुमर राय तुं मोटो दातार ॥  
 तुज सरीखेरे नहीं को संसार ॥ कु० १ आंकणी ॥ चा  
 रण कहे कर जोर्गने ॥ सांभळो अवनी नाथ ॥ मुज अया  
 ची तें कीयो ॥ नवि ओढरे किए आगळ हाथ ॥ कु०  
 २ ॥ आसीत दे चारण चलयो ॥ पहेरगा अवसर मा  
 ल ॥ बहु मिल्या नर विवहारीया ॥ वागशट बोल्यां  
 रे वयण रसाल ॥ कु० ३ ॥ लाख व्यार सोवन हुं दीडे  
 ॥ आठ लाख कहे भूपाळ ॥ वाहन कहे सोळ लाख  
 धुं ॥ मुज आपोरे राजन इंद्रमाळ ॥ कु० ४ ॥ राजा क  
 हे हुं आपशुं ॥ रुमा सोवन लाख वजीश ॥ श्रावक ९  
 क तिहां बोलीयो ॥ कर जोडीरे कहे सांभळ ईश ॥

कु० ५॥ सवा कोनि सोवन हुं दीलं ॥ राय तेम्यो ते  
 शेठ ॥ आगळ आवी उमो रसो ॥ राय हरख्योरे देखी  
 ते देठ ॥ कु० ६॥ वासीअछुं महुआ तणो ॥ हांसु पि  
 ता धारुं माय ॥ सुत तास नामे जगडुओ ॥ राजानेरे  
 ते आळो दाय ॥ कु० ७॥ साहमी श्रावक जाणीने ॥  
 नृप ताम दीधी माळ ॥ माता तणे घाली गळे ॥ ९ श्युं  
 कीधारे फहे भूपाळ ॥ कु० ८॥ मात समो तीरथ नहीं ॥  
 विहुं लोक मांहीं कोय ॥ जिणे माय मानी आपणी ॥  
 घर वेठारे तीरथ फळ होय ॥ कु० ९॥ जिणि माय उ  
 यरे धारीयो ॥ मळ मूत्र नांख्यां धोय ॥ पूजे चरण  
 माता तणा ॥ गुण तोहीरे उर्साकल न होय ॥ कु० १०  
 ॥ सोवन वरावर मायने ॥ जो तुला तोले कोय ॥  
 तीरथ करावे लेश खवे ॥ गुण तोहारे ऊरण न होय  
 ॥ कु० ११॥ म्हा उठी प्रणमे माय चरण ॥ पाणी पीये  
 पग धोय ॥ इंद्रमाळ पहेरावे गळे ॥ गुण तोहीरे ऊर  
 ण न होय ॥ कु० १२॥ तिणे कारण शाह जगडुए ॥  
 माळ उची माय कोट ॥ एहवो अवसर किहां गळे ॥  
 नयि कीजेरे इहां मननी खोष्ट ॥ कु० १३॥ एक रतन  
 कोडी सवा तणो ॥ आपीयो शेडे छोम ॥ राय हरखी

यो देखी करी ॥ कोइ बीजोरे नावे एहनी जोम ॥  
 कु० १४ ॥ ए जैन धरमो साहमी ॥ जिन धरमनो प्र  
 तिपाळ ॥ जिन जगति एहने चित वशी ॥ पाय प्रणमुं  
 रे कहे इम जूपाळ ॥ कु० १५ ॥ गुण स्तव्या नृप जगहु  
 तणा ॥ नृपना स्तवे गुण हेम ॥ धन धन कुमार नरिं  
 द तुं ॥ जिन पूज्यारै आणी बहु प्रेम ॥ कु० १६ ॥ एक  
 ताम चारण बोलीयो ॥ सांजळ नृप कहु यात ॥ ए  
 ढाळ अठाणुं थइ ॥ जिनहरपरे गार्इ सुविख्यात ॥ कु०  
 १७ ॥ सर्व गाया २१८०.

ढाळ १९ मी.

दुहा ॥ एक अचंजो जगतमां ॥ रुप धरे घनशा  
 म ॥ आपे उज्जळ जळ प्रथळ ॥ जगत वधारे मान ॥  
 १ ॥ गाय चरे सुकूं तृगां ॥ पीये ते डोहळो नीर ॥  
 जोवो एह पटंतरो ॥ श्रवें अमृत खीर ॥ २ ॥ उतपति तो  
 नृग नाजिमां ॥ नाजि तणो मळ जेह ॥ कर्तुरी परि  
 मळ बहुल ॥ वाल्ही सहने तेह ॥ ३ ॥ मोटा मुंहघां  
 उपजे ॥ मुतादल गज सीस ॥ नर नानी नृप आदरी ॥  
 देखी धरे जगीस ॥ ४ ॥ नामे कहिये तातूओ ॥ रहें  
 ते पाणी मांहि ॥ सांकळनी परे सांकळी ॥ राखे कुंजर

सांहि ॥ ५ ॥ तिम हेमाचारज प्रते ॥ नीचा नमीया जेह ॥

पामे ते ऊंचि मुगति ॥ मुज मन अचरिज एह ॥ ६ ॥

ढाळ ॥ दोई दल मेल्यारे दामिली ॥ ९ देशी ॥ हेम.

तुम्हारा गुण घणा ॥ मुज मुखे रसना एक ॥ १० ॥ हुं मूरखः

किणि परे कहूं ॥ मुज नहीं तेहवो विवेक ॥ हे ० १ ॥ पवन-

तणी परे हुं फिर्यो ॥ सह जग मेल्योरे जोय ॥ हेमसूरिसर

सारिखो ॥ में दीगे नहीं कोय ॥ हे ० २ ॥ विद्या किरिया गुण

साधुना ॥ सीले जे निकलंका ॥ अंगे अवगुण ओवतां ॥ को

इ न दीसे वंका ॥ हे ० ३ ॥ एकेकी जग जोवतां ॥ सह मांहीं

छे खोम ॥ खोम नहीं हेमसुरिनां ॥ कोण करे तस

होड ॥ हे ० ४ ॥ हेम समो मुनिवर नहीं ॥ प्रतिबोध्यो जि

णे राय ॥ जीव दया पाळक सही ॥ प्रणमुं लुलि लुलि

पाय ॥ हे ० ५ ॥ चारण कहें मुनी हेमनो ॥ में दीडो दीदा

र ॥ पाप गया मुज परिहंरी ॥ निधि पाम्या सिरदार ॥

हे ० ६ ॥ दाळीदगयो हवे माहरो ॥ वळीया सारा दीश ॥

हेन तणो मुख देखतां ॥ तुठ्यो मुज जगदीश हे ॥ ० ७

॥ चारण वचन सुणी करी ॥ हरख्यो कुजरनो मना ॥ हे

म सिस करी लुंछणा ॥ नव लख दीधा सोवन ॥ हे ० ८

॥ विमळाचळयी उतर्यो ॥ गिणतो जनम प्रमाण ॥ पग



पग सोवन नाखतो ॥ धरतो जिनवर आण ॥ हे० ९ ॥  
 पहेराव्या चिर तलहटी ॥ जिमाव्यो सहु संघ ॥ सुभ  
 क्षेने वित वावर्यो ॥ पाप तणो थळ संघ ॥ हे० १० ॥ शे  
 वुंजय टूंक पांचमो ॥ गिरुओ गढ गिरनार ॥ चाल्यो  
 संघ झुहारवा ॥ माणसने नहीं पार ॥ हे० ११ ॥ वाटे  
 जिनवर पूजतो ॥ चाल्यो कुमर सुजाण ॥ आवी धी  
 धा गिरी तलहटी ॥ जूनेगढ मेल्लाण ॥ हे० १२ ॥ था  
 ल जरी गज मोतीयां ॥ लुछणमा करे राय ॥ संघ च  
 मळो गिरी उपरे ॥ हियमे हरखीत थाय ॥ हे० १३ ॥  
 देई तिन प्रदक्षणा ॥ प्रणम्या नेजी जिणंद ॥ पूजा कि  
 धी नव लखी ॥ हगखे देखी वंद ॥ हे० १४ ॥ अगर सु  
 गंध उखेवीया ॥ कीधी आरति राय ॥ पूजे सहु संघ  
 जिन जणी ॥ गुण गावे चित्त लाय ॥ हे० १५ ॥ हेम  
 कहे नृप सांगळो ॥ लिखमी ताम प्रमाण ॥ जेह धरा  
 वे तीरये ॥ संघपति तिलक सुजाण ॥ हे० १६ ॥ सेवुंज  
 य पुण्य जेटलुं ॥ रैवत तेडलुं होय ॥ पांचमो टूंक  
 शेवुंजनो ॥ पंचम गति ये साय ॥ हे० १७ ॥ पंदले आ  
 रे ९ गिरि तणो ॥ नाम हुतो कैलाम ॥ उज्जेन नाम वी  
 जे आरे ॥ वीजे रैवत भास ॥ हे० १८ ॥ नाम सरण चो

थे आरे ॥ पांचमें आरे गिरिनार ॥ नाम दुश्ये छे  
 आरे ॥ मंदप्रद सुविचार ॥ हे० १८ ॥ स्वमविश ते पहे  
 ले आरे ॥ बीजे बीश ते जाण ॥ स्वोमश वळी बीजे  
 आरे ॥ चौथे दश सुप्रमाण ॥ हे० १९ ॥ उंचो जोयण  
 पांचमें ॥ दोय धनुष सत मान ॥ त्रिण्ह कल्याणकजि  
 न तणां ॥ यथां अमंत प्रधान ॥ हे० २० ॥ पद्मनाभादि  
 क सिजश्ये ॥ इहां बावीस जिणेंद ॥ ए तीरथ महिमा  
 निलो ॥ नेट्यां परम आणेंद ॥ हे० २१ ॥ एहना गुण  
 कहूं केटला ॥ एहना गुण सुविसाल ॥ कहे जिनहाप  
 पूरी थइ ॥ एह नवाणुंभी दाळ ॥ हे० २२ ॥ सर्व गाथा  
 २२०६.

ढाळ १०० नी.

दुहा ॥ वचन इश्यां गुरुनां सुणी ॥ राय कहे सुतने  
 ह ॥ स्वामी प्रतिमा वज्रमय ॥ कवण करावी एह ॥ १ ॥  
 कहें अतीत चौबीसीये ॥ सागर तृतीय जिणेंद ॥ उ  
 ज्जणी नयरी तणो ॥ नरवाहन मणुस्तिंद ॥ २ ॥ - सम  
 वसर्या सागर तिहां ॥ राजा वंदण जाय ॥ जिनवरदी  
 धी देशना ॥ सुणी सहु चित लाय ॥ ३ ॥ कर जोनी  
 नुर पूछीयो ॥ मुज कदि केवलनाण ॥ थारये सगिर

जिन कहे ॥ सांभळ तुं राजान ॥ ४ ॥ नेमि हुशये वावी  
समो ॥ तुजने मुगति तिवार ॥ नरवाहन वैराग्य धरि ॥  
स्त्रीधो संयम भार ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ दादो दीपतो, दीवाण ॥ सुरनराजास माने आ  
ण ॥ ए देशी ॥ राग सोरठ ॥ सुद्ध, संयम राय पाळी ॥  
जही सुर गति साररे ॥ देवलोक पांचमें इंद्र सागर ॥  
आयु दस विस्ताररे ॥ १ ॥ धन धन एह श्री गिरनारि ॥  
जिहां चढ्यो नेमि कुमार ॥ धन ० ए आंकणी ॥ अव  
धी ज्ञाने जव संभारी ॥ नेमि प्रतिमा तामरे ॥ देहरासर  
ते नित्य पूजे ॥ जाव भरी अभिराम, ॥ ध ० २ ॥ काळ  
बहु तिहां इंद्र पूज्या ॥ आयु पूर्ण थायरे ॥ ते ठवि श्री  
गिरनार प्रतिमा ॥ काळ इम बहु जाय ॥ ध ० ३ ॥ नेमि  
जिनवर थया परगट ॥ तेढले इंद्र जीवरे ॥ महापत्नी  
खितिसार नगरी ॥ सुखी लोक अतीव ॥ ध ० ४ ॥ ना  
शे नृप पुष्पसार हुओ ॥ नेमि यादव, रायरे ॥ तिणे न  
यर आवी सनोसरया मनु ॥ राय वंदण जाय ॥ ध ०  
५ ॥ कर जोडो राजा नुणे ॥ जिनवर देखना सुरसाळ  
रे ॥ मिथ्याव परिहरि थयो श्रावक ॥ वार घत प्रति  
पाल ॥ ध ० ६ ॥ नेमि पूरव जव कसा तव ॥ नृप गयो

गिरनाररे ॥ बहु भाव भगति देव पूज्या ॥ लक्षो हरप  
 अपार ॥ ध० ७ ॥ आब्यो फिरी नयर राजा ॥ भव क  
 णां दुख जाणिरे ॥ सुत जणी निज राज देई ॥ चित्त  
 संयम आणि ॥ ध० ८ ॥ लेई दिक्षा स्वामी शिक्षा ॥ कि  
 कट कर्म खपायरे ॥ सुभ ध्यान चड्डियो लपकश्रेणे ॥  
 मुगति पोहतो राख ॥ ध० ९ ॥ पुण्यमार मुगति गया के  
 मे ॥ लेप विंव उलासरे ॥ श्री नेमिनो गिरनारे मां  
 डयो ॥ नमे सुरनर तास ॥ ध० १० ॥ नेमि मुगति गया  
 पुंठे ॥ नव सग्यां नव वासरे ॥ काश्मीर देश तणोज बा  
 शी ॥ रतन आवक खास ॥ ध० ११ ॥ गिरनारे यात्रा क  
 रण आब्यो ॥ करे विंव पखाळरे ॥ तिणि स्त्रिणें पाणी  
 सगति जिन ॥ विंव थयो विसराळ ॥ ध० १२ ॥ चित्त  
 चिंता खेद पाम्यो ॥ करे तिहां उपवासरे ॥ अंविका दे  
 वी थइ परतक्ष ॥ कहे कोयळ भास ॥ ध० १३ ॥ कंचण  
 बलाणे टूंक प्रतिमा ॥ तिहां जई तुं आणरे ॥ मत क  
 रे चिंता शेठ मनमां ॥ भगति श्युं विसाण ॥ ध० १४ ॥  
 रतन देवी तणे वचने ॥ विंव थाप्यो एहरे ॥ महिमा घ  
 णी जिन विंव केरी ॥ तिरे पूजे तेह ॥ ध० १५ ॥ हेम  
 वयणे कुमर हरख्यो ॥ पूजिया प्रभु नेमिरे ॥ इंदमाळ

देई राय उभो ॥ लीयो कोइ कहे एम ॥ ध० १६ ॥ स  
वा कोहि देई सोवन ॥ लीये जगडु माळरे ॥ तुं माय  
कुखे भलो आव्यो ॥ भणे इम भूपाल ॥ ध० १७ ॥ छत्र  
चामर घजा तोरण ॥ करे भूप कुमाररे ॥ जिन भगति  
करी निज पाप धोयां ॥ पुण्यनो विस्तार ॥ ध० १८ ॥  
अश्व गज रथ आपीया बहु ॥ दीध कंचण कोडिरे ॥  
ए ढाळ एकसो कही रुनी ॥ जैनहरपे जोडि ॥ ध०  
१९ ॥ सर्व गाथा २२, ३९.

ढाळ १-०१ मी.

दुहा ॥ संध भगति करी तिहां थकी ॥ चाल्यो  
चौलक राय ॥ देवकिपाठण आवीयो ॥ अहम जिहां  
जिनराय ॥ १ ॥ जिनवर पूजी नृप दीये ॥ जगहुने इ  
द्रमाळ ॥ रतन देई सवा कोडिनो ॥ यही माळ ततकाळ  
॥ २ ॥ नृप पूछे जगडु भणी ॥ तुं दीसे मसकीन ॥ तुज  
किहांथी धन एटलो ॥ रतन दीयां तें तीन ॥ ३ ॥ कहे  
जगडु सुण नरपति ॥ भुज पिता हंसराज ॥ रतन पां  
च तेहने हुता ॥ त्रिण तीरथने काज ॥ ४ ॥ तेतो संच  
मिल्यो नहीं ॥ भुजने दीधां तेह ॥ में खरच्या तेहना

दीयुं ॥ ए ल्यो तुमे महाराज ॥ उपगारी तुम सारिखो ॥  
 कोइ न दीठो आज ॥ ६ ॥ आदर करी नूपने दीया ॥  
 राये लीधां तेह ॥ अढी कोनि धन देइ करी ॥ अधि  
 को धरी सनेह ॥ ७ ॥ जगडु धन अवतार तुज ॥ रा  
 य प्रसथ्यो तास ॥ आव्या सहु तीरथ करी ॥ पाटण न  
 यर उछास ॥ ८ ॥

ढाळ ॥ काछिवानी ॥ आव्यो पाटण राय हेस  
 खी ॥ आव्यो ० नयर सलूणो सहु सिणगार्यो ॥ ओ  
 छाढ्या बाजार ॥ हेसखी ओ ० सोता देखी पुर सुर  
 पुर हारीयो ॥ १ ॥ धज तोरण चोसाल ॥ हेसखी ध ०  
 बांध्या कंचणना धाळ सोहामणा ॥ गलीये गलीये  
 फूल ॥ हेसखी ग ० उज्जळ परिमल बिखेरव्या घणा ॥  
 २ ॥ वाजां जुंगळ भेरी ॥ हेसखी वा ० ढोल नीसाण  
 दमामा वाजीयां ॥ सीणगार्यो गजराज ॥ हेसखी सी ०  
 भद झरता जळधर जिम गाजीया ॥ ३ ॥ मोल्यां ज  
 णित पलाण ॥ हेसखी मो ० सोवन सांकळ धल सि  
 णगारीया ॥ हणहणता हयथ ॥ हेसखी ह ० जाणे सूं  
 रिय रयथी उतरव्या ॥ जेई अनोपम भेट ॥ हेसखी  
 ले ० मुहता मंत्रीसर साहमा संघरव्या ॥ जानंवरशु

लयाहेसखी आ० आवे सहुना देखी लोचन ठरव्या  
 ॥५॥ विपुल थइ पुर नार ॥ हेसखी वि० नृपने जो  
 वा द्रोडी सहु निजी ॥ उलट पलट सिणगार ॥ हेसखी  
 उ० काने काजळ घाल्यो उतावळे ॥६॥ पाए पहेरव्या  
 हार ॥ हेसखी पा० बाहे महेरव्यां झाझर नेवर ॥ कर क  
 घुक सवाहि ॥ हेसखी क० हाथे आरीसां गही केइ सं  
 घरा ॥७॥ केइ उघामे सीस ॥ हेसखी के० केइ हीमी  
 कनि बाधी सामलो ॥ तिलक बणायो गाल ॥ हेसखी  
 ति० नाक उपर चोमयो चादलो ॥८॥ कंचू पहेर श  
 रीर ॥ हेसखी क० कृणही चरणोही चीर न पहेरव्यो ॥  
 रोंतो बाळक मुकि ॥ हेसखी रोंतो० केइक द्रोमी जो  
 घण राजीयो ॥९॥ केइक नारीयो जाघ ॥ हेसखी के  
 इ० अधपख उठी भोजन जीमति ॥ गीडे जाणे बेसा  
 ण ॥ हेसखी मोड० केइक द्रोमी धान परीसती ॥१०॥  
 केइ लेई रोंतो बाळ ॥ हेसखी केइ० द्रोडी हाथे झाली  
 ने पहेरणो ॥ देखण कुमर नग्धि ॥ हेसखी देख० केइ  
 क द्रोमी मुक्ती राधण ॥११॥ विकळ थइ रम नार ॥  
 हेसखी विकळ० टोळे टोळे उजी आवी करी ॥ मिली  
 या पुरुष अनेक ॥ हेसखी मिली० कुमर नरेश प्रवेश

कीयो पुरी ॥१२॥ करे सोळ्ह सिणगर ॥हेसखी क  
रे० कोकिल कंठे गावे सोहलो ॥ मोतीयमे जरी था  
ळ ॥हेसखी मोती० नारि वधावे करि मन मोकळो ॥  
१३॥ परजा ये आसीस ॥हेसखी पर० राजा आपे  
सनमान सहु जणी॥पूछे छे तुम खेम ॥हेसखी पूछे० स  
हु सुखीया मंजु सुनिजर तुम तणी ॥१४॥ आव्यो कु  
मर नरिदा॥हेसखी आव्यो० जयजयकार थयो पाटण  
पुरे ॥ एकसो एक ए दाळ ॥हेसखी एक० कहे जिनहर  
ष गाओ मीठे सुरे ॥१५॥ सर्व गाथा २२५२ ॥

दाळ १५२ जी.

दुहा॥ कुमर नरिद घर आवीयो ॥ सुख विलसे  
निश दिश ॥ अठाई दिन आवीया ॥ ओछव अधिक  
जगीस ॥१॥ चैत्र शुक्लना आठ दिव ॥ आसो आठ  
दिवस्त ॥ इणे दिन सुर ओछव करे ॥ नदीसर अवस्त  
॥२॥ कुमरपाळ पण आवीयो ॥ जिन तिहुंअण प्राप्ता  
द ॥ बहुत्तर सामत संघश्चु ॥ घुरे निशान ने नाद ॥३॥  
॥ सत्तर भेद पुजा करे ॥ गावे वावे राय ॥ ओछव क  
रता बहु परे ॥ आठ दीवश इम जाय ॥४॥ तदनतर  
कनक रथ ॥ धज तोरण ने छत्र ॥ कनक कळस चा



सर युगल ॥ कीधा राय पवीत्र ॥ ५ ॥ श्रीजिनवर वै  
वीसमा ॥ प्रतिमा थापी तांस ॥ चैत्र शुक्ल आठम दी  
ने ॥ पुहुर पाछलो खासं ॥ ६ ॥

ढाळ ॥ यत्त सिधुआश्या रागे ॥ नाजित्र तिहां  
घणा वाजेरे ॥ जाणे नादे अंवर गाजे ॥ सहु संघ, मं  
त्री नृप मिलीयारे ॥ जिन भुवन थकी नीकळीया ॥ १  
॥ पुण्व दृष्टी करे, नर नारीरे ॥ गज रथ हेवर सिणगा  
री ॥ आव्या नृप दरवारेरे ॥ पूजी नृप हरप, वधारी ॥  
२ ॥ दुहो ॥ हरखी नृप नाटक करं ॥ वीहाणे सीह दु  
आर ॥ मंमप तळे रथ राखीयो ॥ पूजे पासकुमार  
॥ ३ ॥ ढाळ ॥ पूजा आरती उतारेरे ॥ तिहांथी रथ  
चाल्यो ल्यारे ॥ नाटकीया गावे भाचेरे ॥ देखी सहुना  
मन राखे ॥ ४ ॥ चहुटे मंडप रथ राखेरे ॥ गुणीयण जि  
नवर गुण भाखे ॥ चोराशी चहुटे फिरीयोरे ॥ सहु न  
गर पवित्र जिणे करीयो ॥ ५ ॥ दुहो ॥ कर्यो नगर सूर पूर  
जिश्यो ॥ रथयात्रा जिहां थाय ॥ करतां ओछव जि  
न ताणो ॥ इणि परे वासर जाय ॥ ६ ॥ ढाळ ॥ घास  
र पुंन्यना ९ कहीयेरे ॥ जिण यात्रा पुन्ये जहीये ॥  
जठाई तीरथ यात्रारे ॥ रथयात्रा शिव सख पात्रा ॥

७॥ राये ते त्रिणे कीधीरे ॥ सहु मननी आश्या सीधी  
 ॥ नित्य गुरुनी सेवा सारारे ॥ व्याख्यान सदा अवधा  
 री ॥ ८॥ दुहा ॥ धारे वीर चरित्र नृप ॥ वांचे हेमसुरि  
 द ॥ चेईनो अधिकार तिहां ॥ भाखे वीर जिणंद ॥ ९॥ ढाळ  
 ॥ वीर जिन भाखे अधिकारोरे ॥ पूछे तव अजय कु  
 मारो ॥ जीवित स्वामी मूरत्तीरे ॥ केती एक पूजा धि  
 त्ती ॥ १०॥ श्री वीर इश्युं तव नासेरे ॥ घणुं काळ इह पू  
 जाश्ये ॥ आगळ थाश्ये भूपाळोरे ॥ नामे ते कुंअरपा  
 ळो ॥ ११॥ दुहा ॥ कुमारपाळ नित पूजश्ये ॥ इम क  
 ह्यो वीर जिणंद ॥ हेम तणे मुख सांभळी ॥ हरख्यो कु  
 मर नरिंद ॥ १२॥ ढाळ ॥ हरख्यो नृप कुमार नरिंदोरे ॥  
 मुज कीधी सार जिणंदो ॥ जिनवर जीने चढीयोरे ॥  
 भव भवनो पातक झमीयो ॥ १३॥ राय पूछे कहे गु  
 रुरायोरे ॥ ते प्रतिमा छे किण वायो ॥ धीतभोपाटण  
 इण नामेरे ॥ ते प्रतिमा छे तिण ठामे ॥ १४॥ दुहा ॥ ति  
 णे ठामे प्रतिमा रहे ॥ भंडारी भुंइ मांहु ॥ जिवित स्वामी  
 जुहारवा ॥ चाल्यो घणे उछांहु ॥ १५॥ ढाळ ॥ उछां  
 हु धरी तिहां पोहतोरे ॥ मन मांही नृप गहगहतो ॥ पू  
 जा कीधी दित जाणीरो ॥ ते प्रतिमा पाटण आणी ॥ १६॥

॥ देहरासर मूरती थापीरे ॥ पूजि जव पीमा कापी ॥  
 भलां वार हजार ते गामोरे ॥ दीधां पूजाने कामो ॥  
 १७ ॥ दुहा ॥ काम रायने नवि गमे ॥ प्रतिमा उपर प्रीत  
 ॥ पूजे केसर चंदने ॥ राय श्रेणीकनी रीत ॥ १८ ॥ ढा  
 ल ॥ रीति हरखे देखी खामीरे ॥ दाळिंद्री जिम निधि  
 पामी ॥ जिन प्रतिमा जिनवर सरखीरे ॥ राय कुमर  
 नरेशर निरखी ॥ १९ ॥ हस्ती खंधे चमी रायोरे ॥ ति  
 हुअण मासादे जायो ॥ जिनहरष पूजे त्रिण काळो  
 रे ॥ एकसो बीजी ए ढाळो ॥ २० ॥ सर्व गाथा २२७८ ॥

ढाळ १०३ जी.

दुहा ॥ कुमर नरेशर एक दिन ॥ पूजेवा श्री धीर  
 ॥ पट्टकुळ विण वावयो ॥ मांगे साहसधीर ॥ १ ॥ नवो  
 पटोलो चर कहे ॥ न मळे इहां महाराय ॥ बवेरा  
 पाटण धणी ॥ पहिरयां दह दिशे जाय ॥ २ ॥ दूत पठा  
 व्यो कुमर नृप ॥ पट्टकुळने काम ॥ भेट भल्ली लेंई क  
 रो ॥ वेगे पुलीयो तामे ॥ ३ ॥ दूत जइ नृप विनव्यो ॥  
 कुमरपाळ भूपाळ ॥ तुम पासे मुज भोकल्यो ॥ मूंकी  
 एह रसाळ ॥ ४ ॥ पट्टकुळ अण वावयो ॥ एक आसो  
 महाराज ॥ पाटण राय मंगावीयो ॥ जिन पूजाने का

ज ॥ ५ ॥ रीस करी राजा कहे ॥ तुज राजा शिर धू  
 ल ॥ मंगावे अण वावर्यो ॥ मुज पासे पटकल ॥ ६ ॥  
 इहां तु उभो रहीशमां ॥ जो हीयमे होय सान ॥ मान  
 भट करी काढीयां ॥ देई बहु अपमान ॥ ७ ॥ दाणी क  
 विता मांणीयो ॥ चामरधी नृप दास ॥ दरवाणीने दू  
 तने ॥ दूहवीयां विणास ॥ ८ ॥

ढाल ॥ देखो नाई पूजा मेरे प्रभुकी अजब बलीरे  
 ॥ या छबी वरणी न जाय ॥ ९ देशी ॥ राग केदारो ॥  
 दूत अपमान्यो पाछो ॥ बळीयो रीसे भरीयो ॥ आंवी  
 यो निज नृप पासे ॥ कळकळतो धई रातडोरे ॥ दूत  
 सुणावेरे ॥ रायने अवगुण तास ॥ १ ॥ ते राजा महा को  
 ढीयो ॥ अजिमांनीरे रुठो जाणे काल ॥ त्रिण सम तु  
 मने लेखवी ॥ बटकी बोल्योरे राजन तुमने गाळ ॥ २ ॥  
 कान भर्या तिणे रायना ॥ अधिका ओछारे वचन कहे  
 तिणि वार ॥ मदनभ्रम नृप उपरे ॥ कोप धरीने खीज्यो  
 राय कुमारा ॥ ३ ॥ बाह्यदे तेजी कहे ॥ तुम्हे जई ला  
 वीरे मदनभ्रमने वाधि ॥ कटक लेई जुध कारणो ॥ मुज  
 ट चाल्योरे आव्या तेहनी संधि ॥ ४ ॥ कोट वींटी  
 रक्षा पाखळे ॥ लमकर जोरेरे भेल्यो पूर पाकारा ॥ ५ ॥

ली बांध्यो रायने॥ कोडि सोवनरे सय वाजी इग्यार॥  
 दू० ५॥ सात सहस घर साजवी ॥ वणे पटोळारे कव  
 ज कीयां मंत्रीश ॥ गज चढि कुंमर नरिंदनी ॥ आ  
 ण फेरीरे बाहमदे धरी रोश ॥ दू० ६॥ गाधिमी घाली  
 चमळो ॥ बाहड मंत्रीरे मदनघम नर नाह ॥ आणी  
 पाड घालीयो ॥ बळवंत मंत्रीरे कुंमर तणे उछाह ॥  
 दू० ७॥ कुंमर नरेशने दूहव्यो ॥ चरणे लागोरे ऊंतरी  
 थो मन रोश ॥ देश सवालख देई कहे ॥ सुण नरप  
 तिरे जित तणो उपदेश ॥ दू० ८॥ जीव तणी रक्षा क  
 रे॥ अकर निवारीरे कळे मत अन्याय ॥ प्रजा पाळे  
 छोरु परे ॥ भलपण लेजेरे लोको मांह ॥ दू० ९॥ जि  
 नवर पूजा कारणे ॥ दूत पठाव्योरे मंगाव्यो पटकूळ  
 ॥ दूत हील्यो तें माहरो ॥ थर अजिमानरीरे मुज शिर  
 घाली धूळ ॥ दू० १०॥ मदनघम जूय लाजीयो ॥ नीचुं  
 जोवेरे हुं मूरख महाराज ॥ कंयों जिश्यो पाम्यो ति  
 स्यो ॥ हवे श्युं बोलुंरे मनमां आवे लाज ॥ दू० ११॥  
 तुम्हे मोटा छो राजवी ॥ मुज कारणीरे जोज्यो मत म  
 तिवंत ॥ अवगुण केमे गुण करे ॥ ते विरलारे तुज  
 सारिखा संत ॥ दू० १२॥ दाव लही दुरजण हणे ॥ ५

ए गिरुआरें नू करे परनो विणास ॥ तें कीधुं तिम तुं  
 करे ॥ साहिव मोरारे हवेःहुं ताहरो दास ॥ दु० १३ ॥ छ  
 ती शक्ती जे नर स्वमे ॥ तेहनारे नित नित नमीये पाय  
 ॥ तेहना गुण न विसारीये ॥ तेहने काजेरे कलपीजे  
 निज काय ॥ दु० १४ ॥ हुं उर्सीकज किम हुश्रुं ॥ तुम  
 श्रुंरे करुणावंत कृपाळ ॥ दया पळाउ देशमां ॥ हवे  
 न करंरे पातक आळपंपाळ ॥ दु० १५ ॥ कुमर तणे च  
 रणे नमी ॥ नूर चाल्योरे मदनभ्रम निज देश ॥ देश दं  
 ढेरो फेरियो ॥ मत-कोईरे हणज्यो जीव विसेस ॥ दु०  
 १६ ॥ दया पळावी बहु-परे ॥ टाळ्यां सडुरे अकराक  
 र अन्याय ॥ कहे जिनहरष न्याई थयो ॥ टाळ एक  
 सोरे तीन कहेवाय ॥ दु० १७ ॥ सर्वा गाथा '२३ ॥ ३॥

दुहा ॥ कुमारपाळ तस देशमां ॥ दयां पेंळोवी ॥  
 म ॥ धन धन चौलकवंश नृप ॥ जेहनो गुरु श्री-हेम  
 ॥ १ ॥ ववेराथी सालवी ॥ आण्या सात हजार ॥ छ  
 च हेठ नहवरावीर्या ॥ पवित्र कीया सुविचार ॥ २ ॥  
 न्याति सालवी तेहनी ॥ थापी राय तिवार ॥ पाटण मां  
 हि वसावीया ॥ वणे पटोळां सार ॥ ३ ॥ ते पहेरी पूजा

करै ॥ विधीर्युं कुमर नरिंद ॥ जनम संपल पोता  
 एोः ॥ करे धरे आणंद ॥ ४ ॥ एक दीवश नरवर कु  
 र ॥ वेरो संभा मझारि ॥ वेठा पंडित ब्राह्मण ॥ पूछे त  
 स कुमार ॥ ५ ॥ आज कहो गुरु तिथि किसी ॥ बोल्यो  
 सहि साकार ॥ हुती अमावसि पुणं कही ॥ पूनिम ति  
 थि तिणि वार ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ सात सोपारी बीमलो हाथ ॥ ८ ॥ देशी ॥ ब्रा  
 ह्मण हसि हसि बोल्यो तिणि वार ॥ गरढा थया गुरु  
 मति गर्जनी ॥ आज अमावसि जाणें सहु संसार ॥ ते  
 हती कहोने पूनिम किम थर्जनी ॥ ९ ॥ काग काळाने  
 कहे उज्जल ॥ १० ॥ मूरख माने तेहनो कहो जी ॥ कुम  
 र जणे मन उपन्यो संदेह ॥ शय विचारी मन माहिं र  
 शो जी ॥ ११ ॥ तलोरे जलो हेम एतम झान ॥ पूनिम क  
 ही अमावाशी जणी जी ॥ श्या सारु सानो तमे कुमर  
 राजान ॥ बुद्धि निहाळी हाली गुरु तणी जी ॥ १२ ॥ हा  
 कीनि त्यारे हेम मूरिंद ॥ रहो रहो मूरख वाढ करो व  
 थाजी ॥ जो आज ऊगे पूनिम पुरो चंद ॥ नहो तो  
 अमावसि जाणज्यो तया जी ॥ १३ ॥ राजा परजा ब्राह्म  
 ण कीध मनाण ॥ हेम विचारे मन माहिं इश्युं जी ॥ मा

हरा सासननी हीला करश्ये अजाण॥कहेतां कहेवरा  
 णुं हवे करीये किशुजी ॥५॥ तेढी देवीने जाखे हेमसू  
 रिंद ॥ आज पूरणिमा कीधी जोईयेजी ॥ देवी पयंपी  
 मनमां धर्यो आणंद ॥ चिता म करश्यो इम धीरद दी  
 येजी ॥६॥चांद्रणी राते करुं गच्छराज॥ ब्राह्मणनोजि  
 म पाणी उतरेजी ॥ वाधे सासन केरी अधिकी लाज ॥  
 सह नर नारी जय जय ऊचरेजी॥७॥ राते आवीने कुं  
 मळ मुंकयो आकाश ॥ परतख गयणे चद्र विराजीयो  
 जी ॥ बार जोयण सूधी थयो परकास ॥ हरखित  
 थयो मन माही राजीयोजी ॥८॥ब्राह्मण केरां मूख हुआं  
 मद॥ श्री जिन शासन इम दीपायोजी ॥ जग मांही सा  
 ज्वा हेमसूरिद ॥ साचो श्री जिनवर धरम कहावीयोजी  
 ॥९॥ राति वितीत थयो परजात ॥ हेम स्वमावे संघ आ  
 गळे सहजी ॥ पूनिम न हुती कीधी अछती वाताते मुज  
 दुपण लागु छे वहुजी ॥१०॥ पण जिन शासन केरी  
 राखवा लाज ॥ जुठुवोल्हो मुज मिच्छामि दुक्कहुजी॥  
 सह सघ साखे खामु छु आज॥ जिम दुरगति दुख मा  
 हि नवि पडुजी ॥११॥ आण न खंमे श्री जिनवरनीहे॥  
 में पाप जीरु थद धरम दीपायोजी ॥ दया शासन ऊपरे



बहु प्रेम ॥ असत्य वचननो दोष न आवीयोजी ॥  
 १२॥ पाप करंतो संक्रिप्त पुरीस जेह ॥ पाप करीने पर  
 गट दाखवेजी ॥ पाप करंतां धूजे जेहनी देह ॥ ते न  
 र सदगतिनां सुख अनुभववेजी ॥ १३॥ दोष आलोक्षे  
 हुआ निकलंक ॥ श्री जिनशासन कारण इम करवो  
 जी ॥ पातक ठामे राखी मन मांहीं संक ॥ चारित्र्य  
 पाळि निरमल गुणे भर्योजी ॥ १४॥ पाये-नमी गुरुने  
 कुमर भूपाळ ॥ कहणी करणी सारिखी ताहरीजी ॥  
 थई एकसो ने च्यार ९ ढाल ॥ कहि जिनहरपे सह  
 ने हित करीजी ॥ १५॥ सर्व गाथा २३३२॥

ढाल १०५ मी.

दुहा ॥ कुमर कहे कर जोमने ॥ सांभळ श्री गु  
 रुराय ॥ तुं मोटो जग सापुरिस ॥ तुज गुण कल्या न  
 जाय ॥ १॥ तुज सारीखो जोवतां ॥ बीजो न मिले  
 कोय ॥ जैन उपर कहो सैवनो ॥ द्वेष धणो किम होय ॥ २॥

ढाल ॥ मोती घोने हमारो ॥ १ देशो ॥ हेम कहे सु  
 ण कुमर नरेशर ॥ नयरी अयोध्या रिपज जिनेशर ॥  
 रायजी भुज वचन सुणोने ॥ रायजी भुज वचन सु  
 णो ॥ वचन सुणो पाटणना राजा ॥ वचन सुणो

ज बहुत दिवाजा ॥ रा० समवसर्या वन मांहि आई ॥  
वनपाळक जई दीध ववाई ॥ रा० १ ॥ हरख्यो भरत नृ  
पति मन मांहा ॥ वार कोटि धन दीध उमाही ॥ रा०  
सकट पंचसय मोढक मरीया ॥ बहु परिवार लेई सं  
चरीया ॥ रा० २ ॥ बंदि जई जिनवरने भावे ॥ पंचा  
भिग मन चित्त रहावे ॥ रा० वस्तु सचित्त करे परिहा  
री ॥ मन राखे एकांत विचारी ॥ रा० ३ ॥ एक सामी  
उवासण ऊमे ॥ जिनवर देखे बे कर जोमे ॥ रा० छत्र  
खडग चामर सहू मूके ॥ तीन प्रदक्षण राय न चूके  
॥ रा० ४ ॥ इणीपरे भाव भगतिशुं वंदी ॥ जई पासे बे  
गे आणंदी ॥ रा० ॥ रिपज जिणेशर धर्म प्रकासे ॥  
दान सीधळ तप भाव उल्लासे ॥ रा० ५ ॥ अधिक दान  
कसो जग माहि ॥ दान धर्म वधे उल्लाहि ॥ रा० दान  
तप जप किरिया धाई ॥ दाने पातिक दूरे पुलाई ॥ रा०  
६ ॥ दान दीये ते जगमां मोटो ॥ दान विना सघळो  
ही स्रोतो ॥ रा० दातानी आश्या सहू राखे ॥ दुर भ  
क्ष जगमो ले ते पाखे ॥ रा० ७ ॥ रिपज कहे साभळ  
भरतेशर ॥ वसुधा भरण पुरुष अलवेशर ॥ धन आ  
भरण कसो नर केरो ॥ दीसे जेह्यी पुरुष भलेरो ॥

रा० ८ ॥ धननो आजरण दान कहीजे ॥ दानाजरण  
 सुपात्र दीजे ॥ रा० दान सुपात्र थकी बहु तरीया ॥ मु  
 गति तणा सुख अविचल वरीया ॥ रा० ९ ॥ जरत क  
 ह सुणि वचन पितारो ॥ मुज घेर स्वामी वेगे पधारो  
 ॥ रा० अन्न पान दीउ सहु मूनिवरने ॥ जगति भाव  
 बहु परे आढरिने ॥ रा० १० ॥ जरत नरिंद सुणो कहुं  
 तुमने ॥ राजपिन् कलपे नही अमने ॥ रा० थयो दि  
 लगीर सुणी जरतेशर ॥ ताम पयंपे वचन सुरेसर ॥  
 रा० ११ ॥ पोरुयां लाभ धणो साहमीनो ॥ जगति क  
 री पुन्य खजानो ॥ रा० इंद्र वचन सांभली नृप हरख्यो  
 ॥ पुन्य खेव साचां करी परख्यो ॥ रा० १२ ॥ गया नु  
 हुतरा गामो गामे ॥ आव्या आवक ठामो ठामे ॥ रा०  
 आवकमा बीजा पण मिलीया ॥ भोजन काजे सहु  
 अलफलीया ॥ रा० १३ ॥ खावानो जालच सहुको  
 ने ॥ दाळ वृद्ध नरतोने मोने ॥ रा० झडपी ल्ये पाट  
 ल आखलीया ॥ थाली पण ल्ये केरूक वळीया ॥  
 रा० १४ ॥ सूधा आवक हुअे ते लाजे ॥ भट पनो इण  
 भोजन काजे ॥ रा० ए माहि जिमता लाज मरीजे ॥  
 लाखा देखी आवक खीजे ॥ रा० १५ ॥ ५ भोजन

पाखेही सरश्ये ॥ भोजन लालचीया मन हरश्ये ॥  
 रा० ठाळ भली जिनहरष वखाणी ॥ एकसो पांच  
 मी तणी नीशाणी ॥ रा० १६ ॥ सर्व गाथा २३४१

ठाळ १०६ टी.

दुहा ॥ केइ मागी झूटि जिये ॥ उठी जिये केइ  
 अन्न ॥ पेत किमे धापे नही ॥ एहवा लोक असन्न  
 ॥ १ ॥ दिन दिन वाधे अति घणा ॥ पामे सरस आह्वा  
 र ॥ मधु मांखी जिम लालचें ॥ लागी रक्षा वेकार  
 ॥ २ ॥ चारे इंद्री सोहिला ॥ जिम तिम, ए जिपाय  
 ॥ भोजन भाषण वे विषे ॥ जीभ न जीती जाय ॥  
 ३ ॥ सपर सरस भोजन तणो ॥ चसको लागे जां  
 ह ॥ रहे नही किमही कीयां ॥ दांतां पामंताह ॥ ४ ॥  
 उत्तम जो पामे अवल ॥ हरखे नही मन मांहीं ॥ सर  
 सो निरसो जिमतां ॥ न धरे अरति उछांह ॥ ५ ॥  
 आदर करी नोहुंतरी ॥ तो विजे तेडि जाय ॥ निर  
 तोल्ये मूके नहीं ॥ अण जावतो न खाय ॥ ६ ॥

ठाळ ॥ परदेशी यार मोरी अखीयां लगी ॥ ९ द  
 शी ॥ संतोषी नर एहवा होय ॥ जेहने मन लालच  
 नहीं कोय ॥ सुण कुमर नरिंदतोने वात कहुं ॥ आं

कशी ॥ वारे श्रावक जग सिणगार ॥ परदृपण कहे  
 नहीय लगार ॥ सु० १ ॥ पोखे पात्र जाणी जरतेश ॥  
 पण न करे कांइ विगति नरेश ॥ सु० ॥ रांधणीया  
 रांधे आहार ॥ पुरु न पढे मनीष अपार ॥ सु० २ ॥  
 आवी नुप विनवीयो तिवार ॥ स्वामी मिलीया पुरु  
 प अपार ॥ सु० श्रावक जेळा जिमे अनेक ॥ इम  
 जिमतां नथी रहेतो विवेक ॥ सु० ३ ॥ नीति करो कांइ  
 रु महाराय ॥ श्रावक मिथ्यात्वि ओळखाय ॥ सु०  
 वचन खरुं मान्युं मन मांहिं ॥ श्रावक व्रतधर राखो  
 तांहिं ॥ सु० ४ ॥ श्रावक ओळखवाने काम ॥ रतन का  
 गणी लीधो ताम ॥ सु० समकित धारी श्रावक खास ॥  
 त्रिण रेखा करे हीयमे तास ॥ सु० ५ ॥ अवर सहने दी  
 धी सीख ॥ वर जाओ के मांगो जीख ॥ सु० साह  
 मीनी करे जगती अपार ॥ जिमावे गनता आहार ॥  
 सु० ६ ॥ चीवर भूषण दीये विसेश ॥ पुन्य करे इम  
 जरत नरेश ॥ सु० काळे जरत गयो परलोक ॥ आ  
 दित्ययशा थयो पुन्य संजोग ॥ सु० ७ ॥ ते पण जग  
 ति करे सुविचार ॥ कंठे धाल्या सोवन तार ॥ सु०  
 आव पाट लगे चाल्यो माग ॥ पळे दव्या कंठे श्रव

ना ताग ॥शु०८॥ काळे जिनवर विरहो थयो ॥ नु  
 नि जिन केवळज्ञान सहु गयो ॥ शु० काळे आचक  
 सीथला होय ॥ समकित द्रत विण थया रुहु कोय ॥  
 शु० ९॥ राते पण ते करे आहार ॥ दोष गणे नदी  
 मूढ गमार ॥ शु० स्नान सराध संवत्सरी करे ॥ क  
 न्या गोहल दान उचरे ॥सु० १०॥ आचक वंढा काळे  
 सयोग ॥ तेहने गुरु करि माने लांग ॥सु० घणो का  
 ळ इम चाल्यो जाय ॥ भगट थया श्रेयांस जिनराय  
 ॥सु० ११॥ सूर्धो धरम प्रकाश्यो तेण ॥ साधु आचक  
 कल्ला विवरी जेण ॥शु० मिथ्या मारग कीधो दूर ॥ ति  
 मर रहे केम उगे शूरा ॥शु० १२॥ मिथ्याविनो कीधा छै  
 द ॥ तिणे मुनी उपर ब्राह्मण खेद ॥ शु० एकसो छठी  
 ढाळ निचार ॥ कही जिनहरप शुणो नरनार ॥ शु०  
 १३॥ सर्व गाथा २३५०

ढाळ १०७ मी.

दुहा ॥ जे जे पळे कुमर नृप ॥ आवे तास जो  
 बाप ॥ राजा मनमां चितये ॥ भाख्युं हेम हसाव ॥  
 ॥ १ ॥ तुं गुरु ज्ञानी नृप कहे ॥ तुं गुरुओ गुणपताता  
 खेवम्यण सोहामणां ॥ जिम भाखे भगवत ॥ २ ॥ एक

॥ मे व्याख्यानमां ॥ गुरु कहै मुखे हाथ हांय ॥ भेळों  
 करि कार वे घसि ॥ श्युं ध्युं पूछे राय ॥ ३ ॥ गुरु कहै पां  
 टण देवकि ॥ चंद्रमज्ज जिन गेह ॥ ऊँदा वाटि लेइ ग  
 यो ॥ चंदरुआमां तेह ॥ ४ ॥ चंदरुओ लागी रसो ॥  
 देखी ॥ अनरथ ॥ तिण कारण में कर घेर्या ॥ राजा  
 श्रुयो अरथ ॥ ५ ॥ सुगुरु परितो कारणे ॥ खबर  
 करावो ताह ॥ खरीवात जागी करी ॥ हरखयो नून  
 मन माही ॥ ६ ॥

जी० मुनि वचने गुरु तेडी पांढणमां आणीया व० ३॥  
 वांया तीन प्रदक्षणा देई सुगुरु जणी ॥व० जंगमां सह  
 ने मीठी आरत आपणी ॥व० बेटो जोमी हाथ नृपति  
 गुरु आगळ ॥व० श्लोक कहे देवचंदमुनी सह सांज  
 ले ॥व० ४॥ उगी गया देशन सुणी नृर कर जांमिने॥  
 व० मांगे सोवनसिद्धि पाए सिर कडीने ॥व० हेमसूरि  
 स कहे गुरु पास आयने॥व० महेर करी घां पूज क  
 नक सिद्धि रायने ॥व० ५॥ हेम वयण सुणी एत सुगुरु  
 स्त्रीज्या घणुं ॥व० एतलोही आचार न जाणे मुनी  
 तणो ॥व० विद्या अनरथ मूळ धूळ संयम करे ॥व०  
 जाणे तोषण नैव विद्या सनाचरे ॥व० ६॥ संयम पाळे  
 सुद्ध चारित्र्यनो जे धणी ॥व० सावय न कहे वात ते  
 ह थोडी घणी ॥व० मंत्र यंत्र नैमित्त यति जाखे नहीं  
 ॥व० अविचार्यो सावय कक्षां दूखण सही ॥व० ७॥  
 सावय उपर वात कहुं सुण नरपति ॥रा० राजपही  
 पुरवासी भीम क्षत्री मती॥रा० राय साथे ते भीम क्षत्री  
 कटकी गयो ॥रा० वार वरस थयां नारी चति श्युं प  
 यो ॥रा० ८॥ पाछो नाव्यो भीम खरच विण किम स  
 रे ॥रा० जिम तिम करी कुळवंती दिन दोहिजा भरे॥



॥इणे अवसर मुनि एक सुवेख सोहामणे ॥रा० धर्म  
 लाभ देइ आवी उजो आंगणे ॥रा० १॥ नांखी निमा  
 सो उठी नारि उतावळी रा० नयणे वरमे नीर जाणे  
 जळ वाळी ॥रा० आगळ अवळा आवी स्वानी कहे  
 मुणो ॥रा० दुखिणी विण कंत मुने दुख छे घणो ॥  
 रा० १०॥ कदि मिलशे मुज नाह उछाह धरी करी ॥  
 रा० करुणवंत कृपाळ कृपा मनमां धरी ॥व० ज्ञान  
 मभुजी तास वयण एहवुं कहे ॥रा० वाहणे ताहगे कंत  
 मिले तुं सुख लहे ॥रा० ११॥ हरखी अवळा वयण  
 सुणी मुनिवर तणो ॥रा० वाहाणे आव्यो नाह लसो  
 सुख अति घणो ॥रा० उन्हाळें दव 'जैम बुझें, जळ  
 धर करी ॥रा० आलिग्यो भरतार हीया मांहि वरी ॥  
 रा० १२॥ आव्यो मुनिवर देखी आवो आवो भणे ॥  
 रा० लुलि लुलि लागे पाय आवश्युं घणे ॥रा०  
 अन्न पान पकवान दीये मुनिवर भणी ॥रा० क्रोध भ  
 र्यां नापूर हीये तेहनो धणी ॥रा० १३॥ साचुं कहे के  
 मारिश तुजने-इणे घमी ॥रा० इण मुनिवरश्युं तुज  
 क्रिती छे प्रीतमी ॥रा० नारी कहे तुम नाह निमित्त क  
 सो इणे ॥रा० तिण कारण अन्न पान दीउं उजट घणे

॥रा० ५४॥ ए मुनिवर गुणवंत क्रीधा गुणनो धर्मा ॥  
 रा० लागुं एहने पाय आयने ते भणी ॥रा० दाळ थ  
 ६ जिनहरप एऊसो सातमी ॥रा० साधु निमित्त न  
 काशे नहीं जे संयमी ॥रा० ५५॥ सर्व गाथा २३७१

ढाळ १०८ मी.

दुहा ॥ भीन कहे मुज पूछोयो ॥ जो कहेशे मु  
 नि एह ॥ तो हुं साचुं मानसुं ॥ मुज टळशे संदेह,  
 ॥१॥ ए घांमी जणशे सही ॥ अवल वछेरो अंग ॥  
 पंच तिलक तेहने हस्ये ॥ सुंदर अंग सुरंग ॥२॥ भी  
 म ढील न खमी शक्यो ॥ पेट विदार्यो तास ॥ वच  
 न मिल्यो मुनिवर तणो ॥ खित्री धयो उदास ॥३॥  
 कीधुं कर्म चंभाळनुं ॥ मुजने, पमो धिकार ॥ एहवो  
 पापी को नहीं ॥ मुज सरिखो संसार ॥४॥

ढाळ ॥ वणझारानी देशी ॥ शुण राजा हो अन  
 रथ देखी नारि ॥ वे हत्या थई मुज वती ॥ शुण रा  
 जा हो ॥ शु० कंठ ठवी तरवार ॥ आतम घात करी  
 सती ॥ शु० १॥ शु० अवळादेखी सरुप ॥ हाहा हुं य  
 यो पातको ॥ शु० शु० घोडी बाळ अनुप ॥ वळी घर  
 णीनो घातकी ॥ शु० २॥ शु० सुभरणी विण घर शुन्य ॥

धरणी मंडण घर तणी ॥शु०शु॥ सुधरणी घरनो पुन्य  
 ॥ धरणी पुरुष सोहानणो ॥शु०३॥शु॥ धरणी घर  
 आचार ॥ धरणी लज्या घर तणी ॥शु०शु॥ धरणी घर  
 सिणगार ॥ धरणी घर केरो धणी ॥शु०४॥शु॥ धरणी वि  
 ण घरवार ॥ आवे पहीन पाहुणो ॥सु०शु॥ धरणी वि  
 ण संसार ॥ दीसे पुरुष दयानणो ॥शु०५॥शु॥ ते पोहो  
 ती परलोक ॥ धरणी पाखे कळकळे ॥शु०शु॥ हीयमा  
 माहि सोग ॥ दावानळ जिम परजळे ॥शु०६॥शु॥ मरे बा  
 लापण माय ॥ जोवन वय नाशी मरे ॥शु०शु॥ गरढ  
 पणे न स्वमाय ॥ पुत्र मरण तिने सिरे ॥शु०७॥शु॥ जी  
 व्या मांहीं सवाद ॥कोई नहीं भीमो कहे ॥शु०शु॥ वागे ध  
 र घर नाद ॥ मरीये तो लज्या रहे ॥शु०८॥शु॥ पाणी त  
 णे विछोड ॥ धरतीही फाटि हीयो ॥शु०शु॥ खोटो माह  
 रो मोह ॥ साथ न धरणीशुं कीयो ॥शु०९॥शु॥ इम कही म  
 स्तक छंद ॥ भीमे पण कीधो तिहां ॥शु०शु॥ मुनीवर पाम्यो  
 खेद ॥ अंतरथ घणो हुवां इहां ॥शु०१०॥शु०॥ मरण गया  
 जीव च्यार ॥ मुज वचने रिषि चिंतवे ॥शु०शु॥ जीवीत प  
 मो धिक्कार ॥ दुख फळ पामीश परचवे ॥शु०११॥शु०॥ पचस्वी  
 च्यार आहार ॥ च्यारे सरणां उचरी ॥शु०शु॥ अणसण

करी अणगार ॥ जीवित घात पोते करी ॥ शु० १२ ॥  
 शु। पंच जीवनी घात ॥ सावय वचन थकी थइ ॥ शु०  
 शु। हुआ दुग्गति पात ॥ सावय वचन थकी कइ ॥  
 शु० १३ ॥ शु। पाळो जे आचार ॥ ते आरंभ न उददि  
 से शु० शु। जोय तणा दातार ॥ करुणा नन माहे व  
 सी ॥ शु० १४ ॥ शु। मुनीवर जेह व्याळ ॥ आगम ते ध  
 न जाखे नहीं ॥ शु० शु। एकसो आवमी ढाळ ॥ एजि  
 नहरण भली कहो ॥ शु० १५ ॥ शु॥ सर्व गाथा २३९० ॥  
 ढाळ १०९ मी.

दुहा ॥ आत्म गवेस्त्री जे हुवे ॥ न करे गृहस्थ प्र  
 संग ॥ अति परिचय आदर नहीं ॥ थाये संयम भंग ॥  
 १ ॥ गृहस्थ सदाइ मोकळा ॥ आरंजनो व्यापार ॥ ते  
 हशुं परिचय साधुने ॥ करवो नहीं केवार ॥ २ ॥ सकळ  
 रिद्धि पुन्ये लही ॥ नहीं घर कुमणा काय ॥ सोवन सि  
 पिथी ताहरे ॥ शुं ओछुं छे राय ॥ ३ ॥ देवचंदना वयण  
 सुणी ॥ मनमां हरख्यो राय ॥ दोष स्वमावी आपणा  
 ॥ वदे मुनीना पाय ॥ ४ ॥ हेमसुरि देसन दीये ॥ वेसि स  
 शा मझार ॥ योगशास्त्र इम वांचतां ॥ आव्यो ए अ  
 धिकार ॥ ५ ॥ जळधिनीर कोइक मवि ॥ वेळू नदि गिणाय

॥ मेरु तोलाये वाजू ॥ नारि चरित्र न लिखाय ॥ ६॥

ढाळ ॥ रे मन पंखीया म पडोश पंजरे ॥ संसार  
माया जाळरे ॥ एदेशी ॥ सांभळो श्री कुमर नरवर  
॥ नारि चरित्र विन्नारिरे ॥ सीहपुर वर श्रीधर वसे ॥  
नागिला वस नारिरे ॥ सुण राजीया भाखे एहेम ॥ १  
॥ सुजाण वाणी वखाणरे ॥ घरण पुत्र तेहने सुंदर ॥  
परणाव्यो सुजगीसरे ॥ श्रीदेवी नामे सीजवंती ॥ सु  
खे रहे निशिदीशरे ॥ सु० २ ॥ सासू बहु वाझे नहीं पण  
॥ निखर सासू नाररे ॥ कळह कंदल करे अहनिशे ॥  
वहूसुं बेकाररे ॥ सु० ३ ॥ सापिणी जेम करे फुंफुं ॥ मा  
किणी सारीखरे ॥ पापिणी नवि रहे वरजी ॥ मसे देतां सी  
खरे ॥ सु० ४ ॥ एक दिन निज कंत केरी ॥ पमी वींटी  
क्यांहिरे ॥ जुंढी बहुने जेड मुंकी ॥ तेणे तकता मां  
हिरे ॥ सु० ५ ॥ मुंद्रमी तव जुए सुसरो ॥ बहु कहे तिणी  
वाररे ॥ मुंद्रमी में लही स्वामी ॥ ए ल्यो कहे साररे  
॥ सु० ६ ॥ मुंद्रमी जब बहु दीधी ॥ नागिला तिणी  
वाररे ॥ कहे घरनां चोर माणस ॥ करुं कासि पुका  
ररे ॥ सु० ७ ॥ चोरनो घर मांही वासो ॥ शो हुवे जल्ली

॥ सु० ८ ॥ दीकराने क्रोध चमीयो ॥ करे क्रोध विणा  
सरे ॥ लेइ भोगळ नारि मारी ॥ सीस फूट्यो तासरे ॥  
सु० ९ ॥ पत्नी जुंइ मुरछित थइने ॥ पीहर गया उग  
ढीरे ॥ कहे पुत्री माय पीताने ॥ को म देमि राडिरे ॥  
सु० १० ॥ गालिथी बहु वेढि वाधे ॥ वेमिथी गुण जा  
यरे ॥ दोस सासू तणो केहनो ॥ लिख्यो सुख दुख था  
यरे ॥ सु० ११ ॥ करम कीधां कोइ न छूटे ॥ कर्म न ग  
णे शर्मरे ॥ मुंज नल हरिचंद रावण ॥ रोळव्या सह  
कर्मरे ॥ सु० १२ ॥ वापने समजावीयो इम ॥ मरण पाय्यो  
तेणिरे ॥ भाव रुमी जही सदगति ॥ आराध्यो भव जे  
णरे ॥ सु० १३ ॥ लोक मांहीं थइ फिट फिट ॥ नागि  
ला नारि शिर धूळरे ॥ सह नाखे एम जाखे ॥ कीयो  
अनरथ मूळरे ॥ सु० १४ ॥ पुत्रनी पण थइ हीला ॥ जो  
कगां अपवादेरे ॥ तास कन्या कोइ नापे ॥ गई लाज  
मर्यादरे ॥ सु० १५ ॥ पिता परदेशे जईने ॥ कयों तास  
विवाहरे ॥ नारि उमया धरण परणी ॥ आवीयो उछां  
हरे ॥ सु० १६ ॥ नारि उमया ते संघाते ॥ भोगवे सुख  
साररे ॥ ढाळ थइ जिनहरष एकसो ॥ उपर नव श्रीका  
ररे ॥ सु० १७ ॥ सर्व गाथा २४१३-

ढाल ११० मी.

दुहा ॥ उमया केहने नवि गमे ॥ सासूने घेँ गा  
ळ ॥ टाकर टोळाशुं रमे ॥ सासु तणो कपाळ ॥ १ ॥ खाँ  
मि दळिने जळ गळि ॥ न करे घरनो काज ॥ वा  
धिणि जिम सामी घसे ॥ लोक तणी नही लाज ॥ २ ॥  
जूठी रूठी राससी ॥ वेढि करणि वाचाल ॥ विढती  
सासूने सिरे ॥ आपे अच्छतो आळ ॥ ३ ॥ सासू बोहे  
वहु थकी ॥ हुती जे विकराळ ॥ वाधिणि सरिखी व  
हुअरे ॥ सासु करी शीयाळ ॥ ४ ॥

ढाल ॥ करम परीक्षा करण कुमर चलयोरे ॥ ९  
देशी ॥ राग मारु ॥ वातमीयां सुणज्योरे नारि चरित्र  
नीरे ॥ इम करतां दिन जाय ॥ सासूने सत्तरोरे काळ  
प्रापत थयारे ॥ उमया हरखित थाय ॥ वा. १ ॥ जगति  
करेरे निज जरतारनीरे ॥ मन रिझवी जरतार ॥ पोता  
नी इच्छायेरे रमे पर पुरुषशुंरे ॥ दुस्तीळणी ते ना  
र ॥ वा. २ ॥ सोमदेव नामेरे एक आवक वसेरे ॥ तेह  
शु धरणने मित ॥ नारी वखाणेरे गुण मीत्र आगळेरे ॥  
सांजळ सगुणा मित ॥ वा. ३ ॥ सीज सुरंगीरे गुणवंत गो  
रटीरे ॥ मुजशु रातो तेह ॥ सोमदेव कहे सांजळ मी

व्र तुंरे ॥ नारिनो किश्योरे सनेह ॥ वा० ४ ॥ नारिनो न  
 कीजेरे वेसासमोरे ॥ चंचळ नारीनी जात ॥ तेह ना  
 रीनोरे रंग पतंगनोरे ॥ हीए मुख जुशरे वात ॥ वा० ५  
 नारी क्यारीरे बहु अवगुण तणीरे ॥ कीजे नहीरे वे  
 सास ॥ जो तुं मानेरे नहीं तो घर जशरे ॥ इणि परे  
 कहेजेरे तास ॥ वा० ६ ॥ किण इक गामेरे चालुंछुं हु  
 कामनिरे ॥ तुं रहेजे निज गेह ॥ तिमहीज कीधुरे मी  
 व्र तणुं कझुरे ॥ नारी कहै घरी नेह ॥ वा० ७ ॥ तुज  
 विण कंतारे हुं कीणीपेर रहुरे ॥ एकलमी घर मांह ॥  
 अबळा नारीरे जो रहु एकलीरे ॥ सहूको लागु थाय  
 ॥ वा० ८ ॥ हुं कुळवंतारे गुणवंती सतीरे ॥ न करुं केह  
 नो प्रसंग ॥ पण गोळ देखीरे दाढ सहुनी गळरे ॥ एह  
 वो नारीनो अंग ॥ वा० ९ ॥ तुज विण सुनारे मंदिर  
 माळीयारे ॥ तुज विण सुनारे सेज ॥ तुज विण के  
 हारे सुख संसारनारे ॥ तुज पाखें श्यो हेज ॥ वा० १०  
 ॥ तुज विण कंतारे न्हावण धोवणारे ॥ पान फुलनो  
 परिहार ॥ वस्त्र न पहेरुं कंता शोभतारे ॥ हुं न करुं  
 शिणगार ॥ वा० ११ ॥ कुशळे वाल्हारे वहेला आवज्यो  
 रे ॥ धरज्यो मिउमा प्रेम ॥ आयो वळीनेरे घरमां ॥



पी, रझोरे ॥ नारी न जाणे तेम ॥ वा० १२ ॥ कोइ नर  
 आव्योरे ऽटले निसि समेरे । ले गइ महल मझार ॥  
 सेजनी समारीरे फूल जला पाथर्यारे ॥ शोळ संज्या  
 शिणगार ॥ वा० १३ ॥ ताजाने कराव्यारे भोजन जार  
 नेरे ॥ दीधां फोफळ पान ॥ दीपक करीनेरे महेल दी  
 पावीयोरे ॥ कयों सुर मंदिर समान ॥ वा० १४ ॥ लुब  
 धि नारीरे ते पर पुरुषर्युरे ॥ करती विषय विलास ॥  
 चरित्र निहाळ्यारे सहु निज नारीनारे ॥ धिग धिग  
 ए घर वास ॥ वा० १५ ॥ एहवुं देखीरे नर क्रोधे भयों  
 रे ॥ करुं नर नारिनी घात ॥ वळी विचार्युरे नारी  
 मारतारे ॥ विस्तरशे जग वात ॥ वा० १६ ॥ देखी ऊं  
 ध्यारे नरनारी विन्हेरे ॥ जार हण्यो ततकाळ् ॥ ऽटले  
 थइ एकसो दसमी मलीरे ॥ कहे जिन हरप, ए ढाळ  
 ॥ वा० १७ ॥ सर्व गाथा २४३४

ढाळ १११ मी.

दुहा ॥ परनारिशुं प्राणीया ॥ कीजे नहीं सनेह ॥  
 सुख थामो ने दुख घणो ॥ परतक्ष विष फळ एह ॥  
 १ ॥ परनारीशुं प्रीतमी ॥ मत जोडे जगदीस ॥ जीवे  
 तो अपयश हुवे ॥ नहीं तो खोवे शीस ॥ २ ॥ जे न

र बल बुद्धि आगळा ॥ मारी न शर्क कोय ॥ ते प  
 रनारी संगते ॥ मरण लहे पर लोय ॥ ३ ॥ उमयाशुं  
 करी प्रीतडी ॥ भूओ तह पुरुष ॥ इणे अवसर जागी  
 तिहां ॥ जोवे जार निरख्य ॥ ४ ॥ पासे को दीसे नहीं ।  
 नार्यो दीसे जार ॥ तव उगामी नीसरी ॥ नाख्यो कुप  
 मझार ॥ ५ ॥ रवि सशि तारा ग्रह तणो ॥ लहीये तेहे  
 विचार ॥ पण नारिना चरित्रनो ॥ कोइ न पामे पार ॥ ६ ॥

ढाळ ॥ रहू रहू रहो घालहा ॥ १ देशी ॥ नारि च  
 रित्र तुमे सांजळो ॥ उमया तणा उगंय ॥ रायरे ॥ खी  
 र खांम घुत वाकळा ॥ थाळ मरीयो जाय ॥ रायरे ना  
 री ॥ १ ॥ केने पति तेहनो थयो ॥ गइ समसान मझार ॥  
 रा ॥ भूत भेत जिहां शाकिनी ॥ बीहे नहीं ते नार ॥  
 रा ॥ ना ॥ २ ॥ उमराणी डुंगर चमी ॥ पड्ठी गुफा मझार  
 ॥ रा ॥ वेगी चोसत योगिनी ॥ किंडा करे अपार ॥ रा ॥  
 ना ॥ ३ ॥ उमया पाए लागीने ॥ आगळ मुंक्यो थाळ  
 ॥ रा ॥ निरखी हरखी योगिनी ॥ बोलावी ततकाळ ॥  
 ॥ रा ॥ ना ॥ ४ ॥ तुजं कारज उमया सय्यो ॥ कहे न स  
 य्यो माय ॥ रा ॥ मरण थयो मुज जारनो ॥ ते दुख  
 हीधे न माय ॥ रा ॥ ना ॥ ५ ॥ कृपा कवी मुज उपरे ॥

विद्या धो माय ॥ रा० ० हुं वेसुं दक्ष उपर ॥ ते दक्ष चाल्यो  
 जाय ॥ रा० ना० ६ ॥ बहु नरशुं सुख शोगवुं ॥ कदी न हु  
 वे विस्ववाद ॥ रा० ० मारी केहनी नवि मरुं ॥ नरां उताहं  
 नाद ॥ रा० ना० ७ ॥ शुण उमया देवी कहे ॥ महाबळ दे  
 हण वार ॥ रा० ० उमया कहे हुं आपशुं ॥ महाबळ भुज  
 भरतार ॥ रा० ना० ८ ॥ अंजन आपो भुज भणी ॥ जि  
 म मांटी वश थाय ॥ रा० ० काम सरे जिम माहरो ॥ तुमने  
 वळ दिवराय ॥ रा० ना० ९ ॥ विद्या अंजन आपीयो ॥  
 चाली वेसी दक्ष ॥ रा० ० मांटी प्रण क्रैमे चलयो ॥ दीठां च  
 रीत्र प्रतक्ष ॥ रा० ना० १० ॥ कमया आवी निज घरे ॥  
 धरण गयो मित्र पास ॥ रा० ० नारी चरीत्र निहाळीयां ॥  
 सहु संजळाव्या तास ॥ रा० ना० ११ ॥ हवे घर मांहीं रहुं  
 नहीं ॥ सांजळ मित्र सुजाण ॥ रा० ० करुं वेसास नारी त  
 णो ॥ तो खोळं निज पाण ॥ रा० ना० १२ ॥ सोम कहे मि  
 त्र सांजळो ॥ धन मुंकी मत जाय ॥ रा० ० चंचळ नारी  
 एकली ॥ धनथी अवगुण थाय ॥ रा० ना० १३ ॥ नाकि  
 णने जर पिंचमी ॥ वेलो ने वळी वाम ॥ रा० ० वानर ने  
 धांळी वढ्यो ॥ वळतो कहेने पाम ॥ रा० ना० १४ ॥ ता  
 हरे पण धन जोश्ये ॥ धन विण न सरे काज ॥ रा० ०

तिण कारण धन लेइ चलयो॥ वाधे सुख ने लाज॥  
 रा० ना० १५॥ मित्र वचन मानी करी ॥ धन, लोधुं क  
 री बुद्धि ॥ रा० धरण तुरत पंथे चलयो॥ आगे मिलि  
 यो सिद्ध॥ रा० ना० १६॥ चरणे लागीने कहे ॥ करम  
 कीयां में कोड ॥ रा० करम कथा मुज शी कहूं ॥ ब  
 हल्याथी छोड ॥ रा० ना० १७॥ सिद्ध पुरुष बोल्थो ति  
 से ॥ चिंता छे मुज एक ॥ रा० सोवन पुरिसनो मंत्र छे  
 ॥ धन विण न फले छेक ॥ रा० ना० १८॥ ते धन मुज  
 पासैं नही ॥ धन विण आळ पंपाळ ॥ रा० कहें जिन  
 हरष पूरी थइ ॥ एकसो इग्यारमी ढाळ ॥ रा० ना०  
 १९॥ सर्व गाथा २४५९॥

ढाळ ११३ मी.

दुहा॥ धरण कहें धन ल्यो प्रप्तो ॥ करो सफल  
 निज काज ॥ सिद्ध पुरुष हरख्यो धणुं ॥ वचन शुणी  
 अमीराम ॥ १॥ धन लोधुं नहीं धरणनुं ॥ दीघां विद्या  
 दान ॥ जेह थकी जाणीजीये॥ तीन काळनों ग्यान ॥  
 २॥ धरण चरण प्रणमी चलयो ॥ प्रमतो महावन मांह  
 ॥ मुनि विधवो एक वृक्ष तळे ॥ देखी थयो उछांह ॥ ३  
 मुनीवर केरा पाय नमी । कर जोडी कहे ५म ।

वे हत्या मुज शिर चढी ॥ तेथी छुटुं केम ॥ ४ ॥ जैन  
धरम आराध तुं ॥ मुनि कहे जप नवकार ॥ सेवुंज  
य तिरथ जइ ॥ निज पातिक उतार ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ लंका ले जिगी सुण रावण ॥ ९ देशी ॥ व  
चन द्श्यो मुनिवरनो सुणीयो ॥ जइ सवुंजय तिरथ  
फरयो ॥ पान महावन लुणीयो ॥ व० १ ॥ श्रीजिनभा  
पित धर्म आराधे ॥ जपे नवकार सदाई ॥ निज ना  
रीथी मरतो मंदिर धरण न जाई ॥ व० २ ॥ नारी मारे  
जो घर जइए ॥ नारी विपनी क्यारी ॥ राय प्रदेशी  
मुज सरीखा ॥ मार्या इणे धूतारी ॥ व० ३ ॥ मनमां ध  
रण विचारी एहवुं ॥ स्त्री घर मुंक्यो ताजा ॥ नारी च  
रीवनो पार न लहीये ॥ हेम कहे सुणं राजा ॥ व० ४ ॥  
वात न बेसे ए मुज मन मांही ॥ हेम सुणो ससनेहा ॥  
केम गळे कुंजरने कीनी ॥ मुज मन एह सदेहा ॥ व०  
५ ॥ इए अवसर एक पाटण मांही ॥ मरण लह्यो वि  
वहारी ॥ पीती घरी पीतमने केडे ॥ सती हुवे तस ना  
री ॥ व० ६ ॥ राय भणी आवी वीनवीयो ॥ नृप कहे ह  
वे थइ संध्या ॥ मत बाळज्यो अवळा हुं पण ॥ आ  
वीश प्रात अवंध्या ॥ व० ७ ॥ मध्य निशा जव थाये

राजा ॥ हाथे खडग संवाहे ॥ सती वेठी जिहां वळवा  
 ठामे ॥ महा समसाण मांहे ॥ व० ८ ॥ नाद शुण्यो ण  
 अवसर श्रवणे ॥ जाणे किन्नर आलापे ॥ नादे सुरन  
 र नारी मोहाये ॥ दुखीयानां दुख कापे ॥ व० ९ ॥ पं  
 गु पुरुष तिहां वेठो गाये ॥ जिणे नादे रवि थंभे ॥ ते  
 पासे जइ वेठी नारी ॥ सांभळे थइय सचंभे ॥ व० १०  
 ॥ नाद सुणतां थइ कामातुर ॥ पंगु जणी कहे स्वामी  
 ॥ मुजशुं जोगव जोग सुरंगा ॥ कहुं तुजने शिर नामी  
 ॥ व० ११ ॥ माहुरुं काम नहीं मुज म कहीश ॥ दीन सती  
 सुख जाखे ॥ हुं आवी तुज आश्या करीने ॥ कां अ  
 वहेली जाखे ॥ व० १२ ॥ सती वयण सही शक्यो नही  
 ॥ पंगु तणो चित चळीयो ॥ तिणि वेळा तिण ठामत  
 तखिण ॥ तिणि नारिशु मिलीयो ॥ व० १३ ॥ करी कूक  
 र्म सती तिहां आवी ॥ वात सयळ नृप जाणी ॥ थयो  
 परजात राजा पण आव्यो ॥ सती जणी कहे वाणी ॥  
 व० १४ ॥ कां पेसे तुं पावक मांही ॥ कांई वळे तुं बाइ  
 ॥ कहे जिनहरप एकसो वारमी ॥ दाळ थइ सुखदा  
 इ ॥ व० १५ ॥ सर्व गाथा २४८२ ॥

ढाळ ११३ मी.

दुद्रा॥ चरणे लागुं नूप कहे॥ वहेन वचन मुज मा  
न ॥ आपघात करतां हुवे॥ दुखीयो जिव निदान ॥  
१॥ सती कहे नूप सांभळो ॥ प्रीउशुं अधिको नेम ॥  
तेहशुं मिलवो माहरे ॥ इहां रहो कहो केम ॥ २॥ कु  
सर कहे सांभळ सती ॥ किहां मिलशे जरतार ॥ क्रीध  
कमाइ जूजूइ ॥ मिलवुं नहीं संसार ॥ ३॥ लख चोरा  
शीमां जमे ॥ केहनेन मिले कोइ ॥ जीव जाये गति जू  
जूइ ॥ हीये विचारी जोइ ॥ ४॥ सती कहे खोटी म क  
र ॥ माहरे वळवुं आज ॥ पीतम साथे वळुं नहिं ॥ तो कि  
म बाधे लाज ॥ ५॥

ढाळ॥ करि शिणगार वंदावन माल्ही ॥ राधा रम  
वा चालीरे ॥ मारी सखीरे समाणी ॥ १ देशी ॥ सतीय ज  
णी दोलावी नेमी ॥ एकांते नुर तेमीरे ॥ कहे नूप उरगा  
री ॥ कां चूके छे आ भव लीला ॥ धन भोगवे करी  
लीलारे ॥ क० १ ॥ सील जाणुं छु सहु हुं ताहरुं ॥ मा  
न कसुं तुं माहरुं ॥ क० वात गइवीसरी रयणीनी ॥  
काया मुंकी धणीनीरे ॥ क० २ ॥ जइ पांगुलाश्रुं सग  
स कीधो ॥ अमृत तजी विष पीधोरे ॥ क० एहवां व

चन सुणोने रुठी ॥ बुंव पामोने उठीरे ॥ क० ३ ॥ जोवो  
 रे लोको सुविचारी ॥ सशि सूर वरसे अंगारीरे ॥ क०  
 पाणीमांथी उठी झाळा ॥ दूध थयो मिटि हालार ॥  
 क० ४ ॥ काजे कहेवाये राजा न्याइ ॥ ते करे निच क  
 माइरे ॥ क० मुज कहे तुं था मुज नारी ॥ सुख भोग  
 व संसारीरे ॥ क० ५ ॥ नियम कयों राजा अविचार्यों ॥  
 नारि मुई सुख हायोंरे ॥ क० नूपने न संर राणी पाखे  
 ॥ तिणे मुजने इम भाखेरे ॥ क० ६ ॥ राय तणी इम ही  
 ल करावी ॥ पावक नारि झंपावीरे ॥ क० राय थयो  
 दिलगीर सयाणो ॥ लोको मांहीं लजाणोरे ॥ क० ७ ॥  
 उतरीयो राजानो पाणी ॥ वात सहु जग जाणीरे ॥ क०  
 लाज्यो नूप दरवारे नावे ॥ हेम कुमर तेमावेरे ॥ क०  
 ८ ॥ आवी गुरुने पाये लाग्यो ॥ कां मन संसद्य जाग्यो  
 रे ॥ क० वयण जेह भाख्या गुरुराये ॥ ते किम खोटा  
 थायेरे ॥ क० ९ ॥ में मूरख मन शंका थाणी ॥ सत्य तु  
 म्हारी वाणीरे ॥ क० तुम वयणे संका जो घारी ॥ ला  
 ज गइ मुज सारीरे ॥ क० १० ॥ नारि चरित्र लिखे न  
 हीं कोइ ॥ ते में मुंकी जोइरे ॥ क० तुं नकलंकअळे  
 मतधारी ॥ वात कही नूप सारारे ॥ क० ११ ॥ हवे तुज



शिस कलंक उतारुं ॥ लोक कहे सहु सारुंरें ॥ क०  
 लोक सहु राजा तेमाव्या ॥ हेम समीपे आव्यारे ॥ क०  
 ११ ॥ पांगुल नरने इहां वोलावों ॥ वहेला वार म ला  
 वोरे ॥ क० पंगु पुरुषने तेमी लावे ॥ हेमसूरिस वोला  
 वेरे ॥ क० १३ ॥ कीधां पूरव पाप कुवाटे ॥ पंगु धयो  
 ते मोटेरे ॥ क० आ जव जो तुं जुहुं वोलीश ॥ तो आ  
 गे दुख पामिशरे ॥ क० १४ ॥ सती तणो तुज दुपण ला  
 ग्यो ॥ तें तेहनो प्रत जाग्यारे ॥ क० पाणे सील सती  
 निज टाळ्यो ॥ परवसे अंग विटाळ्योरे ॥ क० १५ ॥  
 नाना करतां दोष लगायो ॥ कुसती सील भंगायोरे ॥  
 क० इण एकसोने तेरमी ढाळे ॥ नृप जिनहराय उजा  
 ढेरे ॥ क० १६ ॥ सर्व गाथा १५०२ ॥

ढाळ १२४ मी.

दुहा ॥ पंगु वयण श्रवणे सुण्यां ॥ सहुनी भागी  
 संक ॥ करे प्रसंसा रायनी ॥ १ जगमां निकलंक ॥ २  
 ॥ ज्ञानि गुरु जाणी ॥ पूछे एम नृपत्ति ॥ पूरव जव हुं  
 कुण हतो ॥ आगळ किहां उत्पत्ति ॥ २ ॥ वयर केम  
 वेसंगशुं ॥ मंत्री उदयन हेम ॥ महैर धरी मुज उपरे  
 कहोने स्वामी केम ॥ ३ ॥ पांच वोळ पूछ्या

॥ हेम कहे शुणराय ॥ चौसठ वरशे वीरथी ॥ जंबु नु  
गति सिधाय ॥ ४ ॥ प्रबल ज्ञान ते ले गयो ॥ अजय  
ज्ञान ते आज ॥ ते जे पूछो ते भणी ॥ करवो ताहरो  
काज ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ चांदारइ चांदणे करि शिणगारी ॥ राजा  
री राणी पाणी नीतरीजी ॥ ६ देशी ॥ आवीयो हेमसूरी  
सिद्धपुर गाम ॥ सरसतो सरिता तीरे रहीजी ॥ विधिंशुं  
आराधे तिहां सूरि मंत्र ॥ अठम तप करी गहगहीजी ॥  
७ ॥ त्रिभुवस्वामी सासन सूरी ताम ॥ आवीने हेमने क  
हे सहजजी ॥ पूर्व भाषित तणुं सांजळी भेद ॥ सांजळो न  
प तुमने कहंजी ॥ ८ ॥ देश मेवाड ठाउ जयपुर दंग ॥ रा  
य जयकेंसी तिहां जलोंजी ॥ वीर नामे थयो तेहनो पु  
त्र ॥ व्यसन सातां तणो ते निलोंजी ॥ देशवटो दीयो ता  
स झूपाळ ॥ मेवान संधि जइ रह्योजी ॥ पल्लीपति फेर  
मो थयो राजान ॥ देश लुंटे न छूटे गह्योजी ॥ ९ ॥ एक  
दीन माळव सारथजाह ॥ बहु रिद्धि लेइ जानो हतोजी  
॥ लुंटे लीवो वीर पल्लीपति साथ ॥ पान तेहनो भूंवयो  
जीवतोजी ॥ १० ॥ द्वेष जय्यो आव्यो माळव गांहि ॥ राजा  
नो कटक लेइ आवीयोजी ॥ वाणीये वीरनी वींटीरे पा

ल॥ चोरपति वीर पुलावीयोजी ॥६॥ गर्जवती नारी च  
 डी तस हाथ ॥ घाय मायों तेहने वाणीयेजी ॥ सिर चडी  
 दोय हत्या सनकाळ ॥ स्त्री बाळ वे मूआं जाणीयेजी ॥  
 ७॥ गाम बाळी हणी नारी पाप ॥ कटक लेश आव्यो  
 माळवेजी ॥ राय आगळ कहि वात सहु तेण ॥ नगरनो  
 नाथ स्त्रीजी चवेजी ॥८॥ फिट फिट पापी तें पाप बहु  
 कीध ॥ दुरगती गामी तुज प्राणीयोजी ॥ ताहरुं मुख ह  
 वे मुज म देखाल ॥ देश बाहिर काढ्यो वाणीयोजी ॥  
 ९॥ लोक हीले निंदी करे फिटकार ॥ आव्यो बइरा  
 ग्य तापस थथोजी ॥ कष्ट करे रहे वनह मझार ॥ का  
 ळे मृत्यु तिणे तापस लसोजी ॥ १०॥ तप वळ थयो जे  
 संगदेराय ॥ हत्या कीधी तेथी बाझीयोजी ॥ जू लों  
 ख मांरुण मारे नर जिह ॥ तेहने पुत्र न सिर ताजीयो  
 जी ॥ ११॥ पशु पंखी गाणस नान्हनां बाळ ॥ नोरे वि  
 योग करे मायनोजी ॥ तेहने पेढे छोरु नवि थाय ॥

॥ हेम कहे शुणराय ॥ चोसठ वरशे वीरथी ॥ जंबुनु  
गति सिधाय ॥ ४ ॥ प्रचल ज्ञान ते ले गयो ॥ अजप  
ज्ञान ते आज ॥ तें जे पूछो ते भणी ॥ करवो ताहरो  
काज ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ चांदारइ चांदणे करि शिणगारी ॥ राजा  
री राणी पाणी नीसरीजी ॥ ९ देशी ॥ आवीयो हेमसूरी  
सिद्धपुर गाम ॥ सरसतो सरिता तीरे रहीजी ॥ विधिंशु  
आराधे तिहां सूरि मंत्र ॥ अग्न तप करी गहगहीजी ॥  
१ ॥ त्रिभुवत्त्वानी सासन सूरी ताम ॥ आवीने हेमने क  
हे सहजजी ॥ पूर्व ज्ञापित तणुं सांभळी भेद ॥ सांभळी न  
प तुमने कहंजी ॥ २ ॥ देश मेवाड वाड जंयपुर दंग ॥ रा  
य जयकेंसी तिहां भलोजी ॥ वीर नामे थयो तेहनों पु  
त्र ॥ व्यसन सातां तणो ते निजोजी ॥ देशवटो दीयो ता  
स झूपाळ ॥ मेवान संधि जइ रत्नोजी ॥ पल्लीपति फेर  
मो थयो राजान ॥ देश लुंटे न छूटे गहतोजी ॥ ६ ॥ एर  
दीन माळव सारथगह ॥ बहु रिद्धि लेइ जातो हतोजी  
॥ लुंदि लोयो वीर पल्लीपति साथ ॥ पान तेहनो मूंकयो  
जीवतोजी ॥ ५ ॥ छेप भयो आव्यो माळव गांहि ॥ राजा  
ना कटक लेइ आवीयोजी ॥ वाणीये वीरनी वींटीरे पा

८॥ चोरपति वीर पुलावीयोजी ॥ ६॥ गर्जवती नारी च  
 डी तस हाथ ॥ घाय मार्यो तेहने वाणीयेजी ॥ सिर चढी  
 दोय हल्या सनकाळ ॥ ली वाल वे मूआं जाणीयेजी ॥  
 ७॥ गाम वाळी हणी नारी पाप ॥ कटक जे आव्यो  
 माळवेजी ॥ राय आगळ कहि वात सह तेण ॥ नगरनो  
 नाथ खोजी चवेजी ॥ ८॥ फिट फिट पापी तें पाप बहु  
 कीध ॥ दुरगती गानी तुज प्राणीयोजी ॥ ताहसं मुख ह  
 वे नुज म देखाळ ॥ देश बाहिर काढ्यो वाणीयोजी ॥  
 ९॥ लोक हीले निंदी करे फिटकार ॥ आव्यो वइरा  
 ग्य तापस थयोजी ॥ कट करे रहे वनह मझार ॥ का  
 ळे मृत्यु तिणे तापस लहोजी ॥ १०॥ तप बळ थयोजे  
 संगदेराय ॥ हल्या कीधी तेथी वाझीयोजी ॥ जू जी  
 ख मांऊण मारे नर जेह ॥ तेहने पुत्र न सिर ताजीयो  
 जी ॥ ११॥ पशु पंखी माणस नान्हनां वाळ ॥ मोरे वि  
 योग करे मायनोजी ॥ तेहने पेटे छोरु नधि थाय ॥  
 थाये तों जीने नहीं तेहनोजी ॥ १२॥ हवे कहुं वीर  
 छीरतिवात ॥ वाटे मुनिवर मिल्यो तेहनेजी ॥ नाम छे तें  
 हनो यशोपद्रमूरि ॥ ज्ञान अक्षय निधि जेहनेजी ॥  
 १३॥ बांकीने वेठो गुरु पास ॥ धरम कथा कहे तेह

णीजी ॥ निरखी उत्तम नर सुगुरु सधीर ॥ वाणी सु  
 णावे सोहामणीजी ॥ १४ ॥ धर्म करोरे प्राणी आणी वि  
 वेक ॥ दान दया दम उपशम धरोजी ॥ सील पाळो टा  
 ळो बचनना दोष ॥ पाप अढार दूरे परिहरोजी ॥ १५ ॥ वी  
 र कहे गुरु सांजळो वात ॥ पशु जिम में नव नीगम्यो  
 जी ॥ दान तप सील जाव्यो नहीं जाव ॥ धरम पाखे  
 भव आघम्योजी ॥ १६ ॥ पांचे में शेव्या आश्रव द्वार  
 ॥ पाप करीने में पोतो भयोजी ॥ सुगुरु तुं मिल्यो हवे  
 मुज भणी तार ॥ दुरगतिनां दुखयी खरो डरयोजी ॥  
 १७ ॥ प्रवहण सारिखो तुं गुरु राय ॥ लोहडा सारिखो  
 हुं सहीजी ॥ एकसो चउदमी ढाळ रसाळ ॥ कविजि  
 नहरप भली कहीजी ॥ १८ ॥ सर्व गाथा २५२५ ॥

ढाळ ११५ मी.

दुहा ॥ भारी लोहमा सारीखो ॥ तुं गुरु प्रवहण  
 तार ॥ जुब सायसमां वुमतां ॥ मुजने पार उतार ॥ १  
 ॥ यशोभद्र मुनीवर कहे ॥ यथा शक्ति करी धर्म ॥  
 सुख पामिश सहु धर्मथी ॥ धर्म थकि अक्षय कर्म ॥  
 २ ॥ जीव घात न करुं हवे ॥ व्यसन न शेवुं तास ॥  
 गरुमुखे अगम करी चल्यो ॥ वीरवीर साक्षात ॥ ३ ॥

तिलंग देश तिहां नव लख ॥ नव लख तेहनां गाम ॥  
 एकसला नगरी तिहां ॥ आढर वणिक सुनाम ॥ ४ ॥  
 मुन्यवंत विवहारीयो ॥ जसु वर दान अपल्ल ॥ अन्न  
 पान पामे सह ॥ उत्तम घरनी चल्ल ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ होजी सोनारी चकल्यो ने रुपारी मोर ॥  
 सांंधण पाणी सांचरी ॥ ए देशी ॥ होजी आढरने घरे  
 आव्यो वीर ॥ भूख्यो मांगण लाजतो ॥ होजी मो  
 टा मांगण मरण समान ॥ वीर विचारे आयतो ॥ १ ॥  
 होजी शेठ तणी हुं सारुं शेव ॥ काम करी भोजन क  
 रं ॥ होजी तो सत्रिनो रहें विवहार ॥ एम करी पेद  
 सुखे भरुं ॥ २ ॥ होजी शेठने आवी करीयो झुहार ॥  
 गलगल सादे बोलीयो ॥ होजी चाकर मुजने राखो  
 शेठ ॥ काम करीश सह तुम दीयो ॥ ३ ॥ होजी उत्तम  
 नर देखी शेठ ॥ आदरशुं बोलावीयो ॥ होजी कुण  
 नाम कुण ताहरी जात ॥ किहांथी कहे तुं आवीयो ॥  
 ४ ॥ होजी नाम ठाम सह दाख्या वीर ॥ राख्यो आढर ते  
 हने ॥ होजी भोजन देशसि करे काम ॥ वस्त्र देशमि तुज दे  
 हने ॥ ५ ॥ होजी घरनां काम करे सह वीर ॥ रहे इणी  
 परे मुखशुं सदा ॥ होजी आव्या तेहवे पजूसण पर्व

॥ धरमी आराधे मुदा ॥ ६ ॥ होजी आदरना सुत च्या  
र ॥ निज सुत नारि सहु मिळी ॥ होजी पचस्तीने वे  
ठा उपवास ॥ धरमशाळायें मन रुळी ॥ ७ ॥ होजी  
वीर सहु करे घरनो काम ॥ आव्यो कोइ दीसं नही ॥  
होजी धरमशाळाए आव्यो ताम ॥ वेठा सहु दीग स  
ही ॥ ८ ॥ होजी बहुअर साहमो जोवे जाम ॥ वनव  
मती बोळि तिते ॥ होजी हालीने खाघाशुं काम ॥ पु  
न्य पाप मन नवि वसे ॥ ९ ॥ होजी उत्तम पर्व पजुतण  
आज ॥ उपवाशी लघु वृद्ध सहु ॥ होजी हालीने पे  
ट भरलाशुं काम ॥ इश्युं वयण बोली बहु ॥ १० ॥ हो  
जी वीर कहे सुण मोरी माय ॥ श्या माटे स्त्रीजो तु  
झे ॥ होजी हुं पण आज करिश उपवास ॥ आज  
आहार न ल्युं अहे ॥ ११ ॥ होजी शेठाणी कहे सांग  
ळ दास ॥ प्राणे अले न करावीये ॥ होजी जाणे तो  
रीमावे शेठ ॥ उलंढो अलने धीये ॥ १२ ॥ होजी वीर  
कहे करुं उपवास ॥ माता माहरी मन रुळी ॥ होजी  
तुम उरर स्त्रीजे नही कोइ ॥ करो धर्म कारज मिली  
॥ १३ ॥ होजी तुम साथे आवी पचस्वाण ॥ गुरु मु  
खे करुं उपवास्तुनो ॥ होजी पोसहतानी सजा मझार



॥ आघो ऊक्तो आसनो ॥ १४ ॥ होजी वीरने शेत वो  
 लाव्यो ताम ॥ श्यें कारज तुं आवीयो ॥ होजी वीन  
 य करी कहे ताम ॥ आज पोसह करणो माहीयो ॥  
 १५ ॥ होजी वीर दुःकर थाशे उपवास ॥ म करिश  
 शेते वारीयो ॥ होजी देखी तेहनो भाव अपार ॥ गु  
 रे पचखाण करावीयो ॥ १६ ॥ होजी करि उपवास  
 सुणे व्याख्यान ॥ शेते निशि पोपध ग्रसो ॥ होजी आ  
 दर शेत समीपे ताम ॥ वीर दास वेशी रह्यो ॥ १७ ॥  
 होजी पोसह पारी शेत ॥ पभाते वीर सहीत आव्यां  
 घरे ॥ होजी ढाळ पनर एकसो थड इह ॥ कटि जिनहर  
 ष जल्लीपरे ॥ १८ ॥ सर्व गाया २५४८.

ढाळ ११६ मी.

जिन पूजवा ॥ हीयमे हरष अपार ॥ १॥ शैठ तास  
साथे करी ॥ आव्या जिन गृह द्वार ॥ निशिही कही  
मांही गया ॥ बीजी मध्य गङ्गा ॥ ५॥ देख तीन प्रदक्ष  
णा ॥ चैत्यवन्दनने ताम ॥ बीजि निशिही तिहां कहे ॥  
तीन अवस्था ताम ॥ ६॥

ढाळ ॥ आइसडाना गीतनी देशी ॥ शैठ कहेरे  
वीर पूजो श्री जिनराय ॥ केसर चंदन घनसारश्रुंरे ॥  
जला अगर उखेवोरे फुल चढाय ॥ जिनराय पूजो  
जलि भावश्रुंरे ॥ ८॥ हवे वीर सध्मीर विचार मन मां  
हीं श्रुंरे ॥ पर द्रव्ये पूजा करतां पुन्य न होय ॥  
धोमोहीरे जो पोता तणारे ॥ जिन आगे लागो नावे  
पातिक धोइ ॥ ९॥ जिनराय पूजो जलि भावश्रुंरे ॥ ए  
आकणी ॥ इहवुं वीर विमांशी आतम कोही पांचनी  
रे ॥ लीधा मालण पासे कुशम अढार ॥ जेइ जिन  
हरष चढावीयारे ॥ निज उलट जावे हीयमे हरष अ  
पार ॥ जि ० ३॥ मन रंगे आढरं शैठ शैवक पूजा करी  
रे ॥ आव्या पोताने मंदिर सुंदर गुण माळ ॥ भोजन का  
जे वेठो गृहपतिरे ॥ वीरने बेसारी आप्यो माटोरे धा  
॥ जि ० ४॥ पहिले दूध साकर केरारे लांधा घंटडा

रे ॥ ताजी सुखडी मंगावेरे शेठ मुजाण ॥ जलेवीरे सां  
 ऊ ऊजळोरे ॥ पेंना पापन साकरनारे आणी ॥ जि० ५  
 ॥ नमि नवि जाति तणारे झाझा लाडुआरे ॥ उपर खो  
 र झाझो खांम घुत परिघल परनाल ॥ पातळी पोळी  
 घी चोपनारे ॥ जिमी रक्षा केमे सुंदर साळने दाळ ॥  
 ॥ जि० ५ ॥ सथरा दहीशुं वळी जिम्यारे कूर सोहामणा  
 रे ॥ चळुं कीधां दीधां फोफळ पान लाविग ॥ वीरनी  
 शेठे भगति भली करीरे ॥ जिन धरम उपर वाध्यो उ  
 छरंग ॥ जि० ७ ॥ मुनिवर प्रहरावारे शेठे कीधुं पारणुं  
 रे ॥ आरंगे उपर वीना पान सुरंग ॥ उरगारी करे उ  
 पगारमारे ॥ शेठ खरचे निज द्रव्य धरी उछरंग ॥ जि०  
 ८ ॥ सहु लोक कहे धन धन जगमा जस ॥ देखेने जिमे  
 ते जग माही धन्य ॥ जिम्यो कहीये तेहनो खरोरे ॥  
 झोवरव्यो कहीये दीधा विण जिमे अन्न ॥ जि० ९ ॥ क  
 विव ॥ खोला वरटी तेल ॥ शाक पाखे निति सारी ॥ मी  
 से झुंडी नार ॥ पेट कहो किणी परेवरे ॥ उरर ढोली  
 घेंस छस तो ॥ माही पाणी मांही न मिले नूण किसी क  
 हुं कर्म कहाणी ॥ आहार अढाई शेरनो ॥ शेर सवा  
 दोहिलो लहे ॥ विण दान कहीजे झोवरव्यो ॥ गोजन

एहने कुण कहे ॥ १ ॥ ढाळ पुर्वनी ॥ हवे भोजन ताजां  
 सरसारे वीर घणा कर्यारे ॥ थई वेदन चुंथाथे जीव  
 शरीर ॥ शेठ पासो वीर जइ कस्योरे ॥ करि औपध उ  
 पचार थइ दीलगीर ॥ जि० १० ॥ बहु तेल अणाव्या  
 ततखिण शेठ चोळवारे ॥ पांते चोळे शेठ वीर शरीर  
 ने पाय ॥ मात्ता बहु वैद्य तेडावीयारे ॥ वैद्य ततखिण  
 कीधां औपध दाय उपाय ॥ जि० ११ ॥ तिणे अवसर  
 धीर विचारेरे मनमां एहवरे ॥ धनधन जिनशासन जि  
 न धर्म रसाळ ॥ एक पूजारे कीधी जिन तणीरे ॥ एक की  
 धो में उरवास जइ पोशाळ ॥ जि० १२ ॥ ते माटे ए  
 सघळा गाहरी शेवा करेरे ॥ एतो श्री जिनवरना धर  
 म तणो सुरसाय ॥ मुज पोतिरे पुण्य किहां थकीरे ॥  
 आराधुं श्री जिन धर्म पूजुं प्रजु पाय ॥ जि० १३ ॥ ध  
 र्म ध्यान वश्यो वीरना हैदा मांही दश्यरे ॥ जिन वच  
 न शुण्यारे काने सार ॥ च्यारे सरणां तेहने दीयारे ॥  
 वीर प्राण तज्यां शुभ ध्यान लहि तिणी वार ॥ जि०  
 १४ ॥ उत्तम माणसनी संगते सहु सारुं हुवरे ॥ जिन  
 आढर शेठ तणी संगते वीरदास ॥ जिनहरप कहे सु  
 ख पायीयारे ॥ एकसो सोळनी ढाळ कही ए स्वास ॥

जि० १५॥ सर्व गाथां २५५॥

ढाल ११७ मी.

दुहां॥ गिरुआ गुज्जर देशमां॥ वसे दहथली गाम  
॥ तिहुअणपाळ तस भारया ॥ कास्मेरी इण नाम ॥ १  
॥ तसु कुखेतुं उपन्यो॥ हूओ कुमर नरेश ॥ फुल अ  
ढारे पूजीने॥ जहा अढारे देश ॥ २॥ आढर ते उदयन  
थयो ॥ यशोभद्रं ते हेम ॥ आगळ विंतर गति हुरये ॥  
कहे हेम गुरु एम ॥ ३॥ तिहांथी चवी आ भरतमां ॥  
भट्टिलपुर पुर नाम॥ शतानंद राजा तिहां ॥ स्त्री धारि  
णी अतिराम॥ ४॥ तास सुत नशत बळ वळी॥ भोगवे रा  
ज भंडार ॥ पद्मनाभ जिनवर तणो ॥ थाइश तुं गण  
धार॥ ५॥ अक्षय अचळ अनंत सुख ॥ नहिं ज्यां आ  
ळ जंजाळ॥ थोमे काळे मुगति पदातुं पामिश भूपाळ॥ ६॥  
ढाल॥ पहिलो वधावो म्हारे सुसरारि होइजे ॥ बी  
जोहो वधावो म्हारावापरी ॥ ७॥ देशी॥ गुरुनो वचनं परी  
क्षा कारण॥ एकसिलाहो २ नगरि छे जिहांजी ॥ निज  
शेवक राजा जिहां मुंक्यो ॥ आढरहो २ घरे आव्यो ति  
हांजी॥ ८॥ दासी एक रहे घर मांदि॥ वैदेहीहो २ नाम छे  
ते तणोजी ॥ वात सहु नर तेहने पूछि॥ दासीहो २ क

हे दुख आपणोजी ॥ १ ॥ आदरशेठ मोटे विवहारी ॥  
 अघारेहो २ पुत्र सलक्षणाजी ॥ जैन धरमने रंगे राता ॥  
 बहु धनहो ३ विलसे सुख घणाजी ॥ ३ ॥ वीर इसे नामे  
 एक शेवक ॥ पूजाहो २ एक जिननी करीजी ॥ एक क  
 यों उपवास ॥ पजूमणहो ३ पारणे तेह गयो मरीजी ॥ ४  
 ॥ शैव शैठानी गया परलोक ॥ बहुअरहो २ पुत्र च  
 ल्या सहजी ॥ हुं जीवुं छुं दुखनी माधीसी ॥ दुखहो ३  
 वात कहुं बहुजी ॥ ५ ॥ उत्तम जाये अल्प आउखे ॥  
 पापीहो २ चिरंजीवी हवेजी ॥ वात सुणी शेवक नृप पा  
 से ॥ आवीहो २ सवळीही चवेजी ॥ ६ ॥ ज्ञान अधिक तु  
 म मांहि मुनिवर ॥ टाळ्योहो ३ संसय इण घमीजी ॥  
 कुण कंधता कुण जागता कह्ये ॥ वावेहो वावे संसा  
 र कुण बेलमीजी ॥ ७ ॥ विष अनृत ने गहन नरगश्युं  
 ॥ भाखोहो २ भेद सुहामणाजी ॥ मुखने नित उंघतो  
 कह्ये ॥ जागेहो ३ जेह विचक्षणाजी ॥ ८ ॥ जेहने बहु  
 तृष्णा ते वावे ॥ बेलीहो २ संसारनी आसवाजी ॥ पर  
 निंया ते विष हालाहल ॥ पंक्तिहो ३ वाणी अमृत ल  
 वाजी ॥ ९ ॥ नारि चरित्र ते गहन कह्ये ॥ परवशहो  
 ३ तेह नरग गिणोजी ॥ हरख्यो नृप ३ अरथ सुणीने

भाखोहो२ भेड वळी एह तणोजी ॥१०॥ कुण आंधो  
 कुण सूर सुमट नर॥ गुरुताहो२ पणुं केहने कस्योजी॥ ल  
 घुता दिन मित्र कुण वहिरो ॥ एहनोहो२ आय तुमथी  
 लस्योजी ॥११॥ कामी नर ते अंध कहीजे ॥ सुरो  
 हो२ नारि वस नषि पमळोजी ॥ गुरुतापणुं जे हाथ  
 न लमे ॥ लघुताहो२ मांगण नर घडळोजी ॥१२॥  
 धर्म विना ते दिन दोहिलो ॥ धर्मजहो२ पमाडे मित्र जे  
 जी ॥ श्रीजिन वचन सुणे नहीं श्रवणे ॥ बहेरोहो२ क  
 हीये पुरुष तेजी ॥१३॥ कुण अधम कुण भुंगो चंच  
 ल ॥ जीत्योहो२ जग केणे वस कर्योजी ॥ कुण प्रसं  
 स्यो सार किश्यो कहे ॥ अधमजहो२ जेई व्रत परिह  
 र्योजी ॥१४॥ जिन गुण गाय न जाणे भुंगो ॥ चंच  
 लहो२ दुरजन प्रीतमीजी ॥ क्षमता समता तिणे जग  
 जीत्यो ॥ थायेहो२ वश्य निय वच जमीजी ॥१५॥  
 अलप रिद्धि दातार प्रसंसे ॥ देईहो२ मीठो ऊचरेजी  
 ॥ सारमां सार कहीजे ते नर ॥ गुरुनीहो२ प्रसंसा नृप  
 करेजी ॥१६॥ तुं ज्ञानी मुजने मिल्यो ॥ तारकहो२ तुं  
 जग जीवनीजी ॥ सो जिनहरप सत्तरमी ढाळे ॥ धन  
 धनहो धन जिण कुळे तुं अपनोजी ॥१७॥ सर्व गा

था २५८३॥

ढाळ ११६ मी.

ढुहा ॥ कुमर कहे उपगारु तें ॥ मुज कीधा गच्छ  
 राय ॥ धर्म कथा कहों मुज जणी ॥ जीव मुगति कि  
 म जाय ॥ १ ॥ जिन पूजे जिनवर नभे ॥ जिनह न  
 खेंने आण ॥ जिन वयणे राता रहे ॥ ते पामे निरवा  
 ण ॥ २ ॥ मुनिवर वंदे भगतिशुं ॥ मुनिवर आपे दान  
 ॥ मुनिवरनी शेवा करे ॥ पामे केवळज्ञान ॥ ३ ॥ सम  
 कितशुं रंगें रमे ॥ मुणे सदा सिद्धांत ॥ ज्ञान आराधे  
 निरमळां ॥ लहे मुगति एकांत ॥ ४ ॥ हीयडा मांहीं रा  
 खीये ॥ चतुर भावना च्यार ॥ मैत्रि द्वितीय प्रमोद  
 गिणी ॥ करुणा मध्यस्थ सार ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ नच्छगइण जाणइरे बलाय ॥ आवइ लो  
 क सरीयो सिंगल्या वइलो धमाय ॥ म्हाराहो राज न  
 छदे धमाय ॥ १ देशी ॥ भावना कही तुम्हे नामे निरधार ॥  
 एहथी पामेरे रुडो मुगति दवार ॥ म्हारा मानीताहो पूज्य  
 अरथ सुणाय ॥ सहु जीव साथे राखे प्रेम परिणाम ॥  
 पहिली ए कहीये मैत्री भावना नाम ॥ म्हा ० १ ॥ गुणवं  
 तना गुण प्रही चित्त लाय ॥ बीजी प्रमोद भावना कहे



वाय॥म्हा० दीन दुखी देखी दया मन मांहिं॥ ९ कहीं  
 करुणा भावना उच्छांहि॥म्हा० १॥ क्रूर करम करे जे  
 नर नारि ॥ देव गुरु निदि निन्हव अपार ॥म्हा० रा  
 ग द्वेप नाणे चित्त मझार ॥ मध्यस्थ भावना एह वि  
 चार ॥म्हा० ३॥ इणपरे आराधे साधे जिन धर्म॥ मू  
 लधी उपामी नाखे आठे कृत कर्म ॥म्हा० कुमार नरिं  
 द सुणी हरख्यो अपार॥ विविध प्रकारे करी पुण्य सि  
 रदार॥म्हा० ४॥ सात खेज आवकना कस्य जिनराय॥  
 निज वित वावे नून तिहां शुज भाय ॥म्हा० चउद स  
 हेंस जिन कराव्या मासाद ॥ जिण दीवां भागे सहु म  
 न विखवाड॥म्हा० ५॥ जर्नम दिक्षा ने जिन न्यान  
 निरवाण ॥ तिहां जिन भूवन कराव्या नूप जाण ॥  
 म्हा० सोळ सहेंस कर्या जिण ऊद्धार॥संपति नरिंद परें  
 करे विस्तार॥मा० ६॥ लंचो पंचविस धनुषश्रुं प्रेम ॥  
 भुवन करावि मांहिं थाप्या श्री नेम॥म्हा० नील रतन  
 मय विव सुवधान॥ बहुत्तर जिनालुं तिहुअणपाळ अ  
 भिधान॥म्हा० ७॥ तारिंगानो जिहां छे पर्वत विशाल  
 ॥एक प्रासाद कराव्यो भूपाळ ॥म्हा० गगनप्रमाणे लं  
 चो हाथ चोवीस ॥मा० विंव एकसो आंगुल ॥एक ज

श्रीश ॥ मा० ८ ॥ अजित जिणंद मांहि थाप्या जगवंत  
 ॥ मुखडं देखीनें लहीये सुख अनंत ॥ मा० आव्यो नृप  
 प्रंवावती नयरी मझार ॥ हेमसुरिसरने जिहां दीक्षा अ  
 धिकार ॥ मा० ९ ॥ आलिंग बसही वीर सुभासाद ॥ विं  
 व रतन मय कराव्यो आल्हाद ॥ मा० पाटुका करा  
 व्या गुरु हेमना नरिंद ॥ पुस्तक जंमार तिहां कराव्या  
 आणंद ॥ मा० १० ॥ त्रैसठ सिलाका महा पुरुष पवि  
 ष ॥ हेमसुरिसर कीधा तेहनां चरिष ॥ मा० ग्रंथ तणी  
 संख्या सहेंस छबीस ॥ सोवन अक्षरे रुमी लिखावी अ  
 धीश ॥ मा० ११ ॥ ते पोथी लेइ धरी गजवर खंध ॥  
 संघ चतुर्विध धरम सबंध ॥ मा० आणी आपी गुरु  
 हेमसुरि हाथ ॥ सांजळे निरंतर ग्रंथ नर नाथ ॥ मा०  
 १२ ॥ इग्यारे रुमा वारेरे उपाग ॥ सोवन अक्षर नृप  
 लिखावे सुरंग ॥ मा० योगशास्त्र केरा वाररे प्रकाश ॥  
 बीस धीतराग केरां स्तवसुं विलास ॥ मा० १३ ॥ ववीश  
 प्रकाश ए सोवन लिखाय ॥ पोथी हाथे धागी सागी  
 नित्य गुणे राय ॥ मा० एकसो अदारमी थइ ए रसाळ  
 ॥ कहे जिनहरप झिजावो रुमी ढाळ ॥ मा० १४ ॥  
 सर्व गाथा ३६० ॥

दुहा ॥ वरस वरस सेवुंजनी ॥ यात्रा करे नरेश ॥  
 समकितधरा श्रावक तणी ॥ भगति करे सुविशेश ॥ १ ॥  
 ॥ चित्त करे दुर्वळ तणी ॥ मंमाव्या शत्रुकार ॥ आपे  
 पवन छत्रीस नई ॥ गृहस्थ तणो आचार ॥ २ ॥ पापी  
 आठिम प्रारणां ॥ साहमीने सुमहुत ॥ राय कराचे मा  
 वशुं ॥ आदर देइ बहुत ॥ ३ ॥ दान मानशुं आपीये ॥  
 तो फळ होय अपार ॥ आदरमान विवेक विष ॥ न  
 वधे सोहू लिगार ॥ ४ ॥ श्रेयांस धन नयसार कहे ॥ सं  
 गम चंदनवाळा ॥ दान दीड बहु विनयशुं ॥ जहीनु  
 गति ततकाळा ॥ ५ ॥ अज्ञानी आपे प्रघळ ॥ न करे को  
 इ निचार ॥ पात्र कुपात्र न ओळखे ॥ वेहनो दान अ  
 सार ॥ ६ ॥ कुमर विनय बहु साचवे ॥ आपे सहने  
 दान ॥ लाभाचार विचारणा ॥ करे कुमर राजान ॥ ७ ॥  
 द्वाळ ॥ घरे आवोहो राय यादीरा दोला ॥ ८ ॥ दे  
 शी ॥ इण परे धर्म आराधतां ॥ करतां इम उत्तम पात्र  
 ॥ रा० जग मांही जस जेहनो ॥ थयों राजरिपि जस  
 नाम ॥ राजा ० १ ॥ इम पुछेहो मन मोहन राजा ॥ हे  
 मसूरी जणी ॥ शिर नामि राजा ॥ कर जोनी पाटण

स्वामी ॥ ॥ राजा ० इम ० ए आंकणी ॥ मुज कमें सुत  
 नवि थयो ॥ तिणे चिंता मुजने आज ॥ रा ० महेर क  
 री मुजने कहो ॥ कुण भोगवश्ये ए राज ॥ रा ० ६० २  
 ॥ सूरि कहे राजा सुणो ॥ तुज पुत्रीनो सुत जेह ॥  
 रा ० पतापमल्ल नाम जेहनो ॥ राज्य योग्य दीसे छे ए  
 ह ॥ रा ० ६० ३ ॥ वालचंद्र वात सांभळी ॥ कही अज  
 यपाळने जाय ॥ रा ० भत्रीजो नूर कुमरनो ॥ तिणे म  
 नमां धरिय कपाय ॥ रा ० ६० ४ ॥ वालचंद्र वयरी थयो  
 ॥ छळ जोतो रहे निसि दिस ॥ रा ० गुरुनुं भुंडं विंतवो ॥  
 कडुउं बोले मन रीस ॥ रा ० ६० ५ ॥ गुरु चेले अवणत  
 थर ॥ मन जागां आवी राय ॥ रा ० नयणे नयण मीले  
 नहीं ॥ एक एक भणी न सुहाय ॥ रा ० ६० ६ ॥ मांहो  
 मांहीं चडवने ॥ शिष्य फिटी थयो कूशिष्य ॥ रा ० आं  
 वो जाणी उछेरीयो ॥ नीमनीयो धत्तुर वण्य ॥ रा ० ६०  
 ७ ॥ जिम गर्गाचारय तणा ॥ दुखदार थया शिष्य व  
 र्ग ॥ रा ० गोसाळे जिम वीरने ॥ प्रतिकुळ कीया उपस  
 र्ग ॥ रा ० ६० ८ ॥ वालचंद्र तेहवो थयो ॥ निज पूरव  
 पाप पसाय ॥ रा ० वगध्यानी बोले नहीं ॥ पण ताके  
 दाय उपाय ॥ रा ० ६० ९ ॥ इण अवसरे नरपति कहे ॥

तेनी गुरु हेमसुरिस ॥ रा० मुज सगति पुण्य में कर्यो  
 ॥ रही मनमां एक जगीश ॥ रा० ५० १० ॥ रुप कनक  
 मणी रतनना ॥ जिन बिब भरावुं भूर ॥ रा० पीतल का  
 श पाषाणमें ॥ निज मान प्रमाण संपुर ॥ रा० ५० ११ ॥ स  
 फल इच्छा करो गुरु कहे ॥ राय न कीयो कोइ बि  
 लंब रा० मान प्रमाण करावीया ॥ सुदर जिनवरना  
 बिब ॥ रा० ५० १२ ॥ मुहुरत सार जेई करी ॥ ओछप  
 माढ्यो पुर माहिं ॥ रा० घर्म काजे धन व्यव करे ॥  
 संघ भगति करे उछाहि ॥ रा० ५० १३ ॥ अंजन मुहुरत  
 अवसरे ॥ बेठा आचारज अठार ॥ रा० घनीयाळाउ  
 परे ठग्यो ॥ बाळचंद्र कूसश्य तिवार ॥ रा० १४ ॥ अ  
 जयपाल आवी कहे ॥ बाळचंद्र बेठो इहा केम ॥ रा०  
 सश्य कहे मुहुरत जोउ ॥ जिम थाये सहुने खेम ॥  
 रा० ५० १५ ॥ जो भग हुवे मुहुरत तणो ॥ तो याये प्र  
 तिमा भंग ॥ रा० हेमसूरिद जीवे नही ॥ दुख जहे नुप  
 नही उछरंग ॥ रा० ५० १६ ॥ वचन सुणी बाळचंद्रनो ॥  
 कहे इहीपरे तव अजयपाल ॥ रा० एकसो ओगणीस

झाल १७० मी.

दुहा ॥ अजयपाल कहै एहवुं ॥ बाळचंद्र सुण वा  
त ॥ टालि मुहुरत रायने ॥ जिम ध्याये व्याघात ॥ १ ॥  
मुहुरत भंग कीये मरे ॥ कुमरपाल राजान ॥ राज लेइ  
तुजने करुं ॥ हेमसुरिद्र समान ॥ २ ॥ वचन सुणी गुर  
घी फिर्यो ॥ लोभे लक्षण जाय ॥ हवे मुहुरत बेळा  
थइ ॥ वहिला हुवो गुरुराय ॥ ३ ॥ हेम ताम अंजन क  
री ॥ करी प्रतिष्ठा सार ॥ भीम बलिक आव्यो तिसे ॥ वि  
व लेइ तिणि वार ॥ ४ ॥ पुज्य प्रतिष्ठो विव ए ॥ थाये  
जिम आनंद ॥ मुहुरत बेळा टळी गइ ॥ भाखे हेम  
सुरिंद ॥ ५ ॥

झाल ॥ नेणारोहे मुजरोदे रामा वांमणी ॥ ६ देशी ॥  
वचन श्रयां गुरुनां सुणी ॥ मुख झांखो दील मांहिं दि  
न ॥ मन मांहिं दिलगीर थयो नीम वाणीयो ॥ मान  
व भव अयलो गयो ॥ धिग धिग हुं मानव पुन्यहिन  
॥ म० १० ॥ मन इच्छा मनमा रही ॥ पुन्य पाखे किम था  
य ॥ म० ११ ॥ जला मनोरथ सहू करे ॥ पुन्य पाखे ते इम  
ही जाय ॥ म० १२ ॥ कूआ केरी छांह ज्युं ॥ मन मांहिं  
मननी वात ॥ म० १३ ॥ करीय मनोरथ आवीयो ॥ मु

अ पोति नही पुन्य संघात ॥म० ३॥ हुंश करे माणी प  
 णी ॥ जाणे ल्युं विभुवन राज ॥म० पुन्यहीण पोता त  
 हुं ॥ किन थाये सफळं मन काज ॥म० ४॥ सुकृत  
 कोइ कीधो नहीं ॥में जरियो पशुआं जिम पेढ ॥म०  
 योवन पोयो मायनो ॥ भूंइ मारी में ज़ारी नेढ ॥म० ५  
 ॥ पतिमा पीतळ काढनी ॥ नान्ही तो अंगुष्ट दमाण ॥  
 म० मुनिवर जाख्यो एहवो ॥ कहीये ते शुद्ध श्रावक  
 तुजाण ॥म० ६॥ विंव ज़राव्युं ते सुणी ॥ इहां आव्यो  
 अंजनने काज ॥म० ते पण काज थयो नहीं ॥मुज  
 याशे शी गति महाराज ॥म० ७॥ दुस्त्र जर इणि परे  
 झूरतो ॥ देखीने करुणा घरी हेम ॥म० राग देखी आ  
 यक तणो ॥ मन मांहि तव आव्यो प्रेम ॥म० ८॥ हेम  
 सूरिसर पूछीयो ॥ कांइ मुहुरत छाया छे तिश्य ॥म०  
 मुहुरत हवणां छे खरो ॥ पहिले हुं चुक्यो परतक्ष ॥  
 म० ९॥ ज़री हेम जोवे जिश्ये ॥अद्रा मुखे मुहुरत प  
 न्युं ताम ॥म० हाथ घसे मुख निससे ॥ विणसानवो  
 दुशमन सहु कान ॥म० १०॥ अगनि साप जळ कामि  
 नि ॥ राजेशर तस्कर हथीयार ॥म० दुशमनथी वीहे  
 नहीं ॥ निश्चे ते दुख जहे अपार ॥म० ११॥ चेलो मु

ज दुशमन थयो ॥ दुशमननो में कर्जो वेसास ॥ म०  
 पाशी मुजने छेतयो ॥ इणे पाड्यो मृग जिम मुज पा  
 स ॥ म. १२ ॥ दूध भळाव्यो मांजारने ॥ वानरने आप्यो  
 आराम ॥ म. दुशमन काम भळावीयो ॥ निश्चेश्युं वि  
 णसे ते काम ॥ म. १३ ॥ भावी न टळे केहथी ॥ श्यो  
 कीजें मन मांहीं खेद ॥ म. अतर ज्ञान विचारीने ॥ न  
 न चिंता गुरु नाखी छेद ॥ म. १४ ॥ शुभ मुहुरत अंज  
 न करी ॥ भीम हाथे आप्यो जिन विंव ॥ म. तुज घ  
 रे रिद्धि भराइशे ॥ पुन्य कारिय करव्ये विलंब ॥ म.  
 १५ ॥ कुमर तेनी गुरु इम कहे ॥ जिन मंदीर जिन प्र  
 तिमा मंग ॥ म. छठे अंगे थाइश्ये ॥ वळी पमशे तुज  
 अंग सुरंग ॥ म. १६ ॥ माहरे पण छे हुंकनो ॥ मरवा  
 नो टाणो महाराय ॥ म. तेतो चिंता मुज नही ॥ पण  
 माहरो मुजने दुख थाय ॥ म. १७ ॥ तुज सरीखो धर  
 मातमा ॥ कोइ न हुयो न हुश्ये गूराळा ॥ म. एकसोने वीसमी  
 ॥ जिनहरपे कही रुमी दाळ ॥ म. १८ ॥ सर्व गाथा २६४ ए.

दाळ १२१ मी.

दुहा ॥ कुण करशे पशु जीवनी ॥ भुख्यां तरश्यां  
 सार ॥ दुखियां दोहिला नाणसां ॥ कुण करशे उगार



॥१॥ साहनीने कुण पोसशे ॥ कुण देशे आधारं ॥ क  
 हो किसी परे थाइशे ॥ मुनिवर तणो विहार ॥२॥ जि  
 न मंदिर जिन विवनी ॥ कुण करशे हवे सार ॥ तुज  
 पाखे भरशे कवण ॥ पुन्य तणो जंडार ॥३॥ सघ सि  
 दाश्ये तुज विना ॥ सिदाश्ये जिन धर्म ॥ तुज पिण  
 काइ न जाणशे ॥ जैन वचनना नर्म ॥४॥ तुज पा  
 ख सिदाश्ये ॥ पुन्य तणो सहु ताम ॥ तिणे मुजने दु  
 ख उरजे ॥ हेमसूरि कहे आमं ॥५॥

ढाळ ॥ में जाण्यो नही वीछुरन अइसोरे होय ॥  
 ए देशी ॥ राग केदारो विहागमो ॥ वचन इश्यां शुणी  
 कुमर नरेशर ॥ श्रुत ध्यान तिणी वार करे ॥ आराध  
 न पाप आलोवे ॥ अत टाळे अतीचार ॥१॥ भव भव  
 कीधां पाप आलोवे राय ॥ आश्रय छांडी दुरगति दा  
 यक ॥ सदगति करे उपाय ॥ भ. १ आंकणी ॥ करे स्वा  
 मणा सहु संधाते ॥ मुके पाप अद्वार ॥ पाप भराये जे  
 हथी प्राणी ॥ छेहनो सुणो विचार ॥ भ. २ ॥ जीव त  
 णी हिता नयी कीजे ॥ वचन अत्रीक निवारे ॥ पर  
 धन चोरी किनहि न कीजे ॥ दुर तजी पर नार ॥ भ.  
 ३ ॥ धन उर अति मूरछा न धरे ॥ मुंकी मनुषी को

ध ॥ मान माया लोभ दूर निवारे ॥ जिम हुए आत्म  
 शोध ॥ अ. ४ ॥ राग द्वेष वे वंधन त्रौणी ॥ कलह न बी  
 जे कलंक ॥ परनी चामी करतां प्राणी ॥ मनमां आ  
 णो संक ॥ अ. ५ ॥ रतिने अरति न धरीये परना ॥ व  
 कहो अवरण वाद ॥ माया मरखा वचन न बोले ॥  
 तजि मिथ्यात प्रमाद ॥ अ. ६ ॥ पाप अठार आजाये  
 इणि परे ॥ मिछादुक्रम देय ॥ पाप थकी वीहे उत्तम  
 नर ॥ सरणां व्याप करेय ॥ अ. ७ ॥ पहिलो सरण अ  
 रिहंतनो ॥ दोष अठार रहित ॥ समवसरण मध्य धर्म  
 प्रकाशे ॥ अतिशय सुगुण सहित ॥ अ. ८ ॥ बीजो सरणो  
 सिद्ध निरंजन ॥ सुख बळ वीर्य अनंत ॥ ज्ञान अनंत  
 अचळ अक्षय पद ॥ कीधो भवनो अंत ॥ अ. ९ ॥ साधु त  
 णो सरणो हवे बीजो ॥ गुण धर सत्ताधीन ॥ सुमति गुप  
 ति चारीवज पाळे ॥ ज्ञान क्रिया निशी दीश ॥ अ. १०  
 ॥ धरम सरण चौथो चित्त धारे ॥ जिनवर जाख्यो जे  
 ह ॥ दया मूल अनुकूल मुगतिशं ॥ उत्तम सरणो इह  
 ॥ अ. ११ ॥ जाख चौराशी जिन खभावुं ॥ पुढवी प्राणी  
 तेज ॥ वाउ सात सात जाख सहुनी ॥ मिछादुछन दे  
 ज ॥ अ. १२ ॥ दस लाख प्रत्येक ननसवतीनी ॥ चकद जा

ख साधार ॥ वेति चोरंद्री जीव तणी गती ॥ वे वे ला  
 ख विचार ॥ भ० १३ ॥ च्यार च्यार देव नारकी  
 तिर्यचनी ॥ चऊद लाख मनुष्य ॥ परभव इण भवे जे  
 ह विराध्यां ॥ तेह खमावुं प्रत्यक्ष ॥ भ० १४ ॥ पनरइ क  
 र्माशन तणा जे ॥ मृजने लाग्यां पाव ॥ ते आलो  
 कं निंदुं गरहुं ॥ निःशल्य थइने आपा ॥ भ० १५ ॥ दुकृ  
 त निंदुं मुकृत अनुमोदुं ॥ इह भव परभव पाप ॥ जा  
 ण अजाणपणे जे कीधां ॥ ते आळोळ आपा ॥ भ० १६  
 ॥ सामायक पोषध व्रत भाग्यां ॥ लाग्यां दोष अने  
 क ॥ अरिहंतादि आशातन करतां ॥ नाएयो तिहां वि  
 धेक ॥ भ० १७ ॥ माहरो जीव एकेंद्री मांहीं ॥ उनो त  
 स अरजोह ॥ थइ हयीयार हएया जीव बहुला ॥ पा  
 पोपकरण मोह ॥ भ० १८ ॥ ते वोसराळं उपग्रह इण भ  
 वे ॥ तरुअर सूळी कीध ॥ वाहण यंत्र घाणी हळ मु  
 सळ ॥ ते वोसरावी दीध ॥ भ० १९ ॥ वउणी जातिमां  
 हुं जइ उपनो ॥ सूत्र कताणो तास ॥ तेहनां गुंथ्यां  
 जीव हणेवा ॥ वोसराळं जाळ पास ॥ भ० २० ॥ भम  
 तां देव तणी गति उनो ॥ कीधां जोग अपार ॥ विं

ज० २१ ॥ परमाधामी देवें अधर्मा ॥ यथो बहु पाप सं  
 योग ॥ मारदा वींघ्यां वाळदा नारक ॥ शेक्यां अ  
 गनि प्रयोग ॥ ज० २२ ॥ नारकी जव माहीं हुं आव्यो ॥  
 वेढ करी धरी क्रोध ॥ शस्त्र विहुर्वी नारक छेद्यां ॥ की  
 धो सबळ विरोध ॥ ज० २३ ॥ जमतां मानव गति में पा  
 मी ॥ नीच कुळे अवतार ॥ तिहां बहु जीव तणां वध की  
 धां ॥ जक्षण कीधां अपार ॥ ज० २४ ॥ तिर्यंचनी गती  
 मांहिं आव्यो ॥ यथो हुं हिंसक जीव ॥ जीव हएया  
 तिणे जवे में पापी ॥ कीधां पाप सदीप ॥ ज० २५ ॥ इ  
 म जव जमतां दुकृत कीधां ॥ आळोवे भूपाळ ॥ कहे  
 जिनहरप सुकृत अनुमोदे ॥ एकसो एकवीसमी ढाळ ॥  
 ॥ ज० २६ ॥ सर्व गाथा २६८० ॥

ढाळ १२३ मी.

दुहा ॥ दान शीयळ तप जायना ॥ श्री जिनवरनी  
 भक्ति ॥ शेवा कीधी साधुनी ॥ धर्म कर्यो निज शक्ति  
 ॥ १ ॥ ते अनुमोदुं हुं वळी ॥ जैन कराव्या विंव ॥ जि  
 न प्रतिमा साहमी भक्ति ॥ अनुमोदुं अविलंब ॥ २ ॥ पु  
 स्तक जेह लखावीयां ॥ विंव प्रतिष्ठा जेह ॥ यात्रा क  
 री तीरथ तणी ॥ हुं अनुमोदुं तेह ॥ ३ ॥ जिन वाणी

श्रवणे सुणी ॥ टाळळां अकर अन्धाय ॥ अनुकंपा  
 आणी होये ॥ ते अनुमोदे राय ॥ ४ ॥ वारह गुण अरि  
 हंतना ॥ आव सिद्ध जगदीश ॥ आचारय छवीस गु  
 ण ॥ उझवाय पचवीस ॥ ५ ॥ उत्तम गुण मुनिवर तणा  
 ॥ धारुया सत्तावीस ॥ वारह व्रत श्रावक तणा ॥ अ  
 नुमोहुं निशि दीश ॥ ६ ॥ जिनवर वचनें अवरमां ॥ उ  
 त्तम जे गुण होय ॥ ते पण अनुमोदुं सहु ॥ नांखुं पा  
 तिक धोय ॥ ७ ॥

ढाळ ॥ चेतोरे चित प्राणी ॥ १ देशी ॥ सुकृतनी अ  
 नुमोदनारे ॥ करे कुमर जूनाळ ॥ पाप सहु आजोश्या  
 ॥ धाये तेहथीरे हळुओ ततकाळके ॥ १ ॥ जाखेरे ज  
 व्य प्राणी ॥ जव्य प्राणीरे श्री कुमर नरेश ॥ जिणे टा  
 लळोरे निज पाप किलेशके ॥ जा० १ आंकणी ॥ हेमसु  
 रिडना पाय नमीरे ॥ कर जोडी कहे राय ॥ बोध बी  
 ज तें मुज दीयो ॥ इह परभवरे शेवुं तुज पायके ॥  
 जा० २ ॥ श्रावक हुं तुजथी थयोरे ॥ तुजथी पाम्यो ध  
 र्म ॥ तुमथी सहु सुख पामीयां ॥ मिथ्या सतिरे मुज  
 जागो जर्मके ॥ जा० ३ ॥ हेम कहे राजा सुणोरे ॥ तें शु  
 द्ध पाळ्यो धर्म ॥ जिन शासन दीपावीयो ॥ तुज पोतिरे

हलुआं कर्मके ॥ जा० २ ॥ हेम इश्युं नृपने कहेंरे ॥ मत  
 देख्यो मुज पाट ॥ उवेखी वाळचंद्रने ॥ रामचंद्रनेरे था  
 प्यो गहगाटके ॥ जा० ५ ॥ तिणे अवसर सुण्यो हवेरे  
 ॥ यात थइ विपरीत ॥ मांथे मणी छे हेनने ॥ ते जो  
 गीरे दीठी थइ भीतके ॥ जा० ६ ॥ योगी बहु बुद्धि केळ  
 वीरे ॥ मणी लेधानें काज ॥ पण ते हाथ नवी चढे ॥  
 तव आव्योरे जोगीमो वाजके ॥ जा० ७ ॥ बहिरि मुनिय  
 र आवतारे ॥ दीठी तेणे नगन ॥ आवी पासे उभोर  
 क्षोरे ॥ कहे विहरिरे श्युं लाव्या अन्नके ॥ जा० ८ ॥ इ  
 म कही झोळी मांहींरे ॥ योगी घाल्यो हाथ ॥ नखमां  
 धिप राख्यो हुतो ॥ ते पसरव्योरे मोदकनी साथके ॥ जा०  
 ९ ॥ पोशाळे मुनीवर आवीयारे ॥ आलोइ सहु भाता ॥  
 झोळी गुरु आगळ धरी ॥ गुरु आपेरे विहची तिल मात  
 के ॥ जा० १० ॥ ते लाडु पोते लीयोरे ॥ कीधो तस आ  
 हार ॥ काया लागी धूजवा ॥ जीव थायेरे आकुळ ति  
 ण वारके ॥ जा० ११ ॥ तेनी ततखीण हींमीयोरे ॥ पूछे हे  
 मसूरिद ॥ केहना घेरयो लाडुओ ॥ ते विहरव्योरे ते भा  
 खे मुणिंदके ॥ जा० १२ ॥ बहिरव्यो श्रावकने घरेरे ॥ पण  
 एक सुणो विचार ॥ वाटे एक योगी मिल्यो ॥ ते फर

शीरे गयो ९ आहारके ॥ भा० १३ ॥ वेठी वात हवे स  
 हीरे ॥ योगी घाली घात ॥ विष मिश्रित मोदिकं जरुयो  
 ॥ जीववानोर हवे केही वातके ॥ भा० ११ ॥ विष पस  
 रयो मुनिवर जणीरे ॥ साते धाते जोर ॥ खेलाने तेमी  
 कहे ॥ कसो करज्यो मत करयो सेरके ॥ भा० १५ ॥  
 देवांगत धाउं जिसेरे ॥ चेह करज्यो इण ठाम ॥ दूध  
 पात्र जरि मुंकरज्यो ॥ तिण माहिरे पमशे मणि तामके ॥  
 भा० १६ ॥ तं मणि संग्रहज्यो तुहारे ॥ शिखामण गुरु दी  
 ध ॥ एकसो बावीसमी ढाळ ९ ॥ जिनहरपेरे संपूरण  
 कीधके ॥ भा० १७ ॥ सर्व गाथा २७०४ ॥

ढाळ १२३ मी.

दुहा ॥ हेम हवे अणसण करे ॥ धरि रिदे अरि  
 हंत ॥ आतम साखे आराधना ॥ रिपिपति तेम करं  
 त ॥ १ ॥ चउ गतिमां जमतां थकां ॥ जे में मेळ्यां पा  
 प ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसरुं ॥ न करुं एहशुं व्याप  
 ॥ २ ॥ लाख चोराशी जीवशुं ॥ माहरे समता जाव ॥  
 इण भव परभव दूहव्यां ॥ खामुं इण प्रस्ताव ॥ ३ ॥ च  
 तुर च्यार सरणां कर्यां ॥ आलोया अतिचार ॥ दश  
 मे द्वारे हेमनो ॥ प्राण गयो विणि वार ॥ ४ ॥ भुवनप

ति सुर उपना ॥ जिहां बहु सुख समृद्धि ॥ देव तणा  
 सुख भोगये ॥ पुन्ये पानी रिद्धि ॥ ५॥ जनमथयो श्री  
 हेमनो ॥ इग्यारे पस्ताळ ॥ काती शुद्धि पूनम दिने ॥  
 घर घर मंगळमाळ ॥ ६॥ इग्यारसे चउपने ॥ जेणे दी  
 क्षा लीध ॥ इग्यारे वासठ समये ॥ आचार्य पद दी  
 ध ॥ ७॥ संवत वार ओगणत्रीसमे ॥ पुहुता मुनि पर  
 लोक ॥ वरस चोराशी आऊस्तु ॥ कीरति जास त्रि  
 लोक ॥ ८॥

ढाळ ॥ मारी वहेनी कहे कांइ अचरीज वात ॥  
 ए देशी ॥ सुर लोक पुहुता मुनि जिशे ॥ नृप कृमरपाळ  
 तिवार ॥ भला चूआ चंदन अंगरशुं ॥ करे काया सं  
 सकार ॥ १॥ मोरा सदगुरु तुं मुज गुरु सिरंदार ॥ ध  
 रम तणो दातार ॥ तुं जग जीव आधार ॥ तुज विण  
 सुनो संसार ॥ मो० २॥ मुज धरम मारग ते दीयो ॥ मु  
 ज कीयो ते उवगार ॥ पशु थकी माणस कीयो ॥ न  
 लहुं तुज गुण पार ॥ मो० ३॥ सुख दुख कहेतो तुज भ  
 णी ॥ जिम मागे बाळ ॥ कांइ गुपत वात न राखतो ॥  
 भीति तणो प्रतिपाळ ॥ मो० ४॥ तुं ज्ञाननो दरीयो हुतो  
 ॥ सह ज्ञान तुज आधार ॥ हवे ज्ञान किहां रहेजे



जइ ॥ तुज पाखे निरधार ॥ मो० ५ ॥ संसय सहना टा  
 लतो ॥ देशना अमृत धार ॥ केवळी कळियुगनो हुतो  
 ॥ मोटो तुं अणगार ॥ मो० ६ ॥ तुज विना सुनो द्वं  
 गमो ॥ तुज विना सुनो राज ॥ तुज विना सुनो हुं  
 ययो ॥ कोइ न सुजे काज ॥ मो० ७ ॥ मुज रात दि  
 न सुख साजशे ॥ अंजलोकि अहीठाण ॥ इहां वसता  
 गुरु माहरा ॥ इहां गुरु करता वखाण ॥ मो० ८ ॥ मु  
 ज विरह वेदन देइ गया ॥ लेइ गया सघळो सुख ॥  
 जिम पंजरे पोपट पमळो ॥ दिलमां माने दुख ॥ मो०  
 ९ ॥ अज्ञान हीयमायी हवे ॥ कुण काढशे ए गल्ल ॥ म  
 न हुंम मन मांहिं रही ॥ जिम गुंगानी गल्ल ॥ मो० १०  
 ॥ निज वखे फामी नांखीयां ॥ मोहे कर्यो अज्ञान ॥  
 जोटे आजोटे रेतमां ॥ विकल धयो राजान ॥ मो०  
 ११ ॥ रांवे रमं खिण जुंइ पडे ॥ मुखे हेम हेम झपंत ॥  
 वणीयटो पावस रते ॥ पीउ पीउ जेम रदंत ॥ मो० १२  
 ॥ असम लेइ समसाननी ॥ अंगे लगावे राय ॥ ८५  
 सूए धरती जोजवी ॥ मोहे नृप नृंज्ञाय ॥ मो० १३ ॥ मो  
 हराये बांधीयो ॥ झुटे नहीं ते पास ॥ गुरु विरह गुरु  
 दुखमां पमळो ॥ पार न पामे तास ॥ मो० १४ ॥

झाणा आदमी ॥ जोवे न वाट कुवाट ॥ मुख थकी जि  
म तिम उचरे ॥ सवळो मोह उचाट ॥ मो० १५ ॥ इम मो  
हनीने वश पड्यो ॥ दुख धरे बहु भुपाळ ॥ जिन हर  
प ए पूरी थइ ॥ एकसो त्रेवीसमी ढाल ॥ मो० १६ ॥  
सर्व गाथा १७१९ ॥

ढाल ११४ मी.

दुहा ॥ मंत्रीसर परधान सह ॥ समजावे भूपाळ ॥ रा  
जन मोह निवारी १ ॥ जगनी गति संळाळ ॥ २ ॥ निश्चळ  
कोइ रत्नो नहीं ॥ जिन चक्री हळधार ॥ जायो ते जा  
वा जणी ॥ अंधिर सह संसार ॥ ३ ॥ जे उगे ते आथमे  
॥ फूले ते कुमळाय ॥ जे चणीये ते ढही पने ॥ जा  
ये ते मरी जाग्र ॥ ४ ॥ जे शिर छत्र धरायता ॥ गणता  
जग त्रिण मात ॥ ते पण पोहता यग धरे ॥ अवर तणी  
शी वात ॥ ५ ॥ रामचंद्र रावण किहां ॥ किहां राजा  
हरिचंद्र ॥ पांडव कौरव सह गया ॥ इंद चंद गोविंद  
॥ ६ ॥ इम द्रष्टांत देइ घणा ॥ टाळे नूनो सोग ॥ गुरु  
गुण हीये वश्या ॥ जिम योगीसर योग ॥ ७ ॥

ढाल ॥ हरख भरी हमशुं बोलव्योरे ॥ ए देशी ॥ रा  
ग सोरठ ॥ गुण समरे निज गुरु तणारे ॥ जिम चात

क जळधार ॥ गज समरे वंध्याटवीरे ॥ जिम कोयल  
 सदकार ॥ किणहीथुं नेहलो म लागज्योरे ॥ नहिं मा  
 एस गहेला होय ॥ नेह नयण गमे रोइ रोइ ॥ तुंतो  
 कुमर नरेशर जोइ ॥ एहवो नेह म करस्यो कोइ ॥ कि०  
 ४ ॥ निरधन समरे धन भणोरे ॥ वालक समरे माय ॥  
 चक्रवी चाहे सूरनेरे ॥ वळ समरे जिम गाय ॥ कि०  
 ५ ॥ घर समरे परदेशीयारे ॥ मानसरोवर हंस ॥ इम  
 नेह लाग्यो हेमशुरे ॥ नुपनो जिम नख मंस ॥ कि० ६  
 ॥ खावां पीवां सहु तज्यारे ॥ तज्यां सहु सुख देह ॥  
 झूरि झूरि पंजर थयारे ॥ एहवो पापी नेह ॥ कि० ७ ॥  
 अरहण माय गहेली थरे ॥ मरुदेवा थया अंध ॥ गो  
 यम झूर्यो वीरनेरे ॥ मोह सवळ प्रतिवध ॥ कि० ८ ॥ चिं  
 ता न करे राजनीरे ॥ बेसे नहीं दरवार ॥ हेम हेम मु  
 खे उचरेरे ॥ हेम तजी कहो केम ॥ कि० ९ ॥ हेम वच  
 न हीथमे धरेरे ॥ हेम वचनशुं प्रीत ॥ राग तज्या सं  
 सारनारे ॥ धरम थर्यो निज चित ॥ कि० १० ॥ जणे गु  
 णे किरिया करेरे ॥ सेवे नहीं परमाद ॥ आतम उपसम  
 रस भर्योरे ॥ सकळ तज्यो विखवाद ॥ कि० ११ ॥ व  
 इरागे मन वाळीयोरे ॥ मोहनि बळ गइ छाक ॥ सुख

जाण्यां संसारनारे ॥ जेहवां फळ किंपाक ॥ कि० १२  
 ॥ काठि जिम गुजरातमारे ॥ पापी पामे वाट ॥ तिम  
 एह तेरह कागीधारे ॥ रोके शिवपुर वाट ॥ कि० १३ ॥  
 धरम संच्यो बहु दिवशनोरे ॥ जे धन लेता लूटि ॥  
 काया पाटण माहिथारे ॥ काढ्या काठी कूटि ॥ कि०  
 १४ ॥ निज लग्न लागी धर्मशुरे ॥ धरम रंगाणी देह ॥  
 नेह लगाव्यो धर्मशुरे ॥ अवर अथीर तजी नेह ॥ कि०  
 १५ ॥ साते खेत्रे धन वावररे ॥ धन नहीं आवे साथ ॥  
 साथे तेहिज आवशेरे ॥ दीधो जमणे हाथ ॥ कि० १६  
 ॥ नेह लगावो धर्मशुरे ॥ जेह उतारे पार ॥ नेह ल  
 गावी कारमोरे ॥ प्राणी थाये रुवार ॥ कि० १७ ॥ का  
 या माया कारमोरे ॥ जाणी कुमर भूगळ ॥ तज्यो जि  
 नहरप सनेहलोरे ॥ एकसो चोवीसमोढाळ ॥ कि० १८  
 ॥ सर्व गाथा २७५३ ॥

ढाळ १२५ मी.

दुहा ॥ कुमर नरेशर आपणो ॥ जाणी आसण  
 काळ ॥ बांधी चतुर विचारीने ॥ पाणी पहेली पाळ ॥  
 १ ॥ चूके नहीं चतुर नर ॥ साधे आत्म काज ॥ भ  
 व सायर तरवा जणी ॥ बेसी धर्म जहाज ॥ २ ॥ क

लहे किणे दीवो दीवश ॥ खवर न लहीये आज ॥ क  
 रवुं ते करी लीजीये ॥ तुरत धरमनो काज ॥ ३ ॥ क  
 रीशुं करीशुं जे कहे ॥ जरा पुहुती आय ॥ मंदीर ला  
 गो द्वारथी ॥ किमही न काढ्यो जाय ॥ ४ ॥ कुण जो  
 णे किम होइश्ये ॥ अंतकाळ ए जीव ॥ पहिले धरम  
 करतडां ॥ आळस न करि कलीव ॥ ५ ॥ इम निज आ  
 तम शीखवे ॥ कुमर राय तिणी वार ॥ पतापमल्लु तेनी  
 करी ॥ कीधो तिलक विचार ॥ ६ ॥

ठाळ ॥ नणदीहे नणदी वालुंरे बुंदीरी चाकरी ॥  
 वालुं बुंदीरो देश मोरी नणदी ॥ १ ॥ देशी ॥ साजनहो सा  
 जन ॥ अजयपाळ विते सुणी ॥ राजे आवे मुज हा  
 थ ॥ मोरा साजन ॥ दाय उपोय कोइ करी ॥ जो मा  
 हं नरनाथ ॥ २ ॥ मोरा साजन धिग धिग पापी राजे  
 ने ॥ राज्य मराव्यो राज ॥ मो० लाज गमावे लोभीयो  
 ॥ लोभी करे अकाज ॥ मो० धि० १ ॥ सा० राय जणी वि  
 ष आपीयो ॥ थयो आकुलित शरीर ॥ मो० सीप मं  
 गावी ततखिणे ॥ जाये विष तेहने नीर ॥ मो०  
 धि० ३ ॥ सा० सीप कोइ आपे नहीं ॥ अजयपाळनी शी  
 ख ॥ मो० जो कोइ जइ आपसे ॥ तास मगावीश जी

ख ॥मो० धि० ४॥ सा. सारन कीधी नूप तणी ॥किण  
 ही न पूछी वात ॥मो० आधमतो वादे नही ॥ऊगमता  
 नी जात ॥मो० धि० ५॥सा. प्राण तज्या पाटण धणी॥  
 शुभ परिमाणे तिवार ॥मो० विंतरनी गती उपनो ॥ पा  
 म्या सुख श्रीकार ॥मो० धि० ६॥सा. कुमर सारिखो रा  
 जवी ॥ मूओ जहर प्रयोग ॥मो० बीजानो श्यो आ  
 शरो॥ पामे विपति वियोग ॥मो० धि० ७॥सा. विष प्रयो  
 गे नूप मूओ॥ विष प्रयोगे हेम॥मो० कोइ म कहेश्यो  
 एहवो ॥ हीये विचारो एम ॥मो० धि० ८॥सा. खायक  
 समकितनो धणी ॥ गुरु जेहनो श्री धीर ॥मो० ते श्रेणी  
 क कठ पंजरे ॥ छंम्या पाण शरीर ॥मो० धि० ९॥सा.  
 चेमो श्रावक वीरनो ॥ जिनशुं प्रेम अपार ॥मो० को  
 णिक आगळ हारीयो ॥ मूओ गुफा दुआर ॥मो०  
 धि० १०॥सा. कुश्र मूओ बनसासमां॥ पाए लाग्यो तीर  
 ॥मो० पण पद लहेशे जिन तणो॥ उत्तम पुरुष सधीर॥  
 मो० धि० ११॥ सगर तणा सुत साम्वा ॥ साठ सहेस  
 सिरदार ॥मो० तीरथ रक्षा कारणे ॥ बळी मूआं ति  
 णी वार ॥मो० धि० १२॥सा. पहिले बांध्युं आउत्तुं ॥  
 ते भोगवतुं अवश्य ॥मो० आ भव पुन्य कीधां हुए॥

या राय ॥ द्वेषी कुमर नरिंदनो ॥ करे अनरथ अन्या  
 य ॥ १ ॥ देवल पामे जिन तणा ॥ जाने विंव विशाल  
 ॥ धर्म ठाम सहु पानीया ॥ पाम्यां पोपधशाल ॥ २  
 ॥ पाटणमां पामी करी ॥ जिन गृह विंव अछेद ॥ चा  
 लयो तारिगा जणी ॥ पामेवा जिन गेह ॥ ३ ॥ पाटणना  
 विंवहारीया ॥ सहु मिलि करे विचार ॥ गज पाटे वे  
 ठो गधो ॥ तेजी पाटे दार ॥ ४ ॥ हंस कुलं थयो का  
 गमो ॥ उग्रसेन कुळ कंस ॥ श्रेणीरुने कूणिक थयो ॥  
 कीयो मिता विद्धंस ॥ ५ ॥ अजयपाल तेहवो थयो ॥  
 कीधो कुळ सकलंक ॥ खोयो नाम कुमारनो ॥ कर्मा  
 अकृत्य निसंक ॥ ६ ॥ केहनो कांइ नवि चले ॥ जाने  
 घडी अनेक ॥ एक कहे मणुओ इहां ॥ छे ते मांहि वि  
 वेक ॥ ७ ॥

दाल ॥ गजरांना गीतनी देशी ॥ ततखिण तिहां ते  
 डावीयोरें ॥ आवी उजो ताम ॥ सहु उठी उजा थया ॥  
 महुने निठो निज काम ॥ १ ॥ बलाइ ल्युं करो अम्ह का  
 मनोरें ॥ अरे मणुआ वृद्धिअंत ॥ अरे पहु प्रियावंत ॥  
 अरे समुरिस गुणवंत ॥ अरे उगारी संत ॥ व. २ ॥ वा  
 त रुही सहु ते मणोरें ॥ लंउक बोल्यो ताम ॥ राय

तणी समजावशुं ॥ लेशुं मुह मांग्यां दाम ॥ व. ३ ॥ जे  
 मांगीश ते आपशुरे ॥ राय तणी समजाय ॥ जिन मंदि  
 र उगार तुं ॥ ताद्वरा पूजीश्ये पाय ॥ व. ४ ॥ वचन शु  
 णी तिहांधी चलयोरे ॥ बेढो साथे लीध ॥ वेष क  
 र्यो राजा तणो ॥ आमंवर तिणे बहु कीध ॥ व. ५ ॥ आ  
 गळ मुहुज घणा चख्यारे ॥ पाजव्यां लंठ कुपुत्र ॥ म  
 णुओ तब स्त्रीजी कहे ॥ भलां बोलव्यां तें घरसुत्र ॥ व.  
 ६ ॥ पुत्र जस्य सुख कारणेरे ॥ वयरी हुआ तेह ॥  
 लंठ लजावे तातने ॥ करे आप केलंकित देह ॥ व. ७ ॥  
 ते जाया जाया भलारे ॥ बाप रखावे नाम ॥ नाम  
 गमावे बापनो ॥ ते जाया कहो किए काम ॥ व. ८ ॥  
 ते जाया श्ये कामनारे ॥ माय न पूजे पाय ॥ सुखका  
 री नहीं बापने ॥ ते अछता मांहि गणाय ॥ व. ९ ॥ ए  
 क जाया कुळ उद्धरेरे ॥ एक कुळ स्वांण होय ॥  
 सायर सुत विष चंद्रमां ॥ तुं एह पटंतर जोय ॥ व.  
 १० ॥ जे रचना ताते करारे ॥ पाने तेह कुपुत्र ॥ ते स  
 रिखो पापी न को ॥ तेहने मुखे विष्टा मुन ॥ व. ११ ॥  
 इश्यां वचन मणुओ तणारे ॥ पुत्र सुणी कहे एम ॥  
 राय तणी निते चलं ॥ मुज उपर स्त्रीजो केम ॥ व. १२



या राय ॥ द्वेषी कुमरं नरिंदनो ॥ करे अनरथ अन्या  
 य ॥ १ ॥ देवल पामं जिन तणा ॥ भाजे विंय विशाल  
 ॥ धर्म ठाम सहु पामीया ॥ पामदां पोषधशाल ॥ २  
 ॥ पाटणमां पामी करी ॥ जिन गृह विंव अछेह ॥ चा  
 लयो तारिगा भणी ॥ पामेवा जिन गेह ॥ ३ ॥ पाटणना  
 विवहारीया ॥ सहु मिलि करे विचार ॥ गज पाटे वे  
 गो गधो ॥ तेजी पाटे टार ॥ ४ ॥ हंस कळं थयो का  
 गमो ॥ उपसेन कुळ कंस ॥ श्रेणीरुने कूणिक थयो ॥  
 कीयो पिता विद्धंस ॥ ५ ॥ अजयपाल तेहवो थयो ॥  
 कीयो कुळ सकलंक ॥ खोयो नाम कुमारनो ॥ कर्था  
 अकृत्य निसंक ॥ ६ ॥ केहनो कांइ नवि चले ॥ भांजे  
 घडी अनेक ॥ एक कहें मणुओ इहां ॥ छे ते मांहि वि  
 वेक ॥ ७ ॥

ढाळ ॥ गजराना गीतनी देशी ॥ ततखिण तिहां ते  
 डावीघोरे ॥ आवी उजो ताम ॥ सहु उठी उजा थया ॥  
 सहुने मिठो निज काम ॥ १ ॥ बलाइ ल्युं करो अन्ह का  
 मनोरे ॥ अरे मणुआ वृद्धिवंत ॥ अरे बहु विद्यावंत ॥  
 अरे सगुरिस गुणवंत ॥ अरे उयगारी संत ॥ व. २ ॥ वा  
 त कही सहु ते मणीरे ॥ लंउक बोल्हो ताम ॥ राय

नणी समजावशुं ॥ जेशुं मुह मांग्यां दाम ॥ व. ३ ॥ जे  
 मांगीश ते आपशुरे ॥ राय नणी समजाय ॥ जिन मंदि  
 र उगार तुं ॥ ताहरा पूजीश्ये पाय ॥ व. ४ ॥ वचन शु  
 णी तिहांथी चल्थोरे ॥ वेढो साथे लीध ॥ वेष क  
 र्यो राजा तणो ॥ आमंवर तिणे बहु कीध ॥ व. ५ ॥ आ  
 गळ मुहुज घणा चल्थारे ॥ पामत्यां लंठ कुपुत्र ॥ म  
 णुओ तव स्त्रीजी कहे ॥ भलां बोळत्यां तें घरसुत्र ॥ व.  
 ६ ॥ पुत्र जल्या सुख कारणेरे ॥ वयरी हुआ तेह ॥  
 लंठ लजावे तातने ॥ करे आप कलंकित देह ॥ व. ७ ॥  
 ते जाया जाया भलारे ॥ बाप रखावे नाम ॥ नाग  
 गमावे बापनो ॥ ते जाया कहो किए काम ॥ व. ८ ॥  
 ते जाया श्यें कामनारे ॥ माय न पूजे पाय ॥ सुखका  
 री नहीं बापने ॥ ते अच्छता माहिं गणाय ॥ व. ९ ॥ ए  
 क जाया कळ उद्धरेरे ॥ एक कुळ खापण होय ॥  
 सायर सुत विष चंद्रमा ॥ तुं एठ पटंतर जोय ॥ व.  
 १० ॥ जे रचना ताते करारे ॥ पावे तेह कुपुत्र ॥ ते स  
 रिखो पापी न को ॥ तेहने मुखे विष्टा मुन ॥ व. ११ ॥  
 इश्यां वचन मणुआं तणारे ॥ पुत्र मुणी कहे एन ॥  
 राय तणी निते चल्लं ॥ मुज उपर स्त्रीजो केम ॥ व. १२ ॥

जिश्यो राजा परजा तिसीरे ॥ जूओ वाप विमासि ॥  
 कृमर कान उत्तम कर्या ॥ नूर नाम गमात्रे तास ॥व.  
 ९६॥ जिन मंदीर सुंदर करवारे ॥ दीडां भागे भूख ॥  
 अजयपाल ते पानीयां ॥ तुमने घरनुं श्यो दुख ॥व.  
 १४॥ संगत जागी रायनीरे ॥ मंदीर टाळुं वाप ॥ विगमे  
 साधु कुसंगथी ॥ जगे संगतिथी पाप ॥व. १५॥ गांछा  
 नी संगते थकरीरे ॥ वांस फमाव्यो गात ॥ हंस काग  
 नी संगते ॥ ततखिण पामे मृच्यु घात ॥व. १६॥ नीच सं  
 गतिथी गुण गळरे ॥ उंच संगति गुण थाय ॥ मुज सं  
 गति थइ रायनी ॥ तिणे कीधो एह अन्याय ॥व. १७॥  
 पाळीने मोटो कीयोरे ॥ परणावी बहु नार ॥ कुमार  
 पाळ जजीजमे ॥ तेहनां तुं काम विचार ॥व. १८॥  
 ए तेहनो जो नवि थयोरे ॥ तो मुज वांक न टाळ ॥  
 नृप जिनहर्ध सुणावीयो ॥ एकसो छवीसमी ढाळ ॥  
 व. १९॥ सर्व गाथा २८० ५॥

ढाळ १२७ मी.

दुहा. ॥ लंत कहे सुण पुत्रतुं ॥ एहवुं दोल न धी  
 ठ ॥ काने झाल्या हाथीया ॥ रक्षा न किलही दीव ॥  
 १॥ कुण वारे राजा भणी ॥ राजा करे सो न्याय ॥ सा

यर जळधर नरपती ॥ किएही कळव्या न जाय ॥ २ ॥  
 ॥ सीया तीयां पाणीया ॥ चौथो राय विचार ॥ नी  
 ची गती ए च्यारनी ॥ एहनी वात निवार ॥ ३ ॥ लोक  
 पाळ ए पांचमो ॥ प्रजा तणो रखवाळ ॥ कुण शिख  
 वगे एहने ॥ ए मोटो भूपाल ॥ ४ ॥ त्रिभुवन कुळ ए उ  
 पनो ॥ ए परमेश्वर ठाम ॥ मातुं न हुवे एहथी ॥ सानि न  
 हुवे शाम ॥ ५ ॥ करण भीम आगे थया ॥ कीधा छ  
 त्तम काम ॥ अजयपाल पण तेहयो ॥ किम गमश्ये नि  
 ज मांम ॥ ६ ॥

दाळ ॥ विमळजिन माहरी तुमशुं भीत ॥ ७ ॥ देशी  
 ॥ वचन इश्या नृप सांजळीजी ॥ मनमा आवी लाज  
 ॥ हाहा कुळ खण थयोजी ॥ कीधां बहुत अकाज  
 ॥ १ ॥ नृपति मन नानी साची वात ॥ कुळ अंगार हु  
 थयोजी ॥ कीधी नृपनी घात ॥ नृ० १ ॥ आकणी ॥ क्रो  
 ध रायनो उतर्योजी ॥ हीयो वरीथो हीम ॥ धरमठा  
 म ह्ये पानवाजी ॥ राय कहे मुज नीम ॥ नृ० २ ॥ आ  
 चारज रामचंद्रनेजी ॥ तेडाव्यो तिणी वार ॥ आपो  
 पढ रामचंद्रनेजी ॥ वीनती करु वार वार ॥ नृ० ३ ॥ रा  
 मचंद्र कहे नृप सुणोजी ॥ तुम्हे कहो ते न्याय ॥ पण

नहीं आइहा गुरु तणीजी ॥ कहें किम पद दीवराय ॥ नृ०  
 ४ ॥ राय कहे मुज आगन्याजी ॥ दे पदधी मुनिरा  
 य ॥ कस्यो न मानिश साहरोजि ॥ दुख पमीश निज  
 काय ॥ नृ० ५ ॥ राम कहे राजा सुणालि ॥ गुरुनु व  
 चन प्रमाण ॥ में करवुं नवि लोपवुंजि ॥ जब लग घ  
 टमां प्राण ॥ नृ० ६ ॥ दमम दुवालि म तर करीजि ॥ मा  
 ने नहीं गुरु आण ॥ अनंत संमारी ते हुवेजि ॥ तर  
 कीधो अपमाण ॥ नृ० ७ ॥ म कर यती माहारण घणुं  
 जि ॥ मुज वचने दे पाट ॥ थोडाथा अनर्थ घणोजि  
 ॥ उवावेश्या माट ॥ नृ० ८ ॥ गुरु लोपी मही पातकी  
 जि ॥ सांतळ गुणवंत भूप ॥ देखी पेखीने कहेजि ॥  
 केम पडुं भव कूप ॥ नृ० ९ ॥ अजयपाल कोप्यो घणुं  
 जि ॥ भाखे इध जम अरन ॥ अय सील ताती उपर  
 जि ॥ दे पद के कर सदन ॥ नृ० १० ॥ पिपिवर कहे सु  
 ण राजवीजि ॥ लोपुं नही गुरु आण ॥ ताती लोह  
 सीजा तणोजि ॥ मुजने मरण प्रमाण ॥ नृ० ११ ॥ मर  
 ण कयो आगे घणोजि ॥ अनंत अनती वार ॥ गुरु का  
 ले काया तजुंजि ॥ तो पामुं भव पार ॥ नृ० १२ ॥ आ  
 गे पण मुनिर धयाजि ॥ सत्ता परीतह घोर ॥ खंड

क सूरि सिश्य पांचसैंजि ॥ घांणी पील्या जेअर ॥ नृ०  
 १३ ॥ मुनिवर गजसुंक्रमालनोजि ॥ सोमिल बाळयो  
 सिस ॥ ध्यान थकी चूक्यो नंहींजि ॥ पाय प्रणमुं नि  
 शादिश ॥ नृ० १४ ॥ मैतारजं मुनिवर तंणेजि ॥ वांध्रवीं  
 टयो लेइ सीश ॥ सोनोरे उपसर्ग कीयोजि ॥ नांणी  
 मन नाहि रीस ॥ नृ० १५ ॥ काया कीधा चोलणीजि ॥  
 सहु छंछोल्यो शरार ॥ अढी दीवस कीमी तणीजि ॥  
 वेदन सइ थइ धीर ॥ नृ० १६ ॥ घरणी भव पहिली त  
 णीजि ॥ जेवुका अति विकराळ ॥ वयर वर्शे काया  
 भखीजि ॥ अवंतीसुंक्रमाल ॥ नृ० १७ ॥ वर भवांतर  
 ने वशेजि ॥ खंदकरिपिनी खाल ॥ उतारी कोप्यो न  
 हींजि ॥ ततखिण थयो निहाल ॥ नृ० १८ ॥ बहु मुनि  
 वर आगे थयोजि ॥ हुं पण तेहनो बाळ ॥ कहे जि  
 नहरष, बीहु नंहींजि ॥ एकसो सतावीसमो बाळ ॥ नृ०  
 १९ ॥ सर्व गाथा २८३० ॥

बाळ १२८ मी.

दुदा. ॥ मरण तणो भय मुज जणी ॥ श्युं देखी  
 ले राय ॥ लोपु नहि गुरु आगन्या ॥ कर जिन आ  
 वे दाय ॥ १ ॥ ९ पायी मुज मारशे ॥ चित वि०

म ॥ तो पंक्ति मरणे मरुं ॥ करे आराधन ताम ॥ २ ॥  
 पाप आळोवे आपणां ॥ योनि चोराशी लाख ॥ पाप  
 लागीं भमतां थकां ॥ आलोया निज साख ॥ ३ ॥ जे  
 में जीव विराधीया ॥ कीधां काज अकाज ॥ त्रिविध  
 त्रिविधे पाये नमी ॥ तेह स्वभाव आज ॥ ४ ॥ सहू मीत्र  
 छे माहग ॥ शत्रु न को संसार ॥ समता जाव ह्मीये  
 धरी ॥ सरणा कोधा अघार ॥ ५ ॥ सूतो रिषि सोल उप  
 रे ॥ घास तणि परे देह ॥ बळवो चळवो मुनिवर नहि  
 ॥ पडुतो सुरगति तेह ॥ ६ ॥

१. दाळ ॥ अम्मा मोरी परणायहे ॥ अम्मा मोरी जे  
 समेरा जाड्याहेहांजी ॥ ७ ॥ देशी ॥ अम्मा मोरी धन रा  
 मचंद्रहे ॥ अम्मा मोरी हेम सुगुरुनो वचन न लोपीयो  
 हेहांजी ॥ अ० अजयपाळ नरिंदहे ॥ अ० पदवी मा  
 टे तेश्युं कोपीयोहेहांजी ॥ १ ॥ अ० अगनि परजाळळा  
 माणहे ॥ अ० बीठ न आण्यो मनमां रायनोहेहांजी ॥ अ०  
 पाळी गुरुनी आणहे ॥ अ० जतन न कीधो जेणे काय  
 नोहेहांजी ॥ २ ॥ पाय नमीर्ज तासहे ॥ अ० जीतडोये  
 तेहना गुण गाडयेहेहांजी ॥ अ० राख्यो जिणे जस वा  
 दह ॥ अ० तेह तणे नामे बलि जाख्येहेहांजी ॥ ३ ॥ स

सो पगिसह जोरहे ॥ अ० आण न खंमी हेममूरिसनीहे  
 हांजी ॥ क्रीधो करम कवोरहे ॥ अ० शी गति थाशे ए अ  
 वनिशनीहेहांजी ॥ ४ ॥ भंमणो वाळचंद्रहे ॥ अ० लो  
 क कहे धिग धिग ए रायनेहेहांजी ॥ पापी हएयो मु  
 निद्रहे ॥ अ० अधम तणो मुख देखें कूण जायनेहे  
 हांजी ॥ ५ ॥ वाळ ब्राह्मण स्त्री वाळहे ॥ अ० पातिक मो  
 दां ए जगे जाणीयेहेहांजी ॥ ए अधिक कहेवायहे ॥  
 अ० रिषि हत्यानो पाप वखाणीयेहेहांजी ॥ ६ ॥ मुनि  
 वर मांहि प्रधानहे ॥ अ० आचारज अरिहंत वरोवरी  
 हेहांजी ॥ निरमळ श्रुत जसु न्यानहे ॥ अ० तेहनी ह  
 त्या इणे पापी करीहेहांजी ॥ ७ ॥ भमश्ये घणो संसारहे  
 ॥ अ० रिषि घाति ए दुख लहेशे घणोहेहांजी ॥ नरग  
 निगोद मझारहे ॥ अ० पीलाशे प्राणी पापी तणोहेहांजी ॥  
 ८ ॥ वाळचंद्र तणो अपवादहे ॥ अ० थयो पुर मांहिं फि  
 ट फिट सहु करेहेहांजी ॥ कलंक चमटो निसवादहे  
 ॥ अ० कलंक चमटो ते किमही न उतरेहेहांजी ॥ ९ ॥  
 लोकां मांहिं फजीतहे ॥ अ० थयो वाळचंद्र घणुं घणोहे  
 हांजी ॥ नूपश्युं भागो चीतहे ॥ अ० एहनी संगते थया  
 लजामणोहेहांजी ॥ १० ॥ खोइ कुळची लाजहे ॥ अ० का



लो टीलो गाल चमावीयोहेहांजी ॥ कीधो अधम का  
 जहे ॥ अ० रिषि घाति विष कुमर जणी दीयोहेहांजी  
 ॥ ११ ॥ हुं थयो गुरु द्रोहीमारहे ॥ अ० ९ पापी नृपनो  
 में कल्लो कयोहेहांजी ॥ थयो सहु मांहिं रुवारहे ॥ अ०  
 हत्यारो नारो मनमां थयोहेहांजी ॥ १२ ॥ बहु परे की  
 धी शेषहे ॥ अ० बाळचंद्र चित लगायनेहेहांजी ॥ आ  
 व्यो सर्वानुभूति देवहे ॥ अ० भाखे इणीपरे हण जइ रा  
 यनेहेहांजी ॥ १३ ॥ कीधुं वचन प्रमाणहे ॥ अ० देव ह  
 णेश नृप पासे गयोहेहांजी ॥ रयवामीं राजानहे ॥ अ०  
 रमया काज असवारी थयोहेहांजी ॥ १४ ॥ ऊमो तरु अ  
 र छांहेहे ॥ अ० सुरवर पेठो वाजीमां जइहेहांजी ॥ उ  
 पामी भूइ मांहिंहे ॥ अ० नांरुयो नृपने वात इशी थइ  
 हहांजी ॥ १५ ॥ अजयपाळना प्राणहे ॥ अ० निकळतां  
 क्रिणे दीठा नहीहेहांजी ॥ कहे जिनहरष सुजाणहे ॥  
 अ० एकसो अठावीस ढाळ पूरी थइहेहांजी ॥ १५ ॥ स  
 र्व गाथा २८५२ ॥

ढाळ १९९ मी.

दुहा ॥ जसे नृपने मारीयो ॥ खुशी थया सहु को  
 य ॥ मरी करी दुरगति गयो ॥ पाप तणां फळ जोय

॥ १ ॥ अति लोभी नर जे हुवे ॥ पाप करे (निरभीक ॥  
 लाज गमे लक्षण गुमे ॥ दुरगति तास नजीक ॥ २ ॥  
 जे नर थाये लोभीया ॥ न करे तत्व विचार ॥ थो  
 मा सुखने कारणे ॥ घणो लीये सिर भार ॥ ३ ॥ लो  
 भी जीत्यो जग सह ॥ लोभ न जीत्यो जाय ॥ जर  
 त हाहुवळ वे भिन्ना ॥ न गेल्या सगण जाय ॥  
 ४ ॥ लोभे काको मारीयो ॥ रिषिपति हत्या कीध ॥  
 अजयपाळ दुख पामीयो ॥ दुरगतिनां फळ लीध ॥ ५  
 वाळचंद्र दुखीयो थयो ॥ जो कीधो गुरु द्रोह ॥ पर  
 भव दुरगतिमां पमथो ॥ आ भव न लही सोह ॥ ६  
 ॥ दुखीयो थयो बहु पापथी ॥ वाळचंद्र अजयपाळ ॥  
 इम जाणी पातिक तजो ॥ सुख पामो सुविशाळ ॥ ७ ॥

ढाळ ॥ वार वरसांरी साहिवो चाकरी पधार्या ॥  
 तेरमे वरसे घर आयाहे सोहागिणी राणी हाजर हुए हु  
 लराइले ॥ ८ देशी ॥ एह चरित्र निज हीयने धारी ॥  
 लोभ तजो नर नारीहो ॥ सोमागी भविषण धर्मशुंहो  
 चित लाइले ॥ पाप तजोरे दुरगति दातारी ॥ धर्म क  
 रो सुविचारीहो ॥ सो० १ ॥ सदगुरु वाणी मीठी अमीय  
 समाणी ॥ सांजळ उजड आणीहो ॥ सो० बुझोरे तुम्हे

उत्तम शाली ॥ पामो भुगति पटराणीहो ॥सो० २॥ दान  
 नोह तव जावना भावो ॥ समता जीव रहावोहो ॥सो०  
 ३॥ जिनवरने चरणे चित लगावो ॥ मन वंछीत फळ  
 नोहो ॥सो० ३॥ हिंसा मिरखा अदत्त निवारो ॥चो  
 ४॥ मलमल धारोहो ॥सो० परिग्रह रात्रीभोजन वारो  
 ५॥ इस निज आत्म तारोहो ॥सो० ४॥ च्यार कषाय  
 नोहो सुख दाता ॥ रहो समताशुं राताहो ॥सो० ज्ञाना  
 ५॥ भोजनशुं राता ॥ जिन पामो सुख साताहो ॥सो०  
 ६॥ जो जिन भगति करो मन भावे ॥ दुरगति नेनि ना  
 देहो ॥सो० पांच कोडोना फुल प्रभावे ॥ कुमारपाळ  
 राज पावेहो ॥सो० ६॥ देश अढारमां आण मनावी ॥  
 ७॥ दया पळावीहो ॥सो० एहवो राज लीला जे पावे ॥  
 ते जिन भगति प्रभावेहो ॥सो० ७॥ जीव दया पाळक  
 ८॥ राजा ॥ अजी घुरे जस वाजाहो ॥सो० आगळ  
 ९॥ लहेशे यळी ताजा ॥ ज्ञानादिक जिहां

चळ नाम रहायो ॥ जिन शासन दीपायोहो ॥ सो०  
 १० ॥ उत्तम नरनां चरित्र सुणीजे ॥ जावे चरित्र जणी  
 जेहो ॥ सो० करम भवळ् तुरत हणीजे ॥ पातक घास  
 लुणीजेहो ॥ सो० ११ ॥ रिपज कीधो में रास निहाळी  
 ॥ विस्तर मांहिथी टाळीहो ॥ सो० रास रच्यो निज म  
 ति संजाळी ॥ रसना पवित्र पखाळीहो ॥ सो० १२ ॥ स  
 यत सत्तर वेताळीसे ॥ आसो शुदि सुजगीसेहो ॥ सो०  
 विजय दशमि दिन तापस न दीसे ॥ नयर पाटण मन  
 हीसेहो ॥ सो० १३ ॥ अधिको ओछो कहेवराणो होई ॥  
 मुजने दोश न कोइहो ॥ सो० रास कीधो पूख्य रास  
 जोई ॥ सांभळज्यो सहु कोइहो ॥ सो० १४ ॥ खरतरग  
 च्छ मांहिं विराजे ॥ श्री जिनचंद्रसूरि छाजेहो ॥ सो०  
 वाचक शांतिहरष गणि गाजे ॥ खेम शाखा मांहिं रा  
 जेहो ॥ सो० १५ ॥ तास चरण पंकज रस रातो ॥ जम  
 र तणी परे मातोहो ॥ सो० कहे जिनहरष हरष जर गा  
 तो ॥ रास सहुने सुंहातोहो ॥ सो० १६ ॥ अवावीससं गा  
 थानो दावो ॥ उपरे छहोतर गावोहो ॥ सो० रास रुमी  
 परे इह मल्हावो ॥ एकसो ओगणत्रीस ढाल गावोहो ॥  
 सो० १७ ॥ सर्व गाथा २८७६ ॥ सर्व ढाल १२९९ ग्रंथ

उत्तम प्राणी ॥ पामो मुगति पटराणीहो ॥सो० १॥ दान  
 सील तप भावना भावो ॥ समता जीव रहावोहो ॥सो०  
 श्री जिनवरने चरणे चित लगावो ॥ मन बंछीत फल  
 पावोहो ॥सो० ३॥ हिंसा मिरखा अदत्त निवारो ॥चो  
 थो ब्रह्मव्रत धारोहो ॥सो० परिग्रह रात्रीजोजन वारो  
 ॥ इम निज आतम तारोहो ॥मो० ४॥ च्यार कपाय  
 तजो दुख दाता ॥ रहो समताशुं राताहो ॥सो० ज्ञाना  
 मृत भोजनशुं राता ॥ जिम पामो सुख साताहो ॥सो०  
 ५ ॥श्री जिन भगति करो मन भावे ॥ दुरगति नेमि ना  
 वेहो ॥सो० पांच कोडीना फुल प्रभावे ॥ कुमारपाळ  
 राज पावेहो ॥सो० ६॥ देश अढारमां आण मनावी ॥  
 सघळे दया पळावीहो ॥मो० एहवी राज लीला जे पावे ॥  
 ते जिन भगति प्रभावेहो ॥सो० ७॥ जीव दया पाळक  
 थयो राजा ॥ अजी घुरे जस बाजाहो ॥सो० आगळ  
 सुख लहेशे वळी ताजा ॥ ज्ञानादिक जिहां झाझाहो  
 ॥सो० ८॥जीव दयानो फल देखाड्यो ॥ पाप कुपंध नृ  
 प छाम्योहो ॥सो० समर्कितशुं वारह व्रत पाळयां ॥ दु  
 खण तेहनां टाळयांहो ॥सो० ९॥ गुरु हेमाचारज सा  
 रिखो ॥ श्राद्ध कुमारपाळ श्पोहो ॥सो० जगमां अवि

चळ नाम रहायो ॥ जिन शासन दीपायोहो ॥ सो०  
 १० ॥ उत्तम नरनां चरित्र सुणीजे ॥ जावे चरित्र भणी  
 जेहो ॥ सो० करम भवळ तुरत हणीजे ॥ पातिक घास  
 लुणीजेहो ॥ सो० ११ ॥ रिपज कीधो में रास निहाळी  
 ॥ विस्तर माहिथी टाळीहो ॥ सो० रास रच्यो निज म  
 ति संजाळी ॥ रसना पवित्र पखाळीहो ॥ सो० १२ ॥ स  
 यत सत्तर वेताळीसे ॥ आसो शुदि सुजगीसेहो ॥ सो०  
 विजय दशमि दिन तापस न दीसे ॥ नयर पाटण मन  
 हीसेहो ॥ सो० १३ ॥ अधिको ओछो कहेवराणो होई ॥  
 मुजने दोश न कोइहो ॥ सो० रास कीधो पुरख रास  
 जोइ ॥ सांभळज्यो सहु कोइहो ॥ सो० १४ ॥ स्वरतरंग  
 च्छ माहिं विराजे ॥ श्री जिनचंद्रसूरि छाजेहो ॥ सो०  
 वाचक शांतिहरष गणि गाजे ॥ खेम शाखा माहिं रा  
 जेहो ॥ सो० १५ ॥ तास चरण पंकज रस रातो ॥ जम  
 र तणी परे मातोहो ॥ सो० कहे जिनहरष हरष भर गा  
 तो ॥ रास सहुने सुंहातोहो ॥ सो० १६ ॥ अवावीससं गा  
 थानो दावो ॥ उपरे ल्होतर गावोहो ॥ सो० रास रुमी  
 परे एह मल्हावो ॥ एकसो ओगणत्रीस ढाळ गावोहो ॥  
 सो० १७ ॥ सर्व गाथा २८७६ ॥ सर्व ढाळ ३१२९ ग्रंथ

નંબ્ર્યા ૪૧૬૦ ઇતિ શ્રી કુમારપાલ રાજાનો રાસ.



જાહેરખવર.

સર્વે સાહેબોને સ્વદર આપવામાં આવે છે જે આ પુસ્તક જેઓને જોઈએ તેઓને અમદાવાદ મધે ધાંચી ની પોલમાં પ્રસિદ્ધ કર્તાને ત્યાંથી તથા અમદાવાદ ટાઈમ્સ પ્રેસમાંથી રોકડી કીમતે મળશે. દેશાવરના ઘરા કોઈ ટપાલ સ્વરચના છ આના વધારે મોકલવા નાટ પેટ કાગલ લેવામાં આવશે નહીં.

અમારે ત્યાં વીજા ઘણી જાતનાં જૈન ધર્મના તથા કાયદાઓનાં તથા વાર્તાઓ વીગરેનાં પુસ્તકો મળે છે માટે જેઓને જોઈએ તેઓએ અમારા ઉપર કાગલ લઈ સ્વી મોકલવો તો તે ઘણી કીફાયતથી મળશે.

અમારા છાપસ્થાનામાં સર્વે જાતનું ગુજરાતી શાસ્ત્રી રૂપેંજી ટાઈપનું તથા સીલાનું કામ છપાય છે માટે તે જેઓને છપાવવું હોય તેઓને કીફાયતથી છાપવામાં આવશે.